मंजिल

(कहानी-संग्रह)

मंजिल

(कहानी-संग्रह)

पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल'

कोशल पब्लिशिंग हाउस
फ़ैज़ाबाद

पुस्तक का प्रकाशन उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की प्रकाशन अनुदान योजना अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2017-18 में किया गया है।

प्रकाशक

कोशल पब्लिशिंग हाउस
लेखेश्वर काम्प्लेक्स
नाका बाई-पास, इलाहाबाद रोड
फ़ैज़ाबाद–224001. (उ.प्र.)
मो. 9415048021, 9984856095
E-mail : koshalpublishingfzd@gmail.com

मूल्य : 395.00

ISBN : 978-93-81799-44-4

लेज़र-टाइप-सेटिंग्स :
कोशल पब्लिशिंग हाउस : फैजाबाद

प्रथम संस्करण : 2018

मुद्रक : कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

अनुक्रम

समर्पण

अद्वैत वेदान्त प्रणेता आदि शंकराचार्य को।

रोशनी

मोहम्मद रहमान बड़े उदार हृदय के व्यक्ति थे। एक बच्ची का जन्म देकर बीबी ने नश्वर संसार छोड़ दिया। रहमान का हृदय तार-तार हो गया। अपनी बीबी को वे प्राणों से अधिक प्यार करते थे। उनका असमय दुनिया से जाना रहमान को घोर निराशा में डूबा दिया। वे इस दुख से कभी न उबर पाते यदि आसमाँ खातून उनके लिए रोशनी छोड़कर न जाती। मोहम्मद रहमान ने अपनी पुत्री का नाम रोशनी रखा और उसमें आसमाँ खातून का प्रतिबिम्ब देखने लगें। माता, पिता भाई बहन आदि ने उन्हें दूसरी शादी करने को प्रेरित किया परन्तु न जाने क्यों रहमान का हृदय इसके लिए तैयार नहीं हुआ। माता ने समझाने की कोशिश की, बेटा अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है, पहाड़ सी जिंदगी किसके सहारे काटोगे, मेरी बात मानो और हाँ कह दो। रहमान के अधर पर स्मित तैर गयी अम्मी क्या भाई के बच्चे अपने नहीं हैं।

वे तो हैं ही फिर भी अपने बच्चे अपने होते हैं। हमारे धर्म में भी दूसरी बीबी लाने की मनाही थोड़े है। धर्म रहमान मुस्कराया अम्मी मैं धर्म का विश्लेषण नहीं कर सकता पर इतना महसूस कर सकता हूँ कि दर्द सिर्फ दर्द होता है चोट से जो पीड़ा होती है वह यह नहीं जानती कि स्त्री है या पुरुष। दुःख दुःख ही होता है अम्मी। मेरे विचार से यदि मैं भाइयो के बच्चों को अपने बच्चों जैसा प्यार करूंगा तो वे भी पुत्र के कर्त्तव्य का पालन करेंगे। इसलिए आप मेरे लिए परेशान न हो। बेटे की बात सुनकर समा बेगम चुप हो गयी। समय अपनी गति से चलता रहा। रहमान ने अपना फैसला नहीं बदला। रोशनी कक्षा पाँच में पहुँच गयी। रहमान ने मेहनत की रोशनी का नवोदय विद्यालय में एड्मीशन हो गया। जिस दिन रोशनी ने घर छोड़ा उस दिन रहमान सो न सका। बीबी ने जब साथ छोड़ा तो रोशनी थी जिसको हृदय से चिपका कर रहमान मन को शान्त कर लेता था। अब क्या करे बड़ी देर तक सोचता रहा आखिर उसने काफी सोच विचार कर रास्ता निकाल लिया। पत्नी का चित्र निकाल कर हृदय से लगा लिया। मन को संतोष मिला। इस तरह मन को बहलाने का उसने एक नायाब तरीका निकाल लिया।

अपने कक्ष में रहमान ने पत्नी आसमाँ खातून का चित्र लगा दिया। एक दिन माँ ने पूछा— बेटा यह चित्र यहाँ किस लिए रखा है। माँ की बात सुनकर रहमान मुस्कराया— अम्मी इस चित्र के सहारे मैं अपनी शेष जिंदगी काटूगा। बेटे की बात माँ के समझ से परे थी। अस्तु वे बोली-बेटा यह तुम्हारा पागलपन है। इस चित्र के सहारे

तुम जिंदगी नहीं काट पाओगे। जब तुम्हे अपनी गलती का एहसास होगा तब पछताने के सिवा तुम्हारे पास कुछ शेष नहीं होगा। अभी भी समय है मेरी बात मानो–शादी कर लो। रहमान माँ को जवाब दिये बिना बाहर निकल गया।

वास्तव में रहमान ने आसमाँ खातून को भुलाने की कोशिश की परन्तु सफल न हो सका। आसमाँ खातून तन ही नहीं मन से भी सुन्दर थी। पाँच वर्ष के जीवन काल में उन्होंने जिस तरह पत्नी का कर्त्तव्य निभाया था उसे भूलना रहमान के लिए मुश्किल था। रहमान के लिए वे नारी नहीं अपितु देवी थी। आसमाँ खातून के प्यार ने रहमान को एहसास करा दिया कि लोग प्रतिमा के दीवाने क्यों होते हैं। आसमाँ खातून का चित्र देखकर रहमान को लगता जैसे वे चित्र में विद्यमान हैं। कभी-कभी वे चित्र से बातें करने लगते, इस स्थिति में उन्हें अपूर्व शान्ति की अनुभूति होती। इस तरह अब रहमान को लगने लगा कि अदृश्य रूप में आसमाँ खातून उनके पास हैं। पत्नी की स्मृति मन में संजोऐ रहमान की जिन्दगी आगे बढ़ती रही।

बकरीद का दिन था, रोशनी दो दिन की छूटटी लेकर घर आयी थी प्रातः जब बकरे को कुर्बानी के लिए लाया गया तो रोशनी रहमान से बोली–पापा यदि आप बुरा न माने तो एक बात कहूं रहमान मुस्कराया बेटी मैने तुम्हारी बात को कभी बुरा माना है तो कहो। रोशनी का चेहरा खुशी से चमक उठा। भावावेश मैं बोली–पापा जी यदि बकरे की कुर्बानी न दी जाय तो क्या अल्लाह नाराज हो जायेगा। बेटी की बात सुनकर रहमान गहरे सोच में डूब गये। बेटी के प्रश्न का क्या उत्तर थे उनकी समझ में नहीं आ रहा था। पिता का मौन रोशनी सह न सकी बोली–पापा जी क्या मैने गलत प्रश्न कर दिया। नहीं रहमान उसके केशों को सहलाने लगे।

समा बेगम अपने बड़े बेटे अनीस से बोली–बेटा मौलबी साहब द्वार पर बैठे हैं–शीघ्र कुर्बानी का वन्दोबस्त करो। माँ की बात सुनकर अनीस तैयारी में लग गया। मौलबी साहब आंगन में आये कुर्बानी का इतिहास बताकर बकरे को लिटा दिया। रोशनी का हृदय धड़कने लगा–निरीह जानवर की हत्या देखना उस बालिका ने उचित नहीं समझा। उठी और छत पर चली गयी। बकरे को कुर्बान कर दिया गया।

शाम का समय था आसमान पर बादल छाऐ थे। कई दिनों से वर्षा नहीं हुई थी। बादलों की गड़गड़ाहट ने किसानों के अरमानो को जगा दिया। सचमुच कुर्बानी रंग लाई। वर्षा शुरु हो गई। दो घंटा मुसलाधार वर्षा हुई, खेत पानी से लबालब भर गये। जल पाकर धान की फसल लहलहाने लगी किसानों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

❍❍

खाना खाकर रोशनी पिता के कक्ष में बैठकर माँ की तस्वीर को गौर से देखने लगी। बेटी को सोच मग्न देखकर रहमान बोले-बेटी क्या सोच रही हो। कुछ नहीं पापा

रोशनी मुस्करायी। मैं जानता हूँ बेटी तुम क्या सोच रही हो—बकरे की कुर्बानी तुम को अच्छी नहीं लगी बेटी।

पापा जी अब मैं इण्टर में पहुँच गई हूँ, सही गलत निर्णय करने की थोड़ी बहुत क्षमता मेरे पास भी है। मानव के धरती पर आने से पहले प्रकृति ने पेड़ पौधे एवं अनेक जीवों का सृजन कर दिया था। इसी के बल पर मानव अपना अस्तित्व स्थापित कर सका। धरती पर हर जीव दूसरे जीव का भक्षण कर अपने प्राणों की रक्षा करता है, इसलिए माँस खाना अनुचित नहीं है। परन्तु इसका दूसरा भी पक्ष है कहकर रोशनी चुप हो गयी।

रोशनी बेटी अपनी माँ के समान तुम भी दूरदर्शी हो। मैं तो कक्षा आठ तक पढ़ा हूँ बिटिया—इसलिए धर्म का सूक्ष्म तत्व मेरी समझ से परे है। काजी एवं मौलवी धर्म के ज्ञाता है वे जो राह दिखाते हैं मेरे विचार से उस पर चलना चाहिए। वे लोग खुदा के सच्चे बन्दे है। अल्लाह की उन पर रहमत होती है। अच्छा बेटी तुम कुछ कहना चाहती थी। याद आया वह दूसरा पक्ष। मैं भी जानू मेरी बेटी कितनी बुद्धिमान है।

पापा जी मेरे विचार से माँस खाना तर्कसंगत नहीं है। क्योंकि सर्वप्रथम यह धारणा माँस में विटामिन प्रोटीन अधिक होता है गलत है। आधुनिक विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि माँसाहारी की अपेक्षा शाकाहारी अधिक जीते एवं स्वस्थ रहते हैं। जीव संरचना की दृष्टि से यदि शाकाहारी एवं माँसाहारी जीवो का अध्यन करें तो मानव शाकाहारी की श्रेड़ी में आता है इसके अलावा पापा हर जीव जीना चाहता है। इसलिए मैं जीव हत्या का समर्थन नहीं करती। पापा जी आप ने भगवान बुद्ध का नाम सुना होगा— वे धरती के महान विचारक हैं। हर धर्म में श्रद्धा एवं विश्वास को प्रथम स्थान दिया गया है, परन्तु बुद्ध ने तर्क के आधार पर सत्य को स्वीकार करने की बात कही। मैं उनसे प्रभावित हूँ पापा!

रहमान ने रोशनी की बातों को गौर से सुना—बेटी तुम अपनी माँ पर गई हो तुम्हारे समान तुम्हारी मम्मी भी जीव हत्या के पक्ष में नहीं थी उन्हें जीव-जन्तुओं से अतिसय प्यार था। एक दिन घर में साँप निकला तब पीछे वालो दोनों कमरे कच्ची मिट्टी की दीवाल से बने थे। तुम्हारी मम्मी ने साँप देखा तो चीख कर मेरे पास आयीं। मैने लाठी उठायी और उसे मार दिया। साँप को मार कर जब मैं बाहर फेंक कर आया तो वे बोली—आप को साँप नहीं मारना चाहिए था। तब मैंने कहा—साँप मारना मुझे भी अच्छा नहीं लगा, पर क्या करूं मजबूरी थी, कहते-कहते रहमान के सामने आसमाँ खातून की आकृति स्पष्ट हो गयी, उनकी आँखे भर आयी।

पापा जी मैं जानती हूँ आप मम्मी को बहुत प्यार करते थे। आज भी आप मम्मी की तस्वीर सिर्फ दीवाल में ही नहीं अपितु हृदय में भी बसाएँ हैं। आप ने जो त्याग

किया है इस युग में अत्यन्त कठिन है। मुझे आप पर गर्व है। बेटी-रहमान भावुक हो गये—मुझे भी तुम पर गर्व है पुत्री, मुझे पूर्ण विश्वास है तुम मेरे सपनों को साकार करोगी बेटी। अवश्य रोशनी गम्भीर हो गयी मैं डाक्टर बन कर आपके सपने को पूरा करुंगी पापा कहते-कहते रोशनी की आँखों में आँसू आ गये। रहमान उठे और बेटी को हृदय से लगा लिया।

❍❍

रोशनी पिता के सपने को साकार करके हेतु तपस्या रत हो गई। उसकी तपस्या सफल हुई। एमबीबीएस की परीक्षा में उसने देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। देश के प्रमुख समाचार पत्रों ने रोशनी के चित्र के साथ समाचार प्रकाशित किया। रहमान ने जब यह समाचार सुना तो उसे असीम आनन्द की अनुभूति हुई। रहमान कभी-कभी कल्पना जगत में खो जाता था जब मेरी बेटी डॉक्टर बन जायेगी तब मैं उससे कहूंगा बेटी—अमीर, गरीब, धर्म, जाति का कभी भेद नहीं करना। तुम्हारे पास जो भी आये उसके कष्ट को दूर करने का प्रयास करना। आज उसकी कल्पना यथार्थ के धरातल पर पहला कदम रख चुकी थी।

रोशनी जब घर आयी रहमान ने हृदय से लगा लिया। बेटी तुमने आज मेरे सपने का साकार कर दिया। पापा जी मैं अपनी सफलता का श्रेय आप को देती हूँ। आपकी मेहनत एवं प्यार के सहारे मैं इस परीक्षा को पास कर पाई हूँ। बेटी की बात सुनकर रहमान अति प्रसन्न हुये। उन्होंने महसूस किया उनकी तपस्या व्यर्थ नहीं गई। डाक्टर की पड़ाई में बहुत पैसा खर्च होगा, मन ही मन उन्हें पैसों की चिन्ता सताने लगी। पिता को सोच मग्न देखकर रोशनी बोली—क्या सोचने लगे पापा बेटी तुम्हारी पड़ाई पर कितना पैसा खर्च होगा। रोशनी मुस्करयी पापा जी आप पैसों की चिंता न करें। सरकार पढ़ाई के लिये ऋण देती है मैने आवेदन कर दिया है। सुनकर रहमान ने राहत की साँस ली।

रोशनी का एड़मीशन हो गया। रहमान ने भाइयों से पैसे मांगे तो वे बोले हमारे पास पैसा नहीं है। रहमान को बेहद दुःख हुआ। जिस परिवार को दिन रात मेहनत करके उसने आगे बढ़ाया था वही परिवार इस तरह का व्यवहार करेगा रहमान ने कभी कल्पना भी नहीं की थी। आज तक उसने बैंक में खाता तक नहीं खोला था। भाई बहन एवं भाइयों के बच्चों को अपने बच्चों से अधिक प्यार किया था, परन्तु उनको इस तरह बदला हुआ देखकर उसे हैरानी हुई। माँ एवं पिता ने भी उसका साथ छोड़ दिया। माता समाबेगम ने कई बार कहा—बेटी को पढ़ाना उचित नहीं औरत का काम पति एवं परिवार की सेवा करना है। जो औरत बाहर काम करती है उसे दूसरे पुरुष देखते हैं जो गलत है। औरत को पति के सिवा किसी को मुँह नहीं दिखाना चाहिए। जो औरत अपने

धर्म एवं ईमान पर नहीं चलती उसे दोजख में जाना पड़ता है। इसलिए बेटा रोशनी की पढ़ाई बंद कर दो। पिता एवं भाइयों ने माँ के विचारों का समर्थन किया।

रहमान के पिता बोले–थोड़ी बहुत पढ़ाई औरतों के लिए मेरे विचार से ठीक है। उर्दू का ज्ञान जरूरी है। कुरान को पढ़कर समझना हर मुसलमान का कर्त्तव्य है। इसलिए मैं लड़कियों के पढ़ाने का विरोध नहीं करता, परन्तु लड़की घर से बाहर पुरुषों के साथ काम करे मेरे विचार से अनैतिक है। सुन्दर स्त्री देखकर कोई भी पुरुष बहक सकता है। इसलिये रोशनी को ज्यादा पढ़ाने की आवश्यकता नहीं। पिता एवं परिवार वालो के विचारों को दरकिनार कर रहमान ने रोशनी को पढ़ाया था। वह अच्छी तरह जानता था घर पर रोशनी पढ़ नहीं पायेगी, उसे घर के काम में बैल की तरह जोता जायेगा, इसलिए उसने मेहनत कर के रोशनी का नाम नवोदय विद्यालय में लिखवा दिया था। इतना सब होने के बावजूद उसे भरोसा था कि परिवार-परिवार ही होता है। अपने ही दुखो में काम आते हैं। परन्तु आज उसे जीवन ने मानव के स्वार्थ का वास्तविक रूप दिखा दिया। यदि रोशनी सरकार से ऋण न पाती तो उसकी एमबीबीएस की पढ़ाई मुश्किल थी।

रोशनी दिल्ली चली गई। कम पैसा खर्च करके अपना लक्ष्य प्राप्त करना उसका उद्देश्य था। मेडिकल कालेज में उसने हॉस्टल ले लिया। अपनी प्रतिभा के बल पर उसने गुरुजनों का हृदय जीत लिया। उसके कमरे के बगल वाले कमरे में दो लड़कियाँ रहती थी निशा तिवारी एवं काजल गुलाटी। निशा तिवारी के पिता उत्तर प्रदेश विधान सभा में सचिव थे जब की काजल गुलाटी के पिता भारतीय नौ सेना में रियरएडमिरल थे। जो इस समय नई दिल्ली में सेना भवन में सेवारत थे। दोनों धनाड्य परिवार की लड़कियाँ थी। रोशनी के ज्ञान एवं व्यक्तित्व ने उन्हें प्रभावित तो किया परन्तु विलासता द्वारा मिलने वाला देहिक सुख की दीवानी वे रोशनी के विचारों से सहमत नहीं होती।

शाम के सात बजे थे रोशनी माँ के चित्र को देख रही थी कि निशा एवं काजल आ गई। निशा एवं काजल में घनिष्टता थी ऐसा लगता दोनों सगी बहने हैं। अधिक तर समय दोनों एक साथ रहती। रोशनी ने मुस्करा कर दोनों का खड़े होकर स्वागत किया। नम्रता से बोली–बैठो बहन। दोनों लड़कियाँ बैठ गई तो रोशनी भी बैठ गई। चुपके-चुपके किसका फोटो देख रही थी निशा बोली। रोशनी निशा को फोटो देकर बोली–यह चित्र मेरी मम्मी का है।

तुम तो अपनी माँ की कापी हो। कोई भी नहीं कह सकता यह तुम्हारी तस्वीर नहीं है। देखो काजल तुम्हे कैसे लगती है। काजल निशा से फोटो लेकर गौर से देखा, फिर मुस्कराकर बोली–तुम्हारी माँ बहुत सुन्दर थी। रोशनी भी रोशनी है निशा बोली–जो भी जी भरकर देखेगा दीवाना हो जायेगा। मुझे झूठ बोलने वालो से नफरत

है तुम्हारी बात मेरे विचार से औचित्य विहीन है। देह सौन्दर्य की अपेक्षा आंतरिक सौन्दर्य महत्त्वपूर्ण होता है रोशनी की बात सुनकर निशा को लगा वह गम्भीर है। अतः उसने बात बदल दी सुना है पिछले महीने से तुम कोचिंग पढ़ाती हो।

क्या करूं—तुम दोनों की तरह मैं अमीर बाप की बेटी नहीं हूँ तुम्हारे जैसे लोग दूसरे के दुःख को समझ नहीं सकते।

क्यों नहीं समझ सकते निशा तिवारी बोली। तुम्हारे पैर में कभी काँटा चुभा है रोशनी मुस्करायी। नहीं निशा बोली। इसीलिए कहती हूँ तुम दूसरे के दर्द का एहसास नहीं कर सकती। रोशनी की बात सुनकर निशा के साथ काजल भी हंस पड़ी। तुम दोनों हंस क्यों रही हो।

तुम्हारी नादानी पर, निशा तिवारी बोली—अल्लाह ने तुम्हे रूप दिया है, यदि इसका सदुपयोग करो तो सुख एवं पैसा दोनों कमा सकती हो। कैसे—रोशनी आश्चर्य चकित होकर बोली। निशा ने रोशनी के कान के पास मुख करके कहा ऐसे। निशा की बात सुनकर रोशनी खड़ी हो गई। तुम दोनों उम्र में मुझसे बड़ी हो इसलिए तुम्हारी इज्जत करती हूँ। बेहतर यही होगा तुम यहाँ से चली जाओ। अरे तुम तो नारज हो गयी काजल गुलाटी बोली।

दिल तो कहता है कि तुम्हे थप्पड़ मारुँ। जानती हो तुमने क्या कहा है। दोनों चुप-तुम दोनों ने देह सुख को ही जीवन का अभीष्ट मान लिया है। जिस तरह, तरह-तरह के व्यंजन बदल-बदल कर खाने से जीभ को विशेष स्वाद की अनुभूति होती है, उसी तरह पुरुष स्त्री को एवं स्त्री पुरुष को बदल कर देह का विशेष सुख पाता है। इस सुख के लिए इस अदला बदली को कतिपय भौतिकवादी विचारक नैतिक कह सकते हैं, परन्तु मैं इसे अनैतिक ही नहीं अपितु पाप मानती हूँ।

आईएम सारी रोशनी—निशा तिवारी ने हाथ जोड़ लिए—मुझे आज पता चला कि तुम सच-मुच रोशनी हो। रोशनी बोली, बड़े-छोटे को हाथ जोड़े यह कभी भी न्यायोचित नहीं हो सकता, मैने यदि कुछ गलत कहा है तो मुझे क्षमा कर देना बहन। निशा उठी और उसने रोशनी को गले लगा लिया। काजल गुलाटी मुस्कराकर बोली—आज से तुम मेरी गुरु हो गयी रोशनी। गुरु-रोशनी ने शब्द को दोहराया फिर काजल को गले लगा लिया।

❍❍

काजल गुलाटी अपने कमरे में आकर बड़ी देर तक रोशनी की बातों की जाँच पड़ताल करती रही। क्या रोशनी जो कह रही है सही है। उसे इस बात की हैरानी हो रही थी कि मुसलमान होकर भी वह सिर्फ शाकाहारी ही नहीं अपितु मूल्यों के प्रति आस्थावान है। न जाने क्यों उसके हृदय पर रोशनी के व्यक्तित्व ने अपना प्रभाव जमा

लिया। प्रातः जब क्लास में गई तो रोशनी के पास बैठ गई और बोली—कल तुम्हारी बातों से मुझे जीवन का नया दृष्टिकोण मिला। रोशनी मुस्करायी यदि तुम्हे मेरी बातें अच्छी लगती हैं तो पढ़ने में ध्यान लगाओ। ओके कहकर काजल गुलाटी ने पुस्तक निकाली और पढ़ने लगी।

शाम का समय था, रोशनी के कक्ष में निशा तिवारी एवं काजल गुलाटी आयीं रोशनी ने खड़े होकर दोनों का स्वागत किया। काजल बोली रोशनी यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो विषय से हटकर कुछ अन्य जीवन दर्शन की बातें करें। रोशनी हंस पड़ी काजल किसी भी बात का कुछ न कुछ विषय तो होता ही है फिर भी आज तुम्हारी जो भी इच्छा हो मैं चर्चा में भाग लेने को तैयार हूँ। रोशनी मैं तुम से कुछ व्यक्तिगत प्रश्न कर सकती हूँ—काजल बोली। कुछ भी करो यार आज की शाम तुम्हारे नाम रोशनी मुस्कराकर बोली। रोशनी तुम माँस क्यों नहीं खाती?

यार तुम्हारे इस प्रश्न का मेरे पास उत्तर नहीं है।

रोशनी तुम्हारे पास हर प्रश्न का जवाब होता है पर तुम उत्तर देना नहीं चाहती तो अलग बात है निशा बोली। यार तुम दोनो आज मुझे तंग करने आयी हो। अरे यह मेरी मर्जी है माँस खाऊँ या न खाऊँ भला इसमें कारण क्या हो सकता है।

ठीक है अगला प्रश्न करूं, काजल बोली, रोशनी ने स्वीकृत में सिर हिला दिया। रोशनी यदि तुम्हारे पति माँस खायेंगे तो क्या करोगी। रोशनी हंस पड़ी– काजल जी यदि मेरे पति माँस खायेंगे तो मैं उन्हें अधर चूमने नहीं दूंगी समझी। दोनों सहेलिया खिलखिला कर हंस पड़ी।

रोशनी तुम बहुत अच्छी हो, काजल गुलाटी बोली—तुम्हारा साथ पाकर मैं अपने जीवन में परिवर्तन महसूस करने लगी हूँ। मानव का धर्म है कि जीवो के प्रति दया करे। तुम माँस इसलिए नहीं खाती कि तुम्हारा हृदय अत्यन्त कोमल है। इसीलिये उसमें दया एवं करुणा का निवास है। धन्य है वह माँ जिसने तुम्हे पैदा किया मुझे पूर्ण विश्वास है एक दिन तुम देश में ही नहीं अपितु विश्व में अपनी रोशनी फैलाओगी।

मेरी झूठी प्रशंसा न करो बहन—रोशनी भावुक हो गई। उसकी आँखों में मोटी-मोटी बून्दे चमकने लगी, काजल गुलाटी उसके आँसू को पोंछते हुऐ बोली—अब तुम स्वयं को अकेली नहीं समझना, हम तुम्हारे साथ है। रोशनी कुछ कह न सकी बस काजल को गले लगा दिया।

❍❍

समय अपनी गति से चलता रहा। काजल गुलाटी रोशनी से इतना प्रभावित हुई कि एक दिन उसने साफ-साफ शब्दों में निशा तिवारी से कहा कि अब मैं तुम्हारे साथ आगे नहीं चल सकती। निशा ने काजल को समझाया—मानव जीवन पाकर यदि हमने

दुनिया में सुख नहीं भोगा तो यह व्यर्थ है।

सुख का मतलब ऐशो आराम नहीं अपितु मन की शान्ति अवस्था है। इसलिये मन को संतोष देने हेतु हमें रोशनी की आवश्यकता है काजल बोली—रोशनी-रोशनी लगता है जैसे तुम उसकी दीवानी हो गई हो। ऐसा नहीं है यार—मैं उसकी दीवानी नहीं अपितु वह जो कहती है मैं उस सत्य की दीवानी हूँ।

इसका मतलब तुम भी रोशनी की तरह मानती हो कि नारी को केवल पति से ही—यानि तब तक इंतजार करे। निशा मुस्करायी मैं रोशनी से सहमत हूँ यार। काजल जिस तरह से तुम सोच रही हो क्या पुरुष भी ऐसा सोचते हैं नहीं— पुरुष शादी से पहले एवं बाद में भी दूसरी औरतों से देहिक सुख प्राप्त करते रहते हैं। फिर नारी को यह बंधन क्यों? मैं इसे सही नहीं मानती। पुरुष खुले आम व्यभिचार करते हैं फिर भी समाज में उन्हें सम्मान मिलता है जब की नारी को दण्ड। मैं इस दोहरी मापदण्ड वाली व्यवस्था की विरोधी हूँ।

तुम जो कह रही हो किसी हद तक सही है। मेरे विचार से नारी पुरुष की तरह उच्छंखलता पूर्ण आचरण नहीं कर सकती। क्योंकि प्रकृति ने जो अन्तर कायम किया है उसे नजरअंदाज करना ठीक नहीं है, यार तुम डाक्टर हो, पुरुष एवं स्त्री की संरचना में जो जटिलता है उसे समझाने की मुझे आवश्यकता नहीं है।

मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ निशा बोली।

मुझे खुशी हुई कि तुम मेरी बात से सहमत हो। निशा जी जिस तरह पुरुष एवं नारी की देह में अंतर है उसी तरह पुरुष एवं नारी की नैतिकता में भी अंतर है। नारी को पुरुष की तरह खुदगर्ज नहीं होना चाहिए। प्रकृति में झांक कर देखो पुरुष वर्ग स्वार्थी ही नहीं बेशर्म है। नारी मर्यादा का प्रतीक है बहन। जिस दिन प्रकृति अपनी मर्यादा से हट जायेगी उस दिन प्रलय निश्चित है। पुरुष वर्ग ने नारी को भोग्या बनाने की सदैव कोशिश की है हमें इस सत्य से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। मेरे विचार से नारी को भोग्या नहीं अपितु माँ की भूमिका इस धरती पर करना चाहिए।

रोशनी ने तुम्हारे दिमाग में भूसा भर दिया है, निशा मुस्करायी। ठीक है यदि मेरे दिमाग में भूसा भरा है तो तुम अपने दिमाग में पाटल के पुष्प भरो। यार, तुम नाराज क्यों होती हो— मैं चली जाती हूँ कहकर निशा खड़ी हो गई। काजल भी खड़ी होकर निशा को गले लगा लिया। मैं तुम से कभी नाराज नहीं हो सकती बहन। हमारे विचार पृथक-पृथक हो सकते हैं परन्तु मेरे हृदय में तुम्हारे लिये जो प्रेम है वह कभी मिट नहीं सकता। तुम मुझे बहुत प्यार करती हो मैं जानती हूँ निशा बोली। अच्छा एक बात बताओ यदि कभी मन उड़ना चाहे तो क्या करें। काजल मुस्करा कर बोली—मन को समझायें यदि न माने तो कल्पना में प्रियतम से मिल ले।

तुम्हारी बात मेरी समझ से परे है फिर भी कोशिश करुँगी—फिर दोनों सहेलियों में देर तक बातें होती रही। परन्तु विचारों से अंतर बना रहा। काजल गुलाटी रोशनी से मिली तो निशा को लेकर चर्चा होने लगी। काजल बोली मैने निशा को बहुत समझाया पर वह मानने को तैयार नहीं। ज्यादा जोर देती हूँ तो कहती है कोशिश करुँगी। उसे अंधकार से कैसे निकाला जाय मेरी समझ में नहीं आता। काजल की बात सुनकर रोशनी गम्भीर हो गई। क्या सोचने लगी काजल बोली।

काजल जो मानव स्वयं का उद्धार न करना चाहे उसका कल्याण परमात्मा भी नहीं कर सकता। वह जिस रास्ते पर चल रही है उसका परिणाम आत्मा को ही खत्म नहीं करता, अपितु शरीर को भी क्षति पहुँचाता है। डॉक्टर ही जब गलत आचरण करे तो उसे कौन समझा सकता है। बस मैं ईश्वर से प्रार्थना कर सकती हूँ कि वे उसे सद्‌बुद्धि प्रदान करें।

रोशनी मैं भी अंधकार में थी, परन्तु तुमने मुझे रोशनी दी। रोशनी काजल का कान पकड़ कर बोली—दुबारा कहा तो थप्पड़ मारूंगी। हजार बार कहूंगी रोशनी तुम मेरी रोशनी हो—रोशनी काजल को थप्पड़ तो न मार सकी पर हृदय से चिपका लिया। फिर दोनों अपने सुख दुःख की बातें करने लगी। रहमान की सादगी सरलता एवं आचरण की कहानी सुनकर काजल गुलाटी भाव विह्वल हो जाती। मन ही मन सोचने लगती इस युग मैं ऐसे भी इंसान है जिन्हें पूजने को जी चाहता है।

❍❍

एमबीबीएस की पढ़ाई खत्म होते ही तीनो सहेली अलग-अलग अस्पतालों में नियुक्ति पा गई। निशा तिवारी के विचार काजल एवं रोशनी से पृथक होने के उपरान्त तीनों में जो प्यार था वह बेमिसाल था। वे तीनों दूर होकर भी एक दूसरे के पास थी। फोन पर आपस में विचार विनमय प्रति दिन होता। सबसे पहले काजल गुलाटी ने शादी की। रोशनी एवं निशा दोनों आयीं। काजल गुलाटी के पति डाक्टर ही नहीं अपितु नेक इंसान थे।

तीनों सहेली बैठी तो पुरानी यादें सजीव हो गयी। काजल बोली रोशनी तुम भी अब शादी कर लो। काजल की बात सुनकर रोशनी ने गहरी साँस ली। कोई मिले तो सही, तेरे योग्य कोई पुरुष फिलहाल इस धरती पर इस समय नहीं मिल सकता। निशा तिवारी मुस्कराकर बोली।

यार मजाक मत करो—मेरा प्रोबलेम तो तुम दोनों को पता है पिता जी को मैं अपने साथ रखती हूँ। जो मेरे पिता को पिता जैसा आदर एवं सम्मान करे, ऐसे व्यक्ति से ही मैं विवाह करूँगी।

रोशनी की बात सुनकर निशा गम्भीर हो गई—शून्य हो घूरते हुये मुस्कराने की कोशिश की पर सफल न हो सकी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखे डबडबा आयी। निशा की आँखों में आँसू देखकर रोशनी तड़प उठी काजल भी भावुक हो गई। तुम रो क्यों रही हों?

बस ऐसे ही आँसू आ गये।

तुम झूठ बोल रही हो निशा। तुम जानती हो मुझे झूठ से सक्त नफरत है। सच बोलो निशा तुम्हे मेरी कसम, रोशनी अपनी कसम वापस कर लो—यदि मैंने सच बोल दिया तो तुम्हे दुःख होगा।

ऐसी बातें क्यों करती हो निशा—काजल निशा के केशो के सहलाते हुऐ बोली। हम तीनों में सगी बहनों से ज्यादा प्यार है। फिर तुम भी मानती हो कि रक्त से मन के रिश्ते बड़े होते हैं। ऐसी क्या बात है जिसे तुम छिपाना चाह रही हो। हम तुम्हारे सुख में साथ थे तो क्या दुःख में भाग लेगें। कहीं ऐसा तो तुम नहीं सोच रही हों। नहीं काजल—ऐसी बात नहीं है।

फिर झूठ क्यों बोल रही हो निशा-रोशनी खड़ी हो गई।

रोशनी मुझे एड्स है— निशा का क्षीण स्वर......।

नहीं ऐसा नहीं हो सकता। रोशनी एवं काजल का मुँख हैरत बस खुला का खुला रह गया।

यह सच है रोशनी—मैं स्वयं गुनाहगार हूँ। यदि काजल की तरह मैं भी तुम्हारी बात मान लेती तो.....!

रोशनी ने निशा को बाहों में भर लिया। दुःखी मत हो बहन तुम तो स्वयं डाक्टर हो। किसी भी रोग से लड़ने के लिए सबसे बड़ी ताकत दवा नहीं, जीने के लिए जिस शक्ति की आवश्यकता होती है वह प्यार है। मैंने तुम दोनों को अपने प्राणों से अधिक प्यार किया है। जब तक रोशनी जिंदा है तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। जानती हो हजारों वर्ष पूर्व इस देश के ऋषि मुनियों ने योग की खोज की थी। जो शक्ति आत्मा को परमात्मा में मिला सकती है उसके प्रभाव से इस काया को बदला जा सकता है। अपाला की कहानी तुम्हे ज्ञात है न जिसने तप एवं योग के बल से शरीर का रूप बदल दिया था। आज से मैं तुम्हारी डॉक्टर हूँ। जब तक तुम्हें पूर्ण रूप से स्वस्थ करके तुम्हारी शादी नहीं करवा देती तब तक मैं शादी नहीं करूंगी। कहते-कहते रोशनी भावुक हो गई। नेत्रों से अश्रु धार फूट पड़ी।

मेरे कारण तुमने इतनी बड़ी प्रतिज्ञा कर ली निशा सिसक पड़ी। अब मत रोओ निशा—रोशनी अपनी प्रतिज्ञा जिस दिन पूर्ण करेगी, उस दिन ही मैं सुहागरात मानऊगीं। काजल की बात सुन कर रोशनी घबड़ा गयी। काजल को गले लगाकर भरभराये स्वर में रोशनी उसे समझाते हुऐ बोली। तुम मुझे गुरु मानती हो तो मेरी आज्ञा का पालन करो। काजल बहन तुम अपनी नई जिंदगी आज से शुरू करो। निशा को नव जीवन प्रदान करने हेतु मेरे अनुसंधान में मेरी सहायता करो। काजल गुलाटी ने स्वीकृत में सिर हिला दिया। उन तीनों के विशुद्ध प्रेम को देखकर लेखक की कलम रुक गयी।

❑❑❑

रिक्शेवाला

कमाल अहमद कमाल का आदमी था। जिंदगी में उसने कभी भी मेहनत नहीं की। जिंदगी आराम एवं ऐश से गुजार दी। उसके तीन संतान थी। बड़ा बेटा नूर मोहम्मद छोटा कयामत अली और सबसे छोटी-बेटी रजिया। नूर मोहम्मद ने होश सम्भाला तो माता शहनाज बेगम को परिवार की जिम्मेदारी निभाते देखा। कमाल अहमद महीना में पंद्रह दिन रिश्तेदार एवं दोस्तों के यहाँ निकाल देते। खेती बटाई पर थी। फसल होती तो बेचने को तैयार हो जाता। शहनाज बेगम विरोध करती तो लड़ाई पर आमादा हो जाता। नूर मोहम्मद यदा-कदा ही स्कूल जाता। घर की जिम्मेदारी धीरे-धीरे उसके ऊपर आ गई।

नूर मोहम्मद के नाना ने एक गाय दे दिया, जिसकी देख भाल में नूर मोहम्मद की पढ़ाई बंद हो गयी। गाय ने बछिया का जन्म दिया तो घर में दूध की नदी बह चली। एक वक्त का दूध बेंच पैसा इकट्ठा करके नूर मोहम्मद ने एक बीघा गन्ना लगाया। उसकी मेहनत रंग लाई। धीरे-धीरे उसने परिवार की उतरी गाड़ी को पुनः पटरी पर ले आया। खुद नूर मोहम्मद तो नहीं पढ़ पाया पर उसने छोटे भाई एवं बहन की पढ़ाई में कमी नहीं होने दी। अपना पेट काट कर उन्हें पढ़ाने में उसे असीम आनन्द का बोध होता।

कमाल अहमद को समय से खाना न मिलता तो थाली उठाकर फेंक देता। नूर मोहम्मद हाथ जोड़कर जब इबादत करता तो उनका क्रोध शान्त होता। स्वादिष्ट खाने की उन्हें आदत थी। बिना माँस के कौर न उठाते। नूर मोहम्मद मांस नहीं खाता पर पिता को प्रसन्न रखने हेतु रोज माँस लेकर आता। एक दिन रिश्ता आया। शहनाज बेगम बोली—अब नूर की शादी कर दो। कमाल अहमद मुस्करायें उस पागल की शादी करके कौन सुखी रह सकता है बेगम, लड़के को चालाक होना चाहिए वह तो बुद्धू है।

पति की बात सुनकर शहनाज बेगम को धक्का लगा। जिस लड़के ने अपनी मेहनत के बल पर परिवार को यहाँ तक लाया उसके प्रति बाप का विचार शहनाज बेगम को अच्छा नहीं लगा, पर वे कुछ बोल न सकी। बस चुपचाप चाय आदि की तैयारी करने लगी। दालान में रिश्ते वाले बैठे थे। शहनाज बेगम चाय लेकर आयीं। सभी चाय पीने में व्यस्त हो गये, तभी कयामत अली दौड़ता हुआ आया। अब्बा हजूर मुझे पुलिस की नौकरी मिल गयी है। पाँच सितम्बर को ट्रेनिंग पर जाना है।

अल्लाह की मेहरबानी है बेटा—बैठो चाय पियो ये लोग यहाँ किस लिये आये हैं अब्बा। कयामत अली बेटे को मेहमानों का परिचय देने लगा। बेटा ये हैं रियाज अली तुम्हारे नाना के गाँव हैदरपुर के निवासी हैं। ये अपनी बेटी की शादी नूर मोहम्मद से करना चाहते हैं।

उस पागल से कयामत अली मुस्कराया। चाचा जान क्यों अपनी बिटिया की जिंदगी बरबाद करना चाहते हो। शादी इंसान की कि जाती है जनावर की नहीं। उस कमबक्त को यह भी पता नहीं कब रात होती है कब दिन, दिन रात काम में लगा रहता है। यदि उसकी शादी हो गयी तो लड़की आत्महत्या कर लेगी।

रियाज अहमद कुछ देर सोचते रहे फिर बोले—आप लोग बहुत अच्छे इंसान हैं लोग अपने बच्चों की कमी छुपा कर शादी कर लेते हैं, धन्य है आप बाप बेटे। अच्छा बेगम साहिबा आप बतायें क्या सचमुच आपका लड़का पागल है। शहनाज बेगम गम्भीर हो गई, क्या जवाब दे, कुछ देर सोचती रही फिर बोली— आप खुद मेरे बेटे को देख ले, आपको पता चल जायेगा वह क्या है।

अम्मी तुम बेकार की बात करती हो—पूरा गाँव जानता है कि नूर मोहम्मद पागल है। दिन रात काम के सिवा उसे कुछ दिखाता ही नहीं। कयामत अली की बात शहनाज बेगम के हृदय में तीर सी चुभ गई। वे अपने को रोक न सकी, तेज स्वर में बोली—बेटा तुम उस आदमी का मजाक उड़ा रहे हो जिसने तुम्हे खून से सींच कर पाला है।

आगे एक शब्द भी नहीं बोलना बेगम वरना तलाक दे दूंगा। कमाल अहमद कठोर स्वर में बोला। रियाज अली एवं उसका भाई खड़ा हो गया। चलो भइया अब हम यहाँ एक पल भी रहना नहीं चाहते।

रियाज अली चले गये। शहनाज बेगम अपने आँसूओं को पोंछते हुए बाहर निकल गई। अब्बा आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए। बेटे की बात सुनकर कमाल अहमद मुस्कराये—मैं तुम्हारी अम्मी को तलाक थोड़े दूँगा बस उसे डरवा रहा था। बेटा औरतों को सदा जूती समझना इन्हें जितना रगड़ोगे उतना चमेकेगीं। ढील दिया तो बिगड़ जायेगी। नूर मोहम्मद की शादी मैं कभी नहीं करूँगा। जानते हो किस लिए इसलिए कि घर में एक जानवर रहेगा तो हम आराम के साथ रह सकते हैं। इसमें मेरे साथ तुम्हारी भी भलाई है। उसकी शादी हुई तो बच्चे होंगे, फिर हम उसकी कमाई कैसे खायेंगे। मैं नूर मोहम्मद को बैल की तरह जोतकर अपने बाद तुम्हारे हवाले करके खुदा के पास जाऊंगा। अब्बा हजूर आप इतने बड़े दूरदर्शी है मुझे आज पता चला। बेटे की बात सुनकर कमाल अहमद ठहाका मारकर हँस पड़े।

❍❍

कहाँ जा रहे हो पिता की वाणी सुनकर नूर मोहम्मद रुक गया। अब्बा आज रक्षा बंधन है। आप तो जानते ही हैं कि मैं रक्षा बन्धन को गीता से राखी बँधवाने उसके घर जाता हूँ।

कितने रुपये दोगे?

ग्यारह सौ एक।

कमाल अहमद मुस्कराये लोग तुम्हें पागल इसीलिए कहते हैं। क्या ग्यारह सौ रुपया देना जरूरी है। हमारा और उसका धर्म भी अलग-अलग है, उससे रिश्ता जोड़ना मेरे विचार से गलत है। पिता की बात से उसका हृदय आहत हुआ परन्तु वह कुछ नहीं बोला। तभी छोटा भाई भी आ गया। तीन दिन की छुट्टी लेकर आया था। उसने नूर मोहम्मद की बात सुन ली। भइया आप जाकर गीता से राखी बंधवा कर आओ न, भाई की बात सुनकर नूर मोहम्मद चला गया। नूर मोहम्मद के जाने के बाद कयामत अली बोला अब्बा अब आप को जाग जाना चाहिए क्योंकि नूर मोहम्मद पागल है। मैं कुछ समझा नहीं बेटा तुम क्या कहना चाहते हो। अब्बा नूर मोहम्मद के हाथ में पैसा नहीं जाना चाहिए। गन्ना का पैसा आप के खाते में आता है। अनाज बिके तो पैसा आप ले। दूध वाले को बता दूँगा कि नूर मोहम्मद को एक पैसा नहीं देगा। हाँ आप को थोड़ा कष्ट करना पड़ेगा, सब्जी एवं माँस आप खुद लायें। न साँप मरे न लाठी टूटे हमें यह भी ध्यान रखना है कि नूर मोहम्मद कहीं चला न जाय। यदि वह घर छोड़ दिया तो एक नौकर की जरूरत पड़ जायेगी। इसलिये उसका पेट भरना जरूरी है ताकि काम करता रहे।

कयामत अली का बात कमाल अहमद को अच्छी लगी। बेटा तुम बुद्धिमान् हो, एक बात तो मैं भूल ही गया—तुमने लड़की देख ली, कैसी लगी तुमने मुझे बताया नहीं। अब्बा हजूर कयामत आगे कुछ नहीं बोला। लड़कियों की तरह शर्मा क्यों रहे हो बेटा—मुझे पता है मेरी पसंद को तुम खारिज नहीं कर सकते।

आप ठीक कहते है अब्बा, लड़की पूनो का चाँद है। तो रिश्ता पक्का कयामत अली ने स्वीकृत में सिर हिला दिया।

नूर मोहम्मद गीता से राखी बंधवा कर आ गया। गीता ने जो मिठाई नूर मोहम्मद को दिया था उसने पिता एवं भाई को देना चाहा, परन्तु दोनों ने नहीं लिया, कहा रखो बाद में खा लेगें। माँ एवं बहन ने वही बात दुहरा दी। नूर मोहम्मद को बेहद कष्ट हुआ परन्तु मुख से कुछ न कह सका। शाम के वक्त नूर मोहम्मद घर आया तो उसने देखा माँ उस मिठाई को गाय की होदी में डाल रही थी। नूर मोहम्मद अपने में रोक न सका माँ के समीप पहुँच गया। अम्मी यदि आप लोग इस मिठाई को न खाते तो मैं खा लेता। इस तरह इसका तिरस्कार करना मेरे विचार से उचित नहीं है। गीता भी मेरी बहन है।

बहन माँ ने बुरा सा मुँह बनाया। हिन्दू की लड़की तेरी बहन कैसे हो सकती है बेटा तू बहुत भोला है। हिन्दू लोग बहुत चालाक होते हैं, तुझे तो धर्म का ज्ञान नहीं, ये लोग हमारा धर्म भ्रष्ट कर देगे। मिठाई में न जाने क्या मिला दे इनका कोई भरोसा

नहीं, इसलिये मैने इसको गाय को खिला दिया।

अम्मी तुम सोचती होगी इसमें जहर मिला है। हो सकता है, शहनाज बेगम बोली। मैंने यह मिठाई खाई है यदि जहर होता तो मैं अब तक मर गया होता नूर मोहम्मद की बात सुनकर शहनाज बेगम को क्रोध आ गया। मुझे आज एहसास हुआ कि तेरे अब्बा जो कहते है वह सही है तू सचमुच पागल है। तेरे अब्बा ने अच्छा ही किया जो तेरी शादी नहीं की। पच्चीस नवम्बर को कयामत अली की शादी है तुझे पता है।

नूर मोहम्मद माँ को जवाब दिये बिना चुपचाप वहाँ से चला गया। एकांत पाकर वह देर तक रोता रहा। किसको सुनाये अपनी पीड़ा इस संसार में कोई नहीं था। माँ के प्रति उसके मन जो श्रद्धा थी आज वह भी लहूलुहान हो गयी। घर में शादी की तैयारियाँ चल रही थी। अपनी पीड़ा भूलकर परिवार की प्रतिष्ठा हेतु वह बडचढ़ कर काम कर रहा था। पच्चीस नवम्बर को कयामत अली का निकाह सम्पन्न हो गया। दो महिने बाद रजिया का भी निकाह हो गया, रजिया ने गाँव में ही भूतपूर्व सूबेदार के इकलौते बेटे से निकाह किया था, उसकी कपड़ा की दुकान थी।

नूर मोहम्मद काम करते-करते थक गया। शाम का समय था—सर मारे दर्द के फटा जा रहा था। पीड़ा जब असहनीय हो गयी तो उठा और चुपचाप गीता के पास चल दिया। द्वार पर आवाज लगाते ही गीता दौड़कर बाहर आ गई। भ-भइया आप गीता का चहेरा खुशी से चमक उठा।

बहन आज मेरा सिर बहुत दर्द कर रहा है कोई दवा हो तो दे दो। नूर मोहम्मद का हाथ पकडकर गीता घर में ले गई बैठो भइया मैं अभी आयी। मम्मी भइया के लिए चाय बनाओ मैं अभी आती हूँ कहकर गीता चली गई।

थोड़ी देर के बाद गीता दवा लेकर आ गई। नूर मोहम्मद ने दवा खाई फिर बोला कितने पैसे लगे। गीता मुस्करायी भइया आज मैं आप से पैसे नहीं लूँगी। मेरे पास आज पैसा है भी नहीं, नूर मोहम्मद के मुख से सत्य निकल गया। नूर मोहम्मद के शब्द गीता के अन्तःस्थल को छू लिया। उसने महसूस किया नूर का नूर उसके पास नहीं है। नूर मोहम्मद के प्रति गीता के हृदय में प्यार था इसलिये उसकी अंतरात्मा कराह पड़ी। अपनी वेदना को अंदर ही अंदर समाये हुऐ बोली—भइया मैं आप से एक प्रश्न करना चाहती हूँ आप वचन दे कि झूठ नहीं बोलेगें। नूर मोहम्मद बड़े गौर से गीता को देखने लगा।

आप क्यों नहीं बोलते भइया?

तुम से झूठ नहीं बोलूगा बहन, मुझे अल्लाह की....। गीता ने नूर मोहम्मद के मुख पर उँगली रख दी। कसम की जरूरत नहीं भइया—मैं जानती हूँ आप झूठ नहीं बोलेगें। भइया यदि आप मुझे प्यार करते हैं तो अपना दुख मुझे बता दें। गीता के प्यार एवं

अपनत्व के सामने नूर मोहम्मद टूट गया। अपने जीवन की कहानी गीता को सुना दी।

नूर मोहम्मद की कहानी सुनकर गीता मौन हो गई। गीता को मौन देखकर नूर मोहम्मद बोला—बहन मैंने फैसला कर लिया है आज ही घर छोड़ दूँगा। भाई, बहन को पढ़ाने के लिये रात में रिक्शा चलाता था, दिन में गाँव आकर खेती एवं जानवरों की देखभाल करता था। इन लोगों के लिये मैने जो किया हो सकता किसी जन्म में मैं उनका ऋणी था। उतर गया बहन अब नूर मोहम्मद घर नहीं जायेगा। तुम मुझे पैसा दे दो एक रिक्शा खरीद लूँ—धीरे-धीरे तुम्हारा पैसा वापस कर दूँगा।

भइया, गीता की आँखों से अश्रु धार फूट पड़ी। भावना के बेग को जब वह रोक न पाई तो नूर मोहम्मद के हृदय से सिर टिका कर रो पड़ी। रोओ मत बहन—तुम जो कहोगी मैं करूँगा, परन्तु इस तरह रोओ मत। मैं तुम्हें रोता नहीं देख सकता।

भइया, मैं आप से रिक्शा का पैसा वापस नहीं लूँगी नं. एक। नं. दो आप हर रोज मुझसे फोन पर बात करेगें। नं. तीन महीने में एक बार मुझसे मिलने आओगे। मुझे वचन दो भइया। नूर मोहम्मद ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

गीता की शादी हो गई, उसके दो बच्चे हो गये। नूर मोहम्मद अपने वचन के अनुसार हर माह गीता से मिलने आता, गीता ने नूर मोहम्मद को शादी करने के लिए प्रेरित किया परन्तु, नूर ने शादी न करने का अपना निर्णय नहीं बदला। गीता के मना करने के उपरान्त भी नूर मोहम्मद गीता, एवं उसके बच्चों के लिए फल मिठाई, कपड़ा आदि लाता। धीरे-धीरे गीता का महसूस होने लगा कि नूर मोहम्मद में कोई महान आत्मा है। महीने में एक दो बार शहर जाती तो वह भी नूर मोहम्मद से मिलती। गीता अच्छी तरह जान गयी कि नूर मोहम्मद ने अपनी वासना को परिवर्तित कर उससे एवं उसके बच्चों से वात्सल्य भाव में पूर्ण कर ली। अब वह निःसकोच नूर मोहम्मद के हृदय से लग जाती उसे एक अलौकिक सुख की अनुभूति होती।

एक दिन नूर मोहम्मद के सर में दर्द होने लगा। गीता ने फोन किया, जब उसने बताया तो तुरन्त गीता एवं उसके पति शहर पहुँच गये। नूर मोहम्मद को गीता तुरन्त अस्पताल ले गई। दवा शुरू हो गई।

नूर मोहम्मद ने आँखें खोली-गीता बहन मेरे पास आओ। गीता नूर मोहम्मद के सिर के पास खड़ी हो गयी। नूर मोहम्मद की आँखें डबडबा आयी—बोला तो शब्द लड़खड़ा रहे थे। बहन तुमने मुझे जो प्यार अपनत्व एवं सम्मान दिया है उससे में मुक्त होना नहीं चाहता। इस धरती पर मैं सिर्फ तुम्हारा ऋणी हूँ बहन क्योंकि तुमने मुझे जो सुख दिया है उसके सामने संसार के सारे सुख तुच्छ है। जगत के सारे रिश्तों की अनुभूति मैंने तुम में कर ली है। मुझे पूर्णत्व प्रदान करने में तुम्हारा योगदान है बहन धरती पर घोर अन्धेरा है। तुम जैसी प्रकाश की किरण देखकर ही सत्य एवं ईश्वर को

समझने की शक्ति मिलती है।

गीता बहन में मुसलमान के यहाँ पैदा हुआ परन्तु मैने धर्म को पुस्तकों में समुदाय में या किसी सीमा में नहीं देखा। प्रेम को मैंने धर्म माना। ईश्वर के दरबार में जाने हेतु आचरण को मैंने रास्ता बनाया। मैंने किसी भी प्राणी का अनहित नहीं किया। मनुष्य होने के नाते गलतियाँ मुझसे भी हुई। जो लोग सत्य को नहीं समझते उनके साथ मैं रह न सका।

भइया आप चुप हो जाइये—गीता नूर मोहम्मद का सिर दबाने लगी—बहन आज जो मैं कहता हो ध्यान से सुन लो-कल नूर मोहम्मद रुक गया। गीता सिसकियाँ लेने लगी, बहन रोओ मत मैं तुम्हें रोता नहीं देख सकता तुम जानती हो न गीता चुप हुई तो नूर मोहम्मद बोला—बहन धरती पर भले ही हम धर्म एवं जाति के कितने रंग बना ले पर इस जगत का ईश्वर एक ही रहेगा। इस सत्य को जो स्वीकार नहीं करेगा वह परमात्मा के दरबार में कभी भी नहीं पहुँच पायेगा। बहन अब मेरे पास समय नहीं है मैं इस घृणित संसार से जा रहा हूँ तुमने मुझे जो प्यार दिया है उसके आधार पर कह सकता हूँ रक्त से मन की रिश्ते बड़े होते हैं। स्त्री-पुरुष के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु वासना है। परन्तु इसे पवित्र करके आत्मा में शुचिता का बोध होता है। मन से बनने वाले रिश्ते सत्य पर केन्द्रित होकर बड़े होते है इसलिये इनकी मिठास अकथनीय होती है। बहन कल्पना को आचरण से जोड़ न पाने का मुझे अफसोस है कहते-कहते नूर की आँखों से आँसू बहने लगे।

गीता नूर के आँसूओं को पोंछते हुये बोली—आप अफसोस न करें मैं आपके विचारों से सहमत हूँ। अब ज्यादा मत बोलो आराम करो भइया, बहन अब मुझे अपने मोह से मुक्ति दे दो नूर मोहम्मद मुस्कराया। बहन मेरे विश्वास को तुमने कभी नहीं तोड़ा है उम्मीद है आज निराश नहीं करोगी। गीता बहन मेरे पास जो थोड़ी बहुत सम्पत्ति है वह तुम्हारी है। मेरी अंतिम इच्छा है मेरे नश्वर शरीर का अंतिम संस्कार तुम स्वयं करोगी। नूर की बात सुनकर गीता रोने लगी।

डॉक्टर को बुलाकर ले आयी। भइया बहकी-बहकी बाते करते हैं डॉक्टर साहब डॉक्टर ने गीता को सांत्वना दिया और नूर मोहम्मद का निरीक्षण करने लगा। फिर इंजेक्शन लगा दिया।

नूर मोहम्मद मुस्कराया गीता बहन इधर आओ—गीता के बालों को सहलाते हुए नूर बोला—बहन अब मैं जा रहा हूँ—मेरे लिये आँसू नहीं बहाना दुनिया वालों ने मुझे पागल समझा परन्तु यदि मैने सत्कर्म किया है तो ईश्वर न्याय करेगा, इस विश्वास के साथ मैं जा रहा हूँ इसलिए नहीं रोना बहन। मैने कभी नमाज नहीं पढ़ी परन्तु मुझे इसका अफसोस नहीं है कहते-कहते नूर मोहम्मद का शरीर काँपने लगा। गीता का हाथ

अपने सिर पर रखकर उसने आँखें बन्द कर ली। डॉक्टर को महान आश्चर्य हुआ क्योंकि उस महान संत नूर मोहम्मद ने बोलते-बोलते नश्वर शरीर छोड़ दिया।

❍❍

नूर मोहम्मद की आत्मा स्वर्ग पहुँची तो स्वयं देवराज इन्द्र ने स्वागत किया पृथ्वी के दस वर्ष बाद एक आत्मा स्वर्ग आयी थी, इसलिए देवताओं में खुशी की लहर फैलना स्वाभाविक था। पवित्र आत्मा को देखने के लिए देव गण इकट्ठा हो गये। यमलोक से स्वयं यमराज नूर मोहम्मद की आत्मा के दर्शन हेतु आये। इन्द्र ने यमराज को समीप बैठाया। कुशल क्षेम की बात के उपरान्त नूर मोहम्मद की बात शुरू हो गई। यमराज के साथ चित्रगुप्त भी आये थे, उन्होंने नूर मोहम्मद की कहानी विस्तार से सुनाई फिर बोले—आप सभी जानते है जब धरती पर कलियुग आता है तो स्वर्ग में आने वालों की संख्या नगण्य हो जाती है। यदि आँकड़े दिखें तो पता चलता है कि धरती के सौ वर्ष में कलियुग में दस आत्मायें द्वापर में बीस तो त्रेता युग में चलीस तो सतयुग में अस्सी आत्मायें स्वर्ग आती हैं। कई कल्पों में मैने इन आँकड़ों में मामूली अंतर देखा है।

समय का प्रभाव पड़ता ही है चित्रगुप्त परन्तु अन्य युगों की अपेक्षा कलियुग में साधना सरल है फिर भी कलियुग का मानव इस सत्य को समझ नहीं पा रहा है।

क्यों? देवराज इन्द्र ने प्रश्न किया। चित्रगुप्त मुस्कराये देवराज कलियुग में जब से लोकतन्त्र स्थापित हुआ तब से जनता नेताओं की नकल करने लगी। राजनीतिक पार्टियाँ फ्री की बातें ज्यादा करती है, परिणाम लोग हराम का खाने के आदी हो गये हैं। आज कल धरती पर हर व्यक्ति बिना मेहनत के धन कमाना चाह रहा है। चरित्र एवं आचरण से पृथक मानव पशु सदृश जीवन यापन कर रहा है। आप हमारे साथ यमलोक चले नेता मंत्री एवं अफसरों के साथ आम जनता की आत्माओं की करतूत दिखाऊँगा। देवराज को चित्रगुप्त की बातें अच्छी लगी, बोले मैं शीघ्र ही यमलोक आऊँगा।

उसी क्षण नारायण-नारायण का जाप करते हुये नारद मुनि पधारे। इन्द्रदेव ने नारद मुनि का स्वागत किया। आसन ग्रहण करो मुनि श्रेष्ठ देवराज बोले। नारद मुनि आसन पर बैठ गये। नूर मोहम्मद की आत्मा के दर्शन की नारद मुनि ने इन्द्र से आज्ञा माँगी। देवराज मुस्कराकर बोले—यह धरती नहीं है नारद इन्द्र लोक है। यहाँ सत्य एवं न्याय के साथ समझोता नहीं किया जाता। आप मुझसे अनुमति माँगे यह मैं उचित नहीं समझता। आप ज्ञानी है यदि हमारी कोई कमी हो तो बताने की कृपा करें।

इन्द्र की बात सुनकर नारद मुनि गद्‌गद हो गये, आप धन्य है देवराज मुझे जब यह समाचार मिला तो स्वयं को रोक न सका, नूर मोहम्मद की आत्मा को देखने की उत्कंठा मुझे यहाँ खींच लाई। आप उस महान आत्मा का दर्शन कर आयें मुनि श्रेष्ठ।

नारद मुनि ने नूर मोहम्मद की आत्मा का दर्शन किया फिर मुक्त कंठ से उसकी प्रशंसा करने लगे।

हे पवित्र आत्मा तुम धन्य हो, स्वयं को राग द्वेष ले निकाल कर जीवन भर प्राणी मात्र की सेवा की। धरती के लोग तुम्हे रिक्शेवाला कह कर पुकारते, पर तुम सदैव मुस्कराते रहे। माता, पिता, भाई बहन रिश्तेदार सभी ने तुम्हारा तिरस्कार किया पर तुमने उफ नहीं की। नारी सौन्दर्य के आकर्षण में बंधे परन्तु उसे इतना पवित्र बना दिया कि उसकी सुगन्ध मुझे चिन्तन करने को विवश कर दिया। कल्पना को आचरण से पृथक करके तुमने कोई पाप नहीं किया। फिर इस कलियुग की सबसे बड़ी यही विशेषता है कि इस युग में मानसिक पाप नहीं लगता। अस्तु तुम्हे स्वयं को कोसने की आवश्यकता नहीं। हे शुद्ध आत्मा तुमने कभी ईमान नहीं छोडा, एक पैसा किराया किसी से अधिक नहीं लिया। धर्म जाति लिंग सभी भेदो से परे सब में सर्वशक्तिमान ईश्वर को देखा। हे विशुद्ध आत्मा तुमने आज स्वर्ग लोक को पावन कर दिया।

देवराज इन्द्र एवं समस्त देवताओं से मिलकर नारद मुनि चले गये तब यमराज बोले—अब मुझे भी जाने की अनुमति दे देवराज। इन्द्र खड़े हो गये मैं शीघ्र ही आप के यहाँ आऊँगा चित्रगुप्त तुम मुझे नेता एवं धरती के अफसरों आदि की आत्माओं से परिचय कराओगे। इन्द्र की बात सुनकर चित्रगुप्त बोले—आपकी हर इच्छा को पूर्ण करने का प्रयास करूँगा देवराज।

❍❍

यमराज ने यमलोक में देवराज इन्द्र का भव्य स्वागत किया। इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले—चित्रगुप्त पृथ्वी के नेता एवं अफसरों की आत्मा से साक्षातकार करवाने में सहायता करो। इन्द्रदेव के साथ चित्रगुप्त चल पड़े। चलते-चलते चित्रगुप्त बोले—हे स्वर्ग पति सर्वप्रथम आपको मैं धरती के विचित्र प्राणी नेता की आत्मा से साक्षातकार करवाता हूँ। यह देखो यह सर्वोच्च नेता की आत्मा है। धरती पर लोग इसे भगवान की तरह पूजते हैं। आज भी धरती पर हजारो प्रतिमायें इसकी स्थापित है। इसने अपने राजनीतिक कौशल के बल पर देश में यश एवं नाम कमाया है। इस नेता ने दुनिया के सामने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया है, परन्तु हमारे बहीखाते में जो लिखा है चित्रगुप्त ने खोल कर कहा—इसने देश एवं समाज को धोखा दिया है। धर्म के नाम पर इसने नफरत फैलाई है, बहुत से लोगों की इसने हत्या करवाई है। बहुत सी रमणियों को इस नेता ने भोगा है।

इस नेता ने जानवरों की माँस पर विवाद कर बहुत से लोगों को लड़ाया परन्तु स्वयं इसने मानव का माँस खाया है। इसके रजिस्टर में बहुत कुछ लिखा है, पूरा पढूगा तो बहुत समय लग जायेगा, सिर्फ इतना काफी है कि नेता कहता और है सोचता और

है और करता कुछ और है। इसलिये इस आत्मा को इस नर्क में रखा गया है ताकि इसके पापों की सजा इसे मिल सके।

चित्रगुप्त आगे बढ़े अब मैं आपको आई. ए. एस. अधिकारी की आत्मा से साक्षातकार करवाता है। आज धरती पर मानव में जो चरित्र का पतन हुआ है उसमें नेताओं के बाद दूसरा नम्बर अफसरों का आता है। चित्रगुप्त मुस्कराये आज आप धरती के किसी भी देश में जाये', युवा वर्ग जो रोजी रोटी की तलाश कर रहा है उससे पूछों तो वह बतायेगा कि हमें ऐसी नौकरी चाहिए जिसमें पूरा वेतन बच जाये। आज का युवा हराम की कमाई की जुगाड़ नौकरी पाने से पहले कर रहा है। यह सब इसलिए हुआ कि जब नेता ही हराम खाने लगे तो अफसर पीछे क्यों रहे। इस आत्मा ने अपने जीवन में पूरा वेतन बचा लिया। हराम की कमाई से कई फैक्ट्री लगवा दी, आज इसके परिवार के पास अरबों की सम्पत्ति है। पैसा कमाने के लिये हत्या एवं देह व्यापार करवाने में इसे जरा भी संकोच नहीं होता था। जाने कितनी बच्चियों को इस नर पिशाच ने अपनी हवश का शिकार बनाया है, गिनती करूं तो बहुत समय लग जायेगा। इसलिये संक्षेप में मैने इस अधिकारी आत्मा का आपको परिचय करवाया है। कहते हुए चित्रगुप्त आगे बड़ गये। देवराज इन्द्र ने उस जगह को देखा जहाँ साँस लेना मुश्किल था।

थोड़ी दूर चलकर चित्रगुप्त रुक गये—देवराज यह एक सुबेदार की आत्मा है। इसने सेना में नौकरी की है। अभी भी अधिकतर लोग जानते है कि सेना ईमानदार होती है परन्तु सत्य इससे भिन्न है। नेताओं एवं अफसरों ने ऐशो आराम के लिए जिस तरह धन एवं कामिनी का प्रयोग किया उसी तरह सेना में अफसर भी बिलासी हो गये हैं। इसका प्रयोग कर इस आत्मा ने कई करोड़ रुपया कमाया है। बड़े-बड़े अफसरों के मनोरंजन हेतु इस आत्मा ने नारी जाति को वस्तु की तरह प्रयोग किया है। अपने पापों की सजा यह इस नर्क में भोग रहा है। यहाँ पर मानव को अपने कर्मो का फल भोगना ही पड़ता है, विधाता के इस विधान को विधाता भी परिवर्तन नहीं कर सकता।

हे देवराज यह चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी है। सर्वोच्च न्यायालय में रहकर ऐसा कमाल किया कि आप सुनकर दंग हो जायेगें। इस कर्मचारी ने अरबों रुपया अपराधियों से लेकर तमाम न्यायाधीशों को देकर फैसला अपने पक्ष में करवाया है। कहने को यह छोटा कर्मचारी था परन्तु सरकार के मंत्री भी इसे सलाम करते थे। अब इस आत्मा को अपने कर्मो का फल मिल रहा है। देवराज इन्द्र का हृदय अत्यन्त कोमल था। यमलोक की सैर करना उन्हें कठिन लगा—कुछ देर सोचते रहे फिर बोले—चित्रगुप्त क्या ये आत्मायें बोल सकती हैं?

नहीं देवराज ब्रह्मा का विधान है कि यहाँ पर कोई आत्मा बोल नहीं सकती। यदि इन्हें वाणी शक्ति प्रदान कर दी जाय तो यहाँ की व्यवस्था भंग करने हेतु ये आत्मायें

संगठित होकर न्याय को प्रभावित कर सकती हैं, अस्तु विधाता भी स्वयं अपने नियम में बद्ध है। हम यहाँ पर किसी के साथ पक्षपात नहीं कर सकते। यहाँ पर जीव सिर्फ अपने कर्मो का फल भोगता है।

चित्रगुप्त धरती पर अनेक धर्म एवं मान्यताऐ है; क्या स्वर्ग एवं नर्क भी धर्म के हिसाब से अलग-अलग हैं। चित्रगुप्त हंस पड़े—देवराज आप जानते हुऐ मुझसे प्रश्न किया है तो उत्तर देना हमारा कर्त्तव्य है। धर्म जाति सीमा भाषा धरती पर अलग-अलग है परन्तु हर जीव की एक ही गति होती है क्योंकि ईश्वर के अनेक नाम होकर भी वह एक है। चित्रगुप्त की बात से सहमत होकर देवराज बोले—चित्रगुप्त अब मैं आगे जाना नहीं चाहता—किसान, मजदूर, डाक्टर, इंजीनियर वैज्ञानिक, व्यापारी, धरती के समस्त मानव आज भौतिक सुख को ही वास्तविक सुख समझने लगे हैं। स्वर्ग नर्क की बातें उनके लिए काल्पनिक लगती हैं। मृत्यु लोक की वास्तविकता को वे भूल गये हैं। परन्तु इस घोर कलियुग में भी नूर मोहम्मद परम ज्ञानी था। उसने मानव शरीर पाकर धरती पर जो पाठ किया उसकी सुगन्ध स्वर्ग तक पहुँची हम देवता भी विधाता के विधान से हटकर स्वयं का पतन कर लेते हैं। इसलिए यह परम आवश्यक है कि जीवन को परमात्मा का वरदान समझकर, परमात्मा तक पहुँचने हेतु सत्य एवं न्याय में विश्वास करें। क्योंकि इसी से हमारी आत्मा पवित्र होती है। चित्रगुप्त धरती पर जो मानव जीवन को महज अभिनय मानकर हर स्थिति में अपने अन्तः स्थल में सत्य को जीवित रखेगा वह कोई भी हो, स्वर्ग का अधिकारी होगा।

आप तो महान ज्ञानी है देवराज धरती के एक विचित्र तमाशे से मैं आपको अवगत करना चाहता हूँ। यद्यपि आप जानते हैं, फिर भी न जाने क्यों मेरा मन कहता है कहूँ। इन्द्र मुस्काराये, चित्रगुप्त मैं अब बैठाना चाहता हूँ। चित्रगुप्त को अपनी गलती का एहसास हुआ, वे देवराज को लेकर यमराज के पास आ गये। यमराज ने पूछा—देवराज यमलोक की सैर कर ली।

इन्द्र मुस्कराये, आप की न्याय व्यवस्था देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। स्यात् धरती पर मानव कुछ इससे सबक ले, तो विश्व का कल्याण हो सकता है चित्रगुप्त तुम कुछ कहना चाहते थे।

देवराज धरती पर कई धर्म है, कई मान्यतायें हैं लोग इनको लेकर लड़ते रहते हैं। परन्तु वे यह नहीं समझ पा रहे हैं कि सत्य एक ही है। इसलिए जो प्राणी चाहे वह किसी भी धर्म का हो, किसी भी देश का हो, वह स्वर्ग का अधिकारी होता है जो सत्य एवं न्याय के पथ पर चलता है। पंडित, ज्ञानी, पादरी, मौलवी, एवं अन्य धार्मिक नेता अपने-अपने पथ को सर्वश्रेष्ठ करने के प्रयास में रत हैं। परन्तु मानवीय मूल्यों को ध्वस्त कर रहे हैं। अस्तु वे सत्य से दूर हैं। इसलिए कलियुग में आज तक कोई आत्मा धार्मिक

नेता, राजनेता एवं अफसर की स्वर्ग नहीं आयी। धर्म भेष नहीं आचरण है। जब तक मानव हृदय दया, करुणा एवं ममता से लबालब नहीं भरेगा तब तक उसको यहाँ आना मुश्किल है, जो मैंने अभी कहा ऐ सारे गुण नूर मोहम्मद में विद्यमान थे। इसलिए उस आत्मा के दर्शन हेतु आप स्वयं आये देवराज।

देवराज मुस्कराये ब्रह्मा का विधान तो स्वयं ब्रह्मा ही जानते हैं। परन्तु मैं आशा करता हूँ धरती पर यमलोक की तरह न्याय एवं नियम की व्यवस्था कायम हो। चित्रगुप्त हंस पड़े—देवराज यदि ऐसा हुआ तो यमलोक के कर्मचारियों को राहत मिलेगी।

कैसे इन्द्र बोले!

काम कम हो जायेगा—चित्रगुप्त हंस पड़े। देवराज भी मुस्काकर बोले—यमलोक का काम कम हुआ तो स्वर्ग लोक का काम बढ़ जायेगा, फिर भी हमें खुशी होगी। इन्द्रदेव की बात सुनकर सभी हंस पड़े।

❑❑❑

निर्णय

गोमती नदी के तट पर लगभग तीन हजार आबादी वाला गाँव है रसूलपुर। हिन्दू मुसलमान दोनों सम्प्रदाय के लोग सदियों से भाई चारे का मिशाल कायम रखा है। लगभग तीस प्रतिशत मुस्लिम यहाँ निवास करते हैं। इस गाँव की प्रगति ही इस सूक्ति की द्योतक है कि यहाँ के लोग कर्मठ है। एक दो घर छोड़ दे तो पूरे गाँव में सबके पक्के मकान है। अच्छी सड़के सरकारी एवं प्राइवेट स्कूल स्वास्थ्य केन्द्र एवं दैनिक जीवन में काम आने वाली हर चीज इस गाँव में सहजता से प्राप्त हो जाती है। गाँव में मंदिर है मस्जिद है। ज्यादातर लोगों ने शौचालय भी बनवा लिया है। कुल मिलाकर रसूलपुर को भारत का आदर्श गाँव कह सकते हैं।

इस गाँव में रमजान नाम के एक सज्जन निवास करते हैं। उम्र लगभग पच्चहत्तर वर्ष की है। रमजान के दो पुत्र करीम, एवं सलीम दो बेटी याशमीन एवं सलमा है। रमजान के पास तीन एकड़ खेती है इनकी खेती देखकर किसी को भी आश्चर्य हो जायेगा। धान हो या गन्ना दूर से देखकर ही पता चल जायेगा कि यह खेत रमजान का है। कठिन मेहन्त के बल पर रमजान ने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी परिणाम उनके दोनों बेटे सरकारी कर्मचारी हैं, बड़ा-बेटा डिग्री कालेज में प्रोफेसर है तो छोटा पुलिस इंस्पेक्टर है। दोनों बेटियाँ इण्टर कालेज में अध्यापक हैं। रमजान का परिवार खुशहाल है परन्तु रमजान का मन इस संसार में नहीं लग रहा है। जिन बच्चों को उन्होंने कठोर परिश्रम करके पाला उन्हीं से वैचारिक मतभेद हो गया। सेवा श्रद्धा एवं प्यार की भावना जब संतान खो दे तो उससे मोह भंग हो जाना स्वाभाविक है।

दो वर्ष पूर्व की बात है, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का दिन था। गाँव में मंदिर के अलावा एक व्यक्ति अपने दरवाजे पर जन्माष्टमी का आयोजन कर रहा था। रमजान का उससे सामना हो गया। यद्यपि वह कुछ दिन से रमजान से नहीं बोलता था, परन्तु आज उसने सलाम किया और कहा—चाचा जी आना जरूर। सरल हृदय रमजान ने हाँ कह दी। घर पर पहुँचे तो बड़ा बेटा बोला—अब्बा वहाँ नहीं जाना। रमजान कुछ देर सोचता रहा फिर बोला—मैंने हाँ कहा है। बेटा झल्लाकर चला गया। परिवार से रमजान का मोह भंग हो चुका था, परन्तु उन्हें अपने कर्त्तव्य का बोध था।

रमजान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव में चले गये। कार्यक्रम खत्म हुआ तो घर पहुँचे। बच्चे सो गये थे, रमजान ने दरवाजा खटखटाया मोबाइल से फोन किया परन्तु घर से

कोई बाहर नहीं निकला। निराश होकर उन्होंने गोशाला में लुंगी बिछाई और अल्लाह की मर्जी समझ कर रात काट दी। सुबह हुआ तो अपने दैनिक कार्य में व्यस्त हो गये। दबी जुबान से जब उन्होंने बेगम से चर्चा की तो वे बोली—अगर मुझे बताया होता तो मोबाइल साथ रख लेती मैं छत पर सोयी थी। रमजान को दुःख तो हुआ पर किसी तरह मन को समझा लिया।

दूसरे दिन रमजान की दोनों बेटियाँ अपने-अपने घर चली गई। छोटा बेटा परिवार के साथ चला गया। छोटे बेटे को रमजान की बीबी बेइन्तहा प्यार करती थी। प्रोफेसर साहब ने भी शहर में घर बना लिया था; परन्तु रमजान के कारण ज्यादातर गाँव में ही रहते थे। रमजान का जन्माष्टमी में जाने से वे नाराज हुये थे इसलिए पिछले दस दिन से वे भी घर नहीं आये। आज रमजान बेहद दुखी हो गये। फोन पर बड़े बेटे से बात की तो वह बोला—अब्बा आप तो कहा सुना मानते नहीं, अपनी मर्जी की करते हैं फिर भी यदि आप उचित समझे तो सुबह मेरे पास चले आयें।

बेटे की बात सुनकर रमजान गहरे सोच में डूब गये। जब मानव हृदय असीम वेदना से छटपटाने लगता है तो ऐसी स्थिति में हमें उसकी याद आती है जो हमें प्यार करता हो। आज रमजान को रमा की याद आ गई। रमा उनका बहुत आदर करती थी। रमा रामदीन कोरी की बहू थी। प्राईमरी स्कूल में सहायक अध्यापक थी। रमजान एवं रामदीन दोनों बचपन के मित्र थे। उनकी दोस्ती आज भी कायम थी। यद्यपि बीच में कई समस्यायें आयी परन्तु उन दोनों के शुद्ध प्रेम के सामने हार गई।

तीन वर्ष पूर्व की बात है। दोनों मित्र चारपाई पर बैठ कर चाय पी रहे थे। रमा का तीन वर्ष का बेटा उछल कूद कर रहा था। उसका हाथ रमजान के गिलास से लगा चाय रमजान के पैर को भिगो दिया। रमा दौड़कर आई, बेटे को उठाकर थप्पड़ मार दिया, बच्चा रोने लगा।

रमजान ने रमा का बेटा गोद उठा लिया, वे अपनी पीड़ा भूल गये। बिटिया बच्चे को मारना गलत है, तुम तो अध्यापक हो रमजान मुस्कराए, बाबू जी रमा के मुख स्वमेव यह शब्द निकल गया। रमा ने बाबू जी तो कह दिया पर स्वयं चिंतन में पड़ गई क्योंकि वह रमजान को चाचा जी कहकर पुकरती थी। बाबू जी शब्द रमजान के हृदय को भेदता चला गया न जाने क्यों उन्हें एक बेहतरीन अनुभूति हुई। ऐसी विशुद्ध हृदय को शीतलता प्रदान करने वाली अनुभूति उन्हें ईश्वर के ध्यान में मग्न होकर भी नहीं हुई थी। रमजान का शरीर ही नहीं अपितु आत्मा भी बाबू जी शब्द से सराबोर हो गई। अपने भावो पर नियंत्रण पाने के उपरान्त बोले—रामदीन आज से रमा बेटी मुझे बाबू जी ही कहकर पुकारेगी यह मेरी हार्दिक इच्छा है।

कैसी बात करते हो रमजान, आखिर मेरी बहू भी हो तुम्हारी बेटी सदृश है, बेटी

रमा आज से तुम रमजान को बाबू जी कहकर ही पुकरना। अच्छा पिता जी कहते हुए रमा रसोई में चली गई। दूबारा चाय बनाकर लायी, रमजान चाय पीने लगे।

बाबू जी डॉक्टर को जरूर दिखा देना। रमजान ने पैर को दिखाते हुए कहा, बेटी चिंता न करो, मैं एक दम ठीक हूँ। तभी रामदीन का बेटा रामरतन आ गया। रमा ने रमजान को डॉक्टर के पास भेजवा दिया। रमजान इंकार न कर सका।

❍❍

दुःखी मन से रमजान रामदीन कोरी के घर पहुँचे। शाम के चार बज रहे थे। रामदीन घर पर नहीं थे कल उनके पेट में दर्द हुआ था। रामरतन उनको आज जिला अस्पताल ले गया था, रमा ने रमजान को बताया। रमजान बैठ गया। रमा चाय बना लाई।

चाय पियो बाबू जी—रमा बोली परन्तु रमजान गुमसुम किसी दूसरी दुनिया में खो गये, उनके चेहरे की उदासी रमा बरदास न कर सकी। बाबू जी आप परेशान हैं क्या बात है, रमा गम्भीर हो गयी। रमजान अपनी पीड़ा को अंदर छुपाये अन्दर ही अंदर टूट रहे थे। दुनिया में कोई नहीं था जो उनके दुःख को समझे। रमा का अपनत्व रमजान को भावों में बहा ले गया, उनकी आँखों से अश्रुधार बहने लगी।

बाबू जी आप रो रहे हैं—रमा आँसू पोंछते हुए बोली मुझे बताओ बाबू जी आपको क्या दुःख है।

रमजान ने गहरी साँस ली—बेटी तुम विदुषी हो। मनुष्य जो कर्म करता है उसका फल तो उसे भोगना ही पड़ता है। दोष किसी का नहीं सब मेरे कर्मो का फल है बेटी—

बाबू जी आप अपना दुःख मुझे बताएं—यदि मेरे वश में हुआ तो आपको दुःखी नहीं होने दूँगी। मैं आपको वचन देती हूँ।

बेटी रमजान ने गहरी साँस ली। मैं जानता हूँ बेटी तुम्हारा ह्रदय विशाल है इसलिए मैं आज तुम्हें अपनी पीड़ा सुनाए देता हूँ। फिर रमजान ने अपनी पीड़ा जो ह्रदय में चक्रवात की तरह घूम रही थी रमा के सामने कह दी। बेटी करीम कहता है शहर में आकर रहो, परन्तु मैं वहाँ जाना नहीं चाहता। बेटी मनुष्य बहुत कुछ बरदास कर सकता है, परन्तु जब उसकी संतान उसका सम्मान न करे तो दिल टूट जाता है तब असहनीय दर्द होता है। जिस परिवार के सृजन में पूरा जीवन अर्पित कर दिया, उसका तिरस्कार जीवन से मोह भंग कर देता है।

करीम घर पर रहकर पूरी जिम्मेदारी निभा रहा था, उसके बच्चे भी गाँव आते जाते रहते थे, परन्तु आज ग्यारह दिन हो गये न वह खुद आया न ही किसी बेटे को भेजा। कल शाम को मैंने फोन किया तो कह रहा था शहर चले आओ। बिटिया मैं वहाँ नहीं जाऊँगा

जब तक हाथ पाव चलेगा, बनाऊँगा खाऊगा। जब थक जाऊँगा तो कहीं भी प्राण छोड़ दूँगा। कहते-कहते रमजान का स्वर भर्रा गया, आँखों से अशु धार बहने लगी।

बाबू जी आप दुखी न हो जब तक मैं जीवित हूँ आप स्वयं को अकेला न समझे। एक बात मैं आप से पूछ सकती हूँ?

एक नहीं सौ बात पूछ सकती हो बेटी।

बाबू जी मेरे सिर पर हाथ रखकर कहो कि आप झूठ नहीं बोलोगें। रमजान ने अपना हाथ रमा के सिर पर रख दिया। खुदा की कसम बेटी मैं तुम से झूठ नहीं बोलूगा।

बाबू जी आप मुझे बेटी समझते हैं न।

क्या तुम्हे संदेह है बेटी।

नहीं रमा बोली—

यदि आप मुझे बेटी तुल्य समझते हैं तो आज से आप मेरे घर पर रहेगें। मैं आपकी सेवा करूंगी बाबू जी।

रमजान को लगा कहीं वे सपना तो नहीं देख रहे हैं। अल्लाह तेरा संसार कितना विचित्र है। क्या सोच रही हो बाबू जी—रमा बोली। अब सोचने को बचा ही क्या है बेटी—आज से तुम ही मेरी वास्तविक बेटी हो। देह से बनने वाले रिश्ते नाते देह की सर्दी गर्मी से जुड़े होते हैं, इसलिए इनमें परिवर्तन होना लाजमी है। परन्तु बेटी तुम से मेरा मानसिक रिश्ता है। मुझे अल्लाह पर पूर्ण विश्वास है स्यात् वह जो कर रहा है उसी में मेरा कल्याण है। तभी रामरतन अपने पिता रामदीन को लेकर आ गया।

रामदीन अब तुम्हारी तबियत कैसी है रमजान बोला।

एक दम ठीक हूँ रमजान भाई-पेट में हल्का सा दर्द हुआ था रमा बेटी मानी नहीं तो डाक्टर को दिखा आया।

रमा बिटिया ने ठीक ही किया—शत्रु एवं बीमारी से सदा सर्तक रहना चाहिए। रमा ने चाय बनाई—फिर बातें होने लगी। रमा ने जब यह कहा कि आज से बाबूजी भी हमारे साथ रहेंगे तो रामदीन एवं रामरतन चौंक गये। रमा ने परिवार के प्रति जो सेवा एवं निष्ठा प्रदर्शित कि थी उसके सामने रमा के इस फैसले पर दोनो कुछ न बोल सके। उन्हें इस तरह चुप देखकर रमजान बोले—रामदीन मैं जा रहा हूँ।

नहीं रामदीन खड़े हो गये। मेरी बहू रमा ने जो फैसला किया है मुझे स्वीकार है रामरतन भी रमजान से न जाने की आग्रह करने लगा।

आप लोगों ने मुझे जो प्यार एवं सम्मान दिया है उसके लिए मैं कुछ कहूँ मेरे पास शब्द नहीं है। परन्तु गाँव के लोग इसे किस दृष्टि से देखेंगे इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

रामदीन सहज भाव से बोले—मैं तो पढ़ा लिखा नहीं हूँ, परन्तु मेरे विचार से कपड़ा से पैन्ट, शर्ट धोती, कुर्ता पाजमा बनता है उसी तरह धरती पर मनुष्य से ही धर्म एवं जाति बने है। इसलिए मनुष्यता को ही मैं सच्चा धर्म मानता हूँ। जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का निंवाहन करता है सत्य को आचरण में शामिल करता है वही परमात्मा को प्रिय हो सकता है। रमजान भाई हमारी तुम्हारी दोस्ती बहुत पुरानी है। मेरी कथनी एवं करनी में अन्तर हो तो तुम मुझे बताओ।

रमजान कुछ देर मौन रहा फिर बोला—रामदीन भाई मुझे तुम्हारी तरह ज्ञान की बातें नहीं आती—परन्तु अपना हित अनहित तो जानवर भी समझते हैं। जिस परिवार के लिए मैंने दिन रात का भेद नहीं किया उसने ही मुझे तिरस्कृत कर दिया। धन्य है रमा बेटी—जिसने एक असहाय दूसरे धर्म के व्यक्ति को सिर्फ बाबू जी ही नहीं कहा अपितु पिता तुल्य आदर एवं स्नेह दिया, आज से मैं अपना शेष जीवन रमा बेटी के हवाले करता हूँ। आज घर जाऊँगा कल सुबह प्रोफेसर साहब करीम को बुलाकर घर की जिम्मेदारी सौंप कर आ जाऊँगा कहते-कहते रमजान का गला भर आया। तभी रमा आकर बोली—बाबू जी खाना बना रही हूँ खाकर जाना। रमजान कुछ कह न सका बस एक बालक की तरह चुप चाप बैठ गया।

खाना खाकर रमजान घर पहुँचा। रात के आठ बज चुके थे। चुपचाप चारपाई पर लेट गया। कुछ देर तक सोचता रहा फिर फोन निकालकर करीम का नम्बर लगा दिया। बेटा कल सुबह घर आ जाओ मैं थक चुका हूँ अब कहीं एकांत में जाकर अल्लाह का ध्यान करूंगा। यह बात तुम सलीम को की बता देना।

अब्बा आपकी तबियत तो ठीक है करीम बोला।

हाँ मैं एकदम ठीक हूँ कल जरूर चले आना कहकर रमजान ने फोन काट दिया।

❍❍

करीम सुबह ही घर पहुँच गया। करीम के साथ उसकी बेगम एवं छोटी बेटी भी थी। दुआ सलाम के बाद करीम बोला—अब्बा आप ठीक है, कल मुझे आपकी बहुत याद आयी! रमजान मन ही मन सोचने लगा कैसा समय आ गया है अब संतान भी राजनीतिज्ञों की तरह बातें करने लगी। फिर रमजान को लगा यह कोई नई बात नहीं सादियों से सत्य एवं ईमानदारी को प्रताड़ना मिलती आयी है। क्या सोच रहे हो अब्बा करीम बोला।

कुछ नहीं बेटा बस अब मेरा मन संसार से भर चुका है, सोचता हैं कहीं एकांत में अल्लाह की इबादत करूं। इसलिए मैने तुम्हें बुलाया है। अब मैं जा रहा हूँ।

कहाँ जाओगे अब्बा।

मस्जिद में—करीम के समझ में नहीं आ रहा था कि रमजान क्या कह रहे हैं। परन्तु इतना जानता था कि अब्बा जो ठान लेते हैं उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। इसलिए इस वक्त उनसे उलझाना उचित नहीं समझा। मुस्कराकर बोला—चलो मैं आपका सामान मस्जिद तक पहुँचा दूँ।

रमजान ने पहले से ही अपना सामान इकट्ठा कर रखा था निकाला और चल पड़े पीछे-पीछे करीम भी, रामदीन कोरी के घर पहुँच कर रमजान रुक गये तो करीम को आश्चर्य हुआ। बोला—अब्बा आप तो मस्जिद जाने की बात कह रहे थे।

रमजान हंस पड़े—बेटा मेरे लिए रामदीन का घर ही मस्जिद है। करीम आवाक था—रमजान ने आवाज लगायी, रमा बेटी मैं सामान लेकर आ गया, रमा के कानो में जैसे आवाज पहुँची वह दौड़कर आ गई। उसके चेहरे पर जो हर्ष का भाव था उसे देखकर रमजान को असीम शान्ति की अनुभूति हुई। रमा सामान लेकर अन्दर चली गई तब रमजान करीम से बोला—बेटा अब तुम आओ, आज से मैं रामदीन के यहाँ रहूँगा।

पिता की बात सुनकर करीम क्रोधावेश में काँपने लगा—अब्बा मैं जा रहा हूँ आज से हमारा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। अपने परिवार के मुख पर जो कालिख आपने पोती है इसके लिए खुदा कभी माफ नहीं करेगा।

बेटा करीम तुम अपने मुख से खुदा का नाम मत लो—तुम जैसे लोगों ने खुदा धर्म एवं भगवान को कठपुतली बना दिया है। जिस व्यक्ति को खुदा से प्यार हो जाता है वह अपने फर्ज से मुँह मोड़ नहीं सकता। प्रोफेसर साहब खुदा मस्जिद में नहीं, नेक एवं ईमान वाले इंसान के हृदय में निवास करता है।

अब्बा, मुसलमान होकर आप हिन्दू धर्म के उपासक हो गये हैं। मैं गाँव के मुसलमानों को आप के बारे में बताकर काजी साहब से न्याय की अपील करूंगा। भाई, बहन पूरे परिवार से फोन पर करीम ने वार्त्ता की, सभी ने एक मत से इसे अपनी तौहीनी माना, और रमजान को किसी भी तरह अपने घर लाने की वकालत की। करीम गाँव के मुसलमानों से मिला—धर्म की दुहाई दी तो कुछ लोगों का खून खौल गया, परन्तु कुछ लोगों ने इस मुद्दे को धर्म के चश्मे से न देखने की बात कही।

काजी मोहम्मद जाहिद के पास करीम के साथ कई मुसलमान पहुँचे। काजी साहब ने शान्ति से उनकी बात सुनी परन्तु तुरन्त कोई उत्तर न दे सके। काजी साहब को मौन देखकर करीम बोला—आप कुछ बोलने क्यों नही। काजी साहब मुस्कराए—करीम मेरे विचार से रमजान से जाकर क्षमा मांगों। उनका हृदय तुम लोगों ने दुखाया है। एक दिन वे मेरे पास आये थे, उनके प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दे पाया।

मैं दूँगा एक युवक हाथ उठाकर बोला—काजी साहब मुस्कराए दाढ़ी बाल बड़ाकर टोपी लगा लेने से कोई मुसलमान नहीं हो जाता। मुसलमान वही है जिसके पास ईमान

एवं इंसानियत हो, रमजान में मैंने इन चीजों को पाया है। इसलिए मैं उन्हें शिक्षा देने में असमर्थ हूँ। हाँ आप सभी से निवेदन करता हूँ कि आप सब अब पंचायत, पुलिस की बातें छोंड रमजान के पास जाऐं। रमजान की इच्छा को मैं अल्लाह की मर्जी समझता हूँ। काजी साहब की बात के समर्थन में अधिकांश लोग आ गये। सब ने एक स्वर में कहा प्रोफेसर साहब आप अपने अब्बा को मनाऐ, यदि वे रामदीन के घर रहना चाहते हैं तो इस्लाम इसमें दखलंदाजी नहीं कर सकता।

करीम घर पहुँचकर बीबी को सारी बातें बतायी—अब क्या किया जाय—बेगम बोली जैसा काजी साहब ने कहा वही ठीक है हमें जल्दबाजी नहीं करना चाहिए। रामदीन की बहू रमा बहुत दिनों तक फरिश्ता बनी नहीं रह सकती। जब अब्बा को वे लोग तिरस्कृत करगें तो स्वयं घर आ जायेंगे इसमें अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं करीम को बेगम की बातें अच्छी लगी। माँ भाई बहन सभी ने इसका अनुमोदन किया। रमजान रामदीन के यहाँ रहने लगे।

❍❍

रमजान को लेकर गाँव में तरह-तरह की बातें होने लगी। दो चार लोग जहाँ पर बैठते वहाँ अकसर रमजान की चर्चा शुरू हो जाती। रमजान जब सामने आते तो लोग चुप हो जाते। रमजान अब पहले से अधिक स्वस्थ एवं प्रसन्न थे। यदा-कदा ही वे पहले भी नमाज में शामिल होते थे अब भी उनका वही नियम था। गाँव में लोगों के सुख दुख में वे जरूर जाते थे। दुर्गा पूजा, जन्माष्टमी एवं रामनवमी को वे मंदिर पहले की तरह अब भी जाते। उन्हें इस बात का बेहद दुख था कि अब लोग रामलीला के प्रति उदासीन हो गये हैं।

गाँव में बड़े धूमधाम से दुर्गापूजा का आयोजन होता था। तैयारियाँ चल रही थी। दुर्गापूजा समिति से किसी बात को लेकर पंडित रामस्नेही पाठक नाराज थे। हर वर्ष की तरह गाँव के मुसलमानों ने दुर्गापूजा के लिए चंदा ही नहीं अपितु पूरा सहयोग दिया। रमजान को जब पंडित रामस्नेही के नाराज होने की बात ज्ञात हुई तो वे पंडित जी के पास पहुँचे। पंडित जी ने आदर के साथ रमजान को बैठाया। दुआ सलाम के बाद रमजान बोले—पंडित जी सुना है इस वर्ष आप दुर्गा पूजा में भाग नहीं लेगें।

आप ने ठीक सुना है।

क्या आप मुझे कारण बतायेगें—रमजाने ने कहा। रामस्नेही मुस्कराये आपको याद है वर्षो पहले हमारे गाँव में रामलीला हुआ करती थी। उस समय बच्चों में जो उत्साह होता था वह आज खत्म हो गया है। राम के आदर्श की लोगों को शिक्षा मिलती थी। बच्चे राम की पितु भक्ति भाइयो के प्रेम से प्रभावित होते थे। उस समय के बच्चे होनहार थे। आज उस समय के बच्चे अपने गाँव में सरकार के लगभग हर विभाग में

कार्यरत है। जब से दुर्गा पूजा आयी ध्वनि प्रदूषण के सिवा कोई लाभ नजर नहीं आया। मैंने अध्यक्ष महोदय से कहा—दुर्गापूजा सिर्फ उत्सव न होकर ज्ञान प्रदान करने की पहल करें, परन्तु वे इस विषय पर कमेटी में चर्चा के लिए तैयार ही नहीं। इस कारण मैंने स्वयं को कमेटी से अलग कर लिया। अब आप ही बताये क्या मैंने गलत किया।

नहीं रमजान ने पंडित रामस्नेही का समर्थन किया, पंडित जी की बात उन्हें जायज लगी। रमजान ने यह बात मुसलमानों को बताई तो उन्होंने अध्यक्ष महोदय पर दबाव बनाया। आखिर कमेटी इस विषय पर चर्चा को तैयार हुई। कार्यक्रम में प्रवचन एवं संत महात्माओं की कथायें भी शामिल की गई। ध्वनि प्रदूषण को नियन्त्रित किया गया। इस तरह रसूलपुर की दुर्गा पूजा कुछ अलग ही नजर आई।

समय चलता रहा, रमजान के परिवार वालों को निराशा के सिवा कुछ नहीं मिला। दूसरी तरफ रमा के प्रेम एवं सेवा से रमजान इस तरह बंध गये कि वे अपने परिवार को भूल गये। करीम एक दिन रमजान के पास आया क्षमा मांगी और घर चलने की आग्रह की। रमजान ने मुस्कराकर कहा—अब मेरा घर वहीं है जहाँ रमा है, रमा बिटिया ने स्नेह की डोरी से मुझ बांध लिया है, इसे तोड़ना मेरे लिए कठिन है। तुम लोग सदा सुखी रहो मैं अल्लाह से सदा प्रार्थना करता हूँ। करीम हार मान कर चला गया।

सलीम आया, रमजान की दोनों बेटियाँ आयीं तथा गाँव के कई लोगों ने रमजान को समझाने की कोशिश की पर व्यर्थ, रमजान ने निर्णय नहीं बदला। परिवार वाले हार गये। प्रेम एवं सेवा के सामने रक्त के रिश्ते धरासायी हो गये।

❍❍

रामदीन कोरी के यहाँ रमजान के इक्कीस वर्ष बीत गये। नयी पीढ़ी जवान हो गई। रमा ने बाबू जी शब्द के अर्थ को सार्थक कर दिया। आज की संतान माँ बाप के प्रति संवेदनहीन होती जा रही है ऐसे समय में रमा ने समाज में जो मिशाल कायम की उसके प्रति आभार व्यक्त करने का लेखक के पास शब्द नहीं है। वर्षा ऋतु प्रातःकाल रमजान घूमने को जाते थे। आज भी वे घूमने निकले, घर से निकलकर सड़क के करीब पहुँचे कि अचानक पैर फिसल गया। डंडा हाथ से छूट कर गिर गया, पास पत्थर पड़ा था रमजान का सिर पत्थर से टकरा गया। कुछ देर तड़प कर उनके प्राण पखेरु उड़ गये।

गाँव में आग की तरह यह समाचार फैल गया। रमजान के शव से लिपटकर रमा रो रही थी। बाबू जी उठो तुम्हारे बिना हम जी नहीं पायेगें। पिता की मृत्यु का समाचार पाकर करीम तुरन्त रामदीन कोरी के घर पर पहुँचा। गाँव के लोग इकट्ठा हो गये। रमा रो-रोकर बेहाल थी, अब चुप हो जाओ बिटिया—पंडित रामस्नेही पाठक ने रमा के सिर पर हाथ रखते हुये कहा—तुमने पुत्री का कर्त्तव्य पूरा किया है बेटी, इतिहास तुम्हें सदा

याद रखेगा, अब रमजान के अंतिम संस्कार की तैयारी करो, पंडित रामस्नेही की बात सुनकर रमा को याद आया। एक दिन रमजान का सिर दर्द कर रहा था वह उनके सिर में तेल लगा रही थी। जाओ बिटिया अब मैं ठीक हूँ बाबू जी बस थोड़ा और थोड़ा और इस तरह एक घंटा हो गया। रमा की सेवा एवं श्रद्धा से रमजान भाव विह्वल होकर बोले—बेटी मेरे मन पर ही नहीं इस तन पर भी अब तुम्हारा अधिकार है, इसलिए जब मैं मरू तो तुम ही मुझे मुखाग्नि दोगी बेटी। ऐसा मत कहो बाबूजी रमा रो पड़ी। रोओ मत बेटी मृत्यु संसार का सत्य है इसे स्वीकार करना ही पड़ेगा इसलिये पुत्री वचन दो, मैने जो कहा है उसे पूरा करोगी। रमा इंकार न कर सकी।

रमा को उस दिन की याद आ गई, उसने बड़ी मुश्किल से खुद को सम्भाला फिर अपने पति से बोली—अंतिम संस्कार की तैयारी करो। बाबूजी के आदेशानुसार मैं उन्हें मुखाग्नि दूंगी। रमा की बात सुनकर रामरतन चौंका और पंडित रामस्नेही भी गहरे चिंतन में खो गये। रमा रमजान का अंतिम संस्कार हिन्दू धर्म के अनुसार करेगी यह बात मुसलमानों को अच्छी नहीं लगीं। दोनों समुदाय के लोग इस विषय पर विचार करने हेतु इकट्ठा हो गये।

पंडित रामस्नेही पाठक के दरवाजे पर पंचायत का आयोजन किया गया हिन्दूओं का पक्ष रखने का दायित्व पंडित रामस्नेही को सौंपा गया। सभा में खड़े होकर बड़ी विनम्रता से बोले—मेरे गाँव के भाइयों, बहनों मैं आप सब को हाथ जोड़कर नमन करता हूँ। आप सभी जानते हैं कि रमजान पिछले इक्कीस वर्ष से रामदीन कोरी के यहाँ रहे। आखिर क्यों? यह प्रश्न आप सभी के मन में जरूर उठता होगा। मेरे विचार से इसका मूल कारण रमा है, रमा बिटिया के स्नेह एवं सेवा ने सिद्ध कर दिया कि रक्त से मन के रिश्ते बड़े होते हैं, मैं इस रिश्ते को सलाम करता हूँ। मेरी बुद्धि छोटी है, इसलिए मैं काजी साहब मोहम्मद जाहिद से निवेदन करता हूँ कि आप इस गम्भीर समस्या का निदान अपने ज्ञान एवं विवेक से करें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका निर्णय ईश्वर का निर्णय समझकर गाँव के सभी लोग स्वीकार करेगें, क्योंकि आपका निर्णय हिन्दू मुसलमान से ऊपर उठ मानव मूल्यों को संसार में स्थापित करेगा। यदि किसी सज्जन को इस विषय पर कुछ कहना है तो वह खड़ा होकर कह सकता है।

अपनी बात सभा में रखकर पंडित रामस्नेही बैठ गये, जनमानस की नजर काजी साहब पर केन्द्रित हो गयी। महान विचारक तत्वदर्शी काजी मोहम्मद जाहिद सभा के सामने खड़े हो गये। मन ही मन उन्होंने अल्लाह से प्रार्थना कि हे ईश्वर मुझे न्याय करने की शक्ति दो, मैने आज तक जो किया है सब तेरी प्रेरणा से ही सम्पन्न हो पाया है मैं तो निमित्त मात्र हूँ। हे जगपालक इस परिस्थिति में मेरी मदद करो। काजी साहब की प्रार्थना खुदा तक पहुँच गयी उनके मुख मंडल पर अलौकिक तेज दिप्तमान हो गया।

प्रिय ग्रामवासियों, आत्मीय भाइयों बहनों एवं माताओं पंडित राम स्नेही ने जो मेरे लिए शब्द कहे मैं उसके योग्य नहीं हूँ। मेरे पास भी बुराइयाँ है परन्तु इंसान वही है जो अपने को सुधारता जाय। आप सभी रमा बिटिया की कहानी जानते हैं, मैं उसे दुहराना नहीं चाहता। रमजान मेरे पास यदा-कदा आते थे, एक दिन उन्होंने मुझसे कहा था—पिता को संतान से सिर्फ भरण-पोषण नहीं अपितु प्यार एवं सम्मान की आकांक्षा होती है। जब औलाद पिता के पवित्र भावनाओं को नजरअदांज कर देती है तो पिता को जो पीड़ा होती है वह अकथनीय है। ऐसी संतान से बेहतर है अल्लाह संतान ही न दें। एक तरफ आचरण विहीन संतान दूसरी तरफ निःसंतान दोनों दुखों में कौन बड़ा है आप निर्णय करे। मैं उनके इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया।

रमजान का हृदय उनके प्रियजनों ने तोड़ दिया था। यदि उसे रमा का सहारा न मिलता तो स्यात् आत्महत्या कर लेता। जीवन जब घोर तिमिर से घिर जाय और निकलने का रास्ता न मिले तो मानव के सोचने की शक्ति क्षीण हो जाती है। ऐसी स्थिति में लोग आत्महत्या करते हैं। मेरे विचार से जिस तरह शिशु का पालन-पोषण माँ एवं बाप करते हैं उसी तरह वृद्धा अवस्था में माता-पिता का पालन-पोषण करना संतान का कर्त्तव्य है। बाल अवस्था में बच्चा माता-पिता पर तो वृद्धा अवस्था में पिता पुत्र पर आश्रित होता है। जिस तरह शिशु पर माता-पिता का अधिकार होता है उसी तरह रमजान पर आज सिर्फ रमा बिटिया का अधिकार है। रमा ने रमजान को जो प्यार एवं सम्मान दिया उसकी तुलना में धर्म छोटा हो गया है। अस्तु मैं रमा बिटिया की भावना का कद्र करते हुए रमजान के शव को रमा बिटिया के हवाले करता हूँ। किसी को प्रश्न करना है तो कर सकता है।

काजी साहब ने निर्णय सुना दिया सुनकर लोग भाव विह्वल हो गये। गाँव की मुस्लिम एवं हिन्दू महिलाएँ भी सभा में मौजूद थी। सबकी आँखें नम हो गई। उसी वक्त पंडित रामस्नेही सभा में खड़े होकर बोले—काजी साहब आप का निर्णय विश्व में मानव मूल्यों को स्थापित करने में सहायक होगा। मेरे साथ आप सभी काजी साहब की जय-जयकार करें। पंडित रामस्नेही की बात सुनकर काजी साहब खड़े होकर बोले—आप लोग मेरी नहीं रमा बिटिया एवं अपने गाँव रसूलपुर की जय-जयकार करें।

❑❑❑

मंजिल

प्रतीची का पथिक यात्रा समाप्त करने को आतुर था। संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। पक्षी गण अपने मंजिल की तरफ कतार बद्ध उड़ रहे थे। वर्षा ऋतु का अंत होने वाला था। मंद-मंद बहती वायु मन को प्रफुल्लित कर रही थी। गगन की स्वच्छता बरबस मन को खींच रही थी। प्रकृति की मनोरम छटा देखकर पथिक की बेचैनी कम हो गई। मंजिल ने उसे किस लिए बुलाया है उत्तर जानने को हृदय व्यग्र था। मंजिल दिखायी पड़ी तो पथिक की साँसे तेज हो गई।

तुमने मुझे किस लिए बुलाया है, पथिक मंजिल के करीब पहुँचकर बोला मंजिल को लगा उसका हृदय उसके वजूद से पृथक होना चाहता है, असहनीय वेदना से छटपटा उठी। बड़ी मुश्किल से स्वयं को संयत करते हुए बोलो—आओ पथिक कहीं बैठते हैं। पीपल वृक्ष के नीचे अपनी ओढ़नी को बिछा कर मंजिल बोली बैठो, पथिक मंजिल के मुख मंडल को दिखने लगा। पूनो का मंयक अपने धब्बों को भले न छुपा सके परन्तु अपनी शीतलता से हृदय की कालिमा को काफूर कर देता है। इस तरह की अनुभूति पथिक को तब होती जब वह मंजिल के मुखमंडल को देखता था। मंजिल को देखते-देखते वह अपने अस्तित्व को भूल जाता था। आज मंजिल के मुखमण्डल को उदास देखकर पथिक को अत्यन्त पीड़ा हुई। मंजिल तुम उदास हो, क्या बात है बोलो?

मंजिल के हृदय में गुबार उठा—बड़ी मुश्किल से उसने अपने मनोभावों पर नियन्त्रण पाया। मन तो रोने को कह रहा था पर परिस्थिति ने उसके आँसू भी सोख लिये। बड़ी मुश्किल से मुस्कराने की कोशिश की।

मंजिल तुम परेशान हो, बताओ क्या बात है, आज तक मैंने तुमको इस प्रकार कभी नहीं देखा।

सच कह रहे हैं आप—

आप पथिक ने दोहराया, मैं तुम्हारे लिए आप कब से हो गया। मंजिल ने आँखें नीचे कर ली—मैं तुमसे कुछ माँगने आयी हूँ, इंकार तो नहीं करोगे।

पथिक ने शून्य की तरफ देखते हुये कहा—प्रेम करने वाले हृदय में संशय नहीं होता। तुम्हे वचन की आवश्यकता महसूस क्यों हुई। मंजिल को लगा मानों शब्दों ने उसका साथ छोड़ दिया। क्या कहे कैसे कहे उलझ गई।

मंजिल की उलझन से पथिक धबरा गया। मंजिल के सिर पर हाथ रखकर बोला—माँगों मैं तुम्हें अपना प्राण भी दे सकता हूँ। मंजिल तुम तो मुझे अच्छी तरह जानती हो फिर महारानी कुन्ती की तरह संकोच क्यों कर रही हो।

बैठो बताती हूँ। पथिक ने ओढ़नी को उठाकर मंजिल के गले में लपेट दिया फिर घास पर बैठ गया—अब बोलो मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।

मंजिल ने पत्र के साथ कुछ तस्वीरे निकाली और पथिक को दे दिया पथिक तसवीरों को देखने लगा।

कैसी लग रही हूँ—मंजिल की वाणी सुनकर पथिक मन ही मन सोचने लगा परी कंहू या देवी, पथिक को मौन देखकर मंजिल बोली—क्या सोचने लगे?

यही कि तुम मुझे इतनी सुन्दर लगती हो कि उसे व्यक्त करने को मेरे पास शब्द नहीं। तुम मेरा प्यार हो पहला और आखिरी, तुम्हे देखने के बाद संसार की कुरुपता से मुक्त हो जाता हैं। जानती हूँ। तुम मुझे बहुत प्यार करते हो यदि मैं तुम्हे न मिलू तो क्या मंजिल रुक गयी। मंजिल प्यार पाना एवं खोना दोनों से परे है। तुम यदि मुझे नहीं मिली तो आत्महत्या नहीं करूँगा वादा करता हूँ। मंजिल तुम्हारे लिए मैं प्राण त्याग सकता हूँ परन्तु मूल्यों से समझौता नहीं करुँगा अब तुम अपनी बात कहो मंजिल।

मंजिल के होंठ फड़फड़ा कर रह गये।

तुम बोलती क्यों नहीं मंजिल।

पथिक मैंने अपनी बात इस पत्र के लिख दी है, परन्तु इसे अभी नहीं छब्बीस जनवरी का पड़ना। मैं जानती हूँ तुम मुझे प्यार करते हो। प्रेम हृदय को स्वच्छ कर देता है। हृदय की धवलता में हमें हमारा बिंब दिखाई पड़ता है। तब सत्य की अनुभूति होती है। सत्य एवं प्रेम में घनिष्ठता होती है इस लिए प्रेम करना कठिन है। इस रास्ते पर चलना भीड़ के बस की बात नहीं। मुझे तुम से अपेक्षा है मेरी भावना का कद्र करोगे पथिक। छब्बीस जनवरी पथिक ने दोहराया तुम उस दिन को अभी तक नहीं भूली, उस दिन को मैं कभी नहीं भूल सकती पथिक—पुरुष को लेकर नारी जब कल्पना करती है तो उसमें एक आकृति बनती है, इस आकृति से जब कोई पुरुष मिल जाता है तब उससे प्यार हो जाता है। मेरे हृदय में उस दिन तुम्हारे लिये प्यार उत्पन्न हुआ था।

मेरा भाषण सुनकर पथिक बोला।

नहीं तुम्हारे शब्द एवं अर्थ के समन्वय एवं आचरण ने मुझे तुम्हारे करीब कर दिया दो दिन की मित्रता करके पुरुष नारी के होंठ चूमने लगते हैं, तुमने आज तक मुझे छूने का प्रयास नहीं किया।

मैं देवता नहीं हूँ मंजिल मानवीय दोष मुझमें भी हैं। तुम्हारा सौन्दर्य देखकर मेरे मन की प्यास बुझ जाती है। अनैतिक तरीके से मन की प्यास बुझाने का मैं पक्षधर नहीं समझी।

मंजिल मुस्करा उठी। चलो अब चला जाय अंधेरा बढ़ रहा है। तुमने मुझे यहाँ किस लिए बुलाया था पथिक बोला।

यह पत्र छब्बीस जनवरी को पड़ लेना मंजिल के शब्द काँप रहे थे। इसके अलावा कुछ और भी कहना है।

हाँ मंजिल बोली।

जल्दी कहो देरी हो रही है।

पथिक एक बार मैं हृदय से लगना चाहती हूँ क्या इंकार करोगे। पथिक ने कुछ नहीं कहा बस अपने हाथ ऊपर कर दिये। मंजिल पंथिक के हृदय से चिपक गयी। पथिक के नेत्रों से आँसू टपक-टपक कर मंजिल के केशों में समाने लगे। भावना के बेग को जब पथिक रोक न सका तो मंजिल को कस कर बाहों में समेट लिया। पथिक के आलिंगन से मुक्त होकर जब मंजिल चलने लगी तो पथिक ने कहा—मंजिल तुम मुझसे कुछ मांगने आयी थी। मंजिल कुछ नहीं बोली बस फूट-फूट कर रोने लगी।

कुछ कहोगी भी या यूँ ही रोती रहोगी। पथिक मंजिल के आंसू पोंछने लगा। पथिक मैंने अपनी बात इस पत्र में लिख दी है कहकर मंजिल चल पड़ी। पथिक गहरे सोच में डूब गया।

❍❍

सुहागरात—नारी एवं पुरुष के जीवन की वह रात जो प्रकाश से भय उत्पन्न कर देती है। अंधकार से प्रकाश की ओर चलने की हम ईश्वर से प्रार्थना तो करते हैं परन्तु कदम अंधकार की ओर ही बढ़ाते हैं। मंजिल ने भी सुहागरात की कल्पना की थी परन्तु कल्पना का यथार्थ से कोई सम्बन्ध नहीं होता। संसार में बहुत कम लोग होते हैं जो अपने सपनों के महल को साकार कर पाते हैं। पुरुष प्रधान मानसिकता से निर्मित समाज में नारी की स्थिति आज भी दयनीय है। नारी की कमजोरी का फायदा उठाने के लिए पुरुष ने जो रफ्तार पकड़ी वह आदिम काल से लेकर अब तक जारी है, यातायात की सुगमता के परिणाम स्वरूप यह गति अब तेज हो गयी है।

जिस रात को नारी पुरुष का एवं पुरुष नारी का जीवन में प्रथम बार देहिक सुख प्राप्त करता है उस रात को सुहागरात कहा जाता है। जो इस सत्य को खारिज कर दे उसके लिऐ सुहागरात नहीं, अपितु ऐयाशी की रात कहना तर्कसंगत होगा। इकबाल साहब समाज में सम्मानित व्यक्ति थे। सौ बीघा जमीन, पाँच ईट के भट्टे कार बंगला सब कुछ उनके पास था। हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक जन नायक इकबाल के नाम से दूर-दूर तक लोग परिचित थे।

इकबाल साहब की दुनिया के सामने आज तीसरी सुहागरात थी। वैसे तो उन्होंने जीवन में कितनी सुहागरात मनाई होंगी उन्हें ज्ञात भी नहीं होगा। पहली बीबी से उन्होंने

आज में पन्द्रह वर्ष पहले यहीं इसी विशाल कक्ष में सुहागरात मनाई थी। परन्तु अल्लाह ने उनको संतान नहीं दिया संतान की चाह में इकबल ने दूसरी शादी कर ली। दूसरी सुहागरात उन्होंने फिर धूमधाम से यहीं बनाई। दूसरी बीबी से दो बेटियाँ हुई। धीरे-धीरे दूसरी बीबी से भी उनका मन भर गया। एक दिन जब उन्होंने मंजिल को देखा तो अपनी सुध-बुध खो बैठे। मंजिल उनके दिल में बस गयी। फिर मंजिल को पाने के लिए व्यग्र हो गये।

पहली बीबी को उन्होंने तलाक नहीं दिया था, वे बड़े नेक दिल की महिला थी अल्लाह की मर्जी समझकर उन्होंने परिस्थिति से समझौता कर लिया। दूसरी बीबी को लेकर एक दिन इकबाल शहर के विख्यात मौलाना अब्दुल रहीम के पास गये। मौलाना साहब भूत एवं भविष्य का ज्ञान रखते थे। उन्होंने इकबाल को बताया तुम्हारी दूसरी बीबी से लड़का नहीं होगा इसलिए तुम्हें तीसरी शादी कर लेना चाहिए। इकबाल साहब ने दूसरी बीबी से कहा—बेगम तुम इजाजत दो तो तीसरी शादी कर लूं। बेगम साहिबा टूट गई क्या करे—इकबाल साहब की हाँ में हाँ यदि नहीं मिलाया तो तलाक की कटार से लहूलुहान होना निश्चित था, यही सोचकर बेगम साहिबा ने स्वीकृति प्रदान कर दी।

तुम किसी फरिश्ते से कम नहीं हो बेगम मारे खुशी से इकबाल का चेहरा खिल उठा। तीसरी सुहागरात मनाने की योजना का पहला चरण पूर्ण हो गया। इकबाल के सामने मंजिल की आकृति घूम गई। दिमाग पर जोर दिया पहली बार मैंने मंजिल को कहाँ देखा था, याद आया उस दिन वर्षा हो रही थी वे कार से आ रहे थे। कालेज से निकलकर मंजिल बस की प्रतीक्षा कर रही थी। इकबाल ने कार रोक कर कहा—कहाँ जाना है मैडम।

मंजिल इकबाल को पहचानी थी इसलिए वह उनकी कार में बैठ गयी, मंजिल का यौवन नकाब से उस तरह नहीं छिप रहा था जिस तरह काले घनों से सूर्य! मंजिल के हाथ की उँगलियों देखकर इकबाल के शरीर में सनसनी फैल गई। होटल के पास कार रोक कर इकबाल ने मंजिल को चाय पिलाना चाहा, असल में वे मंजिल के मुख को देखना चाहते थे, पर मंजिल ने न चाय पी न ही नकाब हटाया। दुःखी मन से इकबाल कार चलाने लगे। आखिर एक दिन वे मंजिल के घर पहुँच गये। मंजिल के पिता से उन्होंने मंजिल का सौदा कर लिया। मंजिल को पता चला तो उसका हृदय रो पड़ा। पिता के फैसले का उसने विरोध किया, परन्तु उसकी आवाज को कूरता के साथ दबा दिया गया।

पिता के घर में ही इकबाल ने जबरदस्ती सुहागरात मना ली। नारी जिस रात की कल्पना करके सिहर जाती है वह रात आँधी की तरह आयी और मंजिल के जिस्म को भस्म कर दिया। अब तो मात्र वह लाश है। सारी भावनायें जल गई फिर भी मंजिल जिंदा है। उसकी सुहागरात तो कई दिन पहले हो चुकी थी आज तो मात्र औपचारिकता थी।

❍❍

मंजिल को बाहों में भरते हुए इकबाल ने कहा तुम मुझे बहुत सुन्दर लगती हो, लगता है खुदा ने जन्नत से तुम्हें उतारा है मेरे लिए। मंजिल मौन थी। नाराज हो, इकबाल ने सोने का हार निकाला बेगम अब तो नकाब हटा दो। यह हार मैं तुम्हारे गले में डालना चाहता हूँ। मंजिल का मौन इकबाल के हृदय में तीर की तरह चुभ रहा था। उसने अपने हाथों से मंजिल का नकाब हटा दिया।

यह क्या तुम रोती हो, आज हमारी सुहागरात है।

आप झूठ बोलते हैं, मंजिल ने मुँह खोला।

झूठ इकबाल के मुख से निकल गया।

हाँ झूठ सत्य संसार का सबसे बड़ा तप है। कबीर का दोहा तो आप ने पढ़ा होगा। अल्लाह के समीप वही पहुँच सकता है जो सत्य को आचरण में शामिल करे। सुहागरात का मतलब आप जानते हैं। अच्छी तरह से कहकर इकबाल ने मंजिल के होंठ चूम लिये फिर एक-एक करके मंजिल के वस्त्र उतराने लगा। मंजिल ने अपने मन को तन से पृथक कर दिया। काम वासना को शान्त करने के उपरान्त मंजिल के कान के पास मुख करके इकबाल धीरे से बोला—अब समझ में आया क्या होती है सुहागरात। उमड़े हुऐ आँसुओं को पोंछा मंजिल ने।

आप ने जिस तरह सोहागरात मनाई ऐसी सुहागरात तो जानवर भी मना लेता है या यूं कहूं इससे अच्छी, क्योंकि जानवर नकाब नहीं ओढ़ता। वह अंदर और बाहर एक होता है। परन्तु तुम मंजिल रुक गई।

मंजिल ये तुम्हारे शब्द नहीं हो सकते—मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम उस हिन्दू युवक की दीवानी हो, और यह उसी का प्रभाव है कि बीबी शौहर से पहली ही रात आँख मिला कर बात कर रही है।

आप ने ठीक समझा मैं पथिक की दीवानी थी हूँ और सदा रहूंगी। आप की तरह मैं झूठ नहीं बोलती। पुरुष में ताकत है परन्तु नारी को ताकत, पैसा, भय या अन्य किसी भी प्रलोभन से नहीं पाया जा सकता। आप ने मेरी देह पर अधिकार पा लिया है। समाज, परिवार, रिश्तेदार या सारी दुनिया की नजर में मैं आपकी बीबी हूँ। बीबी का फर्ज निबाहने में मैं कोई कोताही नहीं बरतूगी, परन्तु सब कुछ यंत्रवत कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य। मेरी आत्मा में यदि किसी पुरुष का चित्र है तो वह पथिक है। नारी हृदय पर विजय पाने के लिये पुरुष को उस राह पर चलना होगा जिसका पथिक राही है। अर्थ, शक्ति, राजनीति, कूटनीति किसी में पूर्णता नहीं, वर्षा बिना जिस तरह फसल सूख जाती है उसी तरह जिस हृदय में प्रेम का निवास नहीं होगा उसे नारी का प्रेम कभी नहीं मिल सकता। प्रेम पूर्ण है इसलिए विभक्त नहीं होता फिर भी यदि कोई प्रेम का सौदा करना चाहता है तो उसे सिर्फ प्रेम करना होगा। प्रेम का सौदा सिर्फ प्रेम से ही होगा।

समझे शौहर साहब।

मंजिल तुम्हारे कहने में सच्चाई है परन्तु एक मुसलमान होकर हिन्दू से प्रेम करना क्या इस्लाम के साथ उचित है।

धर्म—मंजिल ने गहरी साँस ली। धर्म का निर्माण करने वालों ने मानवता के साथ इंसाफ नहीं किया है। संसार में शक्ति की जीत होती आयी है। जिस तरह स्वर्ण से चाहे कितने आभूषण अलग-अलग नामों से बना लिये जाएँ पर वे होते तो स्वर्ण के ही हैं। इसी तरह धर्म एवं जाति की कितनी दीवारे खड़ी कर दी जाय पर मानव-मानव ही होता है। जीवन साथी किस धर्म का है जाति का है इससे अधिक महत्त्व होता है उसमें मानव मूल्यों को परखने की क्षमता क्या है। धनवान, बलवान, रूपवान से कहीं अधिक महत्त्व होता है आचारवान। जिस व्यक्ति में चरित्र नहीं वह व्यक्ति नहीं। जिस हृदय में दया, करुणा, ममता नहीं वह हृदय नहीं पत्थर है।

इकबाल सोचने को विवश हो गया। नारी उसके लिये मात्र खिलोना थी जिसे खेलकर बासी फूल की तरह फेंक देता था। आज उसी नारी ने उसे सोचने के लिये विवश कर दिया। अब सो जाओ बेगम रात काफी हो गई है, कहकर इकबाल ने करवट बदल दी।

❍❍

भाई साहब आप ने बीबी नहीं हीरा चुना है। जाकिर ने मंजिल की प्रसंशा का सेतु बाँध दिया। मंजिल ने सुना और चुपचाप वहाँ से चली गई।

जाकिर—इकबाल बोला, में शहर जा रहा हूँ हाँ तुम आज जाने को कह रहे थे। अभी मैं एक महीना और रहूँगा जाकिर मुस्कराकर बोला।

मैं तो पहले ही कह रहा था तुम मानने को तैयार नहीं थे। कहता हुआ इकबाल बाहर निकल गया।

अम्मी—यह नाश्ता किसने बनाया था।

मंजिल ने, माँ बोली, सुभान अल्लाह हुस्न एवं अक्ल का संगम जीवन में पहली बार देख रहा हूँ। बहुत सी देशी एवं विदेशी ललनाओं का सौन्दर्य देखा परन्तु मंजिल उन सब से अलग है। तभी तो भाई साहब मंजिल पर फिदा हो गये। जाकिर मन ही मन सोच रहा था। क्या सोच रहे हो बेटा-माँ बोली।

कुछ नहीं अम्मी—बस सरदर्द करने लगा।

मुझे पहले क्यों नहीं बताया। फिर माँ ने आवाज लगाया छोटी बेगम जरा यहाँ आना। मंजिल सास के पास आकर बोली—माता जी मुझे किस लिये बुलाया।

मुझे अम्मी क्यों नहीं कहती?

माता जी एवं अम्मी में क्या अंतर है।

कुछ भी नहीं, जाकिर की माँ बोली–अल्लाह से भूल हो गई–तुझे मुसलमान नहीं हिन्दू बनाना था।

मंजिल मुस्करायी अम्मीजान अल्लाह हिन्दू मुसलमान नहीं इंसान बनाता है धरती पर हम ही हिन्दू मुसलमान का निर्माण करते हैं।

इकबाल की माँ मंजिल को समझ चुकी थी, तर्क से उसे हराया नहीं जा सकता इसलिये बोली–जाकिर का सरदर्द कर रहा है उसके सिर में तेल लगा दो।

मंजिल को अम्मी की बात अच्छी तो नहीं लगी पर इंकार न कर सकी, चुपचाप जाकिर के कमरे में चली गई।

देवर जी अभी-अभी तो तुम ठीक थे–इतनी जल्दी सर में दर्द कहाँ से उत्पन्न हो गया। जाकिर कुछ नहीं बोला–बस मंजिल को देखने लगा जो नकाब पहने थी।

घर में नकाब की क्या जरूरत जाकिर मुस्कराया।

आप के सर में दर्द है इसका नकाब से क्या सम्बन्ध है। भाभी जान मैं आप को देखना चाहता हूँ। सच कहता हूँ जब से आपको देखा है मेरा दिल बेकाबू हो गया है–प्लीज अपना मुखड़ा दिखा दो। मंजिल के नकाब हटा दिया–देवर जी मेरा चेहरा जी भरकर देख लो ताकि आप का दिल काबू में आ जाय, मंजिल मुस्कराकर बोली।

जाकिर के बदन में उत्तेजना उत्पन्न हो गई। भाभी जी एक निवेदन करूं, आप बुरा तो नहीं मानेगीं।

बुरा मानने की क्या बात है देवर जी–आखिर आपका भी मुझ पर कुछ हक बनता है। भाभी हो तो आप जैसी–भाभी जी मैंने अम्मी से सर में दर्द है झूठ बोला था–इसलिये कि एकांत में आप को अच्छी तरह देख सकूँ।

अब तो आप ने मुझे अच्छी तरह देख लिया मैं जा सकती हूँ।

कुछ बाते कर ले फिर आप चली जाना। सच कहता हूँ भाभी जी आपकी आवाज बड़ी मधुर है सुनकर सारे बदन में विजली दौड़ जाती है। देवर जी बिजली आदमी को खत्म कर देती है।

भाभी जी प्लीज बैठ जाइऐ–जाकिर ने आग्रह की तो मंजिल बैठ गई फिर बोली–आप को जो कहना है शीघ्र कहो देवर जी।

भाभी जी मैने एक अर्ज की है।

याद है मुझे आगे बोलो?

मंजिल–अपने अधर का एक चुम्बन दे दो।

मंजिल ने क्रोध को बड़ी मुश्किल से दबाया परन्तु साँसे तेज चलने लगी–पुरुषों के लिए नारी मात्र वस्तु है इसे वह अच्छी तरह समझ चुकी थी। मन के उद्बेग को दबाते हुऐ बोली–जाकिर तुमने लक्ष्मण का नाम सुना है।

रामायण का पात्र जाकिर मुस्कराया।

हाँ वही लक्ष्मण जानते हो सीता उसकी दृष्टि में क्या थी।

जाकिर ने व्यंग्य किया—मुसलमान होकर तुम रामायण को अपना आदर्श बना रही हो।

मंजिल ने गहरी साँस ली—अच्छा तुम ही बताओ मुसलमान के लिये भाभी का क्या स्थान है। मंजिल खड़ी हो गई। मेरी बात ध्यान से सुनों देवर जी यदि दुबारा तुमने मेरे साथ बदतमीजी की तो थप्पड़ मारूगीं। कह कर मंजिल कक्ष से बाहर निकल गई। उसी क्षण माँ ने आवाज लगायी बेटा जाकिर अब तुम्हारा सर दर्द कैसा है।

एक दम ठीक हो गया अम्मी, जाकिर जोर से बोला भाभी जी के हाथ में जादू है।

मंजिल का मन उदास हो गया। चुपचाप अपने कमरे में जाकर लेट गई। आँखें बंद की तो पथिक का चेहरा दिखने लगा, फिर उसे पथिक के शब्द याद आने लगे—मंजिल जब मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ तो जानती हो, मैं स्वयं को एक मुस्लिम महिला बना लेता हूँ। जब मैं इस भेष में दुनिया को देखता हूँ तो लगता है जैसे मैंने स्वयं के पापों को छिपा रखा है मुझे बहुत पीड़ी होती है। जिन लोगों ने ये नियम बनाये स्यात् उनका हृदय बहुत कठोर रहा होगा। मन को बिना पवित्र किये हम पाप से नहीं बच सकते। तन को ढ़कने से विचारों से शुचिता नहीं आ सकती। इसलिए अब वक्त आ गया है कि पुरुषवादी व्यवस्था से नारी को मुक्त करके उसे आत्मनिर्णय लेने की क्षमता विकसित करने हेतु शिक्षा प्रणाली को मानवतावादी बनाने की आवश्यकता है। प्यार तो मुझे तुम्हारी देह से ही शुरु हुआ परन्तु मुझे इसको इतनी ऊँचाई तक ले जाना है कि प्रेम ईश्वर का प्रतीक हो जाय। मंजिल को एहसास हुआ मानों पथिक उसके पास मौजूद है।

❍❍

दो वर्ष बीत गये। मंजिल ने पथिक से बात करने का प्रयास किया, परन्तु पथिक ने इसे अनैतिक कहा, मंजिल का हृदय कराह उठा परन्तु अपने प्रियतम के मूल्यों को उसने नमन किया। मंजिल ने पुत्र का जन्म दिया जिसका नाम अहद रखा। अहद के जन्म से इकबाल को खुशी हुई परन्तु मंजिल को लेकर न जाने क्यों उनके हृदय में बेचैनी उत्पन्न हो गई। मंजिल ने उनके दृष्टिकोण को परिवर्तित कर दिया। एक दिन उन्होंने मंजिल से कहा—तुम से शादी करके मैंने ठीक नहीं किया।

अब पछताने से क्या होगा तुमने मेरे साथ ही नहीं अपितु न जाने क्या सोचकर मंजिल चुप हो गई।

तुम कहना क्या चाहती हो, इकबाल बोला।

हाँ याद आया अम्मी की तबियत खराब थी उन्हें किसी योग्य डॉक्टर को देखा

देना। और जाकिर का फोन आया था वह ठीक है। इकबाल बोला तुमने मूल बात की दिशा बदल दी। मंजिल मुस्कराई आपने भी तो अपने को बदल दिया है। मंजिल की बात सुनकर इकबाल मुस्करा उठा।

❍❍

सड़क दुर्घटना में इकबाल का निधन हो गया। इस दुर्घटना ने मंजिल के जीवन में तूफान ला दिया। उसके माता, पिता ने समझाया, परन्तु मन को संतोष नहीं हुआ। मंजिल ने फैसला कर लिया कि वह इकबाल के घर पर ही रहेगी। जाकिर ने भी मंजिल को समझाया अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है भाभी मेरी मानों और शादी कर लो।

तुम्हारे भाई को मरे अभी वर्ष भी नहीं हुआ तुम मुझे शादी की सलाह दे रहे हो।

यदि आप को बुरा लगा तो मैं क्षमा चाहता हूँ। भाभी जी मैं जानता हूँ तुम भारतीय संस्कृति से प्रभावित हो। परन्तु भाभी जी भावना के सहारे जीवन को काटना अत्यन्त कठिन है किसके सहारे काटोगी जिंदगी भाभी। अहद मंजिल ने अहद को गोद में उठा लिया। देवर जी क्या आप लोग मुझे प्यार नहीं करते। मंजिल की बात सुनकर जाकिर चुप हो गया।

चुप क्यों हो गये देवर जी?

भाभी जी अब मैं तुमसे कुछ नहीं कहूँगा, आप की जैसी इच्छा उस तरह जीवन यापन कर सकती हैं, बस मेरी इतनी विनती है कि जब भी आप का मन दुखी हो तो मुझे जरूर बताना। उस दिन मुझसे जो गलती हुई उसकी क्षमा चाहता हूँ, कहते-कहते जाकिर का स्वर भर्रा गया। देवर जी आप दुखी न हो, मुझे आप से कोई शिकायत नहीं है। हाँ अहद को अच्छा नागरिक बनाने में मैं आपकी सहायता चाहती हूँ। जाकिर ने मंजिल की गोद से अहद को लेकर हृदय से लगा लिया।

❍❍

समय अपनी गति से चलता रहा, दिन महीने वर्ष बीतते रहे। इकबाल के निधन के दिन मंजिल उनकी समाधि पर जाती उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करती। यह क्रम आज एकतीस पर पहुँच गया। इकबाल के निधन को आज एकतीस वर्ष हो गये। अहद डॉक्टर बन गया। मंजिल की तपस्या सफल हुई। माँ के साथ आज अहद भी पिता की समाधि पर आया। श्रद्धा सुमन अर्पित करके जब घर पहुँचा तो अहद बोला मम्मी मैं तुम से एक बात पूछना चाहता हूँ।

ऐसी क्या बात है बेटा जिसे कहने के लिऐ माँ से संकोच हो रहा है। कुछ पल अहद सोचने लगा आखिर बात कहाँ से शुरू करें।

क्या सोच रहे हो बेटा।

यह चित्र अहद ने एक चित्र निकाल कर माँ को दे दिया। उस चित्र को देखकर

मंजिल आवाक हो गई। माँ की बेचैनी को अहद समझ गया। उसने तुरन्त माँ को सम्भाल लिया। मम्मी आप इतना परेशान क्यों हो गई।

बेटा यह चित्र मेरा एवं पथिक का है वह मेरा कृष्ण है। मम्मी मैं सब कुछ जान गया हूँ फिर उसने पत्र निकाला और मंजिल को देते हुऐ बोला– यह पत्र आपने लिखा था।

मंजिल पत्र को लेकर रो पड़ी।

म...मम्मी अहद अपने को सम्भाल न सका, उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे। बेटा को रोता देखकर मंजिल अपनी पीड़ा भूल गई। मत रोओ मेरे बेटे, तुमको इस लायक बना सकी इसका श्रेय मैं पथिक को देती हूँ। मम्मी पथिक से नहीं मिलोगी, मंजिल हतप्रभ बेटे को देखती रही। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उसे एहसास हुआ मानो सपना देख रही है। तभी अहद ने आवाज लगायी–समा बाबूजी को लेकर तुम भी आ जाओ। मंजिल ने देखा एक युवती एक संयासी को लेकर आ गई।

म...मम्मी अहद ने मंजिल को झिझोड़ा समा ये मेरी मम्मी हैं समा ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया। खुदा तुम्हे सतमार्ग पर चलने की शक्ति दे, मंजिल ने अपना हाथ समा के सिर पर रख दिया। मम्मी समा डॉक्टर है मैं इससे शादी करूँगा आपको बताया था न। मंजिल मुस्करा पड़ी। अहद ने संयासी की तरफ ऊँगली उठाते हुये कहा– इन्हें पहचाना माँ।

प...पथिक मंजिल की आँखें गीली हो गई।

मंजिल पथिक बोला–तुम उस दिन मुझसे जो माँगने आयी थी, मुख से तो नहीं कह सकी पर पत्र में लिख दिया। मुझे बेहद दुख है कि तुम्हारी उस आज्ञा का पालन न कर सका। मैंने संसार का त्याग उसी दिन कर दिया जिस दिन तुम मुझसे पृथक हो गयी।। मैं अपना संसार तो नहीं बसा सका, परन्तु दूसरो के लिये स्वयं को अर्पित कर दिया। संसार में व्याप्त दुर्गन्ध से जब मेरी साँस रुकने लगी, तब विवश होकर संसार का त्याग कर दिया ऐ वस्त्र मैं दस वर्ष पूर्व धारण किये। मैने देश की ओर समाज की सेवा भी, अपने एवं पराये के भेद से मुक्त होने की कोशिश की, परन्तु अपनो एवं गैरो ने सिर्फ मेरे हृदय में कांटे चुभाये। इस खुदगर्ज दुनिया से मुझे नफरत हो गई।

पथिक ने पानी मांगा तो समा ले आई पानी पीकर पथिक बोला–मंजिल मेरा तो संसार से मोह भंग हो चुका था, परन्तु तुम्हारे पुत्र ने मुझे बाबू जी ही नहीं कहा, अपितु पिता का सम्मान दिया वैसा जैसे कभी राम ने दशरथ का किया था। इसी के मोह में मैं यहाँ चला आया। इसकी इच्छा मेरे लिए कृष्ण की इच्छा है। अब तुम बोलो मंजिल तुमने जीवन में संघर्ष किया है, मैने तो सिर्फ दूर से दुनिया देखी है।

पथिक मंजिल बोली—मैने संसार में अपना कर्त्तव्य पालन किया है, परन्तु जिस बल पर मैं इस स्वार्थी संसार से लड़ी हूँ वह तुम हो। तुम्हारे आदर्श एवं सिद्धान्त ने मुझे दुनिया से लड़ने की शक्ति प्रदान की। मेरी दृष्टि में तुम खुदा तुल्य हो।

मम्मी समा बोली—आप ने एवं बाबू जी ने प्रेम को इतने ऊपर पहुँचा दिया कि जिसे कहने में संतान को गर्व होगा। आपकी प्रेम कहानी सुनकर प्रेम करने वाले हृदय को चिर विश्राम मिलेगा। इसलिये अहद ने निश्चिय किया है कि वह अपनी माँ की प्रेम कहानी का अक्षुण रखने हेतु आज एक राधा कृष्ण मंदिर का शिलान्यास करेगा। तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं बस आप एवं बाबू जी का इंतजार है। मम्मी आप को अभी मेरे साथ चलना है।

बेटा तुमने आज से पहले मुझे कुछ नहीं बताया, माँ की बात सुनकर अहद मुस्करा उठा। मम्मी जी अब्बू को हम से जुदा हुऐ आज एकतीस वर्ष हो गये। आज के दिन पुत्र अपनी माँ को जो उपहार दे रहा है उसे पहले न बताकर जो गलती की है उसकी क्षमा चाहता हूँ।

गाँव से पूरब विशाल जनसमूह उमड़ा था। अहद के साथ समा, मंजिल और पथिक जब वहाँ पहुँचे तो लोगों ने अहद की जयजयकार की। अहद ने कहा—भाइयों आप मेरी नहीं अपितु राधे कृष्ण की जय जय कार करें। भीड़ को अपनी गलती का एहसास हुआ।

पंडित जी ने मंत्रों से भूमि पूजा की, प्रतीक की तौर पर लघु राधा कृष्ण की प्रतिमा वहीं स्थापित कर दी गयी। लोग चले गये। मंजिल ने पथिक से कहा—शेष जीवन तुम्हें अब यहीं पर बीतना है क्योंकि तुम्हारे कृष्ण भी यहीं पर रहेगें। पथिक न आकाश की तरफ देखते हुऐ कहा, मैं तो राही था आज मेरी मंजिल मिल गई।

❑❑❑

कल्पना

डॉक्टर तुमने आज तक शादी क्यों नहीं की?

तुम्हारे पास और कोई प्रश्न नहीं है।

जीवन में प्रश्न ही प्रश्न है परन्तु आज हम अपनी बातें करना चाहते हैं। हम एक दूसरे को काफी दिनों से जानते हैं बहुत कुछ बातें हो चुकी हैं सोचा क्यों न आज कुछ अपनी बातें की जाय। कहते-कहते नीलोफर गम्भीर हो गई। नीरंध्र ने उसे इस प्रकार गम्भीर कभी नहीं देखा था। जब से वह इस अस्पताल में आई सदैव तितली की तरह अपने कर्म में रत रहती। अपने कर्त्तव्य को पूरी निष्ठा एवं मेहनत से करने वाली नर्स नीरंध्र को परी सी लगी थी। आज उसे इस तरह गम्भीर देख न जाने क्यों नीरंध्र के हृदय कचोट हुई। अपने को संयत करते हुऐ उसने मुस्कराने की कोशिश की फिर बोला आज बहुत ठण्ड है। वह तो है ही चलो कैंटीन में बैठकर एक कप चाय पीते हैं। न चाहते हुए भी नीरंध्र के कदम आगे बढ़ गये।

कैंटीन आज सुनसान थी। संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। नीलोफर ने चाय का आर्डर दिया। पैसा देने लगी तो नीरंध्र ने मना कर दिया।

क्या आप मेरी एक चाय भी नहीं पीयेगें, आप हर बार पैसे दे देते हैं। तुम भी न जाने क्या-क्या सोचने लगती हो, ऐसा कुछ भी नहीं है मैडम जैसा तुम सोच रही हो। लो मैं तुम्हारी ही चाय पी लेता हूँ कहकर नीरंध्र ने नीलोफर का कप उठाकर चाय पी ली। मेरी जूठी चाय आप ने पी ली। नीलोफर को आश्चर्य हुआ था, जब के नीरंध्र के अधर पर स्मित तैर गई। मैने तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दिया, कहकर नीरंध्र खड़ा हो गया। चलो देर हो रही है।

❍❍

नीलोफर को नींद नहीं आ रही थी। उसके मस्तिष्क में नीरंध्र का चेहरा घूम रहा था जो किसी मासूम बच्चे सदृश था। आखिर उसने मेरी जूठी चाय क्यों पी ली, कई तरह के प्रश्न उसके मन में उठे, जी में आया काल करू, फिर सोचने लगी क्या यह ठीक होगा। पता नहीं वह क्या सोचे इसी उधेड-बुन में वह कई बार करवट बदलती रही उसे पता ही नहीं चला कब नींद आ गई। नेत्र खुले तो सुबह हो चुकी थी। शरीर में दर्द हो रहा था। क्योंकि आज वह ठीक से सो नहीं पायी थी।

बेटी, माँ न पुकारा था, हड़बड़ा कर वह उठ गई।

आज देर तक सोती रही, माँ बोली। रात देर से सोई थी अम्मी, इतना कहकर वह खड़ी ही नहीं हुई अपितु दुत्रि गति से दैनिक कामों से रत हो गई।

माँ चाय पीते-पीते बोली—बेटी कल तुम्हारे मामू आये थे, एक लड़के की चर्चा कर रहे थे—मैने कहा मैं नीलू से पूछकर बताऊंगी तुम क्या कहती हो बेटी?

नीलोफर मुस्कराई सुबह और कोई दूसरी बात नहीं है अम्मी, बस आप भी यही बात शुरू कर देती हो, क्या तुम चाहती हो मैं यहाँ से चली जाऊ, तू क्या बक रही है बेटी, मुझे तेरे भविष्य की चिंता है। मेरा क्या भरोसा मैं चाहती हूँ तेरे हाथ पीले हो जाँय ताकि मैं चैन से मर सकूं, ऐसा मत कहो अम्मी मुझे थोड़ा सोचने दो।

तू क्या सोच रही है कुछ मुझे भी तो बता, क्या तुझे कोई लड़का पसंद है।

नहीं।

तो फिर मामू को काल कर दे। इतवार को तेरी छूट्टी रहती है लड़का यहीं आ जायेगा।

नहीं अम्मी—मैं आप को बताऊँगी। कहकर नीलोफर उठ गई। अम्मी आप ने मेरी भावनाओं को महत्त्व दिया है। मुझे पढ़ाया ही नहीं अपितु यहाँ तक पहुँचाने में पग-पग पर मेरा मार्गदर्शन किया है। जिस समाज में रहकर नारी को साँस लेने में कष्ट होता है, उस समाज में आप ने एक मिशाल कायम किया है। नारी को स्वाभिमान से रहने की प्रेरणा मुझे तुम से मिली है अम्मी। बस मेरी एक विनती है जिस तरह आप ने मुझे सदा प्रेरणा दी है उसी तरह आगे भी मेरा मार्गदर्शन करती रहना। अम्मी शीघ्र ही इस विषय पर मैं निर्णय लेकर आपको बताऊँगी, कहते-कहते नीलोफर की आँख भर गई। बेटी माँ ने उसे गले से लगा लिया। तू ठीक कह रही है जैसी तेरी इच्छा, मुझे भरोसा है तू जो फैसला करेगी वह तर्क एवं नीति सम्मत होगा।

मेरी अच्छी अम्मी! कहकर नीलोफर माँ के हृदय से चिपक गई। माँ को ऐसे लगने लगा जैसे उसकी बेटी छोटी हो गई है नवजात शिशु। माँ उसे हृदय में समटने के प्रयास में रत हो गई। मानो कोई योगी ध्यान मग्न हो गया।

❍❍

तुमने कभी चिड़िया घर नहीं देखा?

देखा है। फिर मुझे यहाँ क्यों ले आई।

बस ऐसे ही—यहाँ मुझे बहुत अच्छा लगता है नीलोफर मुस्कराई। परन्तु मुझे नहीं नीरंध्र ने दीर्घ साँस ली। नीलोफर क्या मैं तुम्हें नीलू कह सकता हूँ।

शौक से अम्मी मुझे इसी नाम से पुकराती हैं।

नीलू जी मनुष्य मुझे विचित्र प्राणी लगा, तुम तो जीव विज्ञान की छात्रा रह चुकी

हो। जीव जगत का इतिहास बहुत जटिल है। शारीरिक संरचना कितनी पेचेदी है तुम अच्छी तरह जानती हो। किसी भी जीव को कैद करके रखा जाय वह सुखी नहीं हो सकता, फिलहाल यह मेरा अभिमत है, तुम्हारा इस विषय पर क्या ख्याल है।

मैं आप से सहमत हूँ। हाँ इतना जरूर कहना चाहूँगी कि आज के परिवेश में अनेक जीव जन्तुओं की प्रजातियाँ विलप्त होने की कगार पर हैं, अब इनके उचित संरक्षण हेतु ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। मुझे जीव जगत से अतिसय लगाव है। कहने की जरूरत नहीं मैं तुम्हारी भावना समझता हूँ।

शुक्रिया, नीलोफर मुस्कराई फिर एक वृक्ष की तरह ऊँगली उठा कर बोली—देखों वह वृक्ष कितना सुंदर है उसका नाम....।

नीलू इसे वट वृक्ष कहते हैं—वसन्तु ऋतु ने इसे नव जीवन प्रदान किया है, इस समय इसका सौन्दर्य अतुलनीय है।

चलो उस वृक्ष की छाया में बैठकर बातें करें। नीलू तुम ठीक कहती हो चलो उस शिलाखण्ड पर वट वृक्ष की छाया का आनन्द लें।

❍❍

इस इमारत का जब निर्माण हुआ होगा तब यह बहुत सुन्दर रही होगी नीलू तुम इसका अनुमान लगा सकती हो, परन्तु वक्त कितना बेरहम होता है जो किसी को भी नहीं छोड़ता।

समय के मूल्य को तुम समझते हो डॉक्टर?

अवश्य नीरंध्र मुस्कराया।

फिर आप ने आज तक शादी क्यों नहीं की, नीलोफर ने पुराने प्रश्न को दोहरा दिया।

नीरंध्र ने शून्य की तरफ देखते हुऐ धीरे से कहा, शादी के लिए कोई लड़की चाहिए नीलू जी।

क्या आज तक आप को कोई लड़की नहीं मिली?

हाँ, नहीं।

नीलोफर खिलखिलाकर हंस पड़ी।

तुम हंस रही हो,

नीलोफर झेंप गई सारी डॉक्टर।

सारी की जरूरत नहीं हाँ तुम मेरे लिए एक लड़की खोज दो।

मैं नीलोफर आश्चर्य चकित होकर बोली।

हाँ तुम— यदि तुम मेरा यह कार्य कर दो तो मुझे खुशी होगी। कोशिश करूंगी, परन्तु आप मुझे यह बताऐ कि आप को कैसी लड़की चाहिए। यदि तुम मेरे मुख से

सुनना चाहती हो तो सुनो, कोई भी व्यक्ति जब अपने लिए हमसफर की कल्पना करता है तो उसमें वह अपनी पसंद को खोजने का प्रयास करता है। मैं अपने लिए जब हमसफर की कल्पना करता हूँ तो उसकी पहली सीढ़ी ही नहीं अपितु मंजिल का भी ध्यान रखता है। ऐसा नहीं है कि नारी सौन्दर्य मुझे प्रभावित नहीं करता, इसके प्रवाह में जब मैं बहता हूँ तो चेतनाशून्य हो जाती है। तुम मेरी बात से सहमत हो या ना हो पर मैं यही कहूँगा कि निर्णय विवेक से करना चाहिए। नारी सौन्दर्य जीवन को दिशा दे सकता है चलने की शक्ति नहीं।

आप डॉक्टर है या दार्शनिक नीलोफर बोली।

डॉक्टर भी दार्शनिक होता है नीलू जी, जब वह आपरेशन कक्ष में प्रवेश करता है तो उसका लक्ष्य रोगी को नवजीवन देना होता है। उसके जाति, धर्म, लिंग आदि से उसका कोई सरोकार नहीं होता। जिस तरह डॉक्टर का धर्म मानव कल्याण में समाहित हो जाता है उसी तरह दार्शनिक भी समस्त मानव जाति के कल्याण की कामना से युक्त होता है। क्या मैं गलत कह रहा हूँ नीलोफर।

नहीं। आप की बात से मैं सहमत हूँ।

नीलू जी, मैं तुम से झूठ नहीं बोल रहा हूँ, मेरे हृदय में तुम्हारे लिऐ जो स्थान है वह बहुत ऊँचा है। इसलिए क्योंकि तुम सही गलत का निर्णय लेने की क्षमता रखती हो। यदि तुमने मेरे किसी गलत कार्य का समर्थन किया तो मुझे दुःख होगा। अस्तु तुम मुझे सतपथ पर चलने की प्रेरणा देना। आप मेरा इतना सम्मान करते हैं मेरे लिये गर्व की बात है।

नीलू जी आपके प्रति मेरे मन में सम्मान ही नहीं श्रद्धा भी है। इसलिये आज मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे रहा हूँ। मैं ऐसे हमसफर की कल्पना करता हूँ जो मानव मूल्यों को समझने की शक्ति रखता हो। जो लड़की दूसरे के दर्द को न समझ सके वह मेरे साथ दूर तक नहीं चल सकती।

आपको एक आदर्शवादी लड़की की तलाश है।

हाँ—नीरंध्र मुस्कराया।

आपको ऐसी लड़की मिलना मुश्किल है। मैने सुना था एक संत थे वे दिन में दीपक जलाकर चल रहे थे। एक सज्जन ने पूछा—क्या खोज रहे हो बाबा। संत ने जवाब दिया आदमी। संत की बात सुनकर वे सज्जन गम्भीर हो गये, कुछ देर सोचकर बोले—बाबा इस भूतल पर आदमी मिलना मुश्किल है। यह कहानी हजारों वर्ष पुरानी थी आज आप ने इसे फिर दुहरा दिया कहकर नीलू मुस्करायी।

तुम मुस्करा रही हो?

आप ने बात ही कुछ ऐसी कह दी।

अच्छा तुम यहीं बैठना मैं अभी आया।

❍❍

कहाँ चले गये थे।

नीरंध्र ने नीलोफर के हाथ में एक पैकेट रख दिया।

क्या है इसमें।

खोलो नीलोफर ने पैकेट खोला—लो तुम भी खाओ? एक प्रश्न और पूछ सकती हूँ।

अवश्य, नीरंध्र ने मुस्करा कर कहा।

आप ने किसी से प्यार किया?

हाँ—नीरंध्र गम्भीर हो गया, तुम सुनना चाहती हो उसका परिणाम नीलोफर ने स्वीकृत में सिर हिला दिया। मैंने जिस लड़की से प्यार किया था वह बहुत सुन्दर थी। उसके अंगप्रत्यंग में जो समानपात था वह उसके सुकमारता में चारचाँद लगा रहा था। गोरे रंग ने उसके सौन्दर्य को अद्वितीय बना दिया था। देह से भी सुन्दर थी उसकी वाणी। वह गुनगुनाने लगती तो नेत्र बंद हो जाते। नीलू जी सचमुच मैं उसका दीवाना हो गया था।

फिर आप ने उससे शादी क्यों नहीं की।

नीरंध्र के नेत्र भर आये। बोला तो वाणी कंपकंपा उठी—नीलू जी हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती। नीरी सौन्दर्य की कोमलता में मैं जिस विशाल हृदय की आभा देखने लगा था वह मेरा भ्रम था। इस सत्य से जब मेरा साक्षातकार हुआ तो हृदय कराह उठा। उसके शब्द अर्थ से परे थे। उसके खोने के दुख को मैने अपने कर्त्तव्य की तल्लीनता में दबाकर प्राणों की रक्षा की। मैं आपकी वेदना को समझ सकता हूँ डॉक्टर। नीलोफर की बात सुनकर नीरंध्र के अधरों पर स्मित तैर गई।

मैने आपके लिए एक लड़की देखी है यदि आप कहे तो मैं उससे आपको मिलवा सकती हूँ।

नीलू जी आप सच कह रहीं हैं।

क्या आप को मेरी बात पर यकीन नहीं।

है—नीरंध्र मुस्कराकर बोला—कौन है वह, अब आप उसका नाम बताने का कष्ट करें।

नीलोफर-नीरंध्र आवाक!

यदि आपको लड़की पसंद न हो तो मुझे बता दो। नीरंध्र कुछ नहीं बोला बस नीलोफर के सिर पर हाथ रख दिया।

❍❍

मैं तुम से प्यार करती हूँ नीरंध्र। इस सत्य को शब्दों में व्यक्त करने के लिये दो वर्ष लग गये। आज मैं आपको यहाँ इसी उद्देश्य के लिए लाई थी। मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ डॉक्टर! निर्णय आप विवेक से कीजिए इसके लिए मैं आपको बाध्य नहीं करूंगी।

तुम से विवाह करके मुझे आंतरिक सुख मिलेगा, परन्तु तुम्हारे स्वजन क्या यह रिश्ता स्वीकार करेंगे? तुम्हारा धर्म...। धर्म नीलोफर बीच में ही बोल पड़ी। धर्म किसने बनाया ईश्वर...। यदि ईश्वर धर्म का निर्माण करता होता तो संसार में धर्म के नाम पर निर्दोष मानवों की हत्या कभी न होती। धर्म का निर्माण करने वाला मनुष्य ही है, परन्तु कितने दुख की बात है कि मनुष्य को मनुष्य की पीड़ा समझाने की जगह धर्म मनुष्य को मनुष्य का दुश्मन बना रहा है। धर्म एवं जाति का बंधन महज कल्पना है डॉक्टर, नीलोफर उत्तेजित हो गई।

शान्त हो जाओ नीलोफर, मैं मानता हूँ धर्म एवं जाति माननीय कल्पना है इसलिये इनमें गुण एवं दोष दोनों का समन्वय है। धर्म एवं जाति का संरक्षण पूर्णत्या गलत नहीं है, क्योंकि इनका उद्‌देश्य मानव मूल्यों को उच्चतर बनाये रखना ही है। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि हमने गुणों को त्याग दिया है। धर्म के बाहरी आवरण को ही सत्य समझ लिया है।

बात को कितना घुमाया जाय यथार्थ—यथार्थ ही होता है डॉक्टर। जब तुम किसी व्यक्ति की शल्य क्रिया करते हो तो उसकी शारीरिक संरचना के आधार पर उसके धर्म एवं जाति का निर्धारण कर सकते हो?

नहीं—नीरंध्र ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

फिर मैं आपके तर्क को खारिज करती हूँ।

ठीक है धर्म एवं जाति महज कल्पना है, फिर यह समाज जिसमें हम रहते हैं इसके नियमों का पालन करना चाहिए। अवश्य करना चाहिए डॉक्टर, परन्तु उन नियमों को जो मानव मूल्यों पर आधारित हो, जो नियम स्वार्थ एवं संकीर्णता के आधार पर टिके हैं मुझे स्वीकार नहीं।

यह मत भूलो नीलोफर कि हम पर हमारे माता-पिता एवं परिवार का भी अधिकार है, हमें उनकी भावनाओं का कद्र करना चाहिए। मैं आपके विचारों से सहमत हूँ, परन्तु सरिता की मर्यादा इसी में है कि वह अविरल बहती है। जीवन भी प्रवाह है एक दिन इसका सागर में लय निश्चित है। अस्तु इसमें गति बनी रहे इसके लिए मैं आत्मनिर्णय लेने की पक्षधर हूँ।

ठीक है, परन्तु कानून, क्या हमारी तुम्हारी शादी को मान्यता देगा। नीलोफर मुस्कराई—कानून भी तो आदमी ने ही बनाया है। मेरा विचार है यदि दो युवा वैचारिक स्तर पर एक मत होकर, मानवीय मूल्यों की गरिमा को बरकार रखने हेतु, देह आकर्षण के मर्म को समझ कर, विवाह करने का निर्णय लेते है तो कानून धर्म की दखलदांजी नहीं होनी चाहिए।

मैं तुम्हारे विचारों से सहमत हूँ, परन्तु मुझसे विवाह करने के उपरान्त तुम किस धर्म को स्वीकार करोगी। मेरा मतलब मंदिर जाओगी या मस्जिद।

दोनों जगह नीलोफर ने ऊँगली घुमाते हुये कहा।

समाज इसे स्वीकार नहीं करेगा। तुम्हे एक ही स्थान चुनना होगा। मैं कहीं भी जा सकती हूँ, मेरी मर्जी दूसरो को इससे क्या परेशानी, तुम विदुषी हो नीलोफर, तर्क से मैं तुम्हें परास्त नहीं कर सकता बस एक सवाल बाकी है लेकिन पहले चीय पी लेते हैं।

❍❍

आप किस सवाल की बात कर रहे थे, नीलोफर बोली।

सोच रहा हूँ ईश्वर जो करता है स्यात् अच्छा ही करता है, यह दूसरी बात है कि हम दुखी हो जाते हैं। जीवन में कुछ ऐसे भी पल आते हैं कि जीवन से मोह ही भंग हो जाता है। ऐसी स्थिति में मानव मस्तिष्क घोर तिमिर में खो जाता है, तब लोग आत्महत्या कर लेते हैं। नीलू जी मानवों में आत्महत्या की जो प्रवृत्ति बड़ रही है वह अत्यन्त गम्भीर समस्या है। ईश्वर एवं धर्म इस समस्या के समाधान में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, स्यात् आप यही कहना चाहते हैं।

हाँ—तुम्हारा अनुमान एक दम सही है नीलोफर।

इन बातों पर फिर कभी चर्चा करेगे नीरंध्र जी, आप तो किसी सवाल की बात कर रहे थे।

नीरंध्र गम्भीर हो गया।

किस सोच में पड़ गये हैं आप।

नीलू जी मैं बच्चों के भविष्य के बारे में सोचने लगा।

नीलोफर खिलखिला कर हंस पड़ी। अभी शादी नहीं हुई जनाब को बच्चों की चिंता सताने लगी। फिलहाल आपको इस विषय पर चिंतन करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि पिता से संतान पर माँ का दस गुना अधिक अधिकार होता है, अस्तु आपकी इस समस्या के निदान की जिम्मेदारी मेरी होगी। अब भी कोई प्रश्न शेष है तो आप कर सकते हैं।

नीलू जी मेरा आशय बच्चों का नाम। नीरंध्र की बात सुनकर नीलोफर गम्भीर हो गई। कुछ देर सोच मग्न रही फिर हँस पड़ी। तुम हंस रही हो?

हाँ—इसलिए की आप बच्चों जैसी बातें करने लगते हैं। धर्म एवं जाति के रंग से बड़कर देश की मिट्टी का रंग होता है। क्योंकि हमारी देह का निर्माण इसी से होता है। इसलिये यदि हमारी बेटी हुई तो उसका नाम भारती और अगर बेटा हुआ तो भारत।

नीरंध्र मुस्कराया नीलू जो तुम मुझे दार्शनिक कहती हो पर वास्तव में मैं नहीं अपितु तुम दार्शनिक हो, मुझे आज एहसास हुआ। अब मेरे पास कोई प्रश्न नहीं है।

यदि मेरे बारे में तुम्हे कुछ जानना है तो प्रश्न कर सकती हो।

नहीं, मुझे आपके बारे में कुछ नहीं जानना है। क्योंकि आप क्या है इसका प्रमाण आप का आचरण, जिससे मैं अवगत हूँ।

तो फिर अब चला जाय कहकर नीरंध्र खड़ा हो गया

कहाँ—नीलोफर ओढ़नी को ठीक करती हुई बोली।

कहीं भी जहाँ तुम्हारी इच्छा हो नीरंध्र बोला।

किस प्रयोजन हेतु नीलोफर दार्शनिक अंदाज में बोली।

तुमने भारती, भारत की जो बात कही है उसके क्रियान्वयन हेतु। नीलोफर कुछ नहीं बोली बस अपना सिर नीरंध्र के वक्ष से सटा दिया।

❑❑❑

अंधेर देश

आषाढ़ का पहला पानी बरषा, किसान बड़ी बेसब्री से बादलों की तरफ देख रहे थे। आज उनकी मन मुराद पूरी हुई। किसानों के चेहरे खिल उठे। वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। सुबह से शाम हो गयी। कवल अपनी झोपड़ी में बैठा भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि वर्षा रुक जाये। झोपड़ी में पानी टपक रहा था, उसकी गृहस्थी जो नाम मात्र की थी वह भीग रही थी। उसी पल द्वार पर संग्राम मिसिर की धर्म पत्नी ने पुकारा, वो कवलिया बाहर निकल।

कवल बाहर निकला देखा सामने काली का रूप धारण किये संग्राम मिसिर की पत्नी खड़ी थी।

भौजी हमसे गलती हो गई हो तो क्षमा कर दो, मोटी तगड़ी, छः फुट की उस नारी को देखकर ऐसा लगता मानों सूपनखा हो। उसे देखकर डर जाना स्वाभाविक था।

तुम्हारे छप्पर का पानी हमारे घर में घुस रहा है, यदि अपनी जिंदगी चाहते हो तो पानी रोक लो।

भौजी बारिश का पानी...!

चुप हरामजादे, मिसराइन सिंहनी के समान गर्जी मैं कुछ सुनना नहीं चाहती, पानी रोको, पानी रोको अन्यथा...।

कवल ने हाथ जोड़ लिए भगवान का पानी मैं कैसे रोक सकता हूँ। जबान लड़ता है हरामखोर-मिसराइन को क्रोध आ गया आगे बढ़ी और दो तमाचा कवल को जड़ दिया। कवल दुबला-पतला शरीर का व्यक्ति था, उसमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह उस भीमकाय औरत का थप्पड़ बरदास कर सके। वह जमीन पर गिरा तो मिसराइन ने उसके छाती पर पैर रख दिया। पास में खड़ा संग्राम का लड़का बोला, मम्मी कवल मर जायेगा।

मर गया तो क्या होगा मिसराइन ने पैर हटा लिया। कसाई को देखकर जिस तरह बकरी में-में करती हुई अपनी जिंदगी की दुआ मांगती है उसी तरह कवल भी संग्राम के सबसे छोटे बेटे के पैर पकड़कर जीवन दान मांगने लगा। बेटे ने रावण की तरह लात मारा कवल दूर जाकर गिरा। गाँव वालों ने जब यह दृश्य देखा तो तुरन्त अपने-अपने घर में घुस गये। जैसे तूफान को देखकर लोग सहम जाते हैं उसी तरह संग्राम मिसिर के नाम से गाँव वालों को शरीर काँपने लगता था। किसकी मजाल जो संग्राम मिसिर की पत्नी के सामने आये।

बेटा माँ का हाथ पकड़कर घर ले गया। संग्राम मिसिर उस समय चाय पी रहे थे। कहाँ गई थी दुर्जन की माँ, दर्जन संग्राम का सबसे बड़ा पुत्र था जो पुलिस का बड़ा अधिकारी थी। श्रीमती ने कवल की कहानी संग्राम मिसिर को सुना दी। संग्राम कुछ देर सोचता रहा फिर छोटे बेटे पलटन से बोला—तुम्हारी माँ से गलती हो गई पलटन कवल लेखक है। तो क्या हो गया पिता श्री, पलटन मेघनाथ के समान बोला। यदि आप इजाजत दे तो कवल की बोटी-बोटी करके हजारों ब्राह्मणों को खिला दूँ। मेरा मतलब मंत्री, सांसद, विधायक एवं बड़े-बड़े अफसरों से है।

नहीं, संग्राम सोच मग्न हो गये। कवल को अब निगलना ही पड़ेगा, परन्तु इस तरह जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को निगलती है पानी के अंदर। इसी तरह मैं कवल को खाऊँगा। पलटन तुम कार निकालो और कवल को लेकर आ जाओ। पलटन ने कवल को पुकारा तो वह दौड़कर आ गया। संग्राम मिसिर कार में बैठकर बोले पलटन ड्रायबर कहाँ है। पिता श्री मैं खुद गाड़ी चलाऊँगा।

नहीं संग्राम मिसिर बोले तभी दौड़कर ड्रायबर आ गया। कहाँ चलना है साहब ड्रायबर बोला।

थाना यमपुर, संग्राम मिसिर के बोलते ही गाड़ी आगे बढ़ गई।

❍❍

यमपुर थाने के मेन गेट पर जैसे कार रुकी थाने में भगदड़ मच गई। सारे पुलिस कर्मी संग्राम मिसिर के खातेदारी में व्यस्त हो गये। थानेदार ने अपनी पत्नी को संग्राम मिसिर की आवभगत की जिम्मेदारी दी। संग्राम को यदि थाने में खुश नहीं किया गया तो इसका परिणाम दरोगा साहब अच्छी तरह जानते थे। थानेदार हवलदार सभी संग्राम मिसिर के सामने लाइन में खड़े हो गये। एसपी साहब अथवा जिला अधिकारी का भी थाने में इस तरह स्वागत नहीं हुआ था। जिस तरह संग्रम मिसिर का हो रहा था। सच है मृत्यु से यहाँ कौन नहीं डरता।

महोदय आप ने यहाँ आने का कष्ट क्यों किया मुझे फोन कर देते मैं स्वयं आ जाता। संग्राम मिसिर मुस्कराये कुछ काम ही ऐसा था।

आदेश करे श्रीमान, दरोगा जी चापलूसी करने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे।

पलटन संग्राम ने पुत्र को पुकारा, मुजरिम को दरोगा जी के हवाले कर दो। पलटन ने कवल का हाथ पकड़कर नीचे उतरा।

इसे बंदकर दो, संग्राम मिसिर ने दरोगा को आदेश दिया। दरोगा ने कवल का हाथ पकड़कर मुजरिम के कटघरे में बंद कर दिया। महोदय कृपया आप रिर्पोट लिखा दें।

संग्राम ने दरोगा को घूरते हुए कहा— रिर्पोट तुम बना लो।

महोदय इसका गुनाह दरोगा जी बड़ी मुश्किल से बोले।

पलटन तुम दरोगा जी को कवल का गुनाह बता दो। पलटन कहने लगा आज सुबह से पानी बरस रहा है अभी भी छोटी-छोटी बूँदे गिर रही है। कवल की झोपड़ी से निकले पानी ने मेरी अरबों की इमारत को नुकसान पहुँचाया है। मुझे इंसाफ चाहिए दरोगा। हमारी जो क्षति हुई है उसे सरकार किस तरह पूरी करेगी यह काम अब आप को करना है।

दरोगा साहब हवलदार से बोले, मुंशी जी रिपोर्ट लिख लो और कवल को कल जेल भेज दो।

साहब जी बरसात का पानी यह बेचारा कैसे रोक सकता है मुंशी जी बोले। बकवास बंद करो हवलदार—सीनियर के आदेश का पालन करना तुम्हारा कर्त्तव्य है। जब मैं कह रहा हूँ तो तुम्हे क्या सक है। सही गलत का निर्णय करना अदालत का काम है। तुम वही लिखो जो श्रीमान जी ने कहा है। मुंशी जी ने रिर्पोट लिखी तो संग्राम ने हस्ताक्षर कर दिये।

संग्राम मिसिर जाने को खड़ें हुऐ तो दरोगा जी बोले—मान्यवर साढे आठ बज गये हैं आज आप हमारे यहाँ भोजन करने की कृपा करे। संग्राम ने स्वीकृत में सिर हिला दिया। दरोगा जी ने राहत की साँस ली।

संग्राम एवं उनके पुत्र ने जब भोजन कर लिया तो दरोगा जी को लगा मानों उन्होंने हज की यात्रा कर ली। वर्षा तेज होने लगी इसलिए संग्राम मिसिर बैठ गये। दरोगा साहब का बेटा मुंशी प्रेमचन्द की कहानी नामक का दरोगा पढ़ रहा था। वह कहानी के प्रवाह में इस तरह बहा कि कहानी को रामचरितमानस की तरह जोर-जोर से पढ़ने लगा। दरोगा साहब को जब बर्दाश्त नहीं हुआ तो वे बेटे को डाँटते हुये बोले—मन में पढ़ो।

अब्बा मुंशी प्रेमचन्द की यह कहानी दिल को छू लेती है। फिर वह संग्राम मिसिर की तरफ मुखवित होकर बोला—सर आपको यह कहानी कैसे लगती है। संग्राम मन ही मन झुंझला कर बोला—बेटे ये कवि एवं लेखक सत्य से बहुत दूर होते हैं। झूठी कहानी लिखकर लोगों को गुमराह करते हैं। मेरा बस चले तो धरती से इन पांखड़ी झूठे कवि एवं लेखकों का सफाया कर दूँ। बेटा मैं तुम्हे समझा रहा हूँ, किताबों की बातों का जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ईमानदारी की बातें वही करते हैं जो कमजोर होते हैं। इस संसार में सत्य नहीं शक्ति की जीत होती है।

आपके विचार से साहित्य पढ़ना ठीक नहीं है। दरोगा साहब ने बच्चे को डंटा। संग्राम मिसिर मुस्कराते हुये बोले—इसे प्रश्न करने दो जवाब हम देगें। मेरे विचार से साहित्य महज कल्पना है। इसको पढ़ने या लिखने से पेट नहीं भरता। बड़े-बड़े साहित्यकरों ने फकीरों की तरह भीख माँगते हुये जीवन यापन किया है। बेटा यह युग

टेक्नालॉजी का है। आगे बढ़ना है तो अपना दिमाग साइंस मैथ अँग्रजी में लगाओ। आप के पिता सच्चाई एवं ईमानदारी पर चलकर एक दिन भी नौकरी नहीं कर सकते। वर्षा रुक चुकी थी। संग्राम मिसिर जाने को तैयार हो गये।

पंडित जी आप जायें, कल सबेर कवल को जेल भेज दिया जायेगा। संग्राम मिसिर ने दरोगा को धन्यवाद दिया और कार में बैठ गये। कार जब मेनगेट से निकली तो संतरी ने सलामी दी।

❍❍

जिला के आला अफसरों को कवल की गिरफ्तारी का संदेश दरोगा जी ने पहुँचा दिया। सारे अधिकारी कवल को खाने को विवश थे। जिला क्या देश में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो संग्राम के हाँ में हाँ न मिलाए। संग्राम यदि दिन को रात कह दे तो कोई भी जज दिन कहने की गलती नहीं कर सकता था। इसी कारण प्रशासन कुत्ते की दुम की तरह संग्राम के इशारे से हटकर सीधा काम नहीं कर सकता था। कवल समझ गया अब उसकी मौत निश्चित है। किसको अपनी कहानी सुनाऐ, कहानी लिखने वाला आज अपनी कहानी किसी को सुनाने में अस्मर्थ हो गया।

संग्राम मिसिर के कोप से न जाने कितने गरीब निर्दोष, असहाय अब तक बलि की बेदी पर चढ़ा दिये गये थे। गरीबों के काल संग्राम को कवि एवं लेखकों से सख्त घृणा थी। पिछले बीस वर्षों से अब तक सौ से अधिक कवि एवं लेखक काल में मुख में असमय जा चुके थे। कुछ की लाशें मिली कुछ लापता। देश में लेखकों का आकाल पड़ गया। दूसरी तरफ सत्य से घृणा करने वाले कवि एवं लेखकों को संग्राम पुरस्कार भी माननीय मुख्यमंत्री द्वारा दिलवाता था। ऐसे लेखक कवि नेता मंत्री एवं अफसरों का गुणगान करते थे। सत्य बोलने की किसी में हिम्मत नहीं थी। हरणाकश्यप के राज्य में प्रहालाद ने पिता से बागावत करके सत्य को जिता दिया था, परन्तु संग्राम के राज्य में सत्य बोलने की किसी में ताकत नहीं थी।

संग्राम मिसिर के सात पुत्र एक बेटी थी। पाँच बेटे सरकारी अधिकारी थे, दो बेटे शिक्षा विभाग में प्रोफेसर थे, परन्तु रहते घर पर थे। किसकी मजाल जो उन्हें कालेज आने को कहे। एक दिन जाते और महीने भर का साइन करके आ जाते। वेतन बैंक के खाते में आ जाता। प्रिंसिपल साहब खुद महीने में एक बार संग्राम के घर आकर जी हजूरी कर जाते। कवल सोचता अब उसे कोई नहीं बचा सकता जज साहब वह लिख देगें जो संग्राम उन्हें फोन पर बता देगा।

जेलर साहब ने कवल से कहा—तुमने अपने लिए वकील कर लिया। कवल ने आसमान की तरफ ऊँगली उठाते हुये कहा—मेरा वकील वही है, जेलर साहब बोले तुम्हारे परिवार वाले।

कोई नहीं साहब।

तुमने शादी नहीं की?

शादी की थी जेलर साहब, परन्तु....।

कहो रुक क्यों गये जेलर साहब बोले।

संग्राम मिसिर ने मुझसे कहा लिखना छोड़ दो, परन्तु मैने लिखना नहीं छोड़ा बस मेरी बीबी एवं दो बच्चों को मेरे सामने मार दिया गया। कहते-कहते कवल की आँखें भर आई। मुझे रोने के लिए छोड़ दिया गया साहब। तुमने रिर्पोट नहीं लिखवायी, जेलर साहब बोले।

कहाँ लिखवायें साहब! थाने में पुलिस संग्राम मिसिर की पूजा करती है अपने भगवान के खिलाफ पुलिस जा नहीं सकती। देश के आला अधिकारी संग्राम के यहाँ पिकनिक मानने आते हैं। मुख्यमंत्री महोदय की बिटिया से संग्राम मिसिर के बेटे की शादी हुई है साहब, मेरी कौन सुनेगा।

जेलर साहब की अंतरात्मा कराह उठी, पर वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। संग्राम मिसिर की इच्छा का पालन करने के सिवा उनके पास कोई मार्ग नहीं था।

कवल का केस लड़ने के लिए सरकार की तरफ से वकील रखने की मजबूरी से परेशान होकर मुख्य न्यायाधीश महोदय ने जिला अधिकारी महोदया की अध्यक्षता में मीटिंग शुरू की। जिला अधिकारी महोदया आप बताएं इस केस को कैसे हल किया जाय। संग्राम मिसिर क्या चाहते हैं। जज महोदय ने संग्राम का पत्र जिला अधिकारी को दे दिया। मैडम ने बड़े गौर से पत्र को पढ़ा फिर बोली—मैने अभी-अभी नौकरी में प्रवेश किया है आप लोग तो बहुत दिनों से सेवा में है। ऐसे केस तो पहले भी आप लोगों ने हल किये होगें।

एसपी साहब बोले—महोदया, पुलिस विभाग में काम करते-करते मेरे बाल सफेद हो गये हैं, सिपाही से इस पद पर पहुँचा हूँ। राजनीतिक लोगों का करीब से देखा है परन्तु यह पहला मौंका है कि संग्राम मिसिर संविधान खुले आम खा रहा है। दुख की बात है कि राजनीतिक पार्टियाँ कुत्तों की तरह एक दूसरे को सिर्फ भूकती है। परन्तु सच यह है कि सभी नेता एक जैसे होते हैं। इसलिए नेताओ से उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिये हमें वही करना चाहिए जिससे हमारी एवं हमारे बच्चों की जान सलामत रहे। संग्राम मिसिर चाहे तो कुछ भी हो सकता है।

मुझे क्या करना चाहिए जज साहब बोले।

अंधेर देश में प्रकाश की किरण नहीं आ सकती, जिला के मुख्य डॉक्टर बोले। संग्राम जो चाह रहा है हमें करना पड़ेगा।

एक प्रोबलेम और है जज साहब बोले, कवल के बचाव में कोई भी सरकारी

वकील मुँह खोलने को तैयार नहीं है।

माई गाड़ जिला अधिकारी महोदया बोली, यह तो सचमुच समस्या है। बिना बहस के सजा कैसे होगी। वकीलों में इतना डर बड़ी अजीब बात है। मैडम जज साहब बोले– वकील कहते हैं नौकरी छोड़ देगें परन्तु पैरवी नहीं करेगें। मैंने उन्हें समझाया तुम सिर्फ पेड़ की तरह खड़े हो आओ जज सजा सुना देगा, फिर भी कोई तैयार नहीं हो रहा है।

जिला अधिकारी महोदया कुछ देर सोचकर बोली–मेरे चाचा सेना में बड़े अधिकारी है उन से सहायता मांगी जाय।

कोई फाइदा नहीं होगा मैडम रक्षामंत्री संग्राम मिसिर का बेटा है। जज साहब बोले तो मैडम चुप हो गई। एक काम तो मैं कर सकता हूँ एसपी साहब बोले, मेरा भाई वकील है वह खाना पूर्ति कर देगा परन्तु उसकी सुरक्षा।

उसकी सुरक्षा मेरी जिम्मेदारी होगी, जिला अधिकारी महोदया बोली, एक दिन तो मरना ही पड़ेगा, इसलिए मेरी मौत के बाद ही आप के भाई को संग्राम छू पायेगा, कहती हुई मैडम खुड़ी हो गई। जज साहब ने राहत की साँस ली।

❍❍

कार्यवाही शुरू की जाय, जज साहब ने आदेश दिया–संग्राम का वकील खड़ा होकर बोला–कवल नाम के इस लेखक ने संग्राम मिसिर को जो क्षति पहुँचाई है, उसकी भरपाई की जाय। मैं अदालत से निवेदन करता हूँ कि पानी से दूध को अलग किया जाय।

कवल का वकील खड़ा होकर बोला–वकील साहब पहले आप अदालत को यह बतायें कि मेरे मुवक्किल ने किस तरह संग्राम मिसिर के मकान को क्षति पहुँचाई। देश का जाना माना वकील जल्लाद सिंह मुस्कराकर कर बोला–आप सभी लोग सच जानते हैं फिर भी यदि मेरे मुख से सुनना चाहते हैं तो सुनो–आषाढ़ की पहली बरसात से देश में बहुत तबाही हुई जानमाल का नुकसान हुआ। समाचार पत्र निकालकर पढ़ा हजारों जाने हुई, अरबों का नुकसान हुआ, जज साहब मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि देश में अरबों का नुकसान वर्षा से हुआ। परन्तु संग्राम मिसिर के मकान के अंदर जो पानी घुसा उसने भी अरबों का नुकसान पहुँचाया। जज साहब आप इस रिर्पोट को देखें–यह रिर्पोट उस प्रयोगशाला की है जो देश ही नहीं विश्व में जानी पहचानी जाती है। इस रिर्पोट में लिखा हुआ है कि कवल लेखक के छप्पर का पानी ही संग्राम मिसिर के मकान में घुसा था। वकील साहब अब आप कुछ कहेंगे।

कवल का वकील बोला–जज साहब एक छोटी सी झोपड़ी का पानी इतनी बड़ी ताजमहल जैसी इमारत को कैसे नुकसान पहुँचा सकता है मेरी समझ में नहीं आ रहा है।

जल्लाद सिंह ने ठहाका लगाया, इतनी छोटी समझ वालों को वकील नहीं बनना

चाहिए जज साहब। जल्लाद सिंह कवल के समीप पहुँच कर बोलो–लेखक महाराज तुम लोग तो सत्य एवं न्याय के स्तभ हो, लगता है पूरी दुनिया को सुधारने का तुम लोगों ने ठेका ले रखा है। इसलिए यहाँ झूठ नहीं बोलना, बोलो तुम्हारी झोपड़ी संग्राम के महल से नीचे है या ऊपर।

इसमें मेरी क्या गलती है जज साहब, धरा का निर्माण जब इस तरह है तो मैं क्या करूं कवल बोला।

जल्लाद मुस्कराया, सेना का जनरल यदि खड़ा हो तो क्या सिपाही कुर्सी पर बैठ सकता है।

नहीं, जज साहब के मुख से निकल गया।

आप ठीक कह रहे हैं जज साहब संग्राम मिसिर का रुतबा इस देश में राजा से भी ऊपर है। अस्तु इस लेखक कवल ने अपनी झोपड़ी उस ऊँची जगह पर बनाकर गलती की इसे वहाँ झोपड़ी नहीं बनना चाहिए था। मानता हूँ वह जमीन इसकी पृतक सम्पत्ति है परन्तु इसकी दूसरी गलती है कि यदि इसे वहाँ रहना था तो जमीन खोद कर, इस तरह रहना था जिस तरह भरत नंदिगाँव में रहते थे। परन्तु इसने ऐसा नहीं किया। इसलिये मैं अदालत से निवेदन करता हूँ कि इस केस को राष्ट्र द्रोह के चश्में से देखते हुए मुजरिम को ऐसी सजा दी जाय जिससे कुछ धन संग्राम मिसिर को मिले। मेरा मतलब कवल की सारी जमीन संग्राम मिसिर के नाम कर दी जाय, इसके बाद कवल के अंगों को बेंचकर जितना हो सके उतना पैसा संग्राम मिसिर के खाते में डाल दिया जाय। एक बात मैं और कहना चाहता हूँ जज साहब आप माने या न माने परन्तु संग्राम मिसिर का जो नुकसान हुआ है इसमें हम सब भी शामिल हैं। कैसे न जज साहब, जल्लाद सिंह मुस्कराकर बोला, पूरा प्रशासन इसका जिम्मेदार है, इसलिए मैं जज साहब आप से न्याय की उम्मीद रखते हुऐ सारे प्रशासन से इसका हर्जना मैं एवं आप भी देश के सारे सरकारी कर्मचारी कोई ऊँच नीच नहीं बिना भेदभाव के एक महीने का वेतन संग्राम मिसिर के खाते में डालें। इसके अलावाँ पूरे देश की जनता से मात्र एक रुपया कर लेकर संग्राम मिसिर के खाते में डाला जाय। जज साहब मेरी बात खत्म हो गई कहकर जल्लाद सिंह आसन पर बैठ गया।

जज साहब ने कवल के वकील की तरह देखा तुम्हें कुछ कहना है, वकील ने आकाश की तरह देखते हुये कहा, जज साहब इस संसार को चलाने वाला भी कोई है इसलिए आप जो फैसला करे ईश्वर को स्मरण करके करें। बस मुझे इतना कहना है जज साहब।

जल्लाद सिंह खड़ा होकर बोला–जज साहब ईश्वर, अल्लाह कवल जैसे कवि एवं लेखकों की कल्पना है मेरा बस चले तो दुनिया से इन झूठे कवि एवं लेखकों का नमो

निशान मिटा दूँ। इन लोगों ने दुनिया को गुमराह किया है। आप न्याय की कुर्सी पर बैठे है जो कहेंगे वही न्याय होगा।

जल्लाद सिंह तुम वकील की मर्यादा से हटकर बात कर रहे हो, जज साहब के मुख से निकल गया। जल्लाद को क्रोध आ गया। आप अच्छी तरह जानते हैं कि अंधेर देश में जो मैं चाहता हूँ वही फैसला होता है। जज साहब कुछ देर तक सोचते रहे फिर स्वयं को इस केस से पृथक करने का निर्णय मुख्य न्यायाधीश महोदय को प्रेषित कर दिया। जल्लाद मुस्कराया यदि आप इस केस का फैसला नहीं कर सकते तो मुख्य न्यायाधीश से मैं करा लूंगा कहता हुआ जल्लाद अपने आसन पर बैठ गया। न्यायालय में यह बात आग की तरह फैल गई। कुछ मीडिया कर्मी तुरन्त पहुँच गये।

संग्राम मिसिर चिंतित हो गये, अब क्या होगा जल्लाद। आप चिंता न करें,, मीडिया क्या दुनिया में किसी की ताकत नहीं कि कवल को बचा ले, जल्लाद ने मीडिया वालों से कहा, आप लोग आँखें बन्द करें। सभी ने आँखें बंदकर ली। जल्लाद के आदेश पर जब उन्होंने आँखें खोली तो दो-दो हजार के नये नोट चारो तरफ बिखरे मिले। जल्लाद बोला, तुम लोग पाँच सौ रुपये के लिए न्याय की परिभाषा बदल देते हो मैने तुम सब का स्वागत दो, दो हजार के नये नोटो से किया है। लुटो जी भर के और संग्राम मिसिर की जय जयकार करते हुये चले जाओ। मीडिया वाले संग्राम मिसिर की जय जय कार करते हुए नये नोटो से जेब भरा और चले गये। उन्हे इस बात का आश्चर्य हुआ कि सरकार के नये नोट बैंक से पहले जल्लाद के पास कैसे पहुँच गये। अभी कल ही तो नोट बन्दी की घोषणा हुई है।

मुख्य न्यायाधीश महोदय स्वयं आये। अदालत लगी और उन्होंने जल्लाद के निर्णय पर मुहर लगा दी। जिला अस्पताल से मुख्य डॉक्टर स्वयं आये, समाचार पत्रों में विज्ञापन छपा और कवल को हलाल करके कुल बीस लाख रुपये संग्राम के खाते में डाल दिये गये, पूरे देश के सरकारी कर्मचारियों का एक महीने का वेतन न्यायालय के आदेशानुसार काटकर संग्राम के खाते में डाल दिया गया, कुछ कवि एवं लेखकों ने अदालत के इस निर्णय का विरोध किया, तो उनको जनता ने पीट-पीट कर मार डाला। पूरे अंधेर देश से सत्य को निकाल करके संग्राम मिसिर ने शक्ति की विजय का शंखनाद किया।

अंधेर देश की यह घटना अंधेरे में ही खत्म हो जाती परन्तु कवल ने इसका पूर्वानुमान लगाकर लिख दिया कि अंधेर देश एक दिन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की अंधेर नगरी को मात कर देगा, आज उसका अनुमान सत्य में परिवर्तित हो गया।

❑❑❑

चौकीदार

भारत वर्ष का एक गाँव है दुर्जनपुर इतिहास एवं भूगोल दोनों ही दृष्टि से यह गाँव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गंगा नदी के तट पर स्थिति अति सुरम्य स्थल पर आज से लगभग सात सौ वर्ष पूर्व एक ब्राह्मण दम्पति को एक राजपूत ने दान में यह जगह दी थी। हो सकता है उस समय इस स्थान को साधना के लिये उपयुक्त समझा गया होगा। आज भी गाँव के पूरब दिशा की तरफ कुल देवता का एक मंदिर है, गाँव में ब्राह्मणों के अलावा दलित जाति के लोग भी निवास करते हैं। गाँव के इतिहास की बातें बताने वालो की यद्यपि कमी नहीं है परन्तु ये बातें कितनी सही है कहना कठिन है।

पतित पावन गंगा जी के तट पर होने के कारण दुर्जनपुर का अपना विशेष महत्त्व है। इस गाँव में देखने वाली बात यह है कि यहाँ भारत के अन्य गाँवों की तरह रास्ते की समस्या नहीं है लोग सामूहिक कार्य में अपना योगदान देने में कंजूसी नहीं करते। राम विवाह हो या दुर्गापूजा कथा भागवत कुछ भी धार्मिक कार्य यदि शुरू किया जाय तो दान देने वाले की भीड़ लग जाती है। इस गाँव में वर्ष में कई धार्मिक आयोजन होते हैं। यहाँ के लोगों के घर के सामने लगे फूल गाँव की मनोहरता में चारचाँद लगाते हैं। प्राकृतिक सुषमा की दृष्टि से यह गाँव अद्वितीय है।

आल्हा, उदल की तरह इस गाँव में बहादुरों एवं ज्ञानियों की कथायें प्रचलित हैं। किसी ने हाथी के सर पर लाठी बारात में मारी तो वह चिल्लाता हुआ भाग गया। शेर से लड़ने वाले शूरवीर भी इस गाँव में पैदा हुए हैं। पंडितों की तो बात ही न करो कुछ लोग कहते हैं कि यह गाँव दूसरा काशी है, एक बार एक राजा हाथी पर बैठकर यहाँ आये, एक पंडितजी पूजा कर रहे थे। लोग उनके पास आये, बोले आप राजा जी का स्वागत करें। कहते हैं ब्राह्मण देवता एक दीवाल पर बैठे और उनके कहने पर दीवाल राजा के स्वागत हेतु चल पड़ी। कुछ लोग कहते हैं इस गाँव के ब्राह्मण मछली खाते थे। एक दिन राजा आये उन्होंने पंडित जी से जब इस पर चर्चा करनी चाही तो पंडित जी ने मुँह में ऊँगली डालकर उलटी की। राजा ने देखा जिंदा मछली बाहर निकल आई। इसी तरह लोग कहते हैं कि यहाँ के ब्राह्मणों की धोती से चिंगारी निकलती थी। वे धोती को धोकर आकाश में फेंक देते थे। वहीं सूखती और दूसरे दिन जब नहाते तो ले लेते थे। इसी तरह न जाने कितनी कहानी यहाँ की जमीन में दबी हैं। इन्हें अब भी दो चार लोग जहाँ बैठते शुरूकर देते हैं।

इस गाँव ने नेता, मंत्री एवं कई अधिकारी डॉ. वकील मास्टर पैदा किये परन्तु आज तक यहाँ कोई सज्जन पैदा नहीं हुआ। कुछ वर्ष पूर्व नमन नाम का एक सज्जन यहाँ आया तो गाँव वाले उसका मजाक उड़ाने लगे।

नमन चौकीदार था, परिवार में पत्नी एवं दो बेटे थे। बच्चे बड़े हो गये थे। नमन की उम्र लगभग पच्चपन वर्ष परन्तु आज तक गाँव में उसका कोई दोस्त न बन सका। इसका सबसे बड़ा कारण कबीर का यह दोहा था। साँच बराबर तप नहीं। नमन ने इस दोहे को जीवन में ढ़ालने की कोशिश की परिणाम वह अकेला रह गया। गाँव का इतिहास चाहे कितना अच्छा रहा हो, परन्तु आज उसे इस गाँव में कोई मनुष्य दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसने स्वयं को इस तरह अकेला नहीं किया, कई महानुभाव से उसने सम्बन्ध बनाने की कोशिश की परन्तु उनकी वाणी एवं करनी में जमीन आसमान का अंतर था। लोगों को अपनी बात की कोई चिंता नहीं कहा उतर गये दक्षिण। धूर्तता धोखेबाजी करने वालों का किस प्रकार गाँव वाले सम्मान करते हैं इस वेदना से नमन दुखी हो जाता। इसलिए वह अब किसी से राम-राम के सिवा कोई बात नहीं करता। नमन को जीवन के अनुभव ने सिखा दिया कि रिश्ते नाते सब का सम्बन्ध सत्य एवं असत्य से होता है। सत्य पर चलने वाले का झूठा पिता भी साथ नहीं देता।

सरकार लोगों का शिक्षित बनाने को कृत संकल्प है। परन्तु अफसोस इस बात का कि इस देश के बच्चे युवा रास्ते में मल करने में जरा भी संकोच नहीं करते। किसी भी सड़क के किनारे हम यह दृश्य देख सकते हैं। गाँव में स्वच्छता के प्रति लोगों की उदासीनता देख नमन चिंतित हो जाता। अपना उल्लू सीधा करने की प्रवृत्ति यहीं से विकसित होती हैं। ऐसे विचार रखने वाले युवा चाहे कितना बड़ा पद प्राप्त कर ले पर उनसे मानवता का कल्याण नहीं हो सकता। नमन मन ही मन सोचता आफिस पहुँचा।

वीपी तिवारी साहब सुपरवाइजर थे कल उन्होंने फोन किया था। अतः नमन को आफिस आना पड़ा। नमन जब आफिस पहुँचा तो तिवारी साहब रसगुल्ला खा रहे थे। दो गार्ड खड़े थे एक के हाथ में पानी की बोतल तो दूसरे के हाथ में काँच का गिलास था। नमन ने तिवारी साहब को हाथ जोड़कर नमन किया। हाथ से बैठने का इशारा करके तिवारी साहब रसगुल्ला खाने लगे। रसगुल्ला खत्म करके तिवारी साहब बोले—नमन तुम्हारी हमारे पास शिकायत आई है। इंसपेक्टर साहब कह रहे थे तुम्हारा ड्रेस ठीक नहीं रहता यदि तुम अपने को नहीं बदल सकते तो नौकरी क्यों करते हो? मैं बहुत गरीब हूँ साहब जी।

इसीलिए मैं तुम पर दया करता हूँ आइन्दा हमारे पास कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। तुमने उस दिन इंस्पेक्टर साहब को चाय नहीं पिलाया।

साहब जी मैने इंस्पेक्टर साहब से पूछा था उन्होंने मनाकर दिया था। बेवकूफ, तिवारी साहब मुस्कराएँ यह सरकारी नौकरी नहीं है जहाँ पर बिना काम के पैसा मिलता

है। यहाँ पर रहना है तो अफसरों को खुश करना सीखों। हजार पाँच सौ रुपया यदि तुम साहबों की सेवा में खर्च कर दोगे तो नौकरी बची रहेगी समझे। आजकल काम कौन देखता है बस जी हजूरी करना सीखों। इस देश में रहना है तो बेइमानी करना सीखो भइया। मेरे सामने ईमानदारी के बातें कभी नहीं करना। नमन चुपचाप तिवारी साहब की बात सुनता रहा फिर पाँच सौ का नोट साहब को दे दिया।

वीपी तिवारी साहब नोट को जब में रखते हुए बोले पिछला हिसाब?

साहब जी एक हजार रुपया आपके कहने पर आर. पी. मिश्रा सुरक्षा गार्ड को दिया गया था। ओह याद आया तिवारी साहब हंस पड़े। तिवारी साहब को सुविधा शुक्ल देकर नमन आफिस से बाहर निकला। थोड़ा आगे बड़ा हनुमान जी का मंदिर था। भीड लगी हुई थी आज जेष्ट का दूसरा मंगलवार था। नमन के दिल में आया कि मंदिर चला जाऊँ, हनुमान जी को ही अपनी कहानी सुनाऊ तभी बीपी तिवारी सुपरवाइजर के शब्द याद आये। तुम सोचते होगे पैसा मैं क्यों लेता हूँ। मेरी भी मजबूरी है भइया, मैं भी नहीं चाहता तुम्हारी तनखाह से पैसा लू, पर यदि न लू तो ऊपर वाले अधिकारियों को कैसे खुश करूँ, हर महीने हेड क्वाटर जाना पड़ता है दक्षिणा देने। इस देश में कौन रिश्वत नहीं खाता। सभी खाते हैं इसका मतलब भगवान भी, इससे अधिक नमन सोच न सका, चुपचाप आगे बढ़ गया। हाँ मन ही मन उसने हनुमान जी से प्रार्थना कि हे पवन पुत्र इस देश के नेता, मंत्री एवं अधिकारियों का सद्बुद्धि दो।

घर पहुँचा तो शाम हो गई, पत्नी घर के मंदिर में आरती कर रही थी। चुप चाप कपड़े उतारकर बैठ गया। थोड़ी देर के बाद श्रीमती जी आँई, कहाँ गये थे प्रश्न किया। तिवारी साहब से मिलने गया था नमन ने जवाब दिया। तनखाह आ गयी क्या—नमन कुछ बोला नहीं चुपचाप पाँच सौ का नोट श्रीमती के हवाले कर दिया। पाँच सौ और दे दो श्रीमती बोली। इस महीने इससे अधिक नहीं हो सकता नमन अपनी मजबूरी बताने लगा। श्रीमती जी ने आँखें नाचाई और उठकर चली गई। थोड़ी देर के बाद छोटा लड़का आया। बाबू जी कोचिंग की फीस नमन ने एक हजार रुपये उसे दे दिया। बहू ने बड़ी मुश्किल से चाय बनाई कई बार खाँसती रही उन्हें जुखाम हो गया था। इसलिए बहू ने खाना नहीं बनाया। श्रीमती जी चिल्ला रही थी पैर फटा जा रहा है। बड़ा बेटा बहू को लेकर डॉक्टर के पास चला गया। श्रीमती जी चाय वहीं छोड़कर आई मेरे पैर में बहुत दर्द हो रहा है थोड़ा मालिश कर दो। नमन उठा और श्रीमती के पैर में दवा लगाने लगा।

थोड़ी देर के बाद लड़का बहू को लेकर आ गया। एक सौ एक डिग्री बुखार था आते ही उसने नमन को बताया और अन्दर चला गया। शाम के आठ बज चुके थे नमन ने आकाशवाणी लगाया और हिन्दी कार्यक्रम सुनने लगा। विषय बड़ा रोचक था।

दुष्टों की जय हो।

मैं दुनिया के सभी दुष्टो को नमन करता हूँ, महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आप किस पद पर किस हैसियत से तालुक रखते है, अहम बात यह है कि आप कितने बेइमान हैं। जिस तरह पेवर दूध मूल्यवान होता है उसी तरह सौ प्रतिशत तक बेइमान व्यक्ति इस संसार में फलता एवं फूलता है। एक-एक सेन्टी मीटर से सौ तक पहुँचकर जिस तरह मीटर का निर्माण होता है उसी तरह पूर्णरूप से बेइमान व्यक्ति में निखार आता है। अमीर एवं गरीब की खाई आज व्यर्थ हो गई है। संसार में लड़ाई अच्छाई एवं बुराई की थी और सदा रहेगी। इतिहास से हमें यही ज्ञान मिलता है कि हमेशा लड़ाई छल एवं कपट से जीती जाती थी और आज भी इसी नीति से लड़ाई जीती जा रही है। इसलिए जो गरीब बेइमान हैं उनके विकास के अनेक रास्ते खुल जाते हैं, चोरी, लूट, खून और भी अनेक व्यापार उनके लिए नेता खोलने को तैयार है, फिर उस गरीब को घबड़ाने की जरूरत नहीं। अब वह दिन दूर नहीं जब देश की राजनीतिक पार्टियाँ ऐसे बेइमानों की पहचान कराकर पेंशन देने की योजना शुरू करेंगी। इसलिए मैं आप लोगों का आवाहन करता हूँ कि आप लोग प्रगति के पथ पर बढे, मेरा मन कहता है कि अब वह दिन दूर नहीं जब इस धरती पर सज्जन क्या सज्जन शब्द बोलने वाला भी नहीं मिलेगा। अंत में मैं पुनः दुष्टों की वन्दना करता हूँ तुम सभी इस धरती के साकार ब्रह्म हो। हे महामहिम दुष्ट जनों मुझे सिर्फ बकरी की तरह पत्ते खाने दो ताकि हमारी माँस का भोजन एवं व्यापार दोनों कर सको। हे दुष्टों देश का उत्थान करो, गरीबो का भक्षण कर गरीबी से देश को मुक्त करो।

वार्त्ता खत्म होने से पहले आकाशवाणी पर विजली चली गई। दुखी मन से नमन ने रेडियों बंद कर दिया। पापा चलो खाना खा लो बड़े बेटे ने कहा।

नमन उठा और चुपचाप बैठ गया। पापा मम्मी की तबियत पहले से ही ठीक नहीं रहती आज राजू की माँ को भी बुखार आ गया। इसलिए खाना नहीं बना। ये समोसे एवं जलेबी बाजार से लाया हूँ कहकर नमन के सामने रख दिया।

❍❍

सुबह नमन जब डियुटी को तैयार हुआ तो खाना नहीं मिला। अपने क्रोध को प्रकट तो नहीं किया परन्तु मन घोर निराशा में डूब गया। पत्नी आकार बोली—आज बाजार से कुछ लेकर खा लेना। नमन कुछ नहीं बोला चुपचाप बाहर निकल गया। साइकिल निकाली तभी पत्नी आ गई। आज भूलना नहीं धूपबत्ती जरूर ले आना। सब्जी दाल की कमी नहीं होने देते, गैस खत्म होने से पहले भरा कर रख देते हो, परन्तु भगवान के लिए अगरबत्ती भूल जाते हो। मुझे पूजा में देर हो रही है कहते हुए श्रीमती जी घर के अन्दर चली गई। नमन कुछ देर खड़ा सोचता रहा, फिर चल दिया। श्रीमती

जी ओम जय जगदीश हरे, आरती गाने में तल्लीन हो गई।

नमन डियुटी पर पहुँचा तो विपिन बोला—कल इंस्पेक्टर साहब आये थे कह रहे थे कि तुमने पौधों में पानी नहीं डाला है, यदि दुबारा ऐसी गलती की जो यहाँ से भगा दूँगा। कुटिल मुस्कान के साथ मुस्कराते हुए विपिन ने मोटर साइकिल आगे बढ़ा दी। विपिन गार्ड था वह डियूटी पर यदा-कदा ही आता था। अभी पिछले महीने की बात है विपिन मण्डी में ताला लगा कर घर चला गया। रात में एक गाड़ी आई गार्ड नहीं। इंस्टपेक्टर को जब पता चला कि डियूटी विपिन की है तो तुरन्त बात बना दिया, उसे हमने भेजा था, वह मुझसे पूछकर गया था, उसकी बेटी की तबियत अचानक खराब हो गई थी। उसे बचाने के लिये निगम एवं मण्डी के अधिकारी खड़े हो गये।

नमन पुनः यादो में खो गया। पिछले हफ्ते की बात है। वह बाजार गया था। वापस होते समय मण्डी के रास्ते आ गया। इंस्पेक्टर श्रीवास्तव साहब आये थे। विपिन डियूटी पर था। नमन ने जब इंस्पेक्टर साहब को देखा तो घबरा गया। तरह-तरह के व्यंजन द्राक्षी से भरा काँच का गिलास, विपिन को साहब की सेवा में तत्पर देखकर नमन आगे बढ़ा। तभी इंस्पेक्टर ने आवाज लगाई—ओ चौकीदार यहाँ आओ। नमन इंस्पेक्टर के पास पहुँचकर खड़ा हो गया।

बैठो, प्रमोद श्रीवास्तव बोले।

नमन बैठ गया।

कहाँ गये थे?

साहब जी बाजार गया था।

बिना डियूटी यहाँ न आया करो—श्रीवास्तव साहब ने आदेश देते हुये कहा—मेरी बात ध्यान से सुनो, कल तुम्हारे सुपरवाइजर बीपी तिवारी साहब का फोन आया था वे तुम्हारी जगह किसी अच्छे आदमी को भेजना चाहते थे, मैने मना कर दिया। डियूटी मन लगाकर करना, पौधों में सुबह शाम पानी डालना। देखो कोई कद्दू हो तो तोड़ लाओ। नमन चुपचाप चल दिया। कद्दू तोड़कर श्रीवास्तव साहब को देकर बोला साहब जी अब मैं जा सकता हूँ।

बस एक काम और कर दो, श्रीवास्तव साहब ने दस का नोट निकाल कर देते हुए कहा, एक सिगरेट बाकी पैसों का कमला पसन्द पैसा लेकर नमन चला तो उसे तिवारी साहब के शब्द याद आये। हजार पाँच सौ रुपया यदि साहबों की सेवा में खर्च करोगे तो नौकरी बची रहेगी। यदि यहाँ कंजूसी की तो मैं कुछ नहीं कर सकता। कलियुग में अफसर ही भगवान हैं। यही सोचकर नमन ने एक सिगरेट की जगह एक पैकेट लेकर साहब को दे दिया। सिगरेट एवं कमला पसन्द को लेकर श्रीवास्तव बोले, अब जाओ। डियूटी ध्यान से करना। सोचते-सोचते नमन का सिर दर्द करने लगा। विपिन चला गया

था। नमन ने साइकिल अंदर की ओर गेट में ताला लगा दिया।

विपिन, सूजासिंह एवं रतनलाल तीन और गार्ड नमन के साथ मण्डी में डियूटी करते थे। कोई किसी से कम नहीं सभी शराबी कबावी रोड पर चलने वाली रमणी को देखकर उल्टी सीधी बातें करने वाले अधिकारियों को प्रिय थे। गार्ड साहब कहकर इंस्पेक्टर साहब उन्हें बुलाते थे परन्तु नमन जिसने जीवन में तम्बाकू भी नहीं खाया। एक चींटी भी मारने की हिम्मत नहीं उसे ओ चौकीदार कहकर इंस्पेक्टर साहब पुकारते। सुपरवाइजर बीपी तिवारी की नजर में वह इतना गिर गया था कि वे उसे बैठा हुआ डियूटी पर नहीं देखना चाहते थे। सोचते-सोचते जब मन दुखी हो गया तो बालटी लेकर पौधों में पानी डालने लगा।

आदमी कितना विचित्र प्राणी है नमन के समझ से परे था। इस नई मण्डी में जितने पौधें जिंदा हैं उनको उसी ने पाला है। कई पुष्प के पौधें उसने लगाए हैं परन्तु वे बोल नहीं सकते। इस संसार में बेइमान और सज्जन में सदा दुश्मनी रही है जिसका परिणाम सज्जन की मृत्यु हुई है।

❍❍

शाम का समय था श्रीवास्तव साहब नई कार मण्डी में खड़ी करके बोले, ओ चौकीदार में दूसरी गाडी से अपने रिश्तेदार के घर जा रहा हूँ सुबह आकर कार ले जाऊँगा, सोना नहीं कार का ध्यान रखना। इतना कहकर श्रीवास्तव साहब शर्मा साहब की मोटर साइकिल पर बैठकर चले गये। नमन गेट बंद करके पौधों को पानी देने लगा। पौधों को पानी देकर वह टहलने लगा।

ठहलने के बाद वह बैठ गया मन ही मन राम का नाम लेने लगा नमन को इस संसार में यदि कहीं संतोष मिलता तो वह राम नाम ही था। अपने चिंतन में वह खोया था तभी शर्मा साहब आ गये। आवाज लगाने पर नमन ने गेट खोला शर्मा साहब बोले मुझे श्रीवास्तव साहब ने भेजा है साहब की कार ले जाना है। नमन ने गेट खोल दिया। शर्मा साहब कार लेकर चले गये।

सुबह आठ बजे प्रमोद श्रीवास्तव साहब मण्डी पहुँचे नमन ने साहब का अभिवादन किया। श्रीवास्तव साहब ने अभिवादन का उत्तर नहीं दिया। नमन के लिए यह कोई नई बात नहीं थी। प्रायः बड़े आदमी, अधिकारी छोटे लोगों से बोलना पाप समझते है नमन ख्यालो में खोया था कि श्रीवास्तव साहब बोले—ओ चौकीदार तुम सो गये थे मेरी कार लेकर कोई चला गया। नमन का दिमाग घूम गया—उसी अच्छी तरह याद था कि शाम के आठ बजे शर्मा साहब कार लेकर गये थे। परन्तु श्रीवास्तव साहब मानने को तैयार नहीं। ओ चौकीदार तू झूठ बोल रहा है कहते हुए श्रीवास्तव साहब ने शर्मा साहब का फोन नम्बर मिलाया। उन दोनों में अंग्रेजी में क्या बात हुई नमन समझ न सका। हाँ

थोड़ी देर के बाद शर्मा साहब के साथ थानेदार साहब भी आ गये।

नमन ने जब शर्मा साहब से कार ले जाने की बात कही तो वे आग बबूला हो गये। मैं और श्रीवास्तव साहब थानेदार के बेटे के वर्थ डे पर रात में इन्हीं के यहाँ पर थे, तुम कहते हो मैं कार ले गया। झूठ मत बोलो चौकीदार, शर्मा साहब की बात सुनकर नमन चुप हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था आखिर ये लोग क्या चाहते हैं। तभी विपिन के साथ सुपरवाइजर तिवारी साहब भी पधारे। तिवारी साहब को नमन ने नमन किया। तिवारी साहब नमन से बोले, चौकीदार मेरे साथ आओ। तिवारी साहब नमन को एकान्त में ले जाकर बोले—मैने तुम्हे पहले भी समझाया था कि जल में रहकर मगर से बैर मत करो। तुम अपने को देखो दूसरो को नहीं विपिन सूजासिंह एवं रतनलाल की शिकायत मत करो, वे डियूटी पर आयें या न आये', पौधे' में पानी दे या न दे, यह देखना तुम्हारा नहीं, अपितु इस देश के अफसरों का काम है। परन्तु तुम सदा न्याय एवं नियम की बातें करते हों। नैतिकता का भाषण देने लगते हो। छोटी सी बात तुम्हारी समझ में नहीं आई कि भगवान भी अपने सेवादारों के गुनाह को नहीं देखते, हम सब तो मनुष्य है। जो आदमी अपने अफसर को खुश कर दे किसी भी तरह से उसका अनहित भगवान भी नहीं कर सकता। मेरा हजारों लोगों से पाला पड़ा परन्तु तुम्हारे जैसे बेवकूफ नहीं मिला। ईमानदारी से काम करने वाला अफसर की नजर में मूर्ख होता है। मुझे तुम पर दया आती है। इसलिए साहब से सिफारिश करके तुम्हारी नौकरी बचा सकता हूँ परन्तु तुम्हे मेरी बात मानना होगा। सोच विचार लो, कहकर तिवारी साहब चुप हो गये।

साहब जी आप मेरी नौकरी बचा ले, आप जो कहेंगे मुझे मंजूर है। नमन याचना भरे स्वर में बोला।

ठीक है तिवारी साहब मुस्कराये मेरी बात मानने में तुम्हारी ही नहीं अपितु तुम्हारे परिवार की भलाई है। बात आगे बढ़ी तो जेल जाओगे, बदनामी ऊपर से होगी। तुम लाख चिल्लाओ तुम्हारी बात पर कोई यकीन नहीं करेगा। यहाँ तक तुम्हारी बीबी एवं बच्चे भी तुम्हारी राम कहानी नहीं सुनेगे, मैने दुनिया देखी है इस युग में सच्चाई एवं ईमानदारी सिर्फ किताबों की बातें है। जीवन में इनका कोई महत्त्व नहीं है।

आप ठीक कह रहे है साहब जी पर क्या करूं, जीवन में झूठ बोल नहीं पाया।

बीपी तिवारी साहब ठहाका मारकर हंसे चौकीदार मेरी बात ध्यान से सुनो—प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति भी झूठ बोलते है, सारे नेता न्यायाधीश अफसर मंत्री झूठी कसमें खाते हैं फिर तुम्हे झूठ बोलने में क्या परेशानी है। अच्छा अब तुम सत्य बोलो देखता हूँ तुम्हे कौन बचाता है।

मुझे बचा लो साहब, नमन ने हाथ जोड़कर कहा। तिवारी साहब मुस्कराकर

बोले—बोलो झूठ बोलोगे।

हाँ साहब जी, मैं झूठ बोलूगा।

शाबास तिवारी साहब हँस पड़े, अब तुम यह नहीं कहना कि शर्मा साहब कार ले गये। यह कहना कि मैं सो गया था कार चोरी हो गई। नमन ने हाँ में सिर हिला दिया। अब तुम्हारी नौकरी पक्की, कहकर तिवारी साहब नमन को लेकर मण्डी इंस्पेक्टर के पास आ गये।

❍❍

तिवारी साहब मण्डी इंस्पेक्टर प्रमोद श्रीवास्तव से बोले—सर मुझे चौकीदार पर तरस आ रहा है, यदि इसकी नौकरी चली गई तो इसके बच्चों पर असर पड़ेगा। हम अधिकारियों का फर्ज बनाता है कि अपराधी को दण्ड देते समय यह भी सोचे की कर्मचारी की गलती का प्रभाव परिवार पर न पड़े। हमने यही विचार कर न्याय किया है। मुझे पूरा भरोसा है कि आप इस चौकीदार नमन पर दया करेंगे, श्रीवास्तव साहब मुस्कराएँ, तिवारी जी हम आपका सम्मान करते हैं, आप जो भी न्याय करेंगे हमें स्वीकार होगा।

धन्यवाद सर, तिवारी साहब बोले।

धन्यवाद कहकर हमें शार्मिन्दा न करे तिवारी साहब।

आप महान हैं इंस्पेक्टर साहब, तिवारी जी बोले, सर आप की कार की कीमत दस लाख से अधिक होगी परन्तु बेचारे नमन के फंड में केवल साढ़े तीन लाख रुपये हैं, इसलिए आप केवल तीन लाख रुपये लेकर इसे माफ कर दें। श्रीवास्तव साहब कुछ देर तक मौन रहे फिर बोले। ठीक है तिवारी साहब आप कार्यवाही करके पैसा मुझे दिलवा दीजिए मैं रिर्पोट वापस लेता हूँ। तिवारी साहब ने कागज निकाले जहाँ कहा नमन ने हस्ताक्षर कर दिये। इस तरह नमन की नौकरी तो बच गई परन्तु उसकी मेहनत की कमाई तीन लाख साहबों की जेब में चली गई।

इस घटना से नमन को गहरा सदमा लगा। किसी तरह उसने अपने आप को समझाया। हानि-लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ। स्यात् ईश्वर की यही इच्छा थी। यह घटना दुर्जनपुर में फैल गई। चाय, बीडीं की दुकान पर इसकी चर्चा होने लगी। बगुला भगत को देखो, लोग कुटिल मुस्कान के साथ नमन को देखकर व्यंग कसते। जिस थाली में खाया उसी में छेद कर दिया। मण्डी इंस्पेक्टर की कार बेंच दी। धन्य है भारतीय अधिकारी जो चोर पापी, दुष्ट पर भी दया एवं कृपा की वर्षा करते हैं। नमन को ये बातें अब दुखी नहीं करती, वह अपने आपको समझा चुका था। जब अपने प्रियजन ही उसके साथ न चल सके तो फिर वह दुनिया की परवाह क्यों करे।

समय अपनी गति चलता रहा, धीरे-धीरे नमन तीन लाख के मोह से स्वयं को

निकाल लिया। मण्डी इंस्पेक्टर प्रमोद तिवारी का बड़ा बेटा आई. ए. एस. था। दो दिन पूर्व उसकी शादी किसी मंत्री की बेटी से हुई थी। आज उसी के उपलक्ष में प्रीतिभोज का आयोजन था। कल विपिन ने नमन को जब प्रीतिभोज का कार्ड दिया तो वह चिंतन में पड़ गया।

इंस्पेक्टर के यहाँ जाने का मतलब कम से कम एक हजार रुपये का उपहार अनिवार्य था। क्या करे मन ही मन सोच रहा था कि फोन बज उठा। इंस्पेक्टर श्रीवास्तव का फोन था उन्होंने नमन को प्रीतिभोज में आकर मदद करने की बात कही। शाम को वह इंस्पेक्टर साहब के प्रतिभोज में पहुँचा वहाँ की सजावट देखकर दंग रह गया। शहर की आला अफसर कई पार्टियों के नेता, मंत्री, सांसद, विधायक मौजूद थे। नमन को इस बात का महान आश्चर्य हुआ कि विरोधी पार्टी के नेता, जनता की दृष्टि में एक दूसरे के जानी दुश्मन, एक साथ बैठकर द्राक्षी पीकर कहकहे लगा रहे थे।

सुपरवाइजर वीपी तिवारी ने नमन को साहब लोगों को खिलाने एवं पिलाने का काम सौंपा जिसे उसने पूरी निष्ठा से सम्पन्न किया। रात के एक बज चुके थे, अधिक तर मेहमान जा चुके थे। नमन एक चारपाई पर लेटा था। तभी इंस्पेक्टर एवं तिवारी साहब में नमन को लेकर बात होने लगीं। नमन सुन रहा था। श्रीवास्तव साहब कह रहे थे वह पैसा जो तुमने नमन का मुझे दिया था, उसको प्रीतिभोज में लगा दिया। सांसद, विधायक, नेता, अफसर यही तो आज के भूसुर हैं। कितना भी पाप करो जिस तरह भागवत की कथा सुनने से उससे मुक्ति मिल जाती है उसी तरह मेरे विचार से रिश्वत एवं बेइमानी का पैसा ऐसे शुभ अवसर पर प्रयोग करना चाहिए।

तिवारी साहब मुस्कराये, आप महान ज्ञानी है आपके पग चिन्हो पर चलकर आज के भूसुरो को खिलाकर यहाँ का राज भोगकर स्वर्ग का दरवाजा खोल लूंगा। श्रीवास्तव साहब लोग कहते हैं बेइमानी का पैसा फलता नहीं परन्तु यह धारणा गलत है। हमने जीवन भर बेइमानी की हमारा लड़का सेना में मेजर है बेटी डॉक्टर है आपका परिवार भी समाज में ऊँचा स्थान रखता है। मैने गलत तो नहीं कहा।

आपकी बात से मैं पूर्णतया सहमत हूँ मैं जहाँ जाता हूँ यही शिक्षा देता हूँ लुटो जी भर के। इस देश में वही आगे बढ़ेगा जो बेइमान होगा। श्रीवास्तव की बात सुनकर तिवारी साहब हंस पड़े। चलो रात बहुत हो गई है अब आराम करें।

दोनों अधिकारियों की बात सुनकर नमन पुनः सोच में डूब गया। उसने महसूस किया निःसन्देह सत्य आज अपहिज हो गया है परन्तु वह मरेगा नहीं उसके अंतरात्मा से आवाज आई। दुनिया को धोखा देने वालों को परमात्मा के दरबार में बेनकाब होना पड़ेगा।

❑❑❑

इंतजार

संत एकात्म ज्ञानी पुरुष थे, बचपन में ही उन्होंने संसार का त्याग करके स्वयं को परमात्मा से जोड़ लिया। संसार की क्रिया कलापों से उन्होंने स्वयं को पूर्णतया मुक्त कर लिया। निर्जन स्थान पर अपने कुछ शिष्यों के साथ साधना में रत थे। शिष्यों में एक दिन इस बात पर बहस छिड़ गई कि इस युग में सबसे शक्तिशाली कौन है। कोई निर्णय न हो सका। अंत में वे सब के सब संत एकात्म के पास आये। शिष्यों को अधीर देखकर संत एकात्म बोले। मैं जानता हूँ तुम सब के मन में इस समय बेचैनी है। बोलो क्या कारण है संत एकात्म की बात सुनकर सारे शिष्य मौन हो गये।

तुम सब किस विषय पर चर्चा कर रहे थे मुझे बताओ, हो सकता है मैं उसका संतोषजनक उत्तर खोज लू। गुरुवर एक शिष्य खड़ा होकर बोला—हमने संसार का त्याग कर दिया, फिर भी हमारा मन कभी-कभी दुखी हो जाता है अपने लिए नहीं उन लोगों के लिए जो संसार चक्की में पिस रहे हैं। आप तो त्रिकालदर्शी हैं गुरुदेव। एक समय वह था जब संसार में राजाओ का राज होता था। तब राजा सबसे शक्तिशाली माना जाता था। समय ने करवट ली दुनिया में लोकतन्त्र स्थापित हुआ। इस व्यवस्था में कहीं राष्ट्रपति तो कही प्रधानमंत्री सबसे शक्तिशाली माना जाने लगा। गुरुदेव आप तो ईश्वर में लीन रहते हैं, आपकी दृष्टि में चींटी, हाथी, मानव सभी समान हैं। सारी सृष्टि आप के लिए ब्रह्ममय है, परन्तु हमारी दृष्टि अभी तक इतनी विकसित नहीं हो पायी है, इसलिए गुरुवर कृपा करके मुझे यह बताएं आज के युग में सबसे शक्तिशाली कौन है।

अपने प्रिय शिष्य की वाणी सुनकर संत एकात्म ध्यान मग्न हो गये, कुछ देर के बाद उन्होंने आँखें खोली भौतिक तुम्हारा प्रश्न बहुत पेचीदा है इसका उत्तर मेरी समझ से परे है। गुरु की बात सुनकर भौतिक गम्भीर हो गया, कुछ देर मौन खड़ा रहा फिर बोला गुरुदेव क्षमा करें, यदि आप इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते तो फिर धरती पर कोई नहीं जो हमारी शंका का निमूल कर सके। प्रिय शिष्य भौतिक की बात सुनकर संत एकात्म मुस्कराएं, सारे शिष्य प्रसन्न हो गये।

संत एकात्म यदा-कदा ही मुस्काते थे, जब प्रश्न उलझ जाता तो शिष्य गुरु के पास आते अपनी समस्या रखते और जब भी संत एकात्म मुस्काते प्रकाश उत्पन्न हो जाता। संत एकात्म को मुस्काते देखकर शिष्यों को लगा मानो प्राची से भगवान दिवाकर आने हेतु व्यग्र हो रहे हैं। शिष्य आपस में धीरे-धीरे बातें करने लगे। वत्स शान्त हो जाओ संत एकात्म बोले—भौतिक मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूँगा परन्तु मुझे मानव बस्ती

में जाना पड़ेगा, अस्तु तुम्हारे प्रश्न के उत्तर हेतु मुझे एक वर्ष का समय चाहिए। भौतिक खड़ा होकर हाथ जोड़कर बोला—गुरुदेव आप संसार में जायेगें तो आपको महान कष्ट होगा। मुझे अपने प्रश्न का उत्तर नहीं चाहिए। भौतिक इतना भावुक हो गया कि उसके नेत्रो से आँसू टपक पड़े।

संत एकात्म ने अपना हाथ भौतिक के सिर पर रख दिया। भौतिक शून्य में डूब गया। संत का हाथ हटा तो वह चरणों पर गिर गया। संत एकात्म ने उसे उठाकर हृदय से लगा लिया। भौतिक तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो। पिता जिस तरह अपने नवजात शिशु को उत्संग में लेकर प्रमुदित होता है उससे कहीं अधिक हर्ष मुझे तुम्हे छूकर होता है। पिता का पुत्र से भौतिक सम्बन्ध है भौतिक, देह के साथ यह सम्बन्ध भी खत्म हो जाता है। परन्तु हमारा तुमसे जो सम्बन्ध है वह देह से परे है इसलिए अलौकिक है। तुम्हारा प्रश्न तुम्हारा नहीं जनता का है इस देश की। यह प्रश्न तुमने बिना कारण के तो नहीं किया है। इसलिए इसका उत्तर खोजना आवश्यक है। तुम सभी मुझे प्रिय हो मैं तुम्हारे अन्न से जिंदा हूँ इसलिए मैं तुम सब की ऋणी हूँ।

गुरुदेव आप ऐसा न कहे भौतिक के साथ कई शिष्य बोल पड़े। शान्त-शान्त संत एकात्म ने हाथ उठाकर कहा। वत्स मैने जो कहा है वह सच है, तुम लोग मेरी चिंता न करो। मेरे मन में भी यह विचार यदा-कदा उठता था कि धरती पर आज के मानव की मनुष्यता का अध्यन करुं। आज का यह जटिल प्रश्न है भौतिक। मैं संसार ही भूल गया था अपनी मुक्ति का पथ मैं खोज चुका हूँ। अब संसार के कल्याण हेतु भी मुझे कुछ करना चाहिए। मेरे प्रिय बच्चों अब मुझे अनुमति दो। सारे शिष्य मौन अंत में भौतिक ही बोला गुरुवर आप क्या कह रहे हैं हम भला आपको अनुमति देने वाले कौन हैं। संत एकात्म गम्भीर हो गये, वत्स गुरु की दृष्टि में शिष्य पुत्र से भी श्रेष्ट होता है। क्या तुम्हे मेरी बात पर संदेह है।

नहीं गुरुवर, भौतिक विनम्रता की मूर्ति सदृश खड़ा हो गया।

भौतिक तुम लोगों से पूछे बिना मैं कैसे जा सकता हूँ।

भौतिक कुछ नहीं बोला, बस अपलक गुरु को देखता रहा।

वत्स मुझे तुम्हारी भावना का ज्ञान है, अस्तु मेरा तुम सबको आदेश है कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए चिंतन, मनन एवं स्वध्याय में स्वयं को अर्पित करना। जब मैं वापस आऊ तो तुम सबको स्वस्थ एवं प्रसन्न देखू। शिष्यों को समझाकर संत मानव बस्ती की ओर चल पड़े।

❍❍

लुप्त होती जा रही मानवीय संवेदना किस प्रकार नापी जाय संत एकात्म को चिंतन करने को विवश कर दिया। काफी विचार करने के बाद उन्होंने शहर की अपेक्षा गाँव को चुना। शहरी जीवन को उन्होंने दूर से देख कर ही अनुमान लगाया कि यहाँ का मानव मशीन की तरह कार्यरत है। युवा दम्पत्ति शादी के बाद यदि हनीमून का समय निकाल लिया तो वे कुछ दिन एक दूसरे की बाहों में रात काटते हैं, अन्यथा पूरे दिन की भागदौड़ भरी जिंदगी से निकलकर जब घर पहुँचते है तो शरीर दर्द करने लगता है। इस दर्द से बचने हेतु वे नशे के आदी हो जाते हैं। नशा किया फिर भोजन रात के ग्यारह बज जाते हैं। चारपाई पर लेटते ही निद्रा देवी की बाहो में समा जाते है। जाने कितनी युवतियाँ पति सुख के लिए तड़पती रहती हैं। काम बढ़ाने की तरह-तरह की दवाइयों का प्रचार करके कुछ लोग लोगों को बेवकूफ बना कर पैसा कमा रहे हैं। युवतियाँ प्राकृतिक तरीके से जन्म देने में असमर्थ होती जा रही हैं।

आज के मानव ने देह सुख हेतु तरह-तरह के साधन विकसित कर लिये जिंदगी सरल हो गई परन्तु इन बनावटी सुखो की आड़ में प्राकृतिक सुख स्वच्छ वायु जल दुर्लभ हो गया। संत एकात्म ने महसूस किया कि आज का युवा प्रियसी को बाहों में भर कर वह अनुभूति नहीं कर सकता जिसमें प्रेम की सुगन्ध हो।

संत एकात्म महानपुर नामक विशाल गाँव में पहुँचे। चौराहे पर नाना प्रकार की दुकानों को देखकर संत को लगा कहीं वे शहर में तो नहीं आ गये। दरअसल अब गाँवों का हुलिया बदल गया है, आजादी से पूर्व और आज के भारत में काफी अन्तर हो गया है। शहर की चमक अब गाँवों में भी प्रवेश कर चुकी है। सोचते-सोचते संत को प्यास लग गई। एक सरकारी नल के पास गये। बीस बार चलाया तो पानी निकला, अंजुली में लेकर देखा तो गन्दा था, दुखी मन से चाय की दुकान पर बैठ गये। एक चाय देना भइया—संत ने दुकान वाले से कहा।

पैसा देना पड़ेगा, दुकानदार बोला।

संत कुछ देर मौन रहकर बोले—बच्चा चाय नहीं तो एक गिलास पानी पिला दो। दुकानदार को क्रोध आ गया, उठो और यहाँ से भागो वरना दो हाथ मरूंगा न जाने कहाँ से चले आते हैं बाबा का भेष बनाकर कामचोर। संत एकात्म चुपचाप उठ गये उन्हें लगा यदि वे वहाँ रुके तो पिटाई निश्चित है। एक सरकारी नल पर पानी पीकर ग्राम बीथियों पर विचरण करने लगे। एक आलीशान महल के सामने संत खड़े हो गये, उसकी सुन्दरता को देखकर। मेनगेट पर अंग्रेजी भाषा में लिखा था जज-दानवीर सिंह संत को लगा मानों वे द्वापर युग में पहुँच गये, वह भवन उन्हें दानवीर कर्ण का दिखने लगा।

संत एकात्म ने आवाज लगाई तो द्वारपाल ने दरवाजा खोल दिया। संत को देखकर उसने ऐसे मुँह बनाया मानों उसकी नजर मानव मल पर पड़ गयी। नाक मुँह

को सिकोड़ते हुए बोला—साहब नहीं है कल आना कहकर उसने गेट बन्द कर दिया। संत कई बार बोले मुझे भूख लगी हैं पर उसने सुना नहीं। संत कुछ देर सोच मग्न खड़े रहे फिर आगे बढ़ गये। वकील, डॉक्टर, मास्टर, कई बड़े-बड़े लोगों के बंगले पर संत गये पर हर जगह एक ही उत्तर, साहब नहीं हैं कल आओ। जब संत भूख या प्यास की बात करते तो दरबान गेट बंद कर देता। संत ने सोचा स्यात् द्वारपालों को यह ट्रेनिंग दी गई होगी। परन्तु अन्य लोग सब के सब उन्हें देखकर मुँह क्यों फेर लेते हैं उनकी समझ में नहीं आ रहा था। दुखी मन से वे एक नेता के बंगले पर पहुँचे। संयोग से नेता जी मौजूद थे। संत को देखकर नेता जी मुस्कराये, नौकर को आदेश दिया, तुरन्त कुर्सी आ गई।

आसन ग्रहण करो महात्मा नेता जी हाथ जोड़कर खड़े हो गये। महल में अफरा-तफरी मच गई। अफसर, कर्मचारी जनता जो लोग नेता जी के दरबार के लिए आये हुए थे सभी के सब संत एकात्म को प्रणाम करने लगे। मिठाई वह भी शुद्ध देशी घी सी निर्मित संत के आगे स्वयं नेता जी लाकर रख दी। संत ने मिठाई का एक टुकड़ा खा कर पानी पिया फिर खड़े हो गये। अब मुझे आज्ञा दे राजन! संत ने हाथ जोड़ लिए।

देश आजाद हो चुका है महात्मा, अब यहाँ कोई राजा प्रजा नहीं सब बराबर हैं। मुझे राजा कहकर आप शार्मिन्दा न करें।

आकाश में चमकने वाली विद्युत आज मानव के इशारे पर उसकी सेवा हेतु कार्य कर रही है फिर भी वह विद्युत है। ठीक इसी तरह राजा शब्द भले ही खत्म हो गया पर राजा खत्म नहीं हुए हैं। राजाओं ने सदैव संत महापुरुषों का सम्मान किया है इसलिए मेरी दृष्टि में आप राजा हैं।

राजा नहीं मैं जानता का सेवक हूँ—महात्मा मुझे आशीर्वाद दे कि यह चुनाव जीतकर देश का सबसे ताकतवर व्यक्ति बन सकूँ।

राजन् मैं आपको आशीर्वाद देने में असमर्थ हूँ कहकर संत चल पड़े। ठहरो नेता जी चीख पड़े—बिना आशीर्वाद दिये आप यहाँ से नहीं जा सकते, संत एकात्म रुक गये। अभी-अभी तो आप स्वयं को जनता का सेवक कह रहे थे लोकतंत्र की दुहाई दे रहे थे, कि यहाँ सब बराबर हैं तो मैं भी बिना आप की आज्ञा के जा सकता हूँ।

नहीं—नेताजी ने गिरगिट की तरह अपना रंग बदल दिया। बिना मेरी आज्ञा के इस देश का सबसे बड़ा मंत्री भी निर्णय नहीं ले सकता फिर आपकी क्या बिसाात है। मैं गुण्डा हूँ आज का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति समझे।

संत एकात्म के हाथ स्वत जुड़ गये। हे महामानव धरती के सबसे शक्तिमान गुण्डा महामहिम में आपको प्रणाम करता हूँ। आप मेरे अपराध क्षमा करें। हे सर्वशक्तिमान

मैं तुम्हे आशीर्वाद देता हूँ तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त करो। अब मुझे जाने की आज्ञा दें पृथ्वीपालक।

नहीं, नेताजी मुस्कराएं, अब उनका चेहरा इतना मासूम हो गया कि संत एकात्म को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। नेता धरती का अजीब जीव है। मनोवैज्ञानिक भी इसका अध्ययन नहीं कर सकते। गुण्डा शक्ति का साक्षातकार कर लेने के उपरान्त संत एकात्म मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दे रहे थे कि उन्होंने अपने प्रिय शिष्य भौतिक के प्रश्न का उत्तर सहज ही खोज लिया।

❍❍

संत एकात्म नेताजी के आदेश पर उनके निवास पर ठहर गये। सेवादार ने बताया कि नेताजी को इस गाँव से बेहद प्यार है। वर्ष में तीन चार बार वे यहाँ जरूर आते हैं। तुम्हारा किसी जन्म का पुण्य उदय हुआ है जिसके फल स्वरूप नेताजी से मुलाकात हो गई। नेता जी तुम्हारी जिंदगी सँवर देगे। कहकर वह चला गया।

संत एकात्म ने आँखें बंद कर ली, मन ही मन प्रभु से प्रार्थना करने लगे। तभी एक व्यक्ति आया—आपको नेताजी ने बुलाया है। संत एकात्म उठकर उस व्यक्ति के साथ चल पड़े। संध्या का समय था। संत एकात्म जब नेताजी के समीप पहुँचे तो नेता जी मुस्करा कर संत का स्वागत किया।

महात्मा हमारी इच्छा है कि आप हमारी जन्मभूमि घूम लें। संत एकात्म कुछ नहीं बोले बस नेताजी के साथ चल पड़े। नेता जी पैदल चले तो उनके पीछे-पीछे महानपुर की जनता चल पड़ी। संत एकात्म का दिमाग घूम गया उन्हें महान आश्चर्य हुआ। आज सुबह जब उन्होंने महानपुर में प्रवेश किया तो लोग उन्हें देखकर मजाक कर रहे थे। महानपुर के महापुरुषों के दरवाजे पर दरवान ने कुत्ते की तरह दुतकार दिया था। महानपुर का एक भी व्यक्ति उन्हें पानी पिलाने का कष्ट नहीं किया। ऐसे महानपुर में परिवर्तन देखकर संत एकात्म को गुण्डा शक्ति का एहसास हो रहा था।

महानपुर के महान व्यक्तित्व डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, मास्टर जज सभी संत की जय-जयकार कर रहे थे। महानपुर में आज एक महापुरुष का आगमन हुआ, लोग उन्हें देखने को उमड़ पड़े। स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी जाति धर्म के लोग शामिल हो गये। नेताजी सबको बता रहे थे कि ये संत सिद्ध पुरुष हैं। श्रीकृष्ण मंदिर का निर्माण करना चाहते हैं मैं आप सभी से प्रार्थना करता हूँ कि यदा योग्य सभी लोग इनकी सहायता करें। महात्मा को दान करके अपने जीवन को सफल बनाए। संत एकात्म कुछ बोलना चाहते थे परन्तु नेताजी ने मनाकर दिया।

संत एकात्म के आगमन का समाचार महानपुर में फैल गया—लोगों ने उन्हें फूलों से लाद दिया। नेता जी का एक व्यक्ति गाँव वालों के दान की राशि लिख रहा था।

रात के ग्यारह बजे तक करोड़ों रुपया इकट्ठा हो गया। नेता जी के आदेश पर फोन पर देश के बड़े-बड़े उद्योगपति, अफसरों को भी सूचना दी गई। वहाँ से भी करोड़ो रुपया जमा हो गया। देश ही नहीं विदेश से भी धन की वर्षा हुई। धन की बरसात देखकर नेता जी सुबह दिल्ली जाने का प्रोग्राम स्थागित कर दिया।

संत एकात्म को नेताजी के साथ रहते-रहते एक सप्ताह बीत गया। आज मंगलवार था नेता जी पवनपुत्र के भक्त थे। शाम को सुन्दरकाण्ड का पाठ हुआ। नेताजी अपने साथ संत को लेकर भोजन कक्ष में पहुँचे, नेता जी संत एकात्म को अपने साथ भोजन कराकर बोले—महात्मा आप को यहाँ कोई परेशानी तो नहीं है।

कैसी परेशानी, संत ने सहज भाव से कहा।

यदि आप को यहाँ कोई परेशानी नहीं है तो मेरा निवेदन स्वीकार करें। गाँव से पूरब हमारी जमीन है, मेरी इच्छा है वहीं पर एक कृष्ण मंदिर बनाकर आप निवास करें।

राजन मैं संयासी हूँ, एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रह सकता।

मुझे अब जाने की अनुमति प्रदान करें राजन।

मैं जबरदस्ती आप को यहाँ नहीं रोकूगा। मैने आपके कृष्ण मंदिर हेतु पैसा इकट्ठा किया है आप अपना बैंक एकाउंट नम्बर रामजीत के पास लिखवा दें।

राजन मुझे धन की आवश्यकता नहीं वैसे भी आप ने कई दिनों से हमारी सेवा की है मेरे लिए यही बहुत है।

जैसी आप की इच्छा, सचमुच आप संत है। दस करोड़ रुपये का त्याग करना कठिन काम है।

❍❍

महानपुर के महान नेता एवं जनता के व्यवहार से संत एकात्म सोचने को विवश हो गये। जनता को जर्नादन कहा जाता है परन्तु उन्होंने जनता का जो रूप देखा वह विचित्र था। समाज में उन्हें हर तरफ गुण्डागर्दी नजर आई। कोई भी सत्य का साक्षातकार करने को तैयार नहीं। राजा के भ्रष्ट होने पर प्रजा भ्रष्ट हो जाती है। जिस देश के नेता, अधिकारी भ्रष्ट हो जाय उस देश की जनता का भ्रष्ट हो जाना स्वाभाविक है। संत मन ही मन सोच रहे थे कि क्या इस बीमारी का कोई इलाज है। रोग असाध्य था फिर भी न जाने क्या सोच कर संत एकात्म थाना पूराहरामी पहुँचे।

संत को देखकर मेनगेट पर तैनात संतरी चौंका। कृष्ण जन्माष्टमी करीब थी संतरी ने सोचा बाबा चन्दा मांगने आये होंगे। अन्दर गये तो थानेदार मुझे माँ बहन की गाली देगा। जब से नये थानेदार जुल्म सिंह आये तब से सिपाहियों का जीना हराम कर दिया। कितनी भी कोशिश करो, साहब खुश होते ही नहीं, बीस हजार रुपये हर महीने लेने के उपरान्त भी मुस्काते नहीं, यदि पूरा वेतन दे दूँ तो भी साहब को प्रसन्न करना

मुश्किल है संतरी सोच मग्न था कि संत एकात्म अन्दर घुस गये।

संतरी तेजी से दौड़कर संत एकात्म के आगे खड़ा हो गया, बिना अनुमति के कहाँ जा रहे हो, थाने को खाला का घर समझा है क्या? थानें जनता को न्याय दिलवाने के लिए बनाए गये हैं। मुझे थानेदार साहब से मिलना है रिर्पोट लिखवाना है। संतरी संत की तलाशी लेने लगा कुछ नहीं मिला फिर न जाने क्या सोचकर बोला—आधार कार्ड दिखाओ बाबा। संत एकात्म ने आज तलक किसी पार्टी को वोट नहीं दिया था कोई भी कार्ड नहीं बनवाया था फिर आधार कार्ड वे कहाँ से लाते। इसलिए संत एकात्म ने कहा मेरे पास आधार कार्ड नहीं है।

संत की बात सुनकर संतरी बोला बिना पहचान पत्र के आप अंदर नहीं जा सकते क्या पता आप पाकिस्तानी हो।

संत एकात्म कुछ देर सोचते रहे फिर बोले—हे न्याय रक्षक, यदि मैं थाने के अन्दर नहीं जा सकता तो आप थानेदार को यहीं बुलवा दीजिए।

बाबा आप पागल तो नहीं है भला एक सिपाही थानेदार को कैसे हुक्म दे सकता है। कानून की दृष्टि में घोर अपराध है। कृपा करके आप यहाँ से चले जाइऐ।

यदि नहीं तो संत रुक गये। क्रोध से संतरी काँपने लगा, आगे बढ़ा और एक थप्पड़ संत को मार कर गुर्राया—थानेदार हमारी माँ बहनो को गाली देने में जरा भी संकोच नहीं करता, तो मैं साधु-संतो की माँ बहनों को गाली देने में नहीं हिचकिचाऊगा। उठो पाखाड़ी और यहाँ से भाग जाओ वरना कत्ल के अपराध में जेल जाओगे संतरी रोबदार सिंह की सिंह जैसी आवाज चाय पी रहे थानेदार जुल्म सिंह के कानो तक पहुँची।

थानेदार उठे और मेन गेट की तरफ चल पड़े उनके पीछे मुंशी जी और महिला इंस्पेक्टर भी साथ थीं। संत एकात्म ने थानेदार साहब की वंदना की। संस्कृत के शब्द थानेदार साहब की समझ से परे थे।

संतरी रोबदार सिंह ने बढ़ा-चढ़ाकर संत एकात्म की कहानी थानेदार को सुनाई। थानेदार के अधर पर कुटिल मुस्कान नाँच गई।

हे कलियुगी बाबा किसके खिलाप, रिर्पोट लिखवाना चाहते हो। हे महापुरुष मैं महानपुर के महान नेता के खिलाप रिर्पोट लिखवाना चाहता हूँ। संत एकात्म ने सहज भाव से कहा, जबकी थाना पूराहरामी का इंचार्च इंस्पेक्टर जुल्म सिंह चक्कर खाकर गिर गया। थाने में अफरा-तफरी मच गई 108 नम्बर पर फोन किया गया तुरन्त एम्बुलेन्स आ गई। दो सिपाहियों ने थानेदार को एम्बुलेन्स में लिटाया और जिला अस्पताल को चल पड़े।

महिला इंस्पेक्टर ने संत एकात्म से हाथ जोड़कर कहा—बाबा जी अभी-अभी हमें नौकरी मिली है, इस देश में नौकरी मिलना कितना कठिन है आप जानते हैं। आप को मैं अपना प्राण दे सकती हूँ परन्तु नौकरी नहीं आप संत है। यदि नेता जी के खिलाफ रिर्पोट लिख ली तो नौकरी के साथ जिंदगी भी जा सकती है। इसलिए कृपा करके इस देश की मुरदा पुलिस को जीने दो। हमारे परिवार पर रहम करो बाबा। संत एकात्म ने स्वीकृति में सर हिलाया और थाना पूराहरामी से बाहर निकल गये।

पोस्ट आफिस पहुँचे, मंत्री, अधिकारी सचिवों एवं देश के न्यायधीशों को उन्होंने हिन्दी में पत्र लिखे। सबसे एक ही प्रार्थना की कि महानपुर के महान नेता द्वारा जनता से की जा रही लूट के खिलाफ कार्यवाही हो। परन्तु उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला। जन सूचना अधिनियम 2005 के अनुसार जवाब मांगा परन्तु वहाँ से भी घुमावदार उत्तर मिला। संत एकात्म ने बहुत प्रयास किया परन्तु परिणाम ढ़ाक के तीन पात।

एक वर्ष गुजर गया। संत एकात्म जब अपने आश्रम पहुँचे तो सारे शिष्य भाव विभोर हो गये। गुरुवर आप इतना कमजोर कैसे हो गये भौतिक के नेत्रों से आँसू टपक पड़े। मुस्कराकर सुंत एकात्म अपने प्रिय शिष्य के सिर पर हाथ फेरने लगे। बारी-बारी करके सभी शिष्यों को ह्रदय से लगाया।

भौतिक मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर खोज लाया हूँ। आज का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति गुण्डा है। कानून, न्याय, नियम इन गुण्डों ने निगल लिया है। इन पत्रो को देखों—संत एकात्म ने मंत्री अधिकारियों को लिखे पत्र शिष्यों को दिखाया। भ्रष्टाचार आज चरम सीमा पर पहुँच गया है, इस सत्य से गुरु के साथ शिष्य जी उदास हो गये। शिष्यों का देश के प्रति प्रेम देखकर संत सोचने लगे क्या देश के शीर्ष पद पर बैठे लोग कभी अपने कर्त्तव्य को समझेगें, मुझे उस दिन का इंतजार है।

❑❑❑

रामधन

पंडित रामधन ने जीवन में जो यश, धन एवं कुटुब का सुख प्राप्त किया था उससे उनके हृदय को आज गहरी चोट लगी थी। पत्नी जिसके मुख कमल को देखकर राकेश का सौन्दर्य तुच्छ लगने लगता था। जिसके स्पर्श मात्र से मन में ऐसा रोमांच होता की देह भार शून्य हो जाती। अधर जिनका स्पर्श योगी के आनन्द से श्रेष्ठ उन्हें प्रतीत होता। प्राणवल्लभा को शैया पर अलिंगन बद्ध करके वे सोचते काश निशा खत्म ही न हो। आज उन्हें अपना वचपन भी याद आ रहा था।

बचपन में ही उन्होंने ने माँ को खो दिया था, पिता का प्यार उन्हें नसीब नहीं हुआ। परन्तु उन्होंने कभी धैर्य एवं साहस को नहीं खोया। प्रबल महत्त्वकांक्षा ने उन्हें संघर्ष करने की शक्ति प्रदान की, धीरे-धीरे उन्होंने जीवन की दिशा बदल दी। शादी बचपन में ही हो गई। भार्या की सुन्दरता पर वे मुग्ध थे। नारी सौन्दर्य ने उनके कार्य करने की शक्ति में इजाफा किया। उन्हें आज वह दिन भी याद आ रहा था जब पहली बार उन्हें पता चला कि वे पिता बनने वाले हैं। उस वक्त उन्हें असीम सुख की अनुभूति हुई थी, पत्नी के प्रति इतना प्रेम उमड़ा की उन्हें हृदय में समा लें। घण्टो पत्नी को हृदय से चिपकाये रहे। मन में उस समय यही भाव आया कि रजनी छोटी हो जाय एक दम शिशु।

पुत्र हुआ मानों उनके जीवन में प्रभात आ गया। गाँव क्या आस-पास के गाँव वालों को नियंत्रण दिया गया बरही हुई ऐसा उत्सव की गाँव वाले दंग रह गये। पंडित जी की कर्मठता दिन प्रति दिन बढ़ती गई। तीन पुत्र दो बेटियों का परिवार गाँव में उदाहरण बन गया। तीनों पुत्र सरकारी कर्मचारी बेटियों के पति अरबपति। पंडित जी को ऐसा लगा मानो स्वर्ग उनके घर में निवास कर रहा है।

भौतिक सुख की लालसा जब चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाती है तो मानव को मानव की आहट सुनाई नहीं देती। पंडित रामधन की यही स्थिति थी। भले ही उनका नाम उनके बाबा ने रामधन रखा, परन्तु उन्होंने धन को ही राम माना था। यही कारण था कि भार्या जब उनके खिलाफ प्रस्ताव लाती तो वे मौन हो जाते। बेटे माँ के समर्थन में खड़े हो जाते। रामधन कुछ देर सोचते फिर अपने व्यवसाय में लग जाते। मन को समझाते आज के बच्चे पिता का सम्मान कहाँ करते हैं। मेरे बच्चे तो फिर भी ठीक हैं, समाज में हमारी इज्जत है। लोग कहते हैं बेटे हो तो रामधन के जैसे। तीनों सरकारी कर्मचारी बड़ा बेटा हनुमान जब पैदा हुआ तो पंडित जी उसका नाम संतोष रखना

चाहते थे परन्तु पत्नी रजनी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी उन्हें अच्छा नहीं लगा। पंडित जी क्या करते आखिर उनके कहने पर ही बच्चे का नाम हनुमान रखा गया।

हनुमान नाम को उस बालक ने सार्थक करने दिखलाया। पिता के आदेश को प्रेमचन्द की कहानी नमक का दरोगा की तरह नजरअंदाज करके नहीं अपितु दरोगा बनकर जनता का खून पीकर बड़े अधिकारियों को उत्कोच देकर पुलिस विभाग में धन एवं यश कमाया कि उसका गुणगान माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने किया। सरकार ने पुलिस पदक से सम्मानित किया। दूसरा बेटा सूबेदार नाम के अर्थ को साकार कर सेना में कमीशन लेकर मेजर के पद पर कार्यरत है। तीसरे पुत्र का नाम पंडित जी ने बड़ा अजीब रखा कठोर, कठोर आज सर्वोच्च न्यायालय का वकील है। दोनों बेटियों के पति उद्योगपति हैं। पंडित जी को अपने परिवार पर गर्व था परन्तु आज परिवार क्या स्वयं अपने आप से घृणा हो रही थी।

पंडित रामधन को दो वर्ष पूर्व कोढ़ हो गया था। उनके इलाज में कोताही नहीं बरती गई पैसा पानी की तरह बहाया गया परन्तु रोग सुरसा के बदन की तरह बढ़ता गया। उनके तीनों पुत्र एवं पत्नी आपस में इसी विषय पर चिंतन कर रहे थे। हनुमान बोला मम्मी मेरी समझ में नहीं आता क्या करूं। कठोर बोला—सुनता हूँ अमरीका में इस बीमारी का सफल इलाज है परन्तु भइया पापा को वहाँ कौन ले जायेगा। हमारे पास समय नहीं। तुम ठीक कहते हो भइया समय किसी के पास नहीं है मम्मी तुम ही बताओ क्या किया जाय—कठोर बोला।

रजनी मुस्कराकर बोली—बच्चों मेरी बात ध्यान से सुनो तुम सभी जानते हो कि समाज में हमारी कितनी इज्जत है। परन्तु अब मुझे लगता है कि यदि तुम्हारे पापा ठीक नहीं हुये तो समाज की नजर में हमारी बदनामी होगी।

तो क्या करें मम्मी—दरोगा जी बोले।

इन्हें जहर देकर खत्म कर दो।

मम्मी दरोगा का मुँह खुला का खुला रह गया। वकील साहब भी चौंके मेजर साहब को लगा पड़ोसी देश ने फायरिंग शुरू कर दी, संयोग से यह बात पंडित रामधन के कानों तक पहुँची थी, यही कारण था कि आज उन्हें सारा संसार घूमता नजर आ रहा था।

❍❍

पंडित रामधन को रात भर नींद नहीं आई। किससे कहे अपनी पीड़ा यह प्रश्न उनके सामने विकराल रूप धारण करता जा रहा था, जिस धन को उन्होंने राम माना वह धन नाग की तरह उनको डसने के लिए फन उठा रहा था। नारी के न जाने कितने रूप हैं परन्तु उसका यह रूप उनके विवेक को विकृति कर चुका था।

पापा—दरोगा साहब ने पुकारा तो रामधन चौंक कर उठ गये। बड़ी मुश्किल से अपने मानोभावों को छिपाया था। आज रात एक भयंकर सपना देखा था न चाहते हुए रामधन के मुख से निकल गया।

पापा सपने कभी सच नहीं होते, दरोगा साहब मुस्कराये। रामधन बिना कुछ कहे बाहर निकल गये।

प्राची से रवि की किरणे भूतल का स्पर्स कर रही थी मंद बहती पुरवाई रामधन के बदन में हलचल उत्पन्न कर रही थी सत्तर वर्ष की अवस्था में न जाने उन्होंने कितने प्रभात देखे होंगे परन्तु आज का प्रभात उन्हें जिस तरह से मथ रहा था ऐसी अनुभूति जीवन में कभी नहीं हुई थी। रिश्ते नाते प्यार का जो रूप उन्होंने आज देखा उन्हे लगा वह नया नहीं है। न जाने कहाँ से आज उनकी आत्मा में प्रकाश उत्पन्न हो गया। उन्होंने जब चिंतन किया तो लगा मौत। फिर मैं इससे डर क्यों रहा हूँ एक दिन तो मरना निश्चित है। यह बिमारी भी ठीक होने वाली नहीं, यदि मेरे मरने से मेरे परिवार को समाज में इज्जत एवं मन में खुशी मिले तो मुझे मर जाना चाहिए। वे रजनी को अच्छी तरह जानते थे वह जो ठान लेती करके ही रहती थी। तीनो बेटे माँ के अन्यय् भक्त थे, बेटों के हाथ से मरने से बेहतर है स्वयं आत्महत्या कर लिया जाय।

नहीं आत्महत्या करना पाप है? फिर कहाँ जाऊ कोई भी इस स्थिति में मुझे सहारा नहीं देगा। सोचते-सोचते उन्हें बाबा की याद आ गई। उनकी एक पोथी उन्होंने पढ़ा था। आज भी याद है लिखा था।

जब होना है देह का, निश्चित एक दिन अंत।

उचित नहीं इसके लिए, दुख पाना अत्यन्त।।

मन में दृढ़ निश्चिय कर लिया। इस देह से मैंने जीवन में कभी सत्कर्म नहीं किया। पूरा जीवन परिवार के लिये अर्पित कर दिया। एक-एक पैसा जोड़कर बच्चों को पढ़ाकर अफसर बना दिया। कितनी खुशी हुई जब हनुमान दरोगा बना था। सुबेदार जब सेना में भर्ती हुआ तो पूरे इलाके को रामचरितमानस का पाठ करा कर खिलाया था। बेटियों की बड़े घरो में शादी की। मुझे लगता था कि मैंने जीवन में सब कुछ पा लिया परन्तु आज लग रहा है जिन चीजों को मैंने प्यार किया वे सब नकली थी।

रामधन को इस वक्त राम की याद आ रही थी। स्यात् उनकी यही इच्छा थी कि रामधन तू स्वयं अपनी मृत्यु का वरण करेगा। उनकी इच्छा को संसार में कोई टाल नहीं सकता। काफी चिंतन के बाद रामधन ने स्वयं के अंत का निर्णय ले लिया।

❍❍

रात के एक बज रहे थे। रामधन ने जहर खाया था, उसका असर अब चढ़ने लगा। जन्म एवं मृत्यु के समय असहनीय पीड़ा होती है। रामधन पीड़ा से बौखला गया।

उठा, कमरे से बाहर निकलना चाहा पर दरवाजे के समीप आते-आते गिर पड़ा। बहुत प्रयास किया परन्तु दरवाजा खोल न सका। चीखा परन्तु विशाल भवन के अन्दर उसकी आवाज सुनने वाला कोई नहीं था। तड़प-तड़प कर जल बिन मीन की तरह उसने प्राण त्याग दिये।

सुबह जब आठ बजे तक दरवाजा न खुला तो दरोगा साहब के दरवाजा तुडवा दिया। अंदर आकर दृश्य देखा तो होश उड़ गये। कुछ भी हो रामधन उनके पिता थे। उनकी हालत देखकर वे रो पड़े। उनकी आवाज सुनकर वकील साहब और मेजर साहब आ गये। सभी आवाक थे।

रजनी ने जब पति की लाश देखी तो एक पल के लिए विचलित हो गई। परन्तु दूसरे ही क्षण उसने स्वयं पर नियंत्रण पा लिया। बच्चों से बोली—तुम सभी धैर्य एवं हिम्मत से काम लो। यदि लोगों को यह पता लग गया कि तुम्हारे पिता ने आत्महत्या की है तो समाज मैं बेइजती होगी कठोर तुम तो सर्वोच्च न्यायालय के वकील हो दिन को रात बना देना ही तुम्हारा काम है। जिस तरह तुम्हारा न्यायालय हिन्दी से घृणा करता है उसी तरह अब तुम्हे पिता की लाश से घृणा करना है। परन्तु समाज में ऐसी मिशाल कायम करना है कि लोग तुम्हे राम की तरह पितृ भक्त समझें।

माता की बात सुनकर वकील साहब का दिमाग सक्रिय हो गया। दरोगा साहब भी भावनाओं से मुक्त हो चुके थे तो मेजर साहब को पिता की लाश शत्रु की लाश में दिखाई देने लगी। वकील साहब की नजर पिता की चारपाई के नीचे गयी जहाँ पर एक कागज पड़ा था। वकील साहब ने उठाया देखा तो पत्र था। जिसे रामधन ने अपनी पत्नी के लिये लिखा था। प्राणों की प्राण प्रिय रजनी!

सदा सुखी रहो।

संसार विचित्र है परन्तु इसका बोध मुझे आज हुआ। पूरा जीवन जिस सुख की तलाश करता रहा वह महज छलावा था। किसी को दोष देना व्यर्थ है। स्यात् संसार का यह अकाट्य सत्य है कि यहाँ कोई किसी को प्यार नहीं करता। प्यार शब्द का अर्थ विज्ञजन अपने-अपने ढंग से व्यक्त करते आये हैं। प्रिय रजनी मैंने तुम्हे अपने प्राणों से अधिक प्यार किया पर वही आज मेरी मृत्यु का कारण बन गया। आज मुझे इस बात का बेहद अफसोस है कि मैंने सारा जीवन व्यर्थ कर दिया। मरते वक्त मानव को अपने किसी कार्य पर गर्व हो हमें जीवन में कुछ ऐसा भी करना चाहिए, परन्तु मैं वह कार्य न कर सका। पूरा जीवन रिश्तेदार, परिवार एवं अपनो के लिए अर्पित कर दिया। दस कोस की परिध तक लोग मेरे नाम को सम्मान से लेते हैं। मुझे बड़ा गर्व था परिवार, पट्टीदार, रिश्तेदार एवं इस समाज पर। परन्तु वाह रे समाज तू तो एक दम नंगा है। चतुर धनाड्य लोग रंडी की तरह तुझे कपड़े पहनाकर नचाते हैं। मैं जानता हूँ दरोगा

वकील एवं मेजर साहब जैसे सपूत पिता की हत्या कर आज के समाज में राम बन जायेगें। समाज मैं पैसों और गुण्डो की जज-जयकार होती है। रजनी मैं जानता हूँ तुम बुद्धिमान हो, अपने दिमाग के बल पर तुम भी आज की कौसल्या बन जाओगी। वास्तविकता कोई नहीं जान पायेगा वाह रे समाज।

रजनी तुम्हारे मुँख को घण्टो देखता रहता था तुम्हे देखकर अपने दुखों से मुक्त हो जाता था। अपने प्राणों से अधिक तुम्हे मैंने प्यार किया। इंद्रिय आकर्षण के नशा ने इतना पागल कर दिया कि मैं मानव मूल्यों की अवहेलना करना शुरू कर दिया। मैं भूल गया कि नारी सुन्दर देह में नहीं आत्मशुचिता में निवास करती है। बिना विचारों को पवित्र किये देह आकर्षण का जादू प्रेम को अक्षुण नहीं रख सकता। प्रेम आत्म अनुभूति है इसका सम्बन्ध सत्य से है जो मैं समझ न सका। मुझे अपने कर्मो का फल तो भोगना ही पड़ेगा। अंत में मैं तुम सभी से क्षमा मांगता हूँ। अब मैं इस घृणित संसार से बहुत दूर जा रहा हूँ जहाँ पर मैं स्वयं को बदलूगा। इस संसार में प्यार करने लायक कुछ भी नहीं है। इसलिए मानव को अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए कुछ समय सत्कर्म एवं सद्चिंतन में लगाना चाहिए जो मैं नहीं कर सका। मन का उद्गार था लिख दिया। मैं जानता हूँ तुम इस पत्र को पड़ने की मूर्खता नहीं करोगी। हाँ आखिर बात मैं अपने नाम का अर्थ बहुत देर के बाद समझा। राम ही वास्तविक धन है। परन्तु मैंने धन को राम समझ लिया। परिवार को अपना समझा जो मेरी भूल है। संसार का अकाट्य सत्य है कि ईश्वर के सिवा सब माया है। मैंने नकली चीजों से प्यार किया तो इसका परिणाम तो मुझे भुगतना ही पड़ेगा। संसार के महान विचारकों ने आत्महत्या को पाप माना है। परन्तु मैंने जीवन में परिवार के लिये अनेक पाप किये हैं तो आखिरी पाप के लिए प्रभु श्रीराम मुझे क्षमा करेंगे।

अलविदा

रामधन

वकील साहब ने पत्र पढ़कर फाड़ दिया। यह कि क्या किया भइया दरोगा साहब बोले। अब इस पत्र का अर्थ व्यर्थ हो गया है भइया। मेरी बात तुम सभी गौर से सुनो वकील साहब ने अपनी रणनीति सबको समझा दिया।

❍❍

पंडित रामधन को नाग ने काट लिया यह समाचार पूरे इलाके में फैल गया। शहर के प्रमुख समाचारों पत्रों ने पंडित रामधन के औचक मृत्यु का समाचार छापा। जिला अस्पताल के डॉक्टर ने रामधन के मृत्यु का कारण सर्प डंस की पुष्टि की। रामधन के शव पर श्रद्धांजलि देने वालो का दिन भर ताँता लगा रहा। राजनेता, अधिकारी समाज सेवक कई मंत्रियों ने रामधन के परिवार को सांत्वना प्रदान की। रजनी के नेत्रों से बहते

अविरल अश्रुधार देखकर लोगों का उसके प्रति श्रद्धा से सिर झुक जाता। तीनों पुत्र दोनों बेटियाँ उनके परिवार चाचा भतीजे सभी शोक व्यक्त करने हेतु एकत्रित हो गये।

सायं चार बजे गंगा जी के किनारे चंदन की चिता पर रामधन को उनके बड़े पुत्र हनुमान ने मुखाग्नि दी, जिले के कई आला अफसर, विधायक, सांसद एवं मंत्री मौजूद थे। माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने रामधन की मृत्यु को समाज की अपूर्णनीय क्षति बताया। कई नेताओ ने अपने उद्गार व्यक्त किये। अंतिम संस्कार हो जाने के बाद सभी गणमान्य लोग चले गये।

रामधन के तीनों पुत्र दोनों बेटियां दामाद एवं रजनी तेरही पर विचार विमर्श करने लगे। तेरही के दिन को लेकर मेजर सुबेदार ने सवाल किया, मम्मी बिना साबुन के दस दिन तक नहाना सदा खाना खाना दाढ़ी न बनवाना मुझसे नहीं हो सकता।

तुम्हारा कहना ठीक है भइया वकील साहब कठोर बोले– मेरे विचार से क्या तेरही तेरह दिन पर ही जरूरी है। हमारे पास इतना समय कहाँ हैं कि तेरह दिन पागल बने रहें। मेरे विचार से प्रतीकात्मक ढंग से पाँचवे दिन ही तेरही की रस्म पूरी कर दी जाय इसके लिए मैं लोगों का बहुमत प्राप्त कर लूंगा।

कैसे–दरोगा जी बोले।

वकील साहब मुस्कराये दरोगा होकर भी लोगों को खुश करने का तारीका आपको ज्ञात नहीं। भइया जनता तो जर्नादन होती है, प्रसाद चढ़ाओ खुश हो जायेगी।

भइया आप वकील ही नहीं कुशल राजनीतिज्ञ हैं। मेजर साहब बोले।

बिना राजनीतिक ज्ञान के कोई वकील बन नहीं सकता। क्योंकि दोनों व्यवसाय की मूल जड़ झूठ है।

मैं जो कहती हूँ उसे ध्यान से सुनो रजनी बीच में बोले पड़ी। मैं अभी गाँव के कुछ सम्मानित लोगों से विचार करके निर्णय सुनाऊँगी। माँ की बात का कोई जवाब नहीं दे सका।

❍❍

रजनी ने गाँव के लोगों से विचार विमर्श करके तेरही को समय से पहले निश्चित कर दिया। माँ के इस निर्णय से मेजर कठोर अत्यन्त प्रसन्न हुए। समय को भले ही रजनी ने घटा दिया परन्तु कार्यक्रम को बृहद करने में कोई कसर नहीं छोडी। तीर्थ स्थानों से पंडितो को बुलाया गया। पंडित रामधन की आत्मा के शान्ति हेतु गरुणपुराण का पाठ शुरू हुआ। ब्राह्मणों के साथ-साथ सभी जाति एवं धर्म के लोगों को आमन्त्रण दिया गया।

गाँव से पूरब रामधन की बाग में तेरही भोज का विशाल आयोजन किया गया। दूर-दूर तक अनेक पांडाल लगे थे। भारतीय ही नहीं विदेशी व्यंजनों की सुगन्ध से

वातावरण सुरभित हो रहा था। जो जिस प्रकार का खाना, खाना चाहे उसकी सूची छपी थी। चार बजे से ही भोजन शुरू हो गया। लोगों की भीड़ देखकर ऐसा लगता मानों आज रामधन का गाँव तीर्थ बन गया है। नेता, मंत्री, अधिकारी विधायक सांसद अनेक गणमान्य लोगों को एक साथ देखकर जनता अपने को धन्य मान रही थी। लोग तरह-तरह की चर्चाएँ कर रहे थे।

कोई कहता बेटे हो तो रामधन के जैसे, तीनों इतने बड़े-बड़े ओहदे पाकर भी कितने विनम्र है, जो भी आता उसका हाथ जोड़कर अभिवादन कर रहे हैं। गर्व ने इनको छुआ तक नहीं। महापुरुष हैं तीनों। कोई बच्चों का गुणगान करता तो कोई रजनी की तारीफ का पुल बांधता कहता इस युग में ऐसी नारी होना मुश्किल है। सती सुलोचना है। भगवान भी कितना निर्दयी है सत्य पर चलने वालो को कष्ट देता है। जब उसने महाराज हरिश्चन्द्र को नहीं छोड़ा तो फिर महान नारी रजनी की क्या विशात। कोई कहता भइया यह नश्वर संसार है यहाँ से एक दिन सबको जाना पड़ेगा, पर रामधन तू धन्य है तू अमर हो गया।

जितने मुँह उतनी बातें कोई खाने की तारीफ करता, सत्तर वर्ष की उम्र हो गई, आज तक ऐसी व्यवस्था कहीं नहीं देखी। बड़े दिल के हैं रामधन के सुवन दोनों हाथ खोल कर दान कर रहे हैं। पिता की इस प्रकार सेवा करने वाले धरती पर बहुत कम लोग हैं। रामधन को साँप ने नहीं काल ने काटा था, कोई बीच में बोल उठा, सारे डॉक्टर हार गये। कोई काल को टाल नहीं सकता एक वृद्ध महाशय बोले—जब राजा परीक्षित नहीं बचे तो रामधन की क्या औकात जन्म के साथ विधाता मृत्यु निश्चित कर देता है।

जिस तरह परीक्षित को शुकदेव जी ने भागवत की कथा सुना कर स्वर्ग भेज दिया था, उसी तरह रामधन के पुत्रों ने पंडितो को बुलाकर मंत्रो के द्वारा तार दिया भइया। धन्य हो रामधन के सपूतों। सूपतों की जय-जयकार से पहले उस दयामयी करुणा की मूर्ति माता रजनी की जयकार करो भइया—एक युवक बोला। जिस माता के कारण हमारा गाँव तीर्थ हो गया। रजनी माता ने हमारे बाबा एवं गाँव के भद्रजनों से इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु आशीर्वाद मांगा था। बड़ी उदार हैं दरोगा की माता कोई अन्य बोला।

तेरही की रस्म समाप्त हो गई। पूरे इलाके में रामधन के पुत्रों की तारीफ हो रही थी। चाट की दुकान होटल, हर घर यहाँ तक मधुशाला में भी लोग इस तेरही की चर्चा छेंड रहे थे। कई दिनों तक रामधन की तेरही की चर्चा होती रही।

❍❍

एक वर्ष बाद रामधन की वरसी का आयोजन किया गया। पूरा परिवार इकट्ठा हुआ। रजनी ने बच्चों से कहा मेरी एक अभिलाषा है।

कहो माँ दरोगा साहब बोले—

बेटे मेरी इच्छा है की तुम्हारे पिता की मूर्ति स्थापित की जाय।

आप की इच्छा पूर्ण होगी माँ—दरोगा जी ने कहा।

कठोर चलो अभी हम अपनी बाग में स्थान का चुनाव करते हैं जहाँ पर पिता जी की प्रतिमा स्थापित की जाय। पिता जी की अगली श्राद पर माता जी के सपने को साकार रूप में देना है।

एक वर्ष बाद पुनः रामधन का परिवार इकट्ठा हुआ। कुवार मास की अमावस्या पितृ विर्सजन के दिन रामधन की प्रतिमा को पंडितों ने मंत्र जाप के साथ स्थापित कर दिया।

गाँव से पूरब बाग में रामधन की प्रतिमा विराजमान है। भव्य एवं विशाल इमारत में यह प्रतिमा लोगों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। गाँव में जब कोई शुभ कार्य विवाह, जन्म आदि होता है तो लोग दूल्हा-दुल्हन को लेकर प्रतिमा के पास आशीर्वाद लेने आते हैं। हर वर्ष पितृ विर्सजन के दिन यहाँ मेले का आयोजन होता है। पूरे क्षेत्र में इस स्थान का नाम है।

आज भी लोग रामधन की प्रशंसा करते हैं। परन्तु वे यह नहीं जानते कि हम जिस परिवार के लिये अनैतिक तरीके से धन संग्रह कर उन्हें बड़ा आदमी बनाते हैं वे ही एक दिन कांटे की तरह चुभते है। संसार का सत्य समझने में पूरा जीवन स्वाहा हो जाता है। इसलिये आवश्यक है आत्मसंतुष्टी के लिये मानव परोपकर भी करे। अपनों से निकल कर कुछ अपने लिए करे जो मृत्यु के बाद भी जीवित रहे। अब रजनी सोचती है।

दिन में एक बार रजनी रामधन की मूर्ति के पास अवश्य आती है एकान्त में उसकी आँख से आँसू बहने लगते हैं। लोग श्रद्धा से उसे देख कर नत मस्तक हो जाते हैं। एक दिन ऊषा काल में रजनी रामधन की मूर्ति के पास पहुँची आज उसके मन को आघात लगा था। जिन बच्चों के प्यार में वह पति को भूल चुकी थी उन्होंने उसके हृदय में तीर भोंक दिया था। रामधन की मूर्ति पर बड़ी देर तक रोती रही जैसे बाहर निकली एक नाग पर पैर पड़ गया। नाग ने उसे काट कर चिरनिद्रा की गोद में सुला दिया।

❑❑❑

अभागा

विद्यानिवास विश्नोई बेसिक शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में लिपिक थे। उन दिनों सहायक अध्यापक की अपेक्षा कार्यालय में आसीन बाबू की कमाई अधिक थी। तब प्राइमरी के सहायक अध्यापक का वेतन सेकण्ड क्लास अधिकारी के बराबर नहीं था। सेना का सिपाही पुलिस का कांस्टेबल एवं प्राइमरी का सहायक अध्यापक लगभग एक जैसा वेतन पाते थे। बाबूओं की बाहरी आमदनी होती थी जिसके सहारे वे आगे निकल जाते थे। विद्यानिवास विश्नोई की वाक्पटुता अत्यन्त सुन्दर थी। जिसके परिणाम स्वरूप अधिकारी उनको पसन्द करते थे। क्योंकि विद्यानिवास जो बाहरी आमदनी करते उसमें से आधा भाग साहबों को समर्पित कर देते। इसलिए किसकी मजाल जो उनकी तरफ ऊँगली उठाये।

सरकार के भ्रष्ट विभाग में शिक्षा विभाग उस समय शीर्ष पर नहीं था। चकबंदी विभाग में जिस तरह कर्मचारी बाहरी आमदनी कर रहे थे उसे देखकर हर शिक्षित व्यक्ति चकबंदी विभाग में जाने को आतुर था। विजली विभाग का क्या कहना दोनों हाथों में लड्डू कुल मिलाकर देखें तो मानव का स्वभाव यही रहा है कि उसे हराम का कहाँ से मिले। बिना मेहनत के हर व्यक्ति करोड़पति बनना चाहता है। इसलिए आज यह कहना कौन विभाग ईमानदार, कठिन है। जिसके ही हाथों में सत्ता आई वही न्याय नियम को खाने लगता है। विद्यानिवास विश्नोई ने पैसा ही नहीं कमाया अपितु उसका सदुपयोग किया। बड़े बेटे रमाकांत विश्नोई को इण्टर पास होते ही पॉलिटेक्निक करवाया वह विद्युत विभाग में अवर अभियन्ता हो गया, दूसरे बेटे लक्ष्मीकांत विश्नोई ने बी. ए. पास किया तो विद्यानिवास ने समझाया। बेटा तुम ऐसी नौकरी करो जिसमें दो नम्बर से पैसा मिले। आज के युग में वेतन से पेट नहीं भरता। संसार में जो लोग आगे बढ़े हैं सब ने बेइमानी से पैसा कमाया है। इसलिए मेरी इच्छा है तुम आबकारी विभाग ज्वाइन करो। लक्ष्मीकांत ने पिता के उपदेश को पूर्ण कर दिया।

विद्यानिवास विश्नोई की तीसरी संतान शशिकला अत्यन्त सुन्दर कन्या थी, उसके जन्म पर विद्यानिवास ने खुशी मनाई थी। शशिकला भी पड़ने में तेज थी बी. ए. पास करने के उपरान्त उसने बी. एड. किया। आज वह प्राइमरी में अध्यापक है। शशिकला जब पैदा हुई तभी विद्यानिवास ने नसबन्दी कराने की सोची परन्तु कल पर छोड़ दिया,

मानव जब कोई कार्य कल पर छोड़ देता है तो फिर वह कार्य कभी पूरा नहीं होता। विद्यानिवास पत्नी की नसबन्दी करना चहता था परन्तु ज्ञानवती टाल मटोल कर रही थी। धीरे-धीरे तीन वर्ष बीत गये। विद्यानिवास विश्नोई अब कंडोम का प्रयोग करने लगे। तीन बच्चों के जन्म के उपरान्त ज्ञानवती का सौन्दर्य फीका नहीं पड़ा था। पैंतीस की अवस्था के उपरान्त पुरुष हृदय में स्पंदन उत्पन्न करने में वे सक्षम थी।

महान दार्शनिक प्लटो ने देह आकर्षण को छद्म भेष में प्रकृति का इंद्रजाल कहा है। प्रकृति ने स्यात् नारी को इतना अनिंद्य न बनाया होता तो सचमुच सृष्टि का संतुलन बिगड़ जाता। ज्ञानियों को भी नारी सौन्दर्य अपने में समाहित कर लेता है फिर साधारण मानव की क्या विशात। ज्ञानवाती के सौन्दर्य पर विद्यानिवास आसक्त थे। एक दिन वे देह सुख में होश खो बैठे परिणाम चौथी संतान का मार्ग प्रशस्त हो गया। गर्भवती होने के उपरान्त ज्ञानवती ने गर्भ से छुटकारा पाने की बात पति से कही परन्तु गर्भ गिरवाना विद्यानिवास ने उचित नहीं समझा। उसी वक्त उन्होंने अपनी नसबन्दी करवा ली।

ज्ञानवती विश्नोई ने बालक का जन्म दिया। घर में खुशी की लहर फैल गई। विद्यानिवास के पिता का स्वर्गवास हो गया था परन्तु उनकी माता जी अत्यन्त प्रसन्न हुई। शिशु धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। विद्यानिवास ने बालक का नाम शिवशरन विश्नोई रखा। शिवशरन का दायाँ पैर छोटा था वह चलता तो था परन्तु लँगड़ाता था। इसके साथ-साथ उसकी बुद्धि भी मंद थी। विद्यानिवास के मन में इस बच्चे के प्रति वह वात्सल्य नहीं उमड़ा जो अन्य बच्चों के प्रति था। यद्यपि उन्होंने अपनी भावना कभी प्रकट नहीं किया परन्तु शिवशरन के प्रति उनकी उदासीनता बढ़ती गई। माँ तो माँ होती है यदि उसके उदर से सर्प पैदा हो तो भी उसे अपना पय पिलाने में असीम सुख की अनुभूति होगी, परन्तु नेत्र उसे देखेंगे तो वह भयभीत हो जायेगी। पुत्र की अपगंता पर माँ की ममता बढ़ी नहीं अपितु अन्य शिशुओं की तुलना में कम हो गई।

शिवशरन का नाम विद्यानिवास ने विद्यालय में लिखवा तो दिया परन्तु स्वयं उसका ध्यान नहीं दिया। डियुटी से आने के बाद प्रतिदिन रमाकान्त एवं लक्ष्मीकांत शशिकला को जिस तरह विद्यानिवास पढ़ता था शिवशरन को नहीं पढ़ाया, पिता के साथ-साथ माँ भी शिव के प्रति उदासीन थी। शिवशरन धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। जिस बच्चे के प्रति माता-पिता का इस तरह का सोच हो उसके प्रति अध्यापक का क्या सोच होगा अनुमान लगाया जा सकता है। शिवशरन कई वर्षो तक स्कूल गया परन्तु अपना नाम भी न लिख सका। अंत में विद्यानिवास उसकी पढ़ाई बन्द करवा कर घर का काम करवाने लगे। शिवशरन मंद बुद्धि होने के उपरान्त अपना हित अनहित जानता था। माता, पिता, भाई, बहन के व्यवहार से उसका हृदय कराह उठता था परन्तु वह उफ नहीं करता था। उसने अपने मन में यही सोच लिखा स्यात् मेरे पूर्व कर्मो का फल मिल रहा है।

❍❍

रमाकांत विश्नोई की शादी की तैयारियां शुरू हो गई। गोद भराई की रस्म हेतु पूरा परिवार एवं पट्टीदार जाने लगे। विद्यानिवास ने शिव को बुलाकर कहा—बेटा लड़की के पिता सेना में कर्नल है, तुम वहाँ जाओगे तो बदनामी होगी। इसलिए तुम्हे नहीं ले जा रहा हूँ। फिर घर पर गाय माता हैं तुम चले गये तो उन्हें कौन खिलायेगा। पिता की बात सुनकर शिवशरन कुछ दूर सोचता रहा फिर बोला—बाबू जी गाय क चारा काट कर मैं रख दूँगा क्या माताा जी एक दिन गाय को खिला नहीं सकती। ज्ञानवती ने शिव की बात सुन ली आकर बोली—शिवशरन फिर बोलों क्या कहा। ज्ञानवती शिव को कभी भी प्यार से नहीं पुकरती थी, अभागा, पागल, नालायक और न जाने कितने नामों से उसे पुकाराती थी। शिव जानता था यदि उसने मुँह खोला तो माँ अनेकों गालियाँ बकेगी, बस यही सोचकर चुपचाप चला गया।

इस अभागे को वहाँ नहीं ले जाना, जन्म देते ही इस पागल का गला घोट देती तो अच्छा होता, कहते-कहते ज्ञानवती की साँसें तेज हो गई। पत्नी को क्रोधित देखकर विद्यानिवास बोले—ऐसे शुभ अवसर पर क्रोध करना ठीक नहीं, शिव को मैं समझा दूंगा। शाम को चार बजे पूरा परिवार रिश्तेदार एवं पट्टीदार गोद भराई की रस्म में चले गये। जाते वक्त विद्यानिवास ने शिव से कहा बेटा तुम घर देखना, पिता की बात सुनकर स्वीकृत में शिव ने सिर हिला दिया।

रमाकांत ने शिवशरन के लिए पैंट, शर्ट सिलवाया, शादी के दिन शिव को देकर बोला—भइया इसे पहनकर शादी में चलो, बड़े भाई की बात सुनकर शिव मुस्कराया, मैं वहाँ नहीं जाऊँगा, अभागा हूँ न मेरे वहाँ जाने से पिताजी की बदनामी होगी। क्योंकि तुम्हारे ससुर कर्नल है न। शिव की बात सुनकर ज्ञानवती वहाँ पहुँच गई। रमाकांत मैंने तुम्हे पहले ही बता दिया था कि शिव से बात नहीं करना, फिर क्यों इसके पीछे पड़े हो। माँ की बात सुनकर रमाकांत चल दिया। ज्ञानवती ने शिव को इस तरह देखा मानों कच्चा चबा जायेंगी। तुम वहाँ गये तो समाज में हंसी होगी, लोग कहगें शंकर जी की बारात आई है। कई बार कह दिया कि.....न जाने क्या सोचकर ज्ञानवती आगे बोल न सकी। माता की बात सुनकर शिव मुस्कराया। ज्ञानवती को लगा शिव सचमुच पागल है।

बारात वापस आ गई बड़े धूमधाम से रमाकांत का विवाह हुआ था। आज प्रीतिभोज का आयोजन था हजारों लोगों ने भोजन किया। रमाकांत ने जो पैंट शर्ट शिव को दिया था उसने उसको पहना नहीं। पूरे दिन मेहनत करता रहा प्रीतिभोज जब खत्म हो गया तो शिव ने खाना खाया और चुपचाप टेन्ट हाउस की चारपाई पर सो गया। सुबह हुई तो पुनः काम में लग गया। रमाकांत की छुट्टी खत्म हो गई जब वह डियूटी पर जाने लगा तो पत्नी भी साथ थी। ज्ञानवती ने बहू को गले से लगा लिया। विद्यानिवास ने रमाकांत से कहा—बेटा बहू का ध्यान रखना। ममता बेटी कर्नल की

लड़की हैं घर में दो सिपाही नौकर थे। बहू ने कभी काम नहीं किया है कर्नल साहब ने मुझसे कहा था इसलिए तुम नौकरानी रख लेना।

पिता की बात सुनकर रमाकांत मुस्कराकर बोला—पिता जी आप बेफिक्र रहे ममता को कोई परेशानी नहीं होगी। मुझे तुम से यही उम्मीद है बेटा। कर्नल साहब की दूरदर्शता से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। उन्होंने मुझसे कहा—विद्यानिवास तुम जानना चाहते हो मैंने अफसर को छोड़कर अवर अनियन्ता से बेटी की शादी क्यों की, मैं क्या बोलता चुप था तभी कर्नल साहब बोले—सेना में भले ही अफसर को मोटी तनख्वाह एवं सुविधाएँ मिलती है पर जोखिम रहता है। दूसरे शब्दों में सेना में खाने के सीमित स्रोत है कुछ अधिकारी ही उसका प्रयोग करके अमीर बनते हैं। जब कि विद्युत विभाग में ऐसा नहीं है। एक जूनियर इंजीनियर यदि पूरी निष्ठा से बेइमानी करे तो कर्नल को मात दे सकता है। मेरे विचार से पैसा की संसार की सर्वोच्च ताकत है, इसलिए जो पैसा कमाये वही आज के युग का बहादुर है। सच्चाई एवं ईमानदारी के बातें सब बकवास है। तुम्हारा बेटा होनहार है मुझे पूरा भरोसा है वह मेरी बिटिया को रानी जैसा सुख देगा। पिता की बात सुनकर रमाकांत बोला—आप एवं ससुर जी की अपेक्षा मैं अवश्य पूरी करूँगा पिता जी।

लक्ष्मीकांत एवं शशिकला को ममता ने पास बुलाकर कहा तुम दोनों घर पर आते रहना। ममता जब कार पर बैठी तो ज्ञानवती को लगा मानों उसकी बेटी ससुराल जा रही है। ज्ञानवती की आँखें भर आयी। ज्ञानवती को इस तरह भावुक देखकर ममता कार से उतरकर सास से लिपट गई। तभी उसकी नजर शिवशरन पर पड़ी। पाँच सौ का नया नोट निकाल कर बोली जरा इधर आना। शिवशरन जब भाभी के पास आया तो चरण छू लिया, ममता ने पैर झटका तो शिव को लग गया। ममता के व्यवहार से शिव को आघात लगा और वह वहाँ से चल दिया। ममता ने पाँच सौ का नया नोट सास को देकर कहा—मम्मी यह पैसा उस नौकर को दे देना। ममता की बात सुनकर ज्ञानवती ने कहना चाहा कि शिवशरन नौकर नहीं अपितु तुम्हारा देवर है परन्तु कह न सकी, क्योंकि उन्हें इज्जत की चिंता ने घेर लिया।

लक्ष्मीकांत का भी विवाह हो गया वह भी पत्नी को लेकर चला गया। शिवशरन के साथ माता, पिता ने ही जब अमानवीय व्यवहार किया तो उसका असर रमाकांत लक्ष्मीकांत एवं शशिकला पर भी पड़ा। इन तीनो की नजर में शिव नौकर बन कर रह गया। शशिकला की शादी हुई वह भी ससुराल चली गई। विद्यानिवास विश्नोई रिटायर होकर घर पर रहने लगे। ज्ञानवती कभी रमाकांत तो कभी लक्ष्मीकांत के यहाँ चली जाती। माँ के न रहने पर शिव खाना भी बनाने लगा। पहले पिता को खिलाता फिर स्वयं खाता। कभी-कभी विद्यानिवास भी रमाकांत के पास चले जाते। विद्यानिवास

चाहता तो शिवशरन की शादी हो जाती परन्तु उसने आने वाले रिश्तों को यह कहकर वापस कर दिया कि शिवशरन पागल है। माँ ज्ञानवती भी शिवशरन की शादी के पक्ष में नहीं थी क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं बहू शिव को अपने अधीन न कर ले। हर स्थिति में वे शिव को अपना एवं बाद में रमाकांत का नौकर बनाकर रखना चाहती थी इसलिए शिवशरन की शादी नहीं हो सकी।

❍❍

रमाकांत के बेटा पैदा हुआ यह समाचार जब विद्यानिवास ने सुना तो उनका सीना चौड़ा हो गया। दूसरे दिन पूरे गाँव में प्रति घर के हिसाब से एक किलो लड्डू बांटा गया। मंगलवार को सुन्दरकाण्ड के पाठ का आयोजन किया गया ज्ञानवती के खुशी का ठिकाना न रहा, उन्होंने रमाकांत से कहा—बेटा हम चाहते हैं कि तुम्हारे पुत्र का जन्मोत्सव अपने गाँव में मनाया जाय। माँ की बात को आज्ञाकारी बेटा कैसे टालता। पूरा परिवार गाँव आया, रामचरितमानस का अखण्ड पाठ हुआ। लक्ष्मीकांत एवं शशिकला की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

समय चलता रहा। लक्ष्मीकांत भी पिता बन गया शशिकला ने कन्या का जन्म दिया। ज्ञानवती अपने बड़े-बेट रमाकांत के साथ रह रही थी। ममता घर की सफाई में व्यस्त थी। योगी आदित्यनाथ जब से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तब से अधिकारियों ने सफाई का नाटक करना शुरू कर दिया, इसका असर ममता पर भी पड़ा। पिता के घर में उसने झाड़ू छुआ तक नहीं था, वही आज सफाई कर रही थी।

ममता की दूसरी संतान कन्या हुई थी। ज्ञानवती उस बच्ची को तेल मलिश कर प्यार कर रही थी। अचानक उनके हाथ एवं पैर में कंपकंपी होने लगी। चीखने की कोशिश की पर जबान तालू से चिपक गई। सास की हालत देखकर ममता दौड़ कर आयी। बच्ची रो रही थी। बच्ची को उठाकर ममता ने चुप कराया फिर रमाकांत को फोन किया। थोड़ी देर में रमाकांत आ गया। रमाकांत ने माँ-माँ पुकरा पर ज्ञानवती बोल न सकी बस आँखों से पानी बहने लगा। रमाकांत के पड़ोस में डॉक्टर का घर था वह उन्हें बुलाने गया पर वे घर पर नहीं थे। अंत में माँ को लेकर रमाकांत अस्पताल गया।

ज्ञानवती को रमाकांत ने सरकारी अस्पताल में एड़मिट करावा दिया। दवा शुरू हो गई। पिता एवं भाई बहन को रमाकांत ने माँ की बीमारी का समाचार फोन से प्रेषित कर दिया। दूसरे दिन सभी लोग आ गये। शशिकला बोली भइया माँ को किसी प्राइवेट अस्पताल में दिखाया जाय तो जल्दी ठीक हो जायेंगी। बहन की बात सुनकर रमाकांत बोला—सरकारी अस्पताल में अच्छे डॉक्टर होते हैं यदि माँ यहाँ ठीक नहीं हुई तो कहीं भी ठीक नहीं होंगी। लक्ष्मीकांत बोला—भइया ठीक ही कह रहे हैं अब माता जी की उम्र भी काफी हो चुकी है इस उम्र में माँ के ऊपर पैसा फूकना मुझे तर्कसंगत नहीं लगता।

मेरे विचार से माँ को घर में रखकर दवा एवं सेवा करें। लकवा का अभी तक कोई कारगर इलाज नहीं है।

आप ठीक कहते हैं भइया मैं कल ही माँ को घर ले जाऊँगा। तीन दिन के बाद रमाकांत ज्ञानवती को घर ले आया। दवा होती रही, भाई एवं बहन चले गये। विद्यानिवास ठहर गये। तीन महीना बीत गया। एक दिन रमाकांत ने विद्यानिवास से कहा, पापा जी माताजी अब ठीक नहीं होंगी मैं चाहता हूँ माँ की सेवा का पुण्य थोड़ा लक्ष्मीकांत भी ले ले, इसलिए आप यदि बुरा न माने तो माँ को लक्ष्मीकांत के पास भेज दूँ। विद्यानिवास बोले—तुम जैसा उचित समझो वैसा करो बेटे। दूसरे दिन रमाकांत ज्ञानवती को लक्ष्मीकांत के घर पहुँचा दिया।

माँ की सेवा करते-करते लक्ष्मीकांत परेशान हो गया। पत्नी कहती अब मेरे बस की बात नहीं कोई रास्ता निकालो। आखिर एक दिन लक्ष्मीकांत पिता से बोला—पिता जी माँ को लेकर आप कुछ दिन के लिए रमाकांत के यहाँ चले जायं। पुत्र की बात सुनकर विद्यानिवास कुछ देर सोचते रहे फिर बोले—बेटा तुम मेरे साथ माँ को गाँव छोड़ दो वहाँ शिवशरन है न वह माँ की सेवा करेगा। पिता की बात सुनकर लक्ष्मीकांत अत्यन्त प्रसन्न हुआ। दूसरे दिन माँ को लक्ष्मीकांत ने गाँव में पहुँचा दिया। माँ की हालत देखकर शिवशरन अपने आँसू रोक न सका। विद्यानिवास ने अपने उस बेटे को देखा जो परिवार के लिए अभागा था।

लक्ष्मीकान्त चला गया। शिवशरन माँ की सेवा करने लगा। शाम को माँ के पैर में तेल मलिश करते हुए मन ही मन सोचता मैं माँ की नहीं अपितु आदि शक्ति माता दुर्गा की सेवा कर रहा हूँ। इसी भावना को वशीभूत वह माँ की सेवा में रत हो गया। विद्यानिवास विश्वनोई शिवशरन को निष्काम भाव से माँ की सेवा में तत्पर देखकर मन ही मन अपने उस अपाहिज मंदबुद्धि नालायक अभागे पुत्र के चरणों पर सिर झुका देते। उन्हें अपने किये पर बेहद पश्चाताप हो रहा था।

बेटी शशिकला जो उनके पास दिन में दो बार फोन करती थी अब उन्हें भूल चुकी थी। रमाकांत एवं लक्ष्मीकांत भी अब फोन नहीं करते। विद्यानिवास जब फोन करते तो दोनों भाई डियूटी का बहाना बना कर आने में अस्मर्थता व्यक्त कर देते। छः महीना बीत गये कोई घर नहीं आया। जिन बच्चों को उन्होंने जान से अधिक प्यार किया था वे इस तरह उन के साथ व्यवहार करेगें ऐसी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं कि थी। जगत का सत्य अब उनकी समझ में आ गया था, मनुष्य संतान एवं परिवार के लिए अर्नगल तरीके से धन इकट्ठा कर बच्चों को बड़ा आदमी बनाने में अपनी समस्त उर्जा खत्म कर देता है, परन्तु एक दिन इस सत्य से साक्षातकार होता है कि सत्कर्मों के सिवा अंत में कोई काम नहीं आता।

❍❍

शिवशरन की सेवा से ज्ञानवती के शरीर में नव संचार होने लगा। विद्यानिवास विश्नोई ज्ञानवती का इलाज अब स्वयं करवा रहे थे। परिणाम यह हुआ कि ज्ञानवती स्वस्थ होने लगी। कुवार मास की नवरात चल रही थी। शिवशरन ने नव दिन का व्रत रखा था। विद्यानिवास विश्नोई का व्यवहार शिव के प्रति बदल गया था। शिवशरन आज तख्त पर लेटा तो जीवन को पड़ने लगा। उसने मस्तिष्क पर जोर दिया तो सारे दृश्य स्पष्ट दिखाई देने लगे। माता, पिता ने कभी भी उसे प्यार नहीं किया। उसने बहुत कोशिश कि पर ऐसा कोई चित्र नहीं दिखा जब वह माँ या पिता की गोद में या अलिंगन में कभी स्वयं को पाया हो। भाई बहन स्कूल जाते प्राइवेट और उसे सरकारी स्कूल में भेज दिया गया। तुम्हे कुछ नहीं आता माता, पिता हर दम डांटते। फिर उससे घर का काम लिया जाने लगा। गाय चराते घास छिलाते गेहूँ, धान बोते काटते गन्ना छिलाते वह बड़ा हो गया। माता जी भाई एवं बहन को खिलाने के बाद उनका बचा खाना दे देती। गाय वह चरता दूध, भाई बहन माता, पिता पीते। याद आया एक दिन खीर बनी थी उसने मांगा तो माँ चीख पड़ी ले अभागा फिर चावल में दूध चीनी डालकर दे दिया। शिव भगवान का प्रसाद समझ कर खा गया। त्यौहार आता अच्छा-अच्छा खाना बनता माँ उसे रखकर सुबह भाई एवं बहन को खिलाती उसे नहीं देती माता-पिता का यह रूप देखकर शिव गम्भीर चिंतन में पड़ जाता। उसकी मंद बुद्धि नहीं थी अपितु बना दी गई थी। घर वाले जब उसे पागल, अभागा पुकराते तो पड़ोस वाले भी उन्हीं शब्दों का प्रयोग करने लगे। शिव ने आत्मनिर्णय लिया स्यात् उसे उसके पापों का फल मिल रहा है। यदि उसने भोग लिया तो फिर इस संसार से मुक्त हो जायेगा। बस इसी सोच ने शिव को गरल पीने की शक्ति शिवशंकर ने प्रदान कर दी।

अष्टमी का दिन था शिव ने दुर्गा जी से प्रार्थना की। माता मैं अज्ञानी हूँ मेरे माता, पिता एवं अपनो ने मेरे साथ जो व्यवहार किया मुझे आप से उसकी शिकायत नहीं है बस मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर लो जगजननी की मेरी उम्र मेरी माता को लग जाय और मुझे इस दुर्गन्ध युक्त संसार से मुक्ति मिल जाय, आदि शक्ति जगजननी से प्रार्थना कर के शिव निद्रा देवी की गोद में चला गया। सुबह चार बजे शिव को स्वपन में दुर्गा जी का साक्षातकार हुआ। गद्गद ह्दय शिवशरन माता जी की वंदना करने लगा।

दुर्गा जी बोली—शिवशरन तुम्हारे आचरण से मैं अत्यन्त प्रभावित हुई हूँ तुम्हारी निष्काम भक्ति मुझे यहाँ खींच लाई है हे भक्त शिवशरन मैं तुम्हे वरदान देना चाहती हूँ, तुम्हारी जो इच्छा हो मांग लो। आदि शक्ति माता की बात सुनकर गद्गद शिव माँ के चरणों पर लेट गया। जगजननी ने शिव को उठाकर ह्दय से लगा लिया। शिव के नेत्रों से झर-झर आँसू बहने लगे। जगत माता ने शिव के आँसू पोंछते हुए कहा—मत

रोओ वत्स अब तुम्हारे शुभ-अशुभ कर्मो का फल क्षीण हो गया है, वर मांगो वत्स, आज मैं तुम्हे निराश नहीं करूंगी।

हे जगत माता यदि आप मुझ पर प्रसन्न है तो कृपा करके मुझे यह वरदान दें कि अब मुझे किसी भी माँ के उदर से जन्म न लेना पड़े। तथास्तु कहकर जगत माता अंतर ध्यान हो गई। शिव का स्वपन भी टूट गया। उसका सारा बदन पसीने से तरबत्तर हो गया, वह उठा परन्तु अचानक हृदय में असहनीय पीड़ा उठी और लेटा तो चिरनिद्रा की गोद में समा गया।

सुबह ज्ञानवती की आँखें खुली तो उठकर खड़ी हो गई। लकवा लाइलाज बीमार ठीक हो गई। उनके चेहरे पर जो खुशी की आभा थी उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, पति के पास पहुँची तो विद्यानिवास हतप्रभ ज्ञानवती को बाहों में भर लिया। मारे खुशी के वे पुरानी बातें भूलकर बच्चों को फोन करने लगे, माँ का ठीक होना बच्चों के लिए चमत्कार था। सभी तीनों बच्चे दस बजे तक घर पहुँच गये। अचानक विद्यानिवास को अभागे को याद आई। जब वे शिव के कमरे में पहुँचे तो शिव लेटा था। पिता ने शिवशरन को झिंझोड़ा, पर वह संसार से मुक्त हो चुका था।

❑❑❑

अनपढ़

ग्रीष्म ऋतु यौवन पर थी, जेष्ट मास की महिना सूर्य की प्रखर किरणों से वसुधा के समस्त जीव-जन्तु व्याकुल थे। दिन के एक बज रहे थे। पैसिंजर गाड़ी एक घंटे से स्टेशन पर खड़ी थी। दो गाड़ियों की क्रासिंग हो चुकी थी तीसरी गाड़ी आने वाली थी। पैसेन्जर गाड़ी के डिब्बे खाली थे। भीषण गर्मी दूसरे इस लाइन पर कई एक्सप्रेस गाड़ियों के होने के कारण कम ही लोग इस ट्रेन से यात्रा करते हैं। तीसरी गाड़ी जाने के बाद पैसिंजर ट्रेन ने सींटी बजाई तो जो लोग नीचे उतर कर ठहल रहे थे ट्रेन पर सवार हो गये।

ट्रेन चल दी। मलय नीचे की सीट पर लेट गया। ट्रेन चलने से लोगों ने राहत की साँस ली। मलय की बगल वाली सीट पर एक युवती लेटी थी, अचानक वह उठकर बैठ गई। उसका जी मचला रहा था उसे लगा उलटी होने वाली है वह उठी और बाथरूम की तरह चली। उलटी का बेग इतना तीव्र था कि वह उसे रोक न सकी। युवती की उलटी से मलय का चेहरा भीग गया। मलय उठकर बैठ गया। युवती अब भी उलटी कर रही थी। मलय को क्रोध तो आया परन्तु उसके उच्च विचारों ने उसे रोक लिया। पहले उसने अपने चेहरे को साफ किया। फिर कपड़ो को उतारकर साफ किया। युवती कुछ कहना चाह रही थी परन्तु कह न सकी। मलय बाथरूम में हाथ मुँह धोने चला गया।

मलय मुँह धोते वक्त किसी अन्य सीट पर बैठने का निर्णय ले लिया, आया और अपना झोला लेकर जाने लगा तभी युवती बोली, प्लीज मुझे माफ कर दो। मलय कुछ नहीं बोला बस अपना झोला वहीं रखकर बैठ गया।

मेरे कारण आपको तकलीफ हुई युवती बोली। मलय उसके मुख को देखने लगा। उसके चेहरे की मासूमियता ने मलय के हृदय में कचोट उत्पन्न कर दी। उसके मुख मण्डल की सुन्दरता अद्वतीय थी। चौबीस पच्चीस की उम्र में बच्चे जैसा भोलापन उसके ओप में मलय को दिखा। मलय चिंतन में खो गया। न जाने कितनी युवती उसने आज तक देखी होंगी, परन्तु ऐसा सौन्दर्य जो राहु का ग्रास बनकर भी उसके हृदय को शीतलता प्रदान कर दिया।

मलय अपने को रोक न सका उठा और युवती का हाथ पकड़कर सीट पर लिटा दिया। न जाने किस भावना के वशीभूत उसने अखबार निकाला और युवती की उलटी

साफ करने लगा। यह क्या कर रहे हो युवती उठकर बैठ गई। मलय ने उलटी को अखबार में लपेट कर बाहर फेंक दिया फिर बोला—यदि इसे साफ नहीं करूंगा तो आने वालो लोगों का असुविधा होगी। हमारे प्रधानमंत्री महोदय एवं मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ सफाई का मुहिम चला रहे हैं, हमें उनका सहयोग करना चाहिए। मलय की बात सुनकर युवती मुस्करा उठी। युवती की मुस्काराहट से मलय का अतःकरण भीग गया।

युवती ने बोतल से पानी लेकर खिड़की से कुल्ला किया। ट्रेन रुक गई किसी ट्रेन की क्रासिंग होनी थी। मलय युवती के सौन्दर्य से अत्यन्त प्रभावित हुआ। उसका मन युवती से बात करने को व्यग्र था परन्तु संकोच बस शब्द नहीं निकल रहे थे। नेत्र उसे अपलक देखना चाहते थे परन्तु, चाहकर भी वह युवती को ऐसे देखता कि उसे एहसास न होने पाये कि वह उसे देख रहा है। युवती कहीं उसे अशिष्ट न समझे यह भय उसे सता रहा था। युवती अब संयत हो चुकी थी।

क्या किसी ट्रेन की क्रासिंग होने वाली है युवती बोली।

जरूर, तभी तो ट्रेन खड़ी है।

आप कहाँ जा रहे हैं युवती ने प्रश्न किया।

लखनऊ मलय बोला। क्या आप पढ़ते हैं। युवती की बात सुनकर मलय मुस्करा कर बोला— मैं अनपढ़ हूँ थोड़ी बहुत हिन्दी पढ़ लेता हूँ परन्तु जिस देश में न्याय की भाषा अंग्रेजी हो वहाँ मैं अनपढ़ ही गिना जाऊँगा। मलय की बात सुनकर युवती सोच मग्न हो गई। कुछ देर चुप रही फिर बोली— आप का नाम और आप रहते कहाँ हैं?

मलय मेरा नाम है, इसी जनपद में एक छोटे से गाँव में रहता हूँ, खेती करता हूँ। लखनऊ में किसान मेले का आयोजन हो रहा है मैं वहीं जा रहा हूँ। अब आप भी अपना परिचय देने का कष्ट करें। मलय की बात सुनकर युवती मुस्कराकर बोली— आपको कष्ट शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। युवती की बात का मलय ने कोई उत्तर नहीं दिया। आप कुछ बोलते नहीं, क्या सोच रहे हैं?

आप ने अपना परिचय नहीं बताया।

मलय जी मेरा नाम अचला है, एमबीबीएस की छात्रा हूँ। ज्यादातर मैं लखनऊ बस से ही जाती हूँ परन्तु आज तबियत ठीक नहीं थी। सुबह से ही मन भारी-भारी लग रहा था। सोचा पैसेन्जर से यात्रा करूंगी तो परेशानी नहीं होगी। यह ट्रेन लेट तो चलती है पर इसमें सुकून है भीड़-भाड़ कम है न। भीड़ तो कम है परन्तु इस ट्रेन का लखनऊ पहुँचने का कोई समय निश्चित नहीं मलय बोला।

आपकी बात ठीक है परन्तु इस तरह लेटकर बस में सफर नहीं किया जा सकता अचला के अधरों पर स्मित तैर गई। मलय पुनः सुखद अनुभूति में डूब गया।

आप मेरी मदद करेगें, अचला की बात सुनकर मलय का स्वप्न टूट गया। अगर मेरे बस की बात होगी तो जरूर करुँगा मलय बोला।

आप का किसान मेला अचला ने विषय बदल दिया। आपका आशय मेरी समझ में नहीं आया मलय बोला।

मलय जी यदि आप बुरा न माने तो मेरा सामान मेरे कमरे तक पहुँचा दें मलय इंकार न कर सका।

❍❍

अचला का सामान रख कर मलय बोला—अब मैं जा सकता हूँ। नहीं अचला बोली। अचला की बात सुनकर मलय जमीन को देखने लगा। आप बैठ जाइऐ—आप से बात करके मझे बहुत अच्छा लगा, सच कहती हूँ मलय जी। आप पहली बार मेरे घर आये हैं बिना चाय पिलाऐ जाने नहीं दूंगी। मलय बैठ गया, अचला पानी लेकर आ गई। मलय पानी पीकर बोला मुझे देर हो जायेगी।

आप परेशान न हो मैं भी आप के साथ किसान मेला देखने चलूगीं। नहा लेती हूँ शरीर दर्द कर रहा है कहकर अचला चली गई। जाते-जाते उसने एक पुस्तक मलय को दे दिया। मलय पुस्तक को पलटने लगा। आधे घण्टे में अचला तैयार होकर आ गई। मलय जी आप बोर तो नहीं हो रहे हैं। अचला जी आप बड़ी अजीब लड़की हैं मैं तो किसान मेला देखने आया था आपने तो किसान की आत्मा ही मुझे दिखा दी।

मैं समझी नहीं अचला मुस्करा पड़ी।

अचला जी यह उपन्यास मुंशी प्रेमचन्द का गोदान है। इस पुस्तक में किसान की जिस पीड़ा का चित्रण किया गया है वह आज भी यथार्थ है। मैं चाय बना लाती हूँ फिर आप से ढ़ेर सारी बातें करूंगी। अचला की बात सुनकर मलय बचपन में खो गया। आज उसे परी कल्पना नहीं अपितु यथार्थ लग रही थी अचला।

लो चाय पियो—मलय चाय पीने लगा। आपने यह उपन्यास पढ़ा है।

हाँ—मैंने इस उपन्यास को पढ़ा है, परन्तु आप जीव विज्ञान की छात्रा होकर साहित्य में रुचि रखती है मेरे लिए आश्चर्य की बात है। इसमें आश्चर्य की क्या बात है—अचला मुस्कराकर बोली।

अचला जी आज का युवा साहित्य के प्रति उदासीन हो गया है। इसका कारण हमारी संवेदना है।

मलय जी यह संसार है, यहाँ सब कुछ है। परन्तु हम उसे ही ग्रहण करते हैं जिस योग्य होते है। स्वर्ण की परख हर व्यक्ति नहीं कर सकता। चमक तो सभी देख लेते हैं।

आप की बातों से लगता है आप विदुषी हैं। नहीं—अचला हंस पड़ी बिना किसी को जाने इस शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस धरती पर ऊँगली पर गिने जाने वाले लोग है जिनमें विद्वता होती है। मैं विज्ञान की छात्रा हूँ। विज्ञान की दृष्टि में जिसे ज्ञान माना जाता है वह सिर्फ भौतिक तत्व है। ज्ञानी होने के लिए हमें उस पार भी देखना होगा जो ज्ञान की सीमा से भले ही पृथक हो पर आत्मा की शुचिता के लिये अनिवार्य है। मलय अचला के मुख मण्डल को देखता रहा, कुछ क्षण पहले जहाँ उसे

अचला में नारी दिख रही थी, जिसे आत्मसात करने के लिये हृदय व्यग्र था वही अचला अब उसे ऐसी नारी दिख रही थी जिसके उरसिज पीकर शिशु दो बिन्दुओं से मिलकर बनी रेखा रूपी जीवन की शुरूआत करता है। मलय अचला की बातों की गहराई समझ न सका तो बोला। अचला जी आपकी बातें हमारी समझ से परे है।

अचला मुस्करा उठी—मलय झंझावात में उलझ गया।

मलय जी आपको मेरी बात समझ में नहीं आई कोई बात नहीं अच्छा यह बताओ प्रधानमंत्री के नोटबंदी पर तुम्हारा क्या दृष्टिकोण है।

मेरे विचार से अचला जी पी. एम. का यह कदम राष्ट्रहित में है परन्तु इसका परिणाम सुखद होगा यह कहना कठिन है। पी. एम. के पग चिन्हो पर चलते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी भी सफाई का अभियान चला रहे हैं। परन्तु अचला जी जब तक हमारी अंतरात्मा स्वच्छ नहीं होगी जब तक भष्टाचार पर अंकुश लगाना कठिन है। फिर भी प्रयास सराहनीय है।

मैं आप से सहमत हूँ मलय जी आप भी मुंह हाथ धोकर तैयार हो जायं मैं भी किसान मेला देखना चाहती हूँ। अचला की बात मलय काट न सका। अचला के साथ मलय किसान मेला पहुँचा। मेले में तरह-तरह के कृषि यंत्र एवं नये शोध के बीज, उनकी गुणवत्ता बताने वाली अनेक तहरीर लगी हुई थी। अचला के साथ मेला देखने से मलय को विशेष सुखानुभूति हुई। मलय का ध्यान मेला पर नहीं अपितु अचला के सौन्दर्य पर ठहर गया था। परिणाम स्वरूप वह अपने उद्देश्य को नया आयाम देने की कोशिश करने लगा।

शाम के चार बजे तो मलय बोला— अचला जी नौ बजे मेरी ट्रेन है अब आप मुझे जाने की अनुमति दें।

नहीं—आज रात आप मेरे घर पर रहेगें सुबह चले जाना, चलो वहाँ बैठते है चाय पीयेगें। मलय इंकार न कर सका।

चाय पीते-पीते अचला बोली—मलय जी मैं आप से एक प्रश्न कर सकती हूँ। अवश्य जहाँ तक मेरी दृष्टि है वहाँ तक मैं आपके प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश करुँगा।

राजनीति में बहुमत के आधार पर हार जीत का निर्णय होता है क्या आप मानते हैं कि सत्य बहुमत में होता है?

नहीं—मेरे विचार से जिसे बहुत से लोग स्वीकार कर ले वह सत्य ही होगा, ऐसा कभी नहीं हो सकता। आप भी मानती हैं कि ज्ञानी पुरुष ऊँगली पर गिने जा सकते हैं, इसलिए बहुमत के आधार पर सत्य को परिभाषित नहीं किया जा सकता। सत्य को समझने की शक्ति सब में नहीं किसी-किसी में होती है।

ऐसा क्यों होता है अचला गम्भीर हो गई। अचला जी मैं आपकी तरह विद्वान नहीं हूँ फिर भी मेरे विचार से लोग निर्णय हानि लाभ को आधार बना कर करते हैं। लोभ

का सिद्धान्त नहीं होता अस्तु जब तक हम जीवन को हानि लाभ से पृथक नहीं करगें तब तक सत्य को समझा नहीं जा सकता। विश्व के जिन महापुरुषों ने सत्य का अन्वेषण किया उन्होंने सांसारिक सुखों का त्याग कर दिया था। जिसने उन्हें गरल पिलाया उन्होंने उसका भी अनहित नहीं किया। राजनीति सत्य से पृथक हार जीत में सिमटी होती है।

मैं आपके विचार से सहमत हूँ। आज न जाने क्यों राजनीति पर बात करने की इच्छा जागृत हो गई। नोटबंदी के बारे में आप और कुछ कहना चाहेगें।

अचला जी—आप इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि शक्ति आज पैसों में सिमट गई है इसलिए जिन लोगों के पास पैसा है वे इसको सफेद जरूर बना लेगें। इस देश के अफसरों के खून में जो मिलावट है वह न्याय में बाधा उत्पन्न करती रहेगी। अचला जी आप माने या न माने परन्तु हमारे अफसर आम आदमी को मुर्गी, बकरी, गाय समझते हैं। अण्डा, मांस, दूध नाम अलग-अलग होकर भी आम आदमी अफसर का भोजन है। फिर भी मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि श्री मोदी जी का सपना साकार करने की कृपा करें।

मलय जी एक प्रश्न और करूँ। आपके पास जितने भी प्रश्न हो कर सकती हैं। मलय गम्भीर हो गया। सरकार के सफाई अभियान पर कुछ अपने उद्‌गार व्यक्त करें। अचला जी, मंत्री हाथ में झाड़ू लेकर जो संदेश दे रहे है उसका अर्थ अफसर क्या समझते है वह विचारणीय है जिस तरह तन की सफाई स्वस्थ के लिये जरूरी है उसी तरह बाहर की सफाई देश को सुन्दर बना सकती है। परन्तु जब तक हम आत्मा की सफाई नहीं करेगें, तब तक अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। इसी तरह जब तक देश के मंत्री, अफसर आंतरिक शुचिता नहीं अपनायेगें तब तक भ्रष्टाचार खत्म नहीं होगा।

तुम हंस रही हो?

बहुत दिनों के बाद आज मेरे अंतर्मन को आनन्द की अनुभूति हुई इसलिए हँस पड़ी। चलो अब चला जाय। मलय खड़ा हो गया। चलते-चलते अचला बोली—प्रधानमंत्री का प्रयास अच्छा है यह तो आप मानते हैं। बिलकुल मलय मुस्करा पड़ा।

❍❍

मलय के मन में अचला के परिवार के बारे में जानने की इच्छा थी परन्तु वह प्रकट न कर सका। मलय चलने लगा तो अचला बोली आप अपना फोन नं. दे दें कभी-कभी मैं आप से बात करूंगी। मलय कोई उत्तर न दे सका। क्या सोचने लगे आप अचला बोली। अचला जी मेरे पास फोन नहीं है। अचला हँस पड़ी। आप फोन क्यों नहीं रखते।

मुझे चलाना नहीं आता इसलिये फोन नहीं खरीदा। अचला कुछ देर तक सोचती रही फिर अलमारी खोलकर फोन निकाला। नौ साल पहले उसे यह फोन पापा ने दिया था। पहली बार उसने इस फोन का प्रयोग किया था, अतः उससे प्यार था। अस्तु उसे

उसने आज तक सम्भालकर रखा था। मलय को फोन देकर बोली—आप इस फोन को अपने पास रखो। इसका प्रयोग बहुत आसान है मैं अभी आपको सिखा देती हूँ। मलय बच्चे की तरह फोन चलाना सिखने लगा।

अब आप यह नहीं कहना कि मुझे फोन चलाना नहीं आता। रही बात सिम की चलो मैं तुम्हे देती हूँ। घर पहुँचने पर मुझे फोन करना। किसी दिन आप के गाँव आऊंगी आपको परेशानी तो नहीं होगी।

अचला की बात सुनकर मलय का हृदय तड़प उठा। जीवन में आज तक उसे किसी का अपनत्व प्राप्त नहीं हुआ था। माता जी का बचपन में ही देहान्त हो गया था। पाँच वर्ष पहले पिता ने भी इस संसार को छोड़ दिया था। अभाव पूर्ण जिंदगी लोगों के ताने सुन-सुन कर वह बड़ा हुआ। पिता जी के बड़े भाई दयाराम नाम के दयाराम थे। अपनी जमीन का उसे मात्र तिहावा हिस्सा मिला पर उसने हिम्मत नहीं हारी। मेहनत की और आज वह दो रोटी खाने का व्यवस्था कर लिया। शादी के लिये कुछ लोग आये पर पट्टीदारों ने उन्हें पढ़ाकर भेज दिया। दयाराम चाहता था कि मलय कि शादी न हो ताकि उसकी जमीन उसे देर सबेर मिल जाए। अचला के स्नेह ने उसकी अन्तरात्मा को भीगों दिया। भावुकता के वशीभूत वह अपने को सम्भाल न सका। आँखों से अविरल अश्रु धार बहने लगी। भरभराये स्वर में बोला—अचला जी आप मेरे लिए कृष्ण हैं। अचला भी भावुक हो गई मलय के आँसुओं को पोंछते-पोंछते मर्यादा भूल गई।

अचला को बाहों में भरकर मलय को अपार शान्ति की अनुभूति हुई, परन्तु दूसरे क्षण मर्यादा ने उसके बाहु को शिथिल कर दिया। अचला को बाहों से पृथक करके रो पड़ा। अचला ने पुनः उसे हृदय से लगा लिया। इस वात्सत्य युक्त स्पर्श ने उसके नेत्र बन्द कर दिये, उसे लगा अचला-अचला नहीं मानों उसकी वर्षो पूर्व खोई माँ मिल गई। मलय को समझाते हुऐ अचला बोली—तुम्हारे दुख को मैं समझ सकती हूँ। आज से तुम मुझे मित्र समझाना कोई भी बात जो तुम्हारे हृदय में मंथन उत्पन्न करे मुझे जरूर बताना मुझे वचन दो।

मलय ने अचला को वचन दिया फिर दोनों घर से बाहर निकल गये। मलय के पास आधार कार्ड था उसकी फोटो कापी करके अचला ने सिम खरीद कर मोबाइल में फिट कर दी। एक बार फिर उसने मलय को फोन करने का तरीका समझाया, अचला से पृथक होकर मलय को लगा उसका हृदय टूट कर अलग हो गया।

❍❍

मलय खाना खाकर चारपाई पर लेटा परन्तु नींद नहीं आ रही थी। आज उसे इस बात का आभास हुआ कि देह और मन का अस्तित्व पृथक-पृथक है। मन तो अचला के पास था ऐसी स्थिति में नींद कैसे आ सकती है। शारीरिक बल से मनोबल बड़ा होता है। शरीर की परेशानी हमें इतना दुखी नहीं करती जितना मन की। मलय अचला को

भुलाने की कोशिश की पर सफल न हो सका। अन्त में उसने फोन कर दिया। अचला की वाणी सुनकर उसे असीम सुख की अनुभूति हुई। मलय के जीवन का लक्ष्य था उम्मीद थी, परन्तु प्यार करने वाला कोई नहीं था। कृष्ण की कृपा से उसके जीवन की यह रिक्तता पूर्ण हो गई। अब जब भी उसका मन अशांत होता अचला से बात कर लेता।

अचला का फोन आता तो मलय को ऐसे लगता मानो रेगिस्तान में प्यासे को जल मिल गया। आज अचला ने फोन किया तो मलय भावुक हो गया। कुशल क्षेम की बातें होने के उपरान्त मलय ने हृदय की बात कह दी। आप ने कहा था मेरे गाँव आयेंगी पर एक वर्ष हो गया अभी तक नहीं आई। अचला ने जवाब दिया मैं आपके गाँव अवश्य आऊंगी परन्तु। परन्तु क्यों मलय ने शब्द को दोहराया। अचला मलय की मनोस्थिति को अच्छी तरह समझ रही थी, इसलिए विषय को बदलते हुए बोली—मलय जी कुछ ऐसे प्रश्न होते है जिनका उत्तर समय देता है क्या आप को मुझ पर विश्वास नहीं। मलय का गला अवरुद्ध हो गया। मुश्किल से मनोभावों पर नियंत्रण पाया।

मुझे पूरा भरोसा है कि एक दिन आप हमारे गाँव जरूर आयेंगी—मलय की बात सुनकर कुछ देर अचला मौन रही। मलय के हैलो-हैलो कहने पर उसका मौन टूटा मलय जी फोन रखें नमस्कार। प्रति उत्तर में मलय ने नमस्कार कहा और फोन रख दिया। मलय चिंतन में पड़ गया। अचला से उसका क्या रिश्ता है काफी सोचने के बाद वह किसी निर्णय पर पहुँच न सका। कई बार सोचा वह अचला से बात न करे परन्तु न जाने किस अज्ञात शक्ति के अधीन वह ऐसा न कर सका। कहीं उसे अचला से प्रेम तो नहीं हो गया इस प्रश्न ने उसके विचारों को मथ दिया। अनपढ़ किसान दो बीघा जमीन डॉक्टर से प्रेम कवि की कल्पना में भी सम्भव नहीं हो सकता। उसे अचला को भूलना ही होगा उसने मन ही मन निश्चय किया।

एक सप्ताह बीत गया उसने अचला के पास फोन नहीं किया। अक्सर वह इतवार को अचला के पास फोन करता था। इतवार को उसकी छुट्टी रहती थी। एक क्या दो इतवार बीत गये पर उसने अचला के पास फोन नहीं किया सोमवार को सुबह अचला का फोन आया उसने नहीं उठाया। थोड़ी देर के बाद फोन की घण्टी पुनः बजने लगी। हृदय में हलचल हुई कंपकांपते हाथों से उसने फोन उठा लिया। कैसे हैं आप अचला की आवाज आई। मैं अच्छी तरह से हूँ मलय बोला, गत रविवार को आप ने मेरे पास फोन नहीं किया, मुझसे कोई गलती हो गई क्या।

नहीं ऐसी बात नहीं है अचला जी। फिर आप ने फोन क्यों नहीं किया। मुझे क्षमा कर दो मलय ने विनम्रता से कहा।

क्षमा की आवश्यकता नहीं, मैं जानती हूँ आपको दुख हुआ होगा मैं आपके गाँव नहीं आई न।

नहीं ऐसी बात नहीं है अचला जी भक्त भगवान से नाराज नहीं हो सकता—मलय के मुख से वाक्य तो निकल गया पर उसे लगा स्यात् गलत कह दिया, वह मन ही मन सोच रहा था।

अब आपको शिकायत का मौका नहीं दूँगी। शीघ्र ही मैं आपके गाँव आऊंगी अच्छा अब फोन रखती हूँ नमस्कार। प्रति उत्तर में मलय ने नमस्कार कहा और सपनों की दुनिया में खो गया।

❍❍

गोवर्धनपुर स्वास्थ्य केन्द्र अत्यन्त रमणीय स्थल पर बना है। जन श्रुतियों के अनुसार गोवर्धन नाम के एक बाबा यहाँ निवास करते थे। वे कृष्ण भक्त थे गाँव वाले उनका बहुत सम्मान करते थे। उनके यश की कीर्ति उस समय दूर-दूर तक फैली थी। आज भी उनका यहाँ मंदिर है। उन्हीं के नाम से इस जगह को गोवर्धनपुर कहा जाने लगा।

कल अचला ने फोन किया था गोवर्धनपुर स्वास्थ्य केन्द्र पर आना वहीं आपको मिलूंगी। जब से अचला का फोन आया मलय की उत्सुकता बढ़ गई। प्रभात होते ही वह स्वास्थ्य केन्द्र पर पहुँच गया। अचला नजर नहीं आई तो बैठ गया। इंतजार का समय बड़ी बेसब्री से बीतता है। मलय ने एक घंटा किसी तरह बिताया। दिल ने चाहा फोन करूं पर मस्तिष्क ने साथ नहीं दिया। कसमकश में चहलकदमी करने लगा फिर स्वास्थ्य केन्द्र से बाहर निकला और चाय की दुकान पर बैठ गया। चाय पिया फिर अखबार पढ़ने लगा। तभी मोबाइल की घंटी बजी अचला का फोन था। मलय के हैलो कहने पर अचला की आवाज आयी। आप कहाँ है अंदर आइये मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही हूँ।

मलय गेट के अंदर आया अचला बाहर खड़ी थी। अचला को देखकर विशुद्ध अनुभूति हुई शरीर रोमाचिंत हो गया। मलय को देखकर अचला मुस्कराई फिर बोली कैसे है आप। ठीक हूँ मैडम। मैडम अचला ने शब्द को दोहराया फिर बोली—आप मुझे मैडम न कहे, मलय मौन खड़ा रहा। अचला बोली आओ मेरे साथ अचला के कहने पर मलय चल पड़ा। अचला कार के समीप पहुँच कर बोली—बैठो, मलय कार पर बैठ गया। अचला बोली अब मुझे रास्ता बताओ मैं आप का घर देखना चाहती हूँ।

मलय अचला को घर के अंदर ले गया। कच्ची मिट्टी का घर देखकर अचला अत्यन्त प्रसन्न हुई। मलय ने आज तक कुर्सी नहीं खरीदी थी चारपाई पर चादर बिछा कर बोला आप बैठिये मैं आप के लिए पानी लाता हूँ। घर के सामने सरकारी नल था मलय पानी लेकर आ गया। अचला औचक उसके घर आई थी क्या खिलाये गुड़ के सिवा उसके पास कुछ नहीं था। स्टील की प्लेट में गुड़ रखकर बोला—अचला जी पानी पीजिये। घर आये मेहमान का वह आधुनिक युग की तरह स्वागत नहीं कर पा रहा था

इसलिऐ उसके चेहरे पर उदासी स्पष्ट दिख रही थी। अचला ने गुड़ खाकर पानी पिया फिर मुस्कराकर बोली—बहुत मजा आया आप के गुड़ ने तन ही नहीं मन भी शीतल कर दिया। मलय कुछ नहीं बोला चुपचाप चाय बनाने लगा। गाय दूध दे रही थी इस लिए दूध की कमी नहीं थी परन्तु चीनी नहीं थी पड़ोस से मांगना मलय ने तर्कसंगत नहीं समझा, अस्तु गुड़ की चाय बनाई। आपकी चाय लाजबाव है अचला मुस्कराकर बोली। मलय जी अब मैं यहीं रहूँगी गोवर्धनपुर स्वास्थ्य केन्द्र में मेरी पोस्टिंग हुई है।

आप डॉक्टर बन गई मलय का हैरत युक्त स्वर। अचला हँस पड़ी तुम बहुत भोले हो निश्चिय तुम्हारी आत्मा पवित्र है। मलय ने सिर झुकाते हुऐ कहा—आप मेरे लिये महान हैं मेरी कृष्ण है।

नहीं अचला खड़ी हो गई—मलय जी कृष्ण शब्द का प्रयोग पुनः मेरे लिऐ नहीं करना वादा करो।

यदि आप को बुरा लगा तो मुझे क्षमा कर दो परन्तु मैंने जो कहा वह सत्य है। मैं जानती हूँ आप मुझसे क्या किसी से भी झूठ नहीं बोलेगें। आपकी सत्य निष्ठा से मैं अत्यन्त प्रभावित हूँ इसलिए मैं आप से एक वचन चाहती हूँ कि आप मेरी न्यायोचित इच्छा का सम्मान करेगें। मलय कुछ देर सोच कर बोला—मैं आपको वचन देता हूँ आप जो चाहे मांग ले मेरे बस में होगा तो इंकार नहीं करूंगा, अपने प्राण भी मैं आप के लिए त्याग सकता हूँ। नहीं अचला ने मलय के मुख पर ऊँगली रख दी ऐसा नहीं कहना। अब मैं चलूंगी। अगले इतवार को आप मेरे साथ घर चलेगें। वहाँ पर मैं अपने परिवार से आप को मिलाऊंगी। वहीं पर आप से जो मांगना है मांगूगी याद रखना।

❍❍

कुबेरनाथ गुप्ता की कोठी में मलय ने प्रवेश किया तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गई। फिल्म का दृश्य साकार हो गया। अचला ने माता, पिता एवं भाइयों से मलय का परिचय कराया। माता, पिता एवं भाइयों से अचला ने मलय के बारे में पहले से ही बता रखा था।

बिटिया मैने स्वप्न में नहीं सोचा था कि तुम इस अनपढ़ गंवार किसान से शादी करोगी, जो हमारी सोसाइटी में खड़ा भी नहीं हो सकता। इसे न तो ढंग से खाने आता है न ही कपड़ा पहनना। आज के युग में यह पशु सदृश है। माँ की बात का भाइयों ने समर्थन किया।

कुबेरनाथ बोले—बेटी मैं तुम्हें प्यार करता हूँ इसलिये तुम्हारी इच्छा का हनन नहीं करूंगा, परन्तु मुझे इतना बता दो बिटिया कि इस युवक में ऐसी कौन सी विशेषता है जिसके कारण तुम इसे पति के रूप में वरण करना चाहती हो। अचला गहरी साँस लेकर बोली—डैडी मलय के अंदर जो गुण है उसे शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। फिर भी जिस तरह सौन्दर्य की अनुभूति नेत्रों द्वारा होती है इसलिए किसी का रूप वस्त्र हमारे

समझ में तुरन्त आ जाता है परन्तु हमारा कल्याण किसमें निहित है इसका निर्णय बुद्धि द्वारा ही हो सकता है। इसी तरह मानव जीवन का सर्वोच्च मूल्य सत्य की अनुभूति आत्मा द्वारा ही होती है। मलय के पास मानव जीवन का सर्वोच्च मूल्य सत्य है और मैं सत्य से प्रेम करती हूँ।

अचला की बात का किसी के पास उत्तर नहीं था। कुछ क्षण सन्नाटा छा गया। मलय ने चुप रहना उचित नहीं समझा अस्तु खड़े होकर बोला—मैडम आप क्या कह रही हैं आप से मैंने—मलय रुक गया।

मलय जी आप ने मुझे वचन दिया है क्या आप अपने वचन से हट जायेगें। मलय ने न में सिर हिला दिया।

कुबेरनाथ दोनों बेटो को एकांत में ले जाकर बात की। अंत में वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अचला ने जो फैसला किया है उसे स्वीकार करने के सिवा कोई विकल्प नहीं। माता-पिता एवं भाइयों की स्वीकृत से अचला अत्यन्त प्रसन्न हुई। दूसरे दिन अचला मलय को लेकर गोवर्धनपुर चल पड़ी।

मलय के घर के सामने अचला ने कार रोक दी। मलय नीचे उतर कर बोला—मैं आप से दो बातें करना चाहता हूँ। अचला मुस्कराकर नीचे आ गई। जिस चारपाई पर अचला ने गुड़ की चाय पी थी उसी पर बैठ गई। मलय चाय बनाने चला तो अचला बोली—आज मैं चाय बनाऊंगी। मलय को हार माननी पड़ी। चाय पीते-पीते अचला बोली आप मुझसे कुछ कहना चाहते थे।

अचला जी एक अनपढ़ से प्यार करके आप ने अच्छा नही किया—में आपको कुछ भी नहीं दे सकता, क्योंकि मेरे पास कुछ भी नहीं है।

यही तो तुम्हारी विशेषता है जिसकी मैं दीवानी हूँ। जिसके पास ज्ञान होता है उसके पास कुछ भी नहीं होता है। तुम्हारे पास सत्यनिष्ट आचारण है, तुमने मुझे वचन दिया है। मैं चाहती हूँ तुम्हारे प्यार के सहारे मैं अपना लक्ष्य प्राप्त करूँ। मंडिकल साइंस में मैं कुछ नया करके मानव जाति की सेवा करना चाहती हूँ, क्या तुम मुझे निराश करोगे। मलय ने नहीं में सिर हिलाया और अचला को हृदय से लगा लिया।

❑❑❑

पागलदास

मनीराम यादव अजीब किश्म के व्यक्ति थे। स्वस्थ सुन्दर एवं हंसमुख उनसे बातें करने लगो तो मानो नौटंकी देख रहे हो। पाँच फुट नौ इंच की काया गोरा रंग बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेता। बेनीराम के पुरवा में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो मनीराम को न जानता हो। गाँव में किसी के यहाँ कोई आयोजन हो मनीराम न हों हो ही नहीं सकता। एक नम्बर का खाना, जो मनीराम बना देते वह शहर के हलवाई नहीं बना सकते थे। सब्जी के वे मास्टर थे। पूरे गाँव में लोकप्रिय थे। मनीराम यादव के दो पुत्र थे परन्तु मनीराम को कभी एहसास नहीं हुआ।

शादी के पच्चास वर्ष बीत गये। मनीराम ने पूरा जीवन सांड की तरह स्वछंद बिता दिया। गाँव में ऐसा कोई नहीं होगा जिसका उन्होंने काम न किया हो। एक आदमी का घर बन रहा था, पच्चास साल पहले की बात होगी उसने मनीराम से कहा—यदि तुमने मेरे घर में छत लगाने में मदद की तो तुम्हें एक पाव बर्फी खिलाऊंगा एक पाव बर्फी के लिये मनीराम इस तरह काम में लग गये कि उनके सिर पर सूजन आ गई। लिंटर पड़ गया गाँव में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पक्की दालान बनवाई थी। पंडित जी डाक विभाग में पोस्टमैन थे। उस जमाने में फोन नहीं था चिट्ठी एवं मनीआर्डर के सहारे अर्थ एवं विचारों का विनमय होता था। पंडित जी किसी की चिट्ठी देने कभी भी द्वार पर नहीं गये। कोई उनके दरवाजे पर आया तो दे दिया, किसी अन्य के द्वारा वे पत्र अकसर पहुँचाते थे। किसी के द्वार पर पोस्टमैन की तौर पर नहीं जाते। हाँ उनके दरवाजे पर जरूर जाते थे जो दबंग थे।

किसी का मनीआर्डर आया तो संदेश भेजते यदि आ गया तो दे दिया नहीं तो वापस कर दिया। किसी का काललेटर यदि पंडित जी के डाक में आ गया तो नष्ट या वापस हो जाता था। किसी के सुख को देखना पंडित जी को पसंद नहीं था। पंडित जी ने झूठ बोल कर मनीराम से दो मजदूरों के बराबर काम बिना मजदूरी के करवाकर अपना उल्लू सीधा कर लिया।

मनीराम की पत्नी सुनीता अत्यन्त उदार हृदय की महिला थी। मनीराम ने जब दो बच्चे पैदाकर दिये तो उन्होंने मयके वालों की मदद से नसबंदी करवा ली। क्या करें कभी सोच विचार कर उन्होंने यह निर्णय लिया। यदि वे ऐसा न करती तो मनीराम सिर्फ परिवार को बढ़ाता, परन्तु उनकी रोटी की कभी भी चिंता न करता। दो बीघा खेती थी। सुनीता बैलों की तरह उसमें लगी रहती। गाँव के ब्राह्मणों के खेतों में अनाज

काटती, मजदूरी करती जिसके बल पर अपने बच्चों को पढ़ाती। सुनीता चाहती थी कि उसके दोनों बेटे खूब पढ़े। परन्तु कोई लाख चाहे होता वही है जो परमात्मा चाहता है। बरसात का मौसम था। सुनीता गाँव के प्रधान के खेत में बेरन लगा कर आ रही थी। अचानक उसे याद आया घर में लकड़ी नहीं है खाना कैसे बनेगा। यह सोचकर वह लकड़ी बटोरने हेतु बाग में जाने लगी तो एक वृद्ध महिला बोली—सुनीता अंधेरा हो रहा है घर चलो कल लकड़ी बीन लेना। चाची सुनीता बोली आप चिंता न करें मैं तुरन्त आ जाऊंगी। गाँव की अन्य महिलाएँ चली गई। सुनीता लकड़ी इकट्ठा की, गीली थी पर यही सोचा सूख जायेंगी आज कंडो से ही काम चला लूँगी। सर पर लकड़ी को रखकर वह तेजी से चली। अचानक उसका पैर साँप पर पड़ गया। नाग देवता को क्रोध आ गया, उन्होंने पूरी शक्ति से सुनीता को काट लिया।

सुनीता को साँप ने काट लिया यह समाचार आग की तरह गाँव में फैल गया। लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। मनीराम यादव घर पर नहीं थे। पंडित माधव दूबे की बिटिया के यहाँ भागवत बैठी थी, मनीराम वहीं गये हुये थे। मनीराम का बेटा भोलेलाल पर मानों पहाड़ गिर पड़ा। कक्षा आठ में वह पढ़ता था, उसका छोटा भाई छोटेलाल छः में पढ़ रहा था। गाँव के कुछ भद्रजनों ने सुनीता को गहनागन ले जाने की तैयारी की। सुनीता को चारपाई पर लिटा कर चले। गाँव से बाहर निकले की सुनीता ने दम तोड़ दिया।

भोलेलाल ने माँ का अंतिम संस्कार किया। पंडित माधव ने पैसे दिये। अंतिम संस्कार के उपरांत पंडित माधव ने कहा—बेटा भोलेलाल हम तुम्हारे पिता को संदेश भेजवा देगें। जब मनीराम आ जायेगें तो तुम्हारी माँ का काम शुरू होगा। चिंता बिलकुल नहीं करना जो भी जरूरत हो मुझे निःसंकोच बताना। सुनीता की मृत्यु से पंडित माधव को खुशी हुई। दरअसल मनीराम के पास दो बीघा जमीन गाँव से सटी हुई थी। पंडित माधव की गीध दृष्टि उसी पर टिकी थी। इसलिए वे सुनीता की तेरही पर पैसा खर्च कराके मनीराम से वह जमीन लेने की योजना बनाने लगे।

मनीराम के आते ही सुनीता की तेरही की तैयारी शुरू हो गई। पंडित माधव ने मनीराम को सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर बहका कर खूब पैसा खर्च करवाया। समाज में लोग मनीराम की प्रशंसा करने लगे। तेरही पर पैसा खर्च करके मनीराम ने इज्जत खूब कमाई। पूरे गाँव में तेरही की चर्चा कई दिनों तक होती रही।

कुछ दिन के बाद पंडित माधव ने अपना पैसा मनीराम से मांगा। मनीराम चौंक पड़ा वह यही सोच रहा था कि पंडित माधव ने उस पर कृपा करके पैसा दिया है। पंडित जी बोले—मनीराम तुम पैसा वापस नहीं कर सकते इसलिए अपनी जमीन मेरे नाम रजिस्ट्री कर दो। मनीराम क्या करता आखिर उसने अपनी जमीन पंडित माधव के नाम बैनामा कर दी। दो बीघा गाँव से सटी जमीन पंडित जी ने चालाकी से हड़प ली। माँ की मृत्यु के बाद घर की जिम्मेदारी भोलेलाल पर आ गई। पढ़ाई उसने छोड़ दी परन्तु

भाई की शिक्षा पर आँच नहीं आने दी। मनीराम अब भी पुरानी राह पर चल रहा था, पहले सुनीता को यदा-कदा पीटता था अब उसकी जगह भोलेलाल ने ले ली। भोलेलाल मजदूरी करने लगा। धीरे-धीरे उसने राजगीरी का काम सीख लिया। शादी हुई तो जिम्मेदारी और बढ़ गई। छोटेलाल यादव ने मेहनत से पढ़ाई की। भोलेलाल ने भाई की पढ़ाई में व्यवधान नहीं आने दिया। उसकी मेहनत सफल हुई। छोटेलाल को लेखपाल की नौकरी मिल गई। उसकी शादी हुई तो श्रीमती जी को लेकर शहर चला गया।

❍❍

समय कैसे निकल जाता है पता ही नहीं चलता। भोलेलाल यादव की उम्र पच्चपन पर पहुँच गई। इस दौरान उसने कई उतार-चढ़ाव देखे। उसका बेटा कुंदन रेलवे में गार्ड हो गया। उसके भी दो बच्चे हो गये। एक दिन मनीराम यादव को तेज बुखार आया उनको लेकर वह तुरन्त डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने जाँच की तो डेंगू के लक्षण पाये इलाज शुरू हुआ तो करीब बीस हजार लग गये। भोलेलाल ने छोटे भाई छोटेलाल को पिता की बीमारी के बारे में फोन से बताया। छोटेलाल बोला—मैं आने की कोशिश करूंगा। भोलेलाल को संतोष हुआ, भाई आ जायेगा तो कुछ पैसा जरूर देगा। कुन्दन के पास उसने फोन नहीं किया। याद आया इससे पहले एक बार मनीराम की तबियत खराब हुई थी—उसने कुन्दन से बात की तो कुन्दन बोला—किसी सरकारी अस्पताल में दिखा दो। पर भोलेलाल नहीं माना उसने मनीराम का इलाज प्राइवेट डॉक्टर से करवाया।

सबेरा हुआ ट्रेन ग्यारह बजे आती थी, भोलेलाल इंतजार करने लगा। दो बज गये परन्तु छोटेलाल नहीं आया तब भोलेलाल ने फोन किया—उत्तर मिला छुट्टी नहीं मिली। पाँच दिन तक मनीराम का इलाज चला। मनीराम को लेकर भोलेलाल जब घर आया तो श्रीमती जी बरस पड़ी। भोलेलाल चुपचाप सुनता रहा। मजदूरी करके जो पैसे उसने बचाकर रखे थे पिता की दवा में खत्म हो गये। कुन्दन को उसने यह बात नहीं बताई। शाम का समय था श्रीमती जी बोली मेरा सर दर्द कर रहा है। पाँच दिन से गाय के पीछे थक गई, कहकर चली गई। भोलेलाल का जी चाहा कि चुपचाप सो जाय, पर पिता का ध्यान आते वह उठा। सब्जी काटी फिर छौंक दिया। रोटी बनाई पिता को खिलाकर श्रीमती से बोला—चलो भूखे नहीं सोते दो रोटी खा लो। श्रीमती ने आँख नचाते हुऐ कहा—मेरे लिऐ खाना तुमने थोड़े बनाया है। जितना तुम्हे बाप से प्यार है उतना मुझसे थोड़े है।

भोलेलाल जब वरदास न कर सका तो बोला—मुझे बाप से प्यार नहीं अपितु अपने कर्त्तव्य से प्यार है।

तुम्हे बाप के लिये कर्त्तव्य का ध्यान आता है परन्तु मेरे लिऐ कर्त्तव्य का बोध नहीं रहता। बाप के खाने की चिंता रहती है परन्तु मैं खाऊँ या भूखी सो जाँऊ कभी नहीं सोचा।

बाप को खिलाया और खुद खाकर सो जाते हो। पत्नी की बात सुनकर भोले लाल मन ही मन सोचने लगा क्या उसे पिता से प्यार है नहीं उत्तर मिला। फिर वह उनके लिए क्यों चिंतित हो जाता है। बचपन में वह समझ ही नहीं पाया कि कौन उसका बाप है। बस माँ को घुटते हुये देखा था। पिता ने उसके स्वाभिमान पर जो ठेस पहुँचाई उसको सोचने मात्र से भोलेलाल का मन उदास हो जाता था। उस पिता के प्रति प्यार, पत्नी के व्यंग से उसका हृदय कराह उठता परन्तु पत्नी को कभी समझा न सका।

पिता को भोजन कराये बिना वह खाना खा नहीं पाता। न जाने कौन सी अलौकिक शक्ति उसके हृदय में ऐसा भाव भर देती कि वह पीछे की बात भूलकर अपने को कर्त्तव्य के बंधन में बंधा हुआ पाता। धर्म यह नहीं कहता कि अमुख ने हमारे साथ क्या व्यवहार किया, अपितु धर्म कहता है तुम अपना कर्त्तव्य पालन करो। ईश्वर सत्य का प्राय है। जो सत्य के साथ है उसका उत्थान निश्चित है। संसार तो नाटक है जो पात्र सत्य को आचरण में उतरता है वह ही संसार से मुक्त होता है। संसार के सारे रिश्ते एक न एक दिन टूट जाने हैं परन्तु जो अपना सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ता है वह इस संसार सागर से तर जाता है। यही विचार भोलेलाल के हृदय में निवास करते थे इसी कारण वह पत्नी के साथ न चल सका।

भोलेलाल की इस स्थिति को पत्नी कभी समझ न सकी। परिणाम स्वरूप दोनों के मन में दूरी सदैव बनी रही। पत्नी से भोलेलाल के विचार भिन्न होने के उपरान्त उसने परिवारिक दायित्व से मुँह नहीं मोड़ा। इस प्रकार वह कर्त्तव्य से बंधा रहा। भोले लाल जीवन का भार परमात्मा पर छोंड़कर यथा सम्भव सही रास्ते पर चलने की कोशिश करने लगा। रिश्तों से कर्त्तव्य को भोलेलाल ने श्रेष्ठ माना। कुन्दन के व्यवहार से भी भोलेलाल को आघात लगा फिर भी वह कर्त्तव्य के पथ पर चलता रहा।

❍❍

भोलेलाल कभी-कभी संसार को लेकर चिंतन करने लगता। लोग क्या खोज रहे हैं इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में किसी भी व्यक्ति के पास ठहरने का एक पल का समय नहीं। दूसरी तरफ यदि इन लोगों से पूछा जाय कि क्या खोज रहे हो तो उत्तर नहीं। पैसा तो ऊपर से दिखाई पड़ता है जो मन को सुख नहीं दे सकता। देह और मन दो अलग-अलग दिशाएँ हैं जो दोनों का भेद नहीं समझता वह कला को समझ नहीं सकता। जब तक जीने की कला का ज्ञान नहीं होगा तब तक बिखराव जारी रहेगा। दूसरे शब्दों में कला को समझने के उपरान्त कलाकार का ज्ञान होता है। जो संसार को मंच समझकर जीवन को महज नाटक समझ पाठ को खूबसूरती से निभाहता है वह संसार में रहकर भी योगी है। किसी रमणी को पुत्रीवत् प्यार कर वासना पूर्ति को परिष्कृत रूप देकर एक अलौकिक सुख की अनुभूति की जा सकती है। सांसारिक दुखों से व्यथित होकर भोलेलाल अपने मन को श्रीकृष्ण के चरणों में अर्पित कर देता, हे करुणाकर तुम ही मेरे बल हो, प्रभु मुझे सत्य पर चलने की शक्ति दो। हे जगत पिता मुझे कर्मो के

फल से मुक्ति दो।

भोलेलाल इस प्रकार स्वयं से बातें करके मन को संतोष देता और अपने फर्ज पर चलता रहा उसे इस सत्य का साक्षातकार हो गया कि ईश्वर से प्रेम करने वाले को अकेले ही चलना पड़ता है। मनीराम की तबियत ठीक हो गई। छोटेलाल नहीं आया। भोलेलाल अब उससे बात करना बंद कर दिया। यही सोचा जब पत्नी एवं बच्चों के साथ मैं नहीं चल सका तो भाई तो बहुत दूर का रिश्ता है। इस प्रकार रिश्तों से उसका मोहभंग हो गया। समय आगे बढ़ता रहा एक दिन शाम को जब मजदूरी करके घर पहुँचा तो श्रीमती जी बोली—कुन्दन का फोन आया था। कह रहा था पिता जी कहना सुनना मानते नहीं, अब मैं गाँव नहीं आऊँगा भोलेलाल पत्नी की बात सुनकर चुपचाप चला गया।

चारपाई पर लेटा तो सोचो ने घेर लिया। याद आया दस साल पहले की बात थी। करवाचौथ का व्रत था। श्रीमती जी एवं बहू दोनों तैयारी में व्यस्त थी, कुन्दन भी उनके कार्य में सहयोग कर रहा था। भोलेलाल शाम काम करके घर पहुँचा। काफी देर तक बैठा रहा पर चाय नहीं मिली। करवाचौथ की तैयारी में व्यस्त बहू एवं पत्नी के पास इतना समय नहीं था कि वे चाय बना सकें। भोलेलाल ने पानी पिया और चारपाई पर लेट गया, तभी कुन्दन की आवाज आई। पापा आज खाना देर से मिलेगा। भोलेलाल ने सोचा कोई पकवान बन रहा होगा।

रात के साढ़े नव बज गये तो भोलेलाल उठकर बेटे से खाना माँगा। भोलेलाल ने पहले मनीराम यादव को उठाया फिर खुद बैठ गया। बेटा खिचड़ी लेकर आ गया। मनीराम आज भी नहीं बदला था, उसे अपने सुख के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था। सदैव स्वाद युक्त भोजन करता था फिर खिचड़ी कैसे खाये, थोड़ा खाया फिर उठकर चला गया। भोलेलाल ने खिचड़ी खाई और लेट गया। थोड़ी देर के बाद पत्नी एवं बहू आई दूर से नमस्ते किया और चली गई। उस दिन भोलेलाल को दुःख हुआ। धर्म का दिखावा लोग क्यों करते हैं इस प्रश्न का उत्तर वह खोज न सका। उसे लगा समाज जिस तरह दिख रहा है उसमें सिर्फ दिखलावा ही दिखलावा रह गया है सोचते-सोचते उसे नीद आ गई।

❍❍

छोटेलाल यादव के बेटे की शादी तय हुई। मनीराम यादव को जब छोटेलाल ने फोन किया तो वह तुरन्त गोद भराई की रस्म में शामिल हो गया। भोललाल के पास छोटेलाल ने फोन नहीं किया। भोलेलाल ने सुना तो दुख हुआ पर उसने परवाह नहीं की। शादी की तरीख करीब आने लगी। छोटेलाल एवं कुन्दन में बात हुई तो कुन्दन शादी में जाने को तैयार हो गया। श्रीमती जी कुन्दन को बहुत प्यार करती थी इसलिए वे भी शादी में चली गई। छोटेलाल ने भोलेलाल से इस सम्बन्ध में न कोई बात की न ही भोलेलाल शादी में गया।

छोटेलाल ने भाभी का भव्य स्वागत किया। कुन्दन को गले लगा लिया। शाम को सभी लोग चाय पर बैठे तो बात शुरू हो गई। छोटेलाल बोला—भाभी जी भइया हैं तो अच्छे आदमी पर दिमाग नहीं है। मैं जानता हूँ माता जी की मृत्यु के बाद उन्होंने जो मेहनत की कोई साधारण आदमी नहीं कर सकता। पर जो वे धर्म कर्म की बातें करते हैं मेरे समझ में नहीं आती।

देवर जी तुम ठीक कह रहे हो, मेरी तो जिंदगी बरबाद हो गई। ऐसे आदमी से शादी करके कोई स्त्री सुखी नहीं रह सकती, जो व्यक्ति कबीर एवं तुलसी की कविताओं को पढ़ता हो, आज उसे लोग पागल कहते हैं। सत्य को आचरण में शामिल करना मेरे विचार से मूर्खता है। मेरे पिता जी विद्वान है वे भी कहते हैं आज के युग में आदमी को सिर्फ अपने बारे में सोचना चाहिए।

भाभी जी अब भइया नहीं सुधरगें—मैने उन्हें इसलिए नहीं बुलाया कि आते तो सबसे पहले यही कहते डी. जे. की आवाज कम करो। उनका बस चले तो सारे देश में इस बाजे पर रोक लगा दें।

देवर जी तुम्हारे भइया पुराने विचारों के हैं, दुनिया बदल रही है इसका उन्हें भान नहीं है। भाभी जी आप ठीक कह रही हैं, अब बहुत कुछ बदल गया है। राम के चरित्र की अब किसी को आवश्यकता नहीं। लोग धार्मिक ग्रन्थों का पाठ इसलिए करते हैं कि अपने पापों का कुछ हिस्सा भगवान को भी खिला दें। गाँव भी अब पहले जैसे कहाँ रहे भाभी जी, शहर की बात तो अलग ही है। मैने देखा है बड़े-बड़े आई. ए. एस. कर्नल, एडमिरल, उद्योगपति आज अनाथालय में प्राण छोड़ते हैं। कौन माता-पिता की सेवा करता है। वह मूर्ख भोलेलाल पिता की इस प्रकार सेवा करता है, जैसा पत्नी पति की भी नहीं करती।

जब दुनिया बदल रही है तो हमें भी बदलना चाहिए देवर जी, आज जिनके पास पैसा है काम है वे माता-पिता की सेवा में समय बरबाद नहीं करते। होम केयर सेवाओं के हवाले माता-पिता को कर देना आज बुद्धिमानी है, मैं तो अपाहिज बीमार, पिता-माता को जहर देने के पक्ष में हूँ।

भाभी जी आपकी बातों को यदि राजनीतिक हथियार बनाया जाय तो मेरा दिल कहता है युवा वर्ग हमारे साथ होगा। सभी जाति धर्म के लोग इसका समर्थन करेगें। जो माता, पिता काम करने लायक न हों उनके मृत्यु पर सब को खुशी होगी। छोटेलाल की बात सुनकर श्रीमती जी हंस पड़ी, फिर बोली—देवर जी आप के विचार शुद्ध आधुनिक हैं, पर आप ने पिता जी को क्यों बुलाया।

भाभी जी दुनिया में रहना है तो दिखलावा करना पड़ता है। समाज में अब भी कुछ पुराने विचारों के लोग हैं। बस इसी कारण पिताजी को बुलाना पड़ा। वह मूर्ख भोले लाल यदि अस्पताल न ले जाता तो डेंगू से पिताजी की मृत्यु हो जाती मैं यही चाहता था, पर क्या करूं मजबूर हो गया।

देवर जी चाहती तो मैं भी यही थी। भगवान मेरा जैसा पति दुश्मन को भी न देना। अपने गाँव में ही देखो, जिन लोगों ने करोड़ो की सम्पत्ति बच्चों के लिये इकट्ठा की उनको देखना वाला कोई नहीं है। नायाब साहब की पत्नी का पैर टूट गया उनका डॉक्टर बेटा इलाज नहीं करवाया। लोग चिल्ला-चिल्ला कर कुत्ते की मौत मरते हैं, बहू पानी मुंह में नहीं डालती। परन्तु वाह रे किस्मत मुझे ऐसा पागल पति मिला जो उस पिता की सेवा करता है जिसने जीवन में कभी एक पेड़ भी नहीं लगाया।

भाभी जी आप परेशान न हो हम से जो हो सकेगा आपकी मदद करूंगा छोटे लाल बोला।

देवर जी जब तक कुन्दन के पिता जिंदा हैं मनीराम को खाना खिलाना पड़ेगा—बहू तो छुट्टी पा गई परन्तु मैं कहाँ भाग कर जाँऊ। मैने कई बार खाना नहीं बनाया पर तुम्हारे भइया खुद बना लिया, पिता को भूखे सोने नहीं दिया। वैष्णव देवी से मन्नत मांगी है माता जी यदि मेरा पति मर जाय तो मैं आपका दर्शन करने आऊंगी। पाँच साल हो गये पर कमबख्त अभी तक जिंदा है।

भाभी जी अब आप चिंता न करें मैं कोई रास्ता निकलूगा जिससे आपकी तकलीफ कम हो जाय। देवर की बात से श्रीमती जी को आत्मसंतोष हुआ फिर शादी सम्बन्धी अन्य बाते शुरू हो गयी।

❍❍

छोटेलाल यादव के बेटे का विवाह बड़े धूमधाम से सम्पन्न हो गया। कुन्दन यादव अपने चाचा के व्यवहार से अत्यन्त प्रभावित हुआ, उसे ऐसा लगने लगा सारी गलती उसके बाप की है। पिता के प्रति उसके मन में बची श्रद्धा भी खत्म हो गई। माँ भी कुन्दन के साथ शहर में रहने लगी। भोलेलाल को जब इस बात की जानकारी हुई तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ। पिता की जिम्मेदारी फिर उस पर आ गई पैसठ वर्ष की अवस्था में भी भोलेलाल राजगीरी करता। शाम को घर आता खाना बनाता पिता को खिलाने के बाद ही स्वयं खाता। सुबह काम पर जाता तो रोटी बना कर पिता के लिये रख जाता।

मनीराम यादव की अंतरात्मा में प्रकाश उत्पन्न हो गया। वे अपने बड़े-बेटे को मन ही मन आशीर्वाद देने लगे। समय चलता रहा एक दिन मनीराम के पेट में दर्द हुआ फिर उलटी होने लगी। भोलेलाल ने तुरन्त एक सौ आठ नम्बर पर फोन किया। एम्बुलेंस आ गई, मनीराम को अस्पताल लाया गया। दवा शुरू हुई इस बार भोलेलाल ने भाई बेटा पट्टीदार रिश्तेदार किसी को फोन नहीं किया। डॉक्टरों ने बहुत कोशिश की परन्तु मृत्यु की जीत हुई। पिता की मृत्यु पर भोलेलाल की आँख भर आई। कई वर्ष पहले माँ ने और आज पिता ने उसका साथ छोड़ दिया। पिता के शव को लेकर वह गाँव नहीं आया, वहीं से सीधे नदीं के तट पर गया और अकेले ही अंतिम संस्कार कर दिया।

गाँव वालों को जब इस बात का पता चला तो तरह-तरह की बातें करने लगे।

कुन्दन एवं छोटेलाल गाँव के लोगों से फोन पर बात करके भोलेलाल का समाचार ले लिया करते थे। उन्हीं शुभ चिंतकों से चाचा भतीजा को मनीराम यादव के मृत्यु का समाचार मिला। समाचार पाते ही वे सभी गाँव पहुँच गये। छोटेलाल एवं कुन्दन ने भोलेलाल को प्रणाम किया तो भोलेलाल ने आशीर्वाद देने से मना कर दिया। मैं तुम लोगों को नहीं पहचानता कह कर भोलेलाल घर से बाहर निकल गया। गाँव के पट्टीदार एवं रिश्तेदार भी इकट्ठा हुये सभी ने धूमधाम से मनीराम की तेरही मनाने का कार्यक्रम निश्चित किया।

छोटेलाल ने भोलेलाल से कहा—भइया मैं चाहता हूँ पिता जी की तेरही इस तरह की जाय कि पूरे जेवार में आज तक किसी ने ऐसी तेरही न की हो। इससे पिता जी की आत्मा को शान्ति मिलेगी। भाई की बात सुनकर भोलेलाल मुस्कराकर बोला—मैं तेरही में नहीं रहूँगा। क्यों? छोटेलाल का चेहरा लाल हो गया। मैं ऐसी परम्पराओं का विरोध करता हूँ जो दुनिया को दिखाने के लिये की जाती है। जीते जी तुम लोगों ने पिता जी को एक गिलास पानी नहीं दिया, अब मरने के बाद उन्हें पानी पिलाने की बात न करो। और कुन्दन की माँ तुम भी सुनों पिता के कारण मैं मजबूर था घर में रहने के लिए, अब मैं स्वतन्त्र हो गया हूँ। मैं उसे पत्नी ही नहीं मानता जो पति के पवित्र विचारों का हनन करें। जो अपने कर्त्तव्य का पालन न करे वह मानव नहीं हो सकता। अब तुम लोगों की जो इच्छा हो करो, मैं तेरही करने के पक्ष में नहीं हूँ।

कुन्दन ने पिता का चरण पकड़ कर कहा—पिता जी यदि बाबा की तेरही नहीं हुई तो समाज में हमारा सिर झुक जायेगा। क्या आप चाहते हैं की संतान का समाज में तिरस्कार हो। कुन्दन की बात सुनकर भोलेलाल कुछ देर सोच कर बोला ठीक है तुम सभी तेरही का आयोजन करो। पिता की बात सुन कर कुन्दन खुश हो गया।

मनीराम यादव की तेरही बड़े धूम-धाम से मनाई गई। सबसे पहले हजारों ब्राह्मणों को खिलाया गया, इसके बाद गाँव के सभी जाति के स्त्री-पुरुष ने भोजन किया। कई गाँव तक निमन्त्रण गया था। पूरे समाज में इस तेरही की चर्चा हुई लोग कहते बेटा हो तो छोटेलाल जैसा—पिता को तार दिया। दस लाख से कम तेरही में न लगा होगा। घर-घर चर्चा का विषय बन गया।

भोलेलाल ने घर छोड़ दिया, अब उसने शरीर पर गेरुवा वस्त्र धारण कर लिये मन तो बहुत पहले गेरुवा हो गया था। स्वयं को उसने श्रीकृष्ण के चरणों में अर्पित कर दिया। एक सुरम्य स्थान पर उसने राधे कृष्ण का मंदिर बनाया और उन्हीं की सेवा में रत हो गया। उसके व्यवहार से कुछ लोग प्रभावित तो अधिकांश लोग उसे पागलदास कहने लगे। सच है आज के युग में सत्य ईमान एवं न्याय के पथ पर चलने वाला पागल ही कहा जायेगा। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सत्यनिष्ट आचरण वाले का परिवार समाज एवं संसार ने कभी साथ नहीं दिया।

❑❑❑

सोच

जगन्नाथ पासी विद्युत विभाग में लिपिक थे। कुसंगत के चक्कर में पड़कर वे शराब के इतने आदी हुये कि कर्त्तव्य ही भूल गये। परिणाम स्वरूप उनके कारण परिवार को कष्ट मिलने लगा। अनीता उदार हृदय की महिला थी पति के अत्याचार को ईश्वर की मर्जी समझ कर सह रही थी। जगन्नाथ मनमानी करता अनीता उसे सत्पथ दिखाने की कोशिश करती तो उसकी पिटाई कर देता। मोहनी पिता का बिकराल रूप देख कर काँप कर रह जाती। यदा-कदा वह मोहनी की भी पिटाई कर देता। जगन्नाथ मोहनी को स्कूल नहीं भेजना चाहता था, परन्तु पत्नी के विरोध के बाद प्राइमरी में नाम लिखवा दिया।

जगन्नाथ के पाँच संतान हुई पर जीवित सिर्फ दो हैं। आखिर बार जब राकेश का जन्म हुआ तो अनीता ने नसबन्दी करवा ली। हर बार उसे मयके वालो से मदद लेनी पड़ती। जगन्नाथ उसे देखने भी नहीं आता जब वह घर आती तो जगन्नाथ उसे ताना देता, बेचारी सह लेती। समय अपनी गति से चलता रहा। मोहनी इण्टर में पहुंच गई। माँ उसे बहुत प्यार करती पर असहाय थी क्या करे। उनके ऊपर घर की पूरी जिम्मेदारी थी। जगन्नाथ ने आज तक मोहनी को वस्त्र क्या, एक टाफी भी कभी लाकर नहीं दिया था। हाँ सबसे छोटे बेटे को जगन्नाथ प्यार करने लगा था, उसका नाम अंग्रेजी स्कूल में लिखवाया था। मोहनी को इस बात से संतोष हुआ कि कम से कम पिता जी मेरे छोटे भाई के भविष्य की चिंता करने लगे हैं।

इतवार का दिन था शाम को जगन्नाथ के साथ एक अन्य व्यक्ति आया। आते ही जगन्नाथ चिल्लाया—मोहनी ओ मोहिनी। पिता की आवाज सुनकर मोहनी दौड़ कर आई। कहाँ मर गई थी, कितनी देर से पुकार रहा हूँ। पिता जी पढ़ रही थी। मोहिनी की बात सुनकर जगन्नाथ उसे घूरने लगा। पिता की लाल-लाल आँखें बड़ी-बड़ी मोंछ देखकर मोहनी सहम गई फिर अन्दर जाने लगी।

जगन्नाथ उसकी चोटी पकड कर बोला—कहाँ जा रही है कामचोर मोहनी खामोश चुपचाप खड़ी हो गई। जगन्नाथ ने झोला खोला देख आज हमारे साथ पंडित गंगाप्रसाद तिवारी आये हैं। पितर पख चल रहा है। मैं पंडित जी की सेवा करना चाहता हूँ इसलिए तुझे जो काम बताऊँगा न नहीं कहना वरना। पिता के मुख से पंडित शब्द सुनकर

मोहनी को राहत महसूस हुई। वह मन ही मन सोचने लगी ब्राह्मण अच्छे इंसान होते हैं। तभी तो अन्य जाति के बड़े उम्र वाले भी उन्हें प्रणाम करते हैं। न जाने किस भावना के वशीभूत होकर मोहनी ने पंडित गंगाप्रसाद तिवारी के पैर छू लिये। पंडित जी ने बाजू पकड़ कर मोहिनी को उठाया फिर उसके सिर पर हाथ रखकर बोले—सदा सुखी रहो। सिर से पंडित जी का हाथ उठा नहीं, धीरे-धीरे नीचे गले से होते हुये उरसिज के ऊपर से फिसल गया।

पंडित गंगाप्रसाद तिवारी का कर जब मोहनी के उरसिज को छूकर गुजरा तो जो अभी-अभी ब्राह्मणों के प्रति उसके मन में भाव आया था वह आकाशीय विद्युत सदृश लुप्त हो गया। साठ वर्ष की आयु के तट पर खड़ा व्यक्ति जो स्वयं को पंडित सिद्धि कर रहा था, उसकी वासना का यह विदूप रूप देखकर मोहनी के मस्तिष्क में चक्रवात घूमने लगा। तभी जगन्नाथ चीखा मोहिनी ओ मोहिनी। पिता की आवाज सुनकर मोहनी चौंक पड़ी। खड़ी-खड़ी मेरा मुख न देख, यह झोला-खोल बकरे की माँस लाया हूँ जल्दी से काट कर धो। मैं खुद बनाकर पंडित जी को भोग लगाऊँगा।

मोहिनी को पोलीथीन में माँस देकर जगन्नाथ स्वयं बनाने की तैयारी करने लगा। अनीता छत पर चली गई, उसने सोचा यदि मैंने कुछ बोल दिया तो जगन्नाथ उटपटांग बातें करने लगेगा। लोग सुनेगे तो उसकी ही बदनामी होगी। यही सोचकर अनीता ने चुप रहना बेहतर समझा। मोहनी ने मांस को काट कर धोकर रख दिया जगन्नाथ किचिन में मांस पकाने लगा। थोडी देर के बाद किचिन से खुशबू आने लगी।

पंडित गंगाप्रसाद तिवारी दालान में पुस्तक पढ़ रहे थे। मांस की सुगन्ध से भावविह्वल हो गये, उठे और किचिन में घुस गये। जगन्नाथ गुनगुना रहा था। पंडित जी को किचिन में देखकर जगन्नाथ बोला—क्या करूं पंडित जी अनीता न मांस खाती है न ही बनाती है। उससे कहू तो बेकार में उपदेश सुनू—बची मोहनी तो वह भी पंडिताइन बन रही है। इसलिये मैं स्वयं मांस पकाता हूँ। इतना कहकर जगन्नाथ ने मोहनी को पुकारा, मोहनी आई तो उससे कुर्सी लाने को कहा। मोहनी कुर्सी ले आई तो पंडित गंगाप्रसाद तिवारी बैठ गये।

मोहनी दालान में आई देखा पंडित जी के झोले से एक किताब बाहर थी। न जाने किस भावना के वशीभूत होकर उसने वह किताब उठा लिया, जब मोहनी ने पुस्तक खोला तो उसका चित्र देखकर दंग रह गई। मोहनी ने जब से होश सम्भाला एक दिन भी सुख से रोटी नहीं खायी थी। पिता के कारण उसे जो पीड़ा हुई थी, उसने उसे समय से पूर्व निर्णय लेने की शक्ति प्रदान कर दी। मोहनी ने निश्चिय कर लिया था कि वह किसी भी कीमत पर नौकरी लेकर ही रहेगी। अतः शिक्षा के प्रति वह पूर्ण रूप से समर्पित थी। पंडित जी के झोले में इस तरह की पुस्तक देखकर वह समझ गई कि

वासना कभी नहीं मरती देह मरती है। इसके अलावा उसे इस बात का भी ज्ञान हो गया कि ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से कोई विद्वान नहीं बन जाता। उम्र बढ़ने से भी विचारों में शुचिता नहीं आती। मोहिनी कुछ देर खड़ी सोचती रही फिर पंडित जी का कोक शास्त्र रखकर छत पर चली गई।

मांस पक गई। जगन्नाथ ने मोहनी को पुकारा, मोहनी आई तो बोला रोटी बनाकर ला। मोहनी रोटी बनाने लगी। दालान में द्राक्षी की बोतल खुली भुने हुए काजू का नमकीन निकालकर जगन्नाथ पंडित जी से बोला—हे पृथ्वी के देवता श्री गणेश करो। पंडित गंगाप्रसाद ने गिलास उठा कर एक घूट पिया फिर भूने हुये काजू खाने लगा। घण्टों बीत गये मोहनी रोटी बनाये बैठी रही। बोतल खत्म हो गई तो दोनों खाना खाने लगे।

खाना खाकर दोनों वहीं तख्त पर लेट गये। मोहनी ने माँ को बुलाकर खाना खिलाया फिर स्वयं खाकर लेट गई। पिता के साथ आये पंडित के आँखों में वासना की भूख देखकर वह सहम गई। पंडित जी का जो रूप आज उसने देखा उसने पंडित शब्द के अर्थ को अनर्थ कर दिया था। पिता के प्रति उसके मन में बहुत पहले ही श्रद्धा खत्म हो गई थी।

❍❍

मोहनी इण्टर पास करने के उपरान्त नौकरी की तैयारी करने लगी। उसका प्रयास सफल हुआ। आकाशवाणी में उसे लिपिक की नौकरी मिल गई। जिस दिन वह घर छोड़ने लगी माँ दुखी हो गई। मोहनी ने माँ से कहा—यदि तुम चाहो तो मेरे साथ चल सकती हो। बेटी की बात सुनकर अनीता के नेत्र भर आये। बेटी तुम अपना ध्यान रखना मेरी चिंता नहीं करना। फिर तुम्हारे पिता जी अब थोड़ा बहुत बदल गये हैं, माँ ने बेटी को समझाकर भेज दिया।

समय अपनी गति से चलता रहा, मोहनी ने विवेक मिश्र नाम के आकाशवाणी में ही कार्यरत कर्मचारी से शादी कर ली, विवेक सरल हृदय का युवक था। मोहनी से प्रभावित होकर उसने जब शादी का प्रस्ताव रखा तो मोहनी तुरन्त कोई निर्णय न ले सकी। धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि विवेक उसे सचमुच प्यार करता है। तदान्तर दोनों में घनिष्ठता बढ़ी फिर शादी हो गई।

शादी के बाद मोहनी की जिंदगी में बदलाव आ गया। पति के प्यार ने उसके जख्मों को भर दिया। शादी के दो वर्ष बाद उसे बेटा हुआ मोहनी ने उसका नाम विभात रखा। विभात जब आठ वर्ष का हो गया तो मोहनी ने एक कन्या का जन्म दिया। विवेक ने बच्ची का नाम रखा विभा।

मोहनी की जिंदगी हंसी खुशी से बीत रही थी। एक दिन मोहनी को पेट में

असहनीय दर्द हुआ। अस्पताल गई जाँच हुई तो उसे पता चला कि वह किडनी की रोगी है। पिछले तीन वर्षो से उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था, परन्तु उसने कभी परवाह नहीं की बस डॉक्टर से दवा ले ली और अपने कार्य में रत हो गई। विवेक को मोहनी की बीमार का पता चला तो अत्यन्त दुख हुआ उसने मोहनी को धीरज दिया। दवा शुरू हो गई।

स्वागत कक्ष का कर्मचारी किसी काम से बाहर गया था उसकी जगह आज मोहनी काम कर रही थी। तभी अनाम शुक्ल आकाशवाणी पहुँचे। अनाम शुक्ल की आयु लगभग सत्तर वर्ष थी। दुबल पतला शरीर पर चेहरे पर चमक थी। बेटी अनाम शुक्ल बोले—मैने कुछ कविताएँ लिखी हैं मैं इनका प्रसारण करवाना चाहता हूँ।

मोहनी ने पर्ची बना कर कहा— आप सीधे ऊपर दूसरी मंजिल पर चले जाइए। अचानक अनाम शुक्ल का सर दर्द करने लगा। मोहनी से पर्ची लेकर बैठ गये। क्या हो गया बाबा—मोहनी खड़ी हो गई। कुछ नहीं बेटी बस सर दर्द करने लगा थोड़ी देर बैठ जाता हूँ। मोहनी ने अपना बोतल निकालकर अनाम को पानी पिलाया। आधा घंटा हो गया पर अनाम का दर्द ठीक नहीं हुआ।

थोड़ी देर के बाद स्वागत कक्ष का कर्मचारी आ गया। मैडम अब आप जा सकती हैं। मोहनी उठी, अचानक उसका ध्यान अनाम शुक्ल पर चला गया। बाबा अभी भी आप की तबियत ठीक नहीं हुई।

बेटी—अनाम आगे बोल न सका। मोहनी ने अनाम का हाथ पकड़कर उठाया। बाबा आप हमारे साथ चले। अनाम को लेकर मोहनी अपने कक्ष में आ गई। बाबा आप इस बेंच पर लेट जाइए। अनाम शुक्ल लेट गये।

शाम के पाँच बच गये। अनाम की तबियत अब पहले से ठीक थी। पर सरदर्द बंद नहीं हो रहा था। मोहनी घर जाने को तैयार हुई तब उसका ध्यान अनाम पर चला गया। बाबा आप हमारे साथ चलें, मैं किसी डॉक्टर को दिखा देती हूँ। अनाम को लेकर मोहनी आकाशवाणी से बाहर निकल आई। मोहनी ने अनाम को डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने कहा घबड़ाने की कोई बात नहीं मैं दवा दे रहा हूँ अभी कुछ घंटो में ठीक हो जायेगें। डॉक्टर के कक्ष से निकलकर मोहनी बोली—बाबा आप हमारे घर चलें सुबह चले जाना, नहीं बेटी अब मेरी तबियत ठीक है शाम को मेरी गाड़ी है मैं घर चला जाऊंगा। ठीक है बाबा अपना ध्यान रखना। हाँ घर पहुँचने पर मुझे फोन जरूर करना कहकर मोहनी ने अपना फोन नम्बर अनाम शुक्ल को दे दिया।

❍❍

अनाम शुक्ल सरल हृदय के व्यक्ति थे। संसार के वास्तविक रूप को देखकर उनके हृदय को बेहद दुख हुआ था। पर वे अपनी पीड़ा को हृदय में दबाये थे। एक दिन

उनका मन विषाद से भर गया। जिस परिवार के लिये वे दिन रात मेहनत करके यहाँ तक लाये थे, उनके व्यवहार से उन्हें असहनीय दर्द होता था। क्या करें कभी-कभी उनका मन कहता इस जिंदगी से मौत अच्छी है। अनाम मौत की कल्पना करने लगे थे। परिवार एवं संसार के दुख को भुलाने हेतु वे कभी-कभी रामचरितमानस पढ़ते तो कभी-कभी अन्य पुस्तके। साहित्य में उनकी रुचि थी, इसी रुचि ने उन्हें कविता करने की शक्ति प्रदान की। असल में वे अपनी जिंदगी ही कविता में लिखकर संतोष प्राप्त कर लेते।

सत्तर वर्ष वे तेली के बैल की तरह परिवार की माला जपते-जपते बीता दिया था। दो एकड़ खेती थी, उसी के बल पर बड़े-बटे कमल को पढ़ाकर रेलवे में इंजीनियर बनाया। बेटी ने भी मेहनत से पढ़ाई की और वह भी सरकारी स्कूल में अध्यापक हो गई। दोनों बच्चों की शादी भी हो गई। इतना सब करने में अनाम के सत्तर वर्ष खत्म हो गये। छोटे बेटे के लिये अनाम शुक्ल ने रोड पर जमीन लेकर कपड़े की दुकान करवा दी। वह भी अपने परिवार के साथ गाँव से बाहर रहने लगा।

छोटे बेटे के लड़का पैदा हुआ। उसकी बरही का कार्यक्रम गाँव में रखा गया। अनाम के तीनों बच्चे एवं परिवार इकट्ठा हुआ। कार्यक्रम वृहद था। पूरे गाँव के ब्राह्मणों के अलावा अन्य जाति के लोगों को निमंत्रण दिया गया। पूरे गाँव में अनाम की प्रसंशा हो रही थी। दो दिन के बाद बच्चे जाने लगे तो छोटा बेटा बोला—पिता जी आप भइया के साथ कुछ दिन के लिए शहर चले जायें। अनाम ने इंकार में सिर हिला दिया।

छोटा बेटा बोला पूरे जीवन क्या हमारे यहाँ ही रोटी खाओगे। बेटे की बात सुनकर अनाम का सिर चक्करा गया। दो रोटी खाता हूँ उसे बनाने का कष्ट वे कैसे दूर करे चिंतन में पड़ गये।

क्या सोचने लगे पिता जी बेटी बोली—भइया ठीक ही कह रहे हैं। कुछ दिन बड़े भइया के यहाँ चले जाओ। खेती की चिंता न करो।

भइया देख लेगें रही बात गाय की उसे बेच दिया जायेगा।

बिटिया मैंने कह दिया कि मैं शहर नहीं जाऊँगा।

ठीक है जैसी आप की इच्छा मम्मी होती तो।

अब चुप हो जाओ बिटिया—जैसी तुम्हारी मम्मी थी वैसी तुम हो वे होती तो मुझे कौन-सा सुख दे देती। अनाम मन ही मन सोचने लगे यह संसार स्वार्थी है यहाँ कोई किसी का नहीं है। अनाम सोच मग्न थे कि बड़े बेटे की कार स्टार्ट हो गई।

बेटी बोली पिता जी मैं आप की सेवा करके आप को नर्क में डालना नहीं चाहती। इसलिये मैं आपको अपने घर नहीं ले जा सकती। बेटी का धन खाने से पिता की आत्मा

को घोर यातना सहनी पड़ती है। आप धर्म कर्म की बातें जानते हैं इसलिये विवश हूँ। बेटी को पिता का शव छूना भी पाप है।

तुम विद्वान हो बेटी—तुम्हारे घर में रोटी खाकर मैं अपने धर्म का पतन थोड़े करुंगा। बेटी-छोटे की बहू भी बेटी समान है उसके हाथ से बनी रोटी भी खाना अब मैं पाप समझता हूँ। इसलिये जब तक जिंदा हूँ यहीं दो रोटी बनाकर खा लिया करूंगा। अपना ध्यान रखना पिता जी कहती हुई बेटी कार पर सवार हो गई। दामाद ने कार आगे बढ़ा दी। थोड़ी देर के बाद बोला—बुढ्ढ़ा बड़ा कंजूस है, बिदाई भी नहीं दी देखना कुत्ते की मौत मरेगा। पति की बात सुनकर देवी जी खिलखिलाकर हँस पड़ी फिर बोली—पिता जी कुत्ते की मौत मरे या आदमी की। मैं अब उनका शव भी देखने नहीं आऊंगी।

बड़ा बेटा एवं बेटी दोनों चले गये। छोटा बेटा बोला पिता जी मुझे दुकान खोलना है मैं जा रहा हूँ, शाम तक रोहित की माँ रहेगी। घर की साफ-सफाई करवा देगी। अनाम मौन शून्य को देखता रहा। शाम को रोहित आया माँ को मोटर साइकिल पर बैठाया और चल दिया। अनाम सोचने लगा—मुझे आज तक पग-पग पर लोगों ने छला है। कोई भी व्यक्ति नहीं मिला जिसकी कथनी एवं करनी में समानता रही हो। अपने स्वार्थ फायदा के सिवा इस दुनिया में कोई किसी का दर्द नहीं समझता फिर उसे पत्नी की याद आ गई। कितना प्यार किया था पर उसने क्या दिया—सोचते-सोचते अनाम के नेत्रों में आँसू भर आये। अचानक अनाम के नेत्रों के सामने उस बाला की आकृति घूमी जो आकाशवाणी में मिली थी। कितनी सुन्दर थी, मन कहता उसे देखता रहूँ। कितनी मोहक थी उसकी वाणी और कितना बड़ा था उसका हृदय उसकी करुणा जिसने मेरे मन को कुछ पल के लिए संसार से मुक्त कर दिया था। कल मैं उससे मिलने जाऊँगा। अनाम ने मन ही मन संकल्प किया तो असीम शान्ति का बोध हुआ।

❍❍

अनाम शुक्ल ने स्वागत कक्ष में पर्ची बनवाई और सीधे मोहनी के कक्ष में चले गये। अनाम को देखकर मोहनी मुस्कराकर बोली बैठों बाबा अनाम कुर्सी पर बैठ गये। आप की तबियत कैसी है बाबा मोहनी बोली, अब एक दम ठीक है बेटी—कल तुम्हारी याद आई और चला आया। अच्छा किया बाबा—चलो मैं तुम्हें हिन्दी साहित्य के कार्यक्रम अधिशाषी से मिलवा देती हूँ।

अनाम मोहनी के पीछे-पीछे चल दिये। मोहनी ने अनाम की कविताएँ देखी फिर उनहें कार्यक्रम अधिशाषी से मिलवा दिया। उन्होंने अनाम से कहा मैं तुम्हें शीघ्र ही बुलाऊँगा। अनाम जब कार्यक्रम अधिशाषी के कक्ष से निकले तो मोहनी बोली—बाबा आओ चाय पीते हैं। अनाम को लेकर मोहनी कैंटीन में बैठी। बाबा आप के घर में कौन-कौन रहता है।

अनाम के मुख मंडल पर घोर निराशा छा गई, कुछ बोल न सके। क्या सोचने लगे बाबा—मैने गलत प्रश्न तो नही कर दिया। नहीं बेटी, ऐसी बात नहीं है मेरे दो बेटे एक बेटी सब कुछ है पर मैं अकेला हूँ। उस दिन तुमको बताया था कि मैं अपना दुख ही तो लिखता हूँ मैं कोई कवि थोड़े हूँ।

आप दुखी न हो बाबा—आप जैसे इस धरती पर बहुत से लोग है मोहनी मुस्करा उठी। मोहनी की मुकलित उस स्मित में अनाम को जीवन दर्शन दिखने लगा। उस स्मित ने अनाम के रिक्त हृदय में जीवन का स्पंदन पुनः शुरू कर दिया। वासना कभी नहीं मरती—अनाम को जब इस सत्य का साक्षात्कार हुआ तो उनके सामने नैतिकता एवं मूल्यों का प्रश्न खड़ा हो गया। उसने चिंतन को झकझोरा तो हृदय से उत्तर मिला। वासना को दमन करना कठिन है परन्तु इसे परिवर्तित किया जा सकता है। नारी आकर्षण में इन्द्रियाँ जिस सुख की खोज करती है उसे कल्पना द्वारा संतुष्ट करना अनैतिक नहीं हो सकता। अस्तु यदि इस बाला को पुत्री तुल्य प्यार करके अपनी वासना शान्त करूँगा तो परमात्मा के दरबार में सिर झुकाना नहीं पड़ेगा। अनाम ने मन ही मन निश्चय किया।

कहाँ खो गये बाबा—मोहनी की वाणी सुनकर अनाम का स्वप्न भंग हो गया। बेटी मैं कल्पना में खो गया था। तुम्हारे स्नेह ने मुझे जीवन से पुनः मोह पैदा कर दिया।

यह तो अच्छा हुआ बाबा। अब मैं चलूगी दवा खाना भूल गयी हूँ। तुम्हे क्या बीमारी है बेटी?

कुछ नहीं बाबा—मोहनी रुक गई।

तुम झूठ बोल रही हो बेटी। मुझे सत्य बताओ बिटिया—यदि मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकू तो मुझे आंतरिक खुशी होगी। अनाम शुक्ल का अपनत्व पाकर मोहनी भावुक हो गई और उसने अपनी कहानी कह दी। मोहनी की कहानी सुनकर अनाम की आँखें भर आई, भरभराये स्वर में अनाम बोले—बेटी मैंने तुम्हे सिर्फ बेटी ही नहीं कहा, बेटी समझा है। इसलिए जब तक मैं जिंदा हूँ तुम्हे चिंता करने की आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हें जरूरत पड़ी तो अपनी किडनी दे दूँगा।

बाबा—मोहनी की आँखें भर आई। उसने अनाम के हृदय से सिर को सटा दिया।

❍❍

अनाम शुक्ल की पत्नी का नाम था रीता देवी। पिछले पाँच वर्ष से वे अपने मयके में रह रही थी। कारण मातृ प्रेम-रीता देवी को अपने माता एवं पिता से अत्यन्त स्नेह था। माँ के पैर में चोट लग गई, उन्हें देखने आई तो उन्हें पता चला कि भाइयों ने उनकी सेवा में कोताही की। रीता देवी यह बर्दाश्त न कर सकी और स्वयं माँ की सेवा करने लगी। माता, पिता की सेवा में वे इस तरह रत हो गई कि उन्होंने अपने घर आना

उचित नहीं समझा। अनाम शुक्ल कई बार गये परन्तु श्रीमती जी आने को तैयार नहीं हुई। उन्होंने अनाम से कहा—जब तक मेरे माता पिता जिंदा है तब तक मैं नहीं आ सकती। भाइयों पर मुझे विश्वास नहीं। समाज में उनकी चर्चा होने लगी। कुछ लोग उन्हें दुर्गा देवी का रूप मानने लगें।

आज शाम को छोटे बेटे का टेलीफोन आया कि पिता जी शहर में किसी मोहनी नाम की लड़की को किडनी दे रहे हैं तो उनका क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया। सुबह होते ही उन्होंने अपने बड़े भाई को बुलाया जो पुलिस विभाग में थानेदार था। उन्हें सारी कहानी बताई और तुरन्त भाई के साथ चल पड़ी। दस बजे घर पर पहुँच गई। अनाम रामचरितमानस पढ़ रहे थे। पत्नी एवं साले के साथ छोटा बेटा भी आया था।

पिता जी छोटा बेटा बोला—हम लोग कितनी देर से खड़े हैं पैलगी भी किया—तुम आशीर्वाद भी नहीं दे रहे हो। अनाम ने चश्मा निकाल कर बेटे की तरफ देखा फिर मुस्कराए—मैने तुम लोगों को नहीं बुलाया है। और बेटे जो तुम आशीर्वाद की बात कर रहे हो, तो कान खोलकर सुन लो—मैं तुम्हें धन दे सकता हूँ परन्तु आशीर्वाद नहीं। जीजा जी यदि तुम आशीर्वाद नहीं दे सकते हो तो कोई बात नहीं, परन्तु यदि तुमने मेरी बात नहीं मानी तो इस उम्र में जेल जाओगे।

तुम थानेदार हो या गुण्डा हो अनाम शुक्ल हँस पड़े—मैं जानता हूँ भइया इस देश में गुंडो का राज है। तुम जेल क्या मुझे यमलोक भी भेज सकते हो। इसलिए हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि मेरी मेहनत की कमाई से बना यह छोटा सा घर एवं तीन लाख के किसान विकास पत्र मैं तुम तीनों में जो चाहे उसके हवाले करने को तैयार हूँ। यदि मेरी जान चाहते हो तो वह देखो कुल्लाड़ी रखी है मेरा सिर काट लो, अरे दरोगा हो भइया जैसा चाहोगे वैसा केस बना लोगे।

पागल हो गये हो श्रीमती जी बोली—हम लोग तो तुम्हारी भलाई की सोच रहे हैं तुम हो कि उल्टी सीधी बातें किये जा रहे हो।

तुम मेरी भलाई सोचोगी विश्वास नहीं होता। सूर्य पूरब से निकलना भले बंद कर दे परन्तु तुम.....अनाम शुक्ल रुक गयें।

मैं तुम्हारे साथ रहने नहीं आई हूँ—मैंने सुना है किसी रंडी ने तुम्हें फंसा लिया है तुम उसे अपनी किडनी दे रहे हो। क्या यह झूठ है। कृष्ण-कृष्ण-कृष्ण अनाम शुक्ल गोविन्द का स्मरण करने लगी—वाह रे संसार लोग अपने अंदर नहीं देखते, दूसरो के पवित्र रिश्तो को अपने गंदे मन से देखते हैं। कुछ क्षण मौन रहने के उपरान्त अनाम शुक्ल बोले—तुमने ठीक सुना है कमल की माँ। मैं आकाशवाणी में कार्यरत मोहनी को अपनी किडनी दान देने का संकल्प किया है। अपने वचन के लिए मैं प्राण भी दे सकता हूँ।

यह तुम्हारा पागलपन है कमल का पापा। मैं तुम्हारी दुश्मन नहीं हूँ। परिवार को यहाँ तक पहुंचाने में मैंने भी योगदान दिया है। इसे तुम खारिज नहीं कर सकते। यदि मोहनी हमारी रिश्तेदार होती भाभी होती कुछ भी होती तो मैं आपके फैसले का स्वागत करती। परन्तु अनजान लड़की के लिये इस तरह कोई अपना अंगदान नहीं करता। इसलिए मुझे सक ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास हो गया है कि उस लड़की ने तुम्हें फंसा लिया है।

कमल की माँ अब आगे एक शब्द भी नहीं बोलना। उसने मुझे नहीं फंसाया अपितु मैं स्वयं फंस गया हूँ। मैने उसे बेटी कहा है वैसे भी वह उम्र में अपनी तनुजा बेटी सदृश है। रिश्ते सिर्फ रक्त से नहीं बनते। इस संसार में मन से भी रिश्ते बन जाते हैं। भक्त एवं भगवान का रिश्ता भी इसी तरह का है जैसा मैंने मोहनी से बनाया है। दुनिया को भले ही यह रिश्ता दिखाई न दे, परन्तु मेरे लिए आज की तारीख में संसार से बनने वाले सभी रिश्तों से अनिंद्य है। इसलिए इस विषय पर मैं अब कुछ सुनना नहीं चाहता। पति की बात का श्रीमती कोई उत्तर न दे सकी तो भाई की तरफ देखते हुये कहा—भइया आप ही इन्हें समझायें थानेदार साहब बोले—जीजा जी हम लोग तुम्हारे शत्रु नहीं हैं। हम तुम्हारी भलाई की बात कर रहे हैं और आप घर आये मेहमान को गाली दे रहे हैं। नेता, पुलिस अधिकारी मुझे तो हर तरफ गुण्डे ही गुण्डे दिखाई पड़ते हैं सारी दुनिया गुण्डों की है। सज्जन के सभी काल हैं। आप तो बी. ए. करके दरोगा बने है कृपया मुझे यह बताएं कि मानव जीवन का सर्वोच्च मूल्य क्या है।

रिवाल्वर—दरोगा साहब ने हाथ में रिवाल्वर लेकर कहा—शक्ति ही संसार का सर्वोच्च मूल्य हैं। मैं चाहू तो तुम्हें यहीं गोली मार कर शहीद घोषित करवा दूँ। परन्तु मैं ऐसा करूंगा नहीं। दीदी तुमको यहाँ रहना है तो रहो मैं चलता हूँ। दरोगा साहब जैसे बाहर निकले उनके साथ रीता देवी एवं कमल बाहर आ गये। अनाम शुक्ल ने चश्मा लगाया और मानस खोल दिया।

❍❍

अनाम शुक्ल आकाशवाणी गये, मोहनी के मोह ने उन्हें जीने की शक्ति प्रदान कर दी। अनाम शुक्ल को देखकर मोहनी खड़ी हो गई। कैसे हैं बाबा।

ठीक हूँ बिटिया—बाबा मैने सोचा है कुछ दिन आयुर्वेदिक दवा कर लू क्या पता ठीक हो जांऊ।

तुम निश्चित ठीक हो जाओगी बेटी न जाने क्यों मेरा मन कहता है। बस तुम्हें सोच को बदलने की जरूरत है। बेटी मानव जीवन में सोच का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसलिये बिटिया जीवन में चाहे कैसी ही परिस्थिति आ जाये चिंता नहीं चिंतन करना चाहिए। निश्चित कोई न कोई रास्ता निकल आयेगा। तुम्हारे विचार उत्तम है। आयुर्वेद

हमारे ऋषि मुनियों की धरोहर है। आयुर्वेद के साथ तुम्हे योग का भी सहारा लेना है। इसके अलावा मन को सदा प्रसन्न रखना। यदि इस पथ पर पूरी निष्ठा से चलोगी तो तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी बिटिया।

बाबा आप के उपदेश को मैं आचरण में शामिल करूंगी—बस कभी-कभी मन दुःखी हो जाता है।

क्यों बेटी—तुम संकोच न करो अपने मन की बात कहो। अनाम शुक्ल की बात सुनकर मोहनी कुछ देर खामोश रही फिर बोले—बाबा मेरे पति अच्छे आदमी हैं परन्तु कभी-कभी हृदय में तीर चुभा देते हैं।

बेटी स्पष्ट कहो जब तक मैं उस तीर को नहीं देखूंगा तब तक उसका उपचार सम्भव नहीं।

बाबा एक दिन उन्होंने कहा तुम से शादी करके मैंने गलती की। छोटी जाति के लोग बड़े विचार के नहीं हो सकते। माता जी ठीक ही कहती थी। मैने उनकी बात न मानकर अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली। इस तरह मेरे हृदय को न जाने कितनी बार मेरे पति ने लहूलुहान किया। कहते-कहते मोहनी की आँखें भर आई।

बिटिया आँसू मत गिराओ—तुम बहादुर लड़की हो जीवन से आज तक संघर्ष किया है। तुमने यह भी कहा है कि हमारे पति अच्छे आदमी हैं। बेटी इस संसार में परमात्मा के सिवा कोई भी पूर्ण नहीं। मेरे पास भी बहुत सी बुराइयां हैं। इंसान वही है जो अपनी बुराइयों को समझे और उनका सुधार करे। पति ने जो तुम्हे कहा उसके लिए तुम्हें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं। बिटिया तुम तन से ही नहीं अपितु मन से भी सुन्दर हो इसलिये चन्द दिनों में मैं तुम्हें अपने बच्चों से अधिक प्यार करने लगा हूँ। मुझे तुम से उम्मीद है बेटी कि तुम पति के वचनों को कभी भी गहराई तक नहीं ले जाना। मेरी बात का सदैव ध्यान रखना बेटी, जीवन भाव एवं संवेग से चलता है परन्तु तुम्हें सदैव इसे बुद्धि से संचालित करना है। अपने प्यार एवं सेवा से अपने परिवार को संस्कारवान बनाना, अपने पति को आचरण से सिद्ध करने दिखा देना कि मनुष्य जाति धर्म से नहीं अपितु स्वयं के कर्म से पहचान बनाता हैं। मेरी एक इच्छा है बेटी क्या तुम उसे पूरा करोगी।

अवश्य आप निःसंकोच कहें।

बेटी मैं तुम्हें स्वस्थ प्रसन्न एवं सदैव मुस्कराते हुये देखना चाहता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है तुम मेरे स्वप्न को पूरा करके दिखाओगी। मोहनी कुछ नहीं बोली बस अनाम के हृदय से सिर टिका दिया।

अब मैं चलता हूँ बेटी—बाबा एक चाय तो पी लो।

हमारे धर्म में बेटी के यहाँ चाय पीना पाप है।

बाबा एक बात कंहू आप बुरा तो नहीं मानेगें।

कहो बेटी तुम्हारी बात गलत हो ही नहीं सकती।

बाबा—बेटा बेटी में क्या आप भी भेद करते हैं?

नहीं—अनाम शुक्ल के स्वर में कंपकंपाहट थी।

बाबा फिर आप मेरी चाय क्यों नहीं पीना चाहते।

अनाम के पास मोहनी के प्रश्न का उत्तर नहीं था। मोहिनी के साथ चुपचाप कैंटीन में आये और चाय पीकर चले गये।

मोहनी से अनाम को, अनाम से मोहनी को जो आत्मियता हुई उससे दोनों के सोच में परिवर्तन हुआ। दोनों को संसार सुन्दर दिखने लगा। इस तरह प्रेम, योग तथा आयुर्वेद ने मोहनी की बीमारी को छः माह में नब्बे प्रतिशत ठीक कर दिया। अनाम शुक्ल को मोहनी ने अपने घर बुलाया।

मोहनी के पति ने अनाम शुक्ल का पिता तुल्य सम्मान किया। गद्‌गद हृदय अनाम ने मोहनी के पति के हृदय से लगा लिया।

हम आप के सदा कृतज्ञ रहेंगे बाबा।

ऐसा मत कहो बेटा—तुम्हारा एवं मोहनी बिटिया का प्यार मेरे जीवन की बड़ी उपलब्धि है। तभी मोहनी की साढ़े तीन साल की बेटी नाना-नाना करती अनाम के सामने खड़ी हो गई। अनाम ने बच्ची को उठाकर हृदय से लगा लिया।

मोहनी चाय बनाकर ले आई। बाबा आप ने मेरे सोच को बदल दिया। इसी कारण इतनी जल्दी ठीक हो गई। बाबा मेरी एक इच्छा है वादा करो आप मुझे निराश नहीं करोगें।

कहो बेटी अनाम गम्भीर हो गये।

बाबा मैं चाहती हूँ आप मेरे साथ यहीं रहें।

बेटी पहले तुम पूर्ण रूप से ठीक हो जाओ—फिर तुम जो कहोगी मुझे इंकार नहीं होगा। आज मैं पूरे विश्वास से कह रहा हूँ कि रक्त से मन के रिश्ते बड़े होते हैं। तुमने मेरे विश्वास को कायम रखा यह मेरे लिये बड़ी बात है।

मोहनी को समझाकर जब अनाम चले तो मन ही मन सोच रहे थे, मोहनी बेटी तुम्हे पता नहीं तुम्हारे कारण मेरा भी सोच बदल गया है। मोहनी के जीवन में जो बदलाव आया परिणाम स्वरूप दो वर्ष में वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई। अनाम शुक्ल ने गाँव से बाहर अपनी जमीन में श्रीराम मंदिर का निर्माण किया और वहीं पर राम के ध्यान में मग्न हो गये। जब-जब रामनवमी आती है मोहनी उनसे मिलने आती है। अनाम जब मोहनी को देखते हैं तो उन्हें लगता मानों प्रभु की मूर्ति सजीव हो गई।

❑❑❑

कामना

भारतीय स्टेट बैंक विलक्षण पुर के प्रबन्धक विरक्त पंडित सरल हृदय के व्यक्ति थे। इस शाखा में उनके कदम पड़ते काया कल्प हो गया। शाखा परिसर में आने वाले ग्राहक उनके व्यवहार से प्रभावित थे। यहाँ की लिपिक भी कामना पासी। कामना रूप की मलिका ही नहीं अपितु विशाल हृदय की नारी थी। पिता की मृत्यु बचपन में हो गई कामना को पिता की सूरत याद नहीं। परिवार की जिम्मेदारी माँ पर आ गई कामना से छोटे दो भाई थे।

ब्राह्मण बाहुल्य गाँव में मात्र नव घर पासियों के थे। किसी पासी के पास जमीन नहीं थी। सरकार द्वारा ग्राम समाज में जो जमीन पासियों को पट्टा दी गई थी उस पर गाँव के दबंग ब्राह्मणों ने कब्जा कर लिया था। गाँव के ब्राह्मण पासियों से काम कराते पर उन्हें बहुत कम मजदूरी देते कोई बोले तो कहते तुम मेरी जमीन पर बसे हो। मुंह खोलते हो, यहाँ से चले जाओ। ज्यादा बोले तो पिटाई भी कर देते। किसी पासी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह पुलिस में रिर्पोट करे।

कुछ दिन पहले एक पासी ने पुलिस में रिर्पोट की थी। परन्तु परिणाम दरोगा साहब ने दस हजार रुपये उससे खा लिए। वह शहर से आया था पुलिस गाँव में आई, खाना पूर्ति की दो चार गाली पासियों को दी, और चली गई। बचपन में ही कामना ने संकल्प कर लिया कि वह इस अभिसप्त जीवन से कैसे भी अपने को निकालेगी, इसलिये वह पूरी मेहनत से पढ़ाई में लग गई। माता की तपस्या को वह बेकार नहीं जाने देगी। उसने गाँव में मजदूरी की, धान की बेरन लगाई फसल काटी और मेहनत से पड़ती रही। अपने छोटे भाइयों को भी शिक्षा के प्रति प्रेरित किया।

बैंक में लिपिक हो जाने के बाद कामना ने घर की जिम्मेदारी सम्भाल ली। दोनों भाइयों को अच्छी शिक्षा दिलाकर सरकारी कर्मचारी बना दिया। माँ को अपने साथ रख लिया। एक दिन माँ ने कहा– बेटी अब तुम शादी कर लो। माँ की बात सुनकर कामना मुस्कराकर रह गई। मैने कुछ कहा है बिटिया।

ठीक है माँ कहकर कामना चली गई।

शनिवार का दिन था। दो कर्मचारियों ने छुट्टी ले रखी थी। विरक्त पंडित स्वयं उनका काम देख रहे थे। अचानक उनके हृदय में दर्द होने लगा। शाम के चार बज गये थे। अपने दर्द को छुपाये रहे जब उन्हें लगा कि चक्कर आ जायेगा तब बोले—कामना जी यहाँ आना। कामना विरक्त के पास पहुँच कर बोली—सर आप ने मुझे बुलाया है।

कामना जी मेरा जी घबरा रहा है लगता है चक्कर आ जायेगा विरक्त की बात सुनकर कामना ने अपना हाथ विरक्त के माथे पर रख दिया। सर आप को बुखार है। विरक्त ने जवाब नहीं दिया बस वहीं फर्श पर लेट गया।

कामना ने गार्ड को बुलाया, दूसरे कर्मचारी भी आ गये। विरक्त को उठाकर कामना ने सोफा पर लिटा दिया। थोड़ी देर के बाद विरक्त को होश आ गया। सर आप की तबियत ठीक नहीं थी फिर भी आप काम करते रहे मुझे बताना था कामना बोली। विरक्त मुस्करा कर रह गया। कामना के सौन्दर्य ने विरक्त की पीड़ा को हर लिया। अब मैं ठीक हूँ कामना जी। नहीं कामना ने विरक्त के माथे पर पुनः हाथ रख दिया।

कामना जी आप मेरे लिए परेशान न हो—हाँ ये चाबियां ले लो और मेरा काम निपटा देना मैं घर चला जाता हूँ।

सर आप अकेले मत जाओ—राजीव को साथ में लेते जाओ। राजीव चपरासी के पद पर काम कर रहा था।

कामना जी मैं ठीक हूँ कहकर विरक्त खड़ा हो गया। लगता है बुखार है अभी डॉक्टर को दिखा दूंगा। कहकर विरक्त बाहर निकल गया। कामना बैंक के कार्य सम्पन्न करने में लग गई।

❍❍

विरक्त ने डॉक्टर से दवा ली और चुपचाप कमरे में पहुंच गया। खाना खाने की इच्छा नहीं थी दवा खाई और लेट गया, तभी मोबाइल बज उठी। अनमने मन से विरक्त ने फोन उठाया। दूसरी तरफ से कामना की आवाज आई सर आपकी तबियत कैसी है। कामना जी मैं बिलकुल ठीक हूँ आप चिंता न करें।

सर आप ने खाना खा लिया। विरक्त क्या जवाब दे चिंतन में पड़ गया, सर आप चुप क्यों है? कामना जी मैं झूठ बोल दूँ। कामना हंस पड़ी आप बच्चों जैसी बात कर रहे हैं।

आज मैंने खाना नहीं खाया यह सच है पर आप परेशान न हो, कामना जी मैं कभी व्रत नहीं करता। नवरात चल रही है यही समझ लो एक दिन का व्रत कर लिया।

ठीक है सर मेरी एक प्रार्थना है कामना रुक गई।

कहो रुक क्यों गई?

सर डरती हूँ कहीं आपको बुरा न लगे।

कामना जी ऐसा आप क्यों सोचती हैं। इसलिए सर की आप ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण विरक्त के अधरों पर स्मित तेरे गई। कामना जी क्या ब्राह्मण होना पाप है। नहीं सर यह बात नहीं है। फिर कामना जी आप ऐसा क्यों कह रही हैं। सर मैं सिर्फ इतना कहना चाहती हूँ कि कल मैं आप का खाना बना कर ले आऊं।

विरक्त के हृदय में विचित्र प्रकार की हूक उठी—दर्द तो कल भी हुआ था परन्तु आज और कल के दर्द में जो फर्क था उसकी गहराई में विरक्त का मन डूबा तो चेतना

खो गई, कुछ पल जब विरक्त की आवाज नहीं आई तो कामना हैलो-हैलो करने लगी। विरक्त का ध्यान टूट गया। आप कुछ बोलते नहीं सर। कामना जी आप खाना ले आना।

धन्यवाद सर कहकर कामना ने फोन रख दिया। विरक्त के हृदय में जो अभी मधुर दर्द उत्पन्न हुआ था उसका प्रभाव विरक्त के मस्तिष्क पर हाबी हो गया। उसे लगा मानों कामना उसके सामने खड़ी है, कितनी सुन्दर थी कामना, उसके अंगप्रत्यंग विरक्त के नेत्रों के सामने घूमने लगे। पैर की ऊँगली से लेकर सर के केश तक उसके समस्त अंग न तो बड़े न ही छोटे थे। नेत्र देह के अनुपात से बड़े थे। लम्बी पलके गोरे मुख पर राकेश में धब्बा की तरह सर्वप्रथम अपनी तरफ ध्यान केन्द्रित कर लेते थे। ओंठ की लालिमा पाटल की पखुड़ी सदृश प्रतीत होती। नासिका अत्यन्त मनोहर दोनों छिद्रों का सौन्दर्य देखने लायक था।

विरक्त को याद आया एक दिन कामना उसके पास आई उसे जुखाम था। अचानक उसे छींक आ गई। लार के छोटे-छोटे कण विरक्त के मुख पर पड़ गये। सारी कहती हुये कामना रूमाल निकाल कर भावुकता बस विरक्त के कपोल को पोंछ दिया। उस समय उसकी नासिका में पानी था। जिसे सुरकते वक्त उसके मुख की सुन्दरता इतनी मोहक विरक्त को दिखी कि उसका जी चाहा कि उसकी नाक पोंछ दे। बड़ी मुश्किल से उस समय वह अपने मनोभाव को छिपा पाया था।

होंठ, नाक कान कपोल सब अपने आप में बेजोड़ थे। कामना के माध्यम आकर कुच के साथ जब सुड़ोल बाहों पर विरक्त की दृष्टि पड़ी तो उसके हृदय में स्पंदन होने लगा। कामना की कामना में विरक्त कल्पना लोक में पहुँच गया। शरीर की पीड़ा खत्म हो गई। वासना के वेग में वह बहता चला गया। जब ठहरा तो अपने कृत्य पर हंसी आ गई।

प्रातः नेत्र खुले तो शरीर में स्फूर्ति थी। दवा के प्रभाव से अधिक मन में जो विचार आये उससे असीम ऊर्जा का शरीर में संचार हुआ। दैनिक कर्मो से मुक्त होकर अखबार पड़ने लगा। समय मानों ठहर गया कब कामना आये और वह उसके अनुपम सौन्दर्य का दर्शन करे। इस चाह ने विरक्त को अनुरक्त बना दिया।

बड़ी मुश्किल से ग्यारह बजे। किसी की प्रतीक्षा में जो तड़प होती है उसका पहली बार विरक्त को अनुभव हुआ। कई बार मन में आया कि फोन करूं परन्तु तर्क की दृष्टि से उसने उचित नहीं समझा। इसी उधेड़बुन में वह निमग्न था कि फोन की घंटी बज उठी। कामना का फोन था यह जानकर उसका हृदय धड़कने लगा। बिलक्षण सुख की अनुभूति से रोम-रोम सिहर उठा।

दरवाजा खोला तो सामने कामना खड़ी थी। अपने मनोभावों को छिपाते हुये विरक्त बोला—आने में कोई परेशानी तो नहीं हुई। नहीं सर कहती हुई कामना अन्दर आ गई। आते ही बोली सर आप की तबियत कैसी है?

अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। देवी माँ से मैने कल प्रार्थना की थी। आप पहले खाना खा ले फिर बातें करेगें कहती हुई कामना टिपिन खोलने लगी। विरक्त ने दो थाली लाकर रखी। कामना जी अपने लिए भी खाना निकाल लो।

कामना ने दोनों थालियों में खाना रखा—अब आप खाना खाये मैं पानी लाती हूँ।

नहीं आप मेरी मेहमान हैं क्या मुझे इतना भी काम नहीं करने दोगी। कामना मुस्कराकर बोली—आप मुझसे बड़े, अधिकारी हैं सेवा का कार्य मुझे ही करना चाहिए।

मैं तुम्हारी तर्क से सहमत नहीं। इस समय तुम मेरी मेहमान हो। हमारी संस्कृति में मेहमान का स्थान ईश्वर तुल्य है जानती हो। मैं ब्राह्मण थोड़े हूँ।

कामना जी तुम्हारी इन बातों से मुझे दुख होता है। लो इस रोटी को मुख में रखकर कूचों जब निगलने योग्य हो जाय तो मेरे हाथ पर रख दो। विरक्त ने रोटी उठाकर कामना को पकड़ा दिया। नहीं मुझसे यह नहीं हो सकता। कामना लम्बी-लम्बी सांसे लेने लगी। ठीक है यदि तुम से यह नहीं हो सकता तो मैं खाना नहीं खाऊंगा। कहकर विरक्त खड़ा हो गया।

प्लीज बैठ जाइऐ।

नहीं कामना जी आप को मेरी इच्छा पूर्ण करनी होगी। अन्यथा मैं खाना नहीं खाऊगा। कामना कुछ देर तक सोचती रही क्या करे। अंततोगत्वा उसने रोटी उठा ली।

आप ने मेरा जुठा खा लिया। कामना हतप्रभ विरक्त का मुख देखती रह गई।

अब तो आप मुझे ब्राह्मण नहीं कहेगीं विरक्त मुस्कराकर बोला। कामना मौन जबकि विरक्त खाना खाने लगा। कामना जी आप भी खाना खायें विरक्त बोला तो कामना खाने लगी।

❍❍

अब मैं जा सकती हूँ सर कामना की बात सुनकर विरक्त का स्वप्न भंग हो गया। कामना जी मैं आप से कुछ बातें करना चाहता हूँ। कामना मुस्कराई कौन सी बात सर।

कामना जी यह आफिस नहीं है यहाँ तुम मुझे सर नहीं कहोगी। कामना ने संकेत में स्वीकृत दे दी। कामना जी तुम्हें ब्राह्मणों से चिढ़ क्यों है।

विरक्त जी मैं इसका उत्तर देने में असमर्थ हूँ। हाँ इतना मैं जरूर कह सकती हूँ कि इस देश के उच्च जाति के लोग निम्न जाति वालों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते। यह मेरा विचार है आवश्यक नहीं कि आप मुझसे सहमत हो।

कामना जी मैं आप से सहमत हूँ। यह ठीक है कि धर्म एवं जाति से आज भी मनुष्य की पहचान होती है। जो मानवीय सभ्यता पर दाग है। जहाँ तक मेरा अपना विचार है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में यद्यपि वातावरण का महत्त्व है तथापि व्यक्ति की दृष्टि का निर्माण आत्मज्ञान है। यह आवश्यक नहीं कि ब्राह्मण कुल में जन्म लेने वाला सदाचारी एवं शाकाहारी होगा और मुस्लिम धर्म में जन्म लेने वाला मांसाहारी ही होगा। आचरण निर्माण में बाहरी तत्त्वों की अपेक्षा अंतरदृष्टि अधिक महत्त्व रखती

है। और हर व्यक्ति इसी के आधार पर आचारण करता है।

विरक्त जी आप का कहना ठीक है, आप के साथ काम करते मुझे दो वर्ष हो गये परन्तु मैं आपको आज तक जाति के चश्में से देखती रही इसके लिये क्षमा प्रार्थी हूँ।

कामना जी क्षमा शब्द का प्रयोग कर आप मुझे लज्जित न करे। आप मुझे आप न कहे, मैं उम्र एवं पद दोनों में छोटी हूँ।

उम्र जाति, धर्म पैसा पद इन चीजों से मनुष्य बड़ा नहीं होता कामना जी। मानव का बड़प्पन सदाचार एवं विचार में निहित है। इसी से हमारे जीवन में शुचिता आती है। कामना जी तुमने अपने संघर्ष की कहानी मुझे बताई है मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि नारी के गुण तुममें निवास करते हैं। इसलिये आज मैं तुम से कुछ मांगना चाहता हूँ। विरक्त जी आज आप यदि मुझसे प्राण भी मांगे तो इंकार नहीं करूंगी।

कामना तुम मेरी प्राण हो, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ क्या तुम मुझसे शादी करोगी। कामना कुछ कह न सकी बस खड़ी हो गई। क्या मैंने कुछ गलत कह दिया। नहीं— कामना मुस्कराकर बोली—प्यार की अभिव्यक्ति शब्दों से परे होती है मैं जानती हूँ आप मुझे प्यार करते हैं।

कैसे जान लिया कृपया बताने का कष्ट करें।

मैने पहले भी कहा था कि कुछ बातें बिना कहें ही समझ में आ जाती हैं जब पुरुष-स्त्री को देखेगा तो उसके मुख पर जो नक्शा बनता है उससे किसी हद तक अनुमान लगाया जा सकता है कि उसके हृदय में कैसी हलचल हो रही है।

चेहरों को पढ़ने में अकसर गलती भी हो जाती है, फिर अर्थ प्रधान इस युग के लोगों ने मुखोटे लगा रखे हैं इसलिये यहाँ सावधानी की आवश्यकता है।

आपके विचार से सहमत हूँ, विश्वास में ही विश्वास घात छुपा होता है। प्रेम एवं घृणा दोनों एक ही जगह निवास करते हैं। हम किसी से प्रेम करें जरूरी नहीं की वह भी हमें प्रेम करेगा। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए कामना जी!

केवल प्रेम-प्रेम पाने की वस्तु नहीं है यह तो सिर्फ देने की चाह है। स्व की भावना से मुक्त हो जाना ही प्यार है।

विरक्त नेत्र बंद कर चिंतन करने लगा। क्या सोच रहे हैं विरक्त जी। कुछ नहीं स्यात् तुम ठीक कहती हो—प्रेम व्यक्त नहीं किया जा सकता शब्दों से।

फिर किस तरह प्रकट किया जाय आपके विचार से विरक्त जी।

आचरण से सत्य एवं न्याय के पथ पर चलना ही प्रेम प्रकट करने का मात्र एक तरीका है।

अब मैं समझ गयी।

क्या समझ गई।

प्रेम प्रकट करने का तरीका। आपने मेरी जुठी रोटी खाकर....।

नहीं विरक्त ने कामना को बीच में टोकते हुये कहा—वह प्रेम प्रकट करने का

तरीका नहीं अपितु वासना पूर्ति का माध्यम था।

मैं आप से सहमत नहीं कामना बोली।

यह आपका अभिमत है। प्रेम तो त्याग का प्राय है। हम छुद्र प्राणी उसे कहाँ समझ सकते हैं।

क्या आप मुझे प्यार नहीं करते—कामना का स्वर क्षीण था। विरक्त मुस्करा उठा। मैं आपको प्यार करता हूँ इसलिए आज मेरा मन कह रहा है कि आप से कुछ मांग लू—बोलों इंकार तो नहीं करोगी। मांगो—मैं आप को प्राण भी दे सकती हूँ। कामना भाव के बेग में बह गई विरक्त सोच मग्न हो गया। क्या सोचने लगे आप कामना की बात सुनकर विरक्त का ध्यान भंग हो गया।

सोच रहा हूँ मैं मांगू और आप न दे पायें तो—

ऐसा नहीं हो सकता मैं वचन देती हूँ।

ठीक है मुझे सिर्फ एक चुंबन दे दो।

इतनी सी बात के लिए इतनी बड़ी भूमिका की क्या जरूरत थी।

कामना जी मैं आपके किसी विशेष अवयव को चूमना चाहता हूँ आज्ञा हो तो निवेदन करूं।

आपकी बात सुनकर मैं उलझन में पड़ गई हूँ प्लीज जल्दी कहो। विरक्त ने कामना के कान में जब अवयव का नाम कहा तो कामना खड़ी हो गई। मुझे आप से ऐसी उम्मीद नहीं थी।

मैंने पहले भी कहा था अच्छी तरह सोच समझ लो—अब भी तुम्हारे पास न कहने का विकल्प है। कामना मुस्कराकर बैठ गई। विरक्त जी आप कोई दूसरी पसन्द बताये। ठीक है कान इधर लाओ—विरक्त ने जब दूसरी पसन्द का नाम लिया तो कामना पुनः खड़ी हो गई। विरक्त का कान पकड़कर बोली—यह भी नहीं हो सकता।

मेरी कामना को पूर्ण करना तुम्हारे बस की बात नहीं कामना जी इसलिए मैं तुम्हे वचन से मुक्त करता हूँ।

कामना खिलखिला कर हंस पड़ी—आप का नाम विरक्त है परन्तु आप जो मांग रहे हैं वह पशुता की और ले जाता है इसलिये आप तीसरी पसन्द बातने की कृपा करें। फिर मुकर गई तो—विरक्त मुस्करा पड़ा। नहीं इस बार अवश्य आप की इच्छा पूर्ण कर दूंगी। सुनो विरक्त ने लम्बी साँस ली। एक दिन आफिस में जब तुम मेरे पास आई तो तुम्हे जुखाम था। इतने जोर से छींकी कि तुम्हारी लार मेरे चेहरे पर लग गई और तुमने रुमाल से साफ किया था याद आया।

कामना झेंप गई। उस दिन मुझसे गलती हो गई थी। परन्तु इस बात का यहाँ क्या औचित्य है।

कामना जी मेरी तीसरी पसंद का सम्बन्ध इस घटना से है। सच कह रहा हूँ उस दिन तुम्हारी नासिका लाल हो गई थी, अपनी नासिका जब तुमने ऊंगली से साफ कि

उस समय तुम्हारी नासिका के विवर का सौन्दर्य मुझे कल्पना लोक में पहुँचा दिया था। आज मेरी उस इच्छा को पूर्ण कर दो। कामना कुछ नहीं बोली बस अपना चेहरा विरक्त के सामने कर दिया। विरक्त ने कामना की नासिका को चूमा तो कामना सिहर उठी फिर दोनों एक दूसरे की बाहों में समा गये।

कामना को बाहों से पृथक करते हुये विरक्त ने कहा—कामना जी इस स्वार्थी संसार से मैं सचमुच विरक्त हो गया था, परन्तु तुम्हारे स्नेह एवं त्याग ने मुझे अनुरक्त बना दिया। तुम तन ही नहीं अपितु मन से भी सुन्दर हो। अनेक विचारकों ने नारी को माया कहा है, परन्तु इस सत्य को खारिज नहीं किया जा सकता कि नारी माँ भी है। और कामना जी तुमने जो पशुता की बात कही उसे मैं स्वीकार करता हूँ मैं अपने को पशुता से पृथक नहीं कर पाया। यह पशुता यद्यपि हमें तिमिर की ओर ले जाती है परन्तु यह भी ध्रुव सत्य है कि इसी अंधकार में नवजीवन का प्रारम्भ भी होता है।

विरक्त जी मैं माँ को फोन कर दूँ। इसमें पूछने की क्या बात है। कामना ने माँ को बता दिया कि आने में उसे देरी हो जायेगी चिंता नहीं करना। कामना जब फोन पर बात करने लगी तो विरक्त रसोई में चला गया। क्या कर रहो हो कामना बोली।

तुम्हारे लिये चाय बना रहा हूँ, रहने दो तुम्हारा नहीं यह मेरा कार्य है कामना की बात सुनकर विरक्त मुस्कराया—कामना जी नारी पुरुष के कार्य का पृथकीकरण प्रकृति करती है, तुम नहीं कर सकती। कामना मौन खड़ी रही विरक्त ने चाय बनाया। दोनों चाय पीने लगे। विरक्त बोला—कामना जी अब हमें शीघ्र शादी कर लेनी चाहिए तुम्हारा भाई भी नौकरी पा चुका है।

आप भी अपने माता, पिता से बात कर ले—कामना की बात सुनकर विरक्त उदास हो गया परन्तु दूसरे पल अपने मनोभावों पर नियंत्रण पा लिया। तुम चिंता न करो। मैंने फैसला कर लिया है कि शादी सिर्फ मैं तुमसे ही करूंगा। आज तो तुमने मेरी इच्छा नहीं पूर्ण की परन्तु शादी के बाद तुम्हे मेरी इच्छा पूर्ण करने के साथ-साथ एक अन्य इच्छा पूर्ण करना होगा।इसे भी कान में बताना पड़ेगा। कामना ने विरक्त के मुख के पास कान कर दिया। विरक्त ने जब अपनी बात कामना को बताई तो कामना विरक्त का कान पकड़कर होंठ चूम लिया।

आज तुम सचमुच पशु बन गये हो।

कामना जी इसमें मेरा दोष नहीं दरअसल मुझे इस स्थिति तक पहुचाने वाली तुम हो।

मैं कामना शर्मा गई, फिर झुककर विरक्त के पैर छू लिये। यह क्या कर रही हो विरक्त हतप्रभ हो गया।

विरक्त जी मैं आपकी तरह प्रेमी को लेकर इतनी ऊँची बातें नहीं कर सकती परन्तु आज से मैं आपके पैर छूकर निद्रा देवी की गोद में जाऊंगी। अजीवन इस प्रण

को निभा सकूं प्रभु मुझे इतनी शक्ति देना, कहकर कामना ने नेत्र बंद कर लिये।

❍❍

कामना से विवाह का प्रस्ताव विरक्त ने जब अपने माता-पिता के सामने रखा तो खारिज करते हुये पिता ने दो टूक शब्दों में कहा—यदि तुमने पासी की लड़की से शादी की तो मैं यही समझूगा कि तुम मेरे लिये मर गये। पिता के पक्ष को माता एवं भाई बहन ने समर्थन किया। विरक्त मन ही मन सोचने लगा—जिस परिवार के लिये उसने जीवन अर्पित कर दिया वही उसके सुख को देखना नहीं चाह रहा है। कितना स्वार्थी है संसार इस सत्य ने कई बार उसके अंतर्मन को मथा था। परिवार के प्रति उसकी श्रद्धा खत्म हो गई। उसे इस बात का संतोष था कि उसके भाई बहन अपने पैर पर खड़े हो गये हैं, अब उनको मेरी आवश्यकता नहीं। काफी सोच विचार कर अंततोगत्वा उसने कामना से कोर्ट मैरिज कर ली।

कामना की माँ विरक्त के व्यवहार से अत्यन्त प्रभावित हुई। कामना यद्यपि माँ को अपने साथ रखना चाहती थी, परन्तु माँ को बेटी के यहाँ रहना उचित नहीं लगा। इसलिये वे अपने बेटे के यहाँ चली गई। दोनों भाई कामना को प्यार ही नहीं अपितु सम्मान करते थे। कामना की शादी का दोनों भाइयों ने समर्थन किया उनकी इच्छा थी कि कामना की शादी धूम-धाम से हो, परन्तु उनकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी।

समय आगे बढ़ता रहा। कामना ने बेटे का जन्म दिया। विरक्त कामना को अस्पताल से घर ले आया। घर से कोई नहीं आया। शादी के दो वर्ष हो गये, माता पिता ने आज तक विरक्त के पास फोन तक नहीं किया। शाम का समय था विरक्त ने चाय बनाकर कामना को दी और स्वयं पीने लगा। मेरे कारण आपको कष्ट सहना पड़ा। कामना की वाणी सुनकर विरक्त मुस्करा पड़ा।

आप मुस्करा रहे हैं।

तुम बात ही ऐसी कर रही हो। प्रिय कामना यह संसार दुख का सागर है। इस संसार में रहकर कोई सुखी कैसे रह सकता है। तुम सोचती हो कि घर का काम सिर्फ नारी का है। मेरे विचार से यह धारणा गलत है जब दोनों स्त्री-पुरुष नौकरी करते हो तो उन्हें घर का काम बाँटकर करना चाहिए। इससे दोनों को सुख तो नहीं परन्तु संतोष जरूर मिलेगा।

स्यात् धरती पर यदि पुरुष आप जैसे हो जायें तो निश्चित इस संसार का काया कल्प हो सकता है। पुरुषवादी सोच से आप पूर्णतया मुक्त है। मेरे लिए यह गर्व की बात है। इसलिये यदि आप उचित समझे तो मैं नौकरी छोड़ना चाहती हूँ ताकि बच्चे को माँ का प्यार एवं समय देकर योग्य नागरिक बना सकूँ।

जब तक तुम पूर्ण रूप से ठीक नहीं हो जाती तब तक इस विषय को छोड़ देते हैं। मैं तुम्हे स्वस्थ प्रसन्न एवं सुन्दर देखना चाहता हूँ इसलिये तुम्हारे निर्णय का हानि लाभ की दृष्टि से मूल्यांकन नहीं करूंगा। तुम्हारी प्रसन्नता ही मेरा सुख है। प्रिये

कामना धन मेरे लिये साधन है साक्ष्य नहीं। कामना मुस्कराकर बोली—मैं आज तक आपको समझ न पाई। आप विरक्त हैं, अनुरक्त है या संत है। आप का वास्तविक चेहरा मेरी बुद्धि से परे है।

प्रिये सत्य की अनुभूति बुद्धि से सम्भव नहीं।

फिर उसे कैसे समझा जा सकता है। कामना की वाणी सुनकर विरक्त उठा। शिशु के सर पर हाथ फेरा फिर कामना के अधर चूम लिये। कामना ने लेटे-लेटे ही विरक्त के पैर छू लिये। दो दिन इन चरणों को छू नहीं पाई इसलिए दो बार और छुने दो विरक्त कुछ नहीं बोला बस कामना के केश सहलाने लगा।

❍❍

कामना ने भारतीय स्टेट बैंक की नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। बच्चे के लालन-पालन एवं पति की सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया। विरक्त जब सब्जी काटने लगता तो कामना उसका हाथ पकड़ लेती तो विरक्त तुरन्त चुंबन लेने का उतावला हो जाता। कामना शर्मा कर विरक्त के कपोल चूमकर कहती मैं तुम को सुधार नहीं सकती। दोनों प्रेम के अथाह सागर में निमग्न हो जाते। पति का अर्थ कामना की दृष्टि में पवित्र आत्मा हो गया।

समय ने करवट ली। विरक्त की बहन नेहा के पाँच वर्ष के बच्चे को बुखार हो गया। उसे लेकर नेहा अपने पति के साथ शहर आई और बेटे को अस्पताल में एड़मिट करवा दिया। पहली बार नेहा ने विरक्त को फोन किया। बहन की परेशानी सुनकर तुरन्त विरक्त अस्पताल पहुँच गया। नेहा को संकोच हो रहा था परन्तु विरक्त की आग्रह पर वह घर आई। कामना ने उसका सत्कार किया। तीन दिन में बेटे की तबियत ठीक हो गई। कामना ने नेहा से कहा दीदी क्या आप हमारे यहाँ दो दिन रहेगीं। नेहा इंकार न कर सकी।

नेहा अपने पति एवं बच्चे के साथ विरक्त के घर में ठहर गई। कामना उसकी सेवा में रत हो गई। कुवार की नवरात की अष्टमी थी लोग देवी की भक्ति हेतु व्रत पूजा कीर्तन एवं जागरण कर रहे थे। नेहा ने भी व्रत रखा था। कामना उसके लिये स्वयं बाजार से जाकर फल एवं हवन सामग्री लेकर आई। विरक्त ने भी आज व्रत कर रखा था परन्तु कामना व्रत नहीं कर रही थी। नेहा ने पूछा भाभी आप पूजा पाठ व्रत नहीं करती।

नेहा की बात सुनकर कामना मुस्कराई मैं व्रत नहीं करती, परन्तु क्यों नेहा ने पूछा। दीदी क्यों का जवाब नहीं दिया जा सकता। जहाँ तक मेरा विचार है कि नारी के लिये पति ही देवता है। यदि कोई नारी पति की सेवा इस भाव से करे कि मैं अपने इष्ट की सेवा कर रही हूँ तो इस प्रकार ईश्वर सर्वव्यापक होने के कारण उसको अपनी सेवा मानेगा। इस तरह नारी अपने दोनों लोक यानि यहाँ और वहाँ दोनों जगह अपना स्थान सुरक्षित कर लेगी। यदि पति के प्रति भक्ति भावना नारी हृदय में जाग्रत कर लेगी

तो पति की आत्मा में व्याप्त ईश्वर इसे नजरअंदाज नहीं कर सकता यह मेरा मानना है। जब से मैने शादी की आज तक इस नियम का पालन किया है। इससे मुझे सुख ही नहीं अपितु मन को शक्ति भी मिली है।

कामना की बात सुनकर नेहा चिंतन में डूब गई उसे याद आया बचपन में उसके गाँव में एक संत आये थे। उन्होंने महाकवि तुलसी की एक चौपाई की व्याख्या की थी। नरिधरमु पति देउ न दूजा। आज तक वह इस चौपाई का अर्थ समझ न सकी थी, परन्तु आज कामना की बात सुनकर उसे इस चौपाई के अर्थ की आवश्यकता महसूस हुई। तीन दिन में विरक्त एवं कामना का प्रेम देखकर उसके मन में मंथन होने लगा।

अपने पति के साथ नेहा पिता के पास गई। विरक्त एवं कामना के व्यवहार की भूरि-भूरि प्रसंशा की। विरक्त के माता-पिता एवं भाइयों को कामना के पति प्यार का आदर्श दिखा तो उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ। माता-पिता दोनों सात वर्ष के बाद विरक्त के घर पहुँचे विरक्त माता से लिपट गया। माँ एवं बेटे दोनों देर तक रोते रहे। पिता ने जब अपनी गलती स्वीकार की तो कामना रो पड़ी। आप ऐसा न कहे, मुझे आप लोगों से कोई शिकायत नहीं। कामना की बात सुनकर सभी उसकी प्रंसशा करने लगे।

विरक्त सात वर्ष बाद गाँव आया। पूरे गाँव ने उसका स्वागत किया। विरक्त के पिता ने कहा—जन्म से नहीं व्यक्ति कर्म से बड़ा होता है। कामना बिटिया ने निम्न जाति में भले ही जन्म लिया परन्तु अपने कर्म से सिद्ध कर दिया कि ब्राह्मणत्व जाति का नहीं सेवा त्याग एवं ज्ञान का प्राय है। हमें अपनी पुत्र वधू पर गर्व है। सात वर्ष बाद विरक्त के विवाह के प्रीतिभोज में गाँव के सभी लोगों ने भाग लिया।

नेहा जब अपने घर आई तो उसके मुख पर चमक थी। रात के साढ़े नव बजे जब वह सोने जाने लगी तो पति के पैर छुये। पति ने उसे हृदय से लगा लिया। नेहा की नम्रता से उसके पति के जीवन में बदलाव आया परिणाम स्वरूप नेहा का जीवन महक उठा।

❑❑❑

गंगा माँ

पन्द्रह अगस्त उन्नीससौ सैंतालिस का प्रभात भारतवर्ष में नया सबेरा लेकर आया। आजादी की खुशी में सारा देश झूम उठा। परन्तु कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्हें आजादी का अर्थ भी नहीं पता था, इन्हीं में था गयाप्रसाद निषाद। कठिन मेहनत एवं उपचार के उपरान्त पत्नी ने दम तोड़ दिया। बारह वर्ष का बालक भगीरथ माँ के शव से लिपटकर रो रहा था। गाँव के अधिकांश लोग इकट्ठा थे। यह समाचार जब कालीप्रसाद अग्निहोत्री को पता चला तो वे तुरन्त गयाप्रसाद के द्वार पर पहुँच गये। उन्होंने गयाप्रसाद को समझाया धीरज दिया और पैसे देकर कफन मंगवाया, सारा खर्च वहन किया और चमेली देवी का अन्तिम संस्कार सम्पन्न हो गया।

गयाप्रसाद निषाद को लगा कालीप्रसाद परमात्मा का रूप है। तेरही हो गयी। दो महीना बीत गया। कालीप्रसाद गयाप्रसाद के घर आये कुशल क्षेम पूछा फिर बोले- कालीप्रसाद अब मेरा अस्सी रुपया कृपा करके वापस कर दो। कालीप्रसाद कुछ देर सोच कर बोला इतना पैसा मैं वापस नहीं कर सकता। कोई बात नहीं आप के पास जो दो बीघा खेत है मुझे दे दो। गयाप्रसाद बोला– मुझे थोड़ा सोचने का मौका दो।

कोई बात नहीं कहकर कालीप्रसाद चले गये। एक महीना और बीत गया। कालीप्रसाद आये और आते ही पैसों की चर्चा छेड़ दी। गयाप्रसाद क्या करता अन्त में उसने अपनी जमीन कालीप्रसाद को दे दी। कालीप्रसाद की योजना सफल हुई। इस जमीन पर गाँव के कई लोगों की नजर थी, परन्तु सफलता कालीप्रसाद को ही मिली, क्योंकि वह राजनीति भी जानता था। लोगों की हमदर्दी करके पैसा देना फिर अपने जाल में फँसाकर खून पीकर छोड़ देना उसकी फितरत थी। दौलतपुर में इस समय वह सबसे अमीर व्यक्ति था।

गयाप्रसाद ने जमीन कालीप्रसाद को दे दी परन्तु अन्दर ही अन्दर सुलगने लगा। भगीरथ को जमीन जाने का बेहद दुख था पर कुछ कर नहीं पाया। गयाप्रसाद बड़े अजीब किस्म के इंसान थे। बिना काम के अच्छा भोजन यदि न मिले तो घर में हलचल उत्पन्न कर देते थे। दिन भर गाँव में घर-घर घूमना ठहाका मारते रहना उनकी आदत थी। चमेली देवी जिस दिन से इस घर में आयी उनकी जिन्दगी सुलगने लगी। घर की

जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गयी। गयाप्रसाद को अपने सुख के सिवा अन्य कुछ दिखाई नहीं देता था। चमेली देवी ने उन्हें समझाने की कोशिश की परन्तु उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। धीरे-धीरे चमेली देवी अवसाद की शिकार हो गयीं। बीमार हुई और इस संसार को त्याग दिया।

माँ की मृत्यु के बाद घर की जिम्मेदारी भगीरथ पर आ गयी। गयाप्रसाद को अब पैसा देने कोई नहीं आता। घर में कुछ नहीं था जिसे बेचा जाय। चमेली देवी की मृत्यु के बाद गाय एवं बैल को गयाप्रसाद ने बेच दिया। आम के दस पेड़ थे एक से बढ़कर एक उनका स्वाद आहः सोचकर मुँह में पानी आने लगता। ऐसे पेड़ों को गयाप्रसाद ने एक-एक करके बेच दिया। पहला वृक्ष कटा तो भगीरथ उस दिन खाना नहीं खाया। पूरे दिन रोता रहा। पिता को मना किया तो पिटाई शुरू हो गयी। आखिर विवश होकर भगीरथ ने साइकिल पंचर बनाने की दुकान खोल ली, पढ़ाई छूट गयी।

भगीरथ अब घर नहीं आता, सड़क के किनारे एक छप्पर रख लिया वहीं दुकान करता और सो जाता। सब्जी, भात तो कभी-कभी खिचड़ी बनाकर पेट भर लेता। एक दिन गाँव से समाचार आया कि पिता की तबीयत खराब है वह तुरन्त गाँव गया। गयाप्रसाद को लेकर शहर आया। डॉक्टर को दिखाया दवा शुरू हो गयी, परन्तु फायदा न हुआ दरअसल गयाप्रसाद गांजा पीता था इसलिये उसका फेफड़ा खराब हो गया। भगीरथ पिता की सेवा करने लगा, धीरे-धीरे रोग ने उसे पूर्ण रूप से अपने गिरफ्त में ले लिया और गयाप्रसाद ने प्राण छोड़ दिये। पिता की मृत्यु से भगीरथ को दुःख हुआ, परन्तु उसके जीवन पर इसका असर नहीं पड़ा। पिता ने जीवन में उसे कभी एक बनियाइन भी नहीं खरीद कर दी थी।

पिता के मृत्यु के बाद भगीरथ दुकान नहीं घर में आकर रहने लगा। बचपन में ही उसकी शादी हो गयी थी। भगीरथ की मेहनत से उसके ससुर खुश थे। भगीरथ का जिस दिन गौना हुआ उसे उस दिन माँ की याद आयी। घण्टों रोता रहा। माँ के शब्दों की ध्वनि उसे सुनाई देने लगी। माँ पिता से कह रही थी कि हमने गंगा मैया से प्रार्थना की, माँ हमें एक पुत्र दो, माता ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। इसलिए इस बच्चे का नाम भगीरथ रखा है। माँ की बात सुनकर पिता जी झुंझलाकर बोले— मुझे भूख लगी है पहले खाना दो। घर में खाने को कुछ नहीं था माँ के मुख से निकलते ही पिता ने माँ की पिटाई शुरू कर दी। भगीरथ को याद आया जब वह रोने लगा तो दो थप्पड़ उसे भी पिता ने जड़ दिये थे। चलचित्र की तरह भगीरथ के मस्तिष्क में घटनाएँ घूम गयीं।

रूपवती का सौन्दर्य अतुलनीय था जो भी उन्हें देखता देखता ही रह जाता। ऐसी सुन्दर पत्नी पाकर भगीरथ अपने दुख को भूल गया। रूपवती से उसे अथाह प्रेम हो

गया। परिणाम वह पूरे जोश से अपने कार्य में लीन हो गया। उसकी मेहनत रंग लायी। दो बेटे एक बेटी ईश्वर ने उसे उपहार स्वरूप दिये। उसकी गृहस्थी आगे बढ़ने लगी। परिश्रम से बढ़कर लक्ष्य प्राप्त करने का अन्य कोई वर्त्म नहीं, जो इस पथ पर अनवरत आगे बढ़ता रहेगा उसे अपने अभीष्ट की प्राप्ति अवश्य होगी। भगीरथ निषाद इसका उदाहरण बन गया।

❍❍

सुन्दर पत्नी पाकर लगता है हमने जीवन की बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर ली। नारी क्या कोई भी सौन्दर्य सतही स्तर का ज्ञान है, यह हमारी इन्द्रियों को झकझोर कर मतवाला बना सकता है। परन्तु इसका प्रभाव क्षणिक होता है। भगीरथ पत्नी के सौन्दर्य में इस तरह खो गया कि कई वर्षो तक उसे अपनी चेतना का स्वर ही सुनाई नहीं पड़ा। धीरे-धीरे उसका मोहभंग होने लगा। संसार की चाहे हमें कितनी अनिंद्य वस्तु मिल जाय एक दिन उससे मोहभंग होना निश्चित है। पत्नी की वाणी ने कई बार भगीरथ के हृदय में छेद किया परन्तु वह अपने कर्तव्य का पालन करता रहा।

समय जो इसका मूल्य नहीं समझता उसे एक दिन पछताना पड़ता है। भगीरथ ने समय के मूल्य को समझा बच्चों को अच्छी शिक्षा दी, परिणाम उनका बड़ा बेटा सुन्दरलाल निषाद प्राइमरी में सहायक अध्यापक हो गया। छोटा बेटा प्यारेलाल निषाद विलक्षण प्रतिभा का छात्र था। सरकारी नौकरी करने वालों को वह गुलाम ही नहीं अपितु कुत्ता कहता था। जिस तरह अपने मालिक को देखकर कुत्ता उसके आगे-पीछे घूमता है, हाथ-पैर चाटने लगता है। उसी तरह सरकारी कर्मचारी अपने अफसर के आगे-पीछे घूमते हैं। प्राइवेट नौकरी में भी कुत्ता बनना पड़ता है। इस विचारधारा ने प्यारेलाल निषाद को राजनीति से जोड़ दिया। नेता को उसने अपना आदर्श बनाया। परिणामस्वरूप झूठ, धोखा, बेईमानी का कारोबार करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ा और आज वह देश का माना हुआ वकील है।

भगीरथ की तीसरी संतान बेटी थी। अपने माँ की तरह वह भी रूपवती थी। तेज दिमाग उसे ईश्वर ने दिया था। रूप एवं भौतिक ज्ञान की उस बाला ने कालेज में ही एक ब्राह्मण युवक से प्यार कर लिया। वह चाहती तो सरकारी नौकरी प्राप्त कर लेती परन्तु उसके प्रेमी ने उसे नौकरी करने से मना कर दिया। वह युवक व्यापारी का पुत्र था उसके पास करोड़ों की सम्पत्ति थी। दोनों ने विवाह का प्रस्ताव अपने-अपने घर में रखा। कुछ विरोध के बाद उन्हें अपने-अपने माता-पिता से अनुमति मिल गयी। दोनों का विवाह सम्पन्न हो गया। वह अपने ससुराल चली गई। वकील साहब इलाहाबाद में घर बनाकर रहने लगे। भगीरथ के परिवार की गाँव में प्रशंसा होती। समाज में ऊँची जाति के लोग भी उसका सम्मान करते। गाँव के बुजुर्ग भगीरथ की कहानी जानते थे

वे अपने घर में कभी-कभी सुनाते। उनकी इच्छा प्रबल होती काश हमारे बच्चे भी पैसा कमाते, कार, बँगला, नौकर होते तो अहा कितना सुख होता।

सुख आज के आदमी को पैसों में दिखने लगा है। यद्यपि धन की महत्ता कभी भी कम नहीं थी परन्तु धन आज चरम सीमा पर पहुँच गया है। शक्ति जो सबसे बड़ी ताकत थी वह अब पैसों में सिमट गयी है। पैसों के लिए निर्दोषों का रक्त बह रहा है। ऐसे समय में यदि किसी के पास पैसा हो तो उसकी इज्जत न हो, हो ही नहीं सकता। समाज में लोग भगीरथ की प्रशंसा करते परन्तु भगीरथ के हृदय की वेदना तो सिर्फ भगीरथ ही जानता था।

पत्नी बात-बात पर ताने देती, जिस मुख को देखकर वह अपनी चेतना खो देता था उसे देखकर अब वह घोर निराशा में डूब जाता। मन जब दुखी हो जाता तो एकान्त में आँसू बहा देता। किस से कहे अपनी पीड़ा, संसार में उसका कोई नहीं था। इलाहाबाद में कुम्भ का आयोजन हो रहा था सोचा चलकर गंगाजी में स्नान करूँ, मन हलका हो जायेगा। रूपवती से जब भगीरथ ने संगम में स्नान की इच्छा प्रकट की तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुई। दरअसल रूपवती पूजा, पाठ स्नान, तीर्थ भ्रमण को ही धर्म समझती थी। करवा चौथ के व्रत में वे पानी नहीं पीती। सुबह बिना स्नान किये चाय नहीं पीती। कार्तिक महीने भर तुलसी में दीये जलाती। मंगलवार का व्रत करती। हनुमान चालीसा मुँह जबानी याद था। उनको देख कर यही लगता कि वे बड़े धार्मिक विचार की महिला हैं। उनमें अनेक गुण थे। वाणी इतनी मीठी थी कि उसे सुनकर बिना खाये ही भगीरथ का पेट भर जाता।

रूपवती ने भगीरथ का कभी भी सम्मान नहीं किया। दोनों के विचार पृथक-पृथक थे। ऊपर से धार्मिक दिखने वाली रूपवती सत्य से दूर थी। जब कि दूसरी तरफ ऊपर से नास्तिक दिखने वाला भगीरथ सत्य के समीप था। इसलिए दोनों के रास्ते पृथक थे। माँ के गुणों का प्रभाव बच्चों पर पड़ा वे भी भगीरथ का सम्मान नहीं करते। दुनिया की नजरों में वे सपूत थे। परन्तु भगीरथ के हृदय में उनके प्रति प्रेम नहीं सिर्फ कर्तव्य का भाव था। भगीरथ ने जब पत्नी से संगम स्नान की बात कही तो वे भी तैयार हो गयीं। भगीरथ का मन तो राजी नहीं हुआ पर पत्नी को मना न कर सका। प्यारेलाल की पत्नी को जब यह जानकारी मिली तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुई। रूपवती से बोली— माता जी संगम स्नान करने से प्राणी को मुक्ति मिल जाती है। आप स्नान करने शीघ्र आ जाओ। बहू की आत्मीयता से रूपवती का हृदय गद्गद हो गया। बोली बेटी— मेरा मन कहता है कुछ दिन तुम्हारे साथ रहूँ। माताजी यह भी कोई कहने की बात है आपकी इच्छा पूरी करना हमारा धर्म है। बहू हो तो तुम्हारी जैसी रूपवती का चेहरा खिल उठा। सास-बहू की दूरभाष पर बात सुनकर भगीरथ मुस्कराकर चल दिया।

❍❍

संगम का प्रांगण अनन्त जन समूह से भरा था। आस्था का महापर्व भारत ही नहीं अपितु विश्व में विख्यात है। कई देश के मीडियाकर्मी इस दृश्य को अपने कैमरे में कैद कर रहे थे। पावन गंगाजी में स्नान-दान करके लोग अपने को भव-बन्धन से मुक्त करने का प्रयास कर रहे थे। भगीरथ ने गंगा जी में स्नान किया मन को शान्ति मिली। रूपवती ने पहले स्नान किया, फूल-माला चढ़ाया फिर स्नान किया, जब कि भगीरथ ने एक बार स्नान किया फिर बाहर निकल आया। भीड़ में भी वह अकेला था। स्नान करने के उपरान्त भगीरथ बोला सुन्दर की माँ चलो नागा-साधुओं का दर्शन करते हैं। तुम्हें इस मेले में और कुछ दिखाई नहीं पड़ता। रूपवती ने हाथ नचाते हुए कहा।

देवी जी मुझे दिखाई तो बहुत कुछ पड़ रहा है परन्तु देखा उसे जाता है जो देखने योग्य हो। भगीरथ की बात सुनकर रूपवती ने आँखें नचाई– उधर देखो कितना प्यार है उसे अपनी बीबी से। भगीरथ उस तरफ देखने लगा जिस तरफ पत्नी ने उँगली की थी। बरबस उसके अधरों पर मुस्कान नाच गयी। थोड़ी दूर चला तो एक पंडाल से भागवत पुराण की आवाज आने लगी। पंडित जी गोपियों के वस्त्र हरण का प्रसंग सुना रहे थे। भगीरथ बोला चलो भागवत सुनते हैं। रूपवती खीजती हुई बोली– मुझे भूख लगी है तुम्हें कथा की परी है। रूपवती की बात सुनकर भगीरथ बोला–देवी जी तुम यहीं पर बैठो मैं अभी आया।

थोड़ी देर में चाट एवं जलेबी लेकर भगीरथ आ गया। रूपवती स्वाद ले-ले कर खाने लगी। बहुत अच्छी बनी है। भगीरथ ने मानों सुना ही नहीं, बस चुपचाप जलेबी खाया और पानी पीकर सोचने लगा। लोग अपने आचरण को नहीं सुधारते, बात-बात में झूठ बोलते हैं। रिश्तों को महज अपने सुख के आधार पर परिभाषित करते हैं। दया एवं करुणा का जिनके हृदय में निवास नहीं होता क्या वे सिर्फ गंगा मैया में स्नान कर लेने से मुक्त हो जायेंगे। मुक्ति का यदि इतना सरल रास्ता है तो संसार में प्रेम एवं त्याग का क्या महत्त्व है। वह अपने ख्यालों में खोया था तभी किसी ने पुकारा–भगीरथ अपना नाम सुनकर भौचक्का रह गया। फटी-फटी आँखों से उस बालिका को देखने लगा जो खड़ी मुस्कुरा रही थी। तुम्हें मेरा नाम कैसे पता, भगीरथ के मुख से बरबस निकल गया। बस ऐसे ही। लड़की खिलखिलाकर हँस पड़ी। ऐसा नहीं हो सकता भगीरथ बोला। हो सकता है बाबा–आप को सोच मग्न देखकर मुझे एहसास हुआ सचमुच आप भगीरथ हैं। क्या आपको गंगाजी को धरती पर लाने वाले भगीरथ की कथा पता है। सच कहती हूँ बाबा यदि आज भगीरथ होते तो गंगा मैया की यह दुर्दशा देखकर सचमुच आप जैसे चिंतित नजर आते। आप के मुख पर छायी उदासी देखकर मैंने अनुमान लगाया स्यात् आप गंगा माँ को लेकर गम्भीर हैं, बस मैंने आपको भगीरथ कह दिया।

भगीरथ के अधरों पर स्मित तैर गयी। बेटी निश्चित तुम बुद्धिमान हो। कहाँ की रहने वाली हो। मेरा घर बालिका मुस्कराकर बोली—छोड़ो बाबा इन बातों को यह लो मेरे पास एक माला है यह मैं आपको देना चाहती हूँ। भगीरथ ने बालिका के हाथ से माला ले लिया। रूपवती अभी तक उन दोनों की बातें सुन रही थी। लड़की ने जब माला भगीरथ को दिया तो रूपवती का दिमाग सक्रिय हो गया। रूपवती भगीरथ को पागल समझती थी। उसने महसूस किया कि इस माला के बदले लड़की जो पैसा माँगेगी भगीरथ दे देगा, इसलिए वह भगीरथ से पहले ही बोल उठी—इसकी क्या कीमत है? बालिका ने अपनी आँखें रूपवती के चेहरे पर केन्द्रित कर दी।

कोई युवती चाहे कितनी भी सुन्दर हो उसमें कुछ न कुछ कमी रूपवती निकाल देती थी। आज इस बालिका के सौन्दर्य को देखकर वह हतप्रभ हो गयी। माताजी कहाँ खो गयी तुम बहुत सुन्दर हो—रूपवती के मुख से बरबस निकल गया।

बाबा—क्या मैं वास्तव में सुन्दर हूँ। माताजी के विचार से आप सहमत हैं। बालिका भगीरथ की ओर मुखवित होकर बोली।

बेटी तुम सचमुच सुन्दर हो, क्योंकि तुम्हारा मन पावन है। तुम्हारे विचार निर्मल हैं, एकदम गंगा मैया की तरह। भगीरथ की बात सुनकर बालिका हँस पड़ी। तुम हँस रही हो भगीरथ बोला।

बाबा आप बच्चों जैसी बातें करते हैं। तन की सुन्दरता सभी देखते हैं मन की सुन्दरता यहाँ कौन देख रहा है। स्वर्ग जाने के लोभ में लोग गंगा मैया को गन्दी कर रहे हैं। यदि इन्हें मन की सुन्दरता दिखायी पड़ती तो आज नदियों का अस्तित्व खतरे में न होता। माता जी आप मेरी बातें समझ नहीं पाओगी। लो यह माला देखो— पैसों की चिन्ता मत करो, आप जो दे देंगी मैं ले लूँगी। बालिका ने माला रूपवती को पकड़ा दिया। रूपवती गौर से माला देखने लगी। माला का मूल्यांकन करते-करते रूपवती को लगा मानो वह तुलसी की माला नहीं अपितु भुजंग शावक है। रूपवती का शरीर काँपने लगा माला हाथ से छूटकर गिर गयी और रूपवती बेहोश हो गयी। भगीरथ भौचक्का बालिका को देखता रह गया। भगीरथ कुछ बोले इससे पहले बालिका बोली— बाबा आप चिन्ता न करें, माताजी अभी ठीक हो जायेंगी। बाबा आपने गंगा माँ से कुछ माँगा नहीं, परन्तु वे जानती हैं आपकी क्या इच्छा है। अतः आप परेशान न हों। यह माला आप अपने गले में पहन लें। जिस दिन यह माला आपके गले से टूटकर गिरेगी उस दिन आपको इस नश्वर संसार से मुक्ति मिल जायेगी। भगीरथ के हाथ में माला रखकर लड़की भीड़ में खो गयी। रूपवती को होश आ गया। बिना माला की चर्चा किये भगीरथ से बोली चलो नागा साधुओं का दर्शन किया जाय।

❍❍

भगीरथ कई सालों के बाद इलाहाबाद आया था। इसके पहले प्यारेलाल ने घर उतार किया था तब वह इलाहाबाद आया था। प्यारेलाल माता एवं पिता को घर दिखाने लगा तब और आज के घर में काफी परिवर्तन हो गया था। प्यारेलाल का विशाल भवन देखकर माता जहाँ प्रसन्न थी वहीं भगीरथ सोच मग्न हो गया। इतना बड़ा मकान बनाने में कई करोड़ रुपये लगे होंगे। प्यारेलाल ने इतना पैसा कैसे कमा लिया। भगीरथ निष्कर्ष तक पहुँच न सका।

क्या सोचने लगे पिताजी। कुछ नहीं बेटा तुम्हारा घर इन्द्र महल जैसा है। प्यारेलाल बिना कुछ कहे चला गया। प्यारेलाल के यहाँ भगीरथ का एक महीना गुजर गया।

प्यारेलाल की पत्नी का नाम कुसुम था। सुन्दरता के साथ-साथ दिमाग भी तेज था। सास-ससुर की सेवा करते-करते अब उन्हें कष्ट होने लगा। एक दिन उन्होंने प्यारेलाल से कहा— तुम्हारे माता-पिता कब गाँव जायेंगे। प्यारेलाल ने जवाब नहीं दिया तो श्रीमती को क्रोध आ गया। कल मैं मायके जाऊँगी, मेरी मम्मी की तबियत खराब है। बच्चों को कौन देखेगा—प्यारेलाल बोला।

अब तुम्हारे माता-पिता आ गये हैं मेरा यहाँ क्या काम। प्यारेलाल मन ही मन सोचने लगा। कुसुम के माता-पिता, भाई-बहन भाभी जब आते हैं तो वह कितनी खुशी से सेवा करती है कपड़े पैसे देकर भेजती है। जिस दिन वे जाते हैं खाना नहीं खाती। परन्तु मेरे माता-पिता को रोटी नौकर के हाथ से खाते देखकर भुनभुनाने लगती है। प्यारेलाल अपने विचार प्रकट नहीं कर सकता था क्योंकि कुसुम के सामने वह उच्च न्यायालय का वकील नहीं कुत्ता बन जाता था। पूँछ हिलाने के सिवा उसके पास कोई चारा नहीं, यह काम का कमाल है।

बेटे की परेशानी से भगीरथ अवगत थे। वे अच्छी तरह जान चुके थे चाहे प्यारेलाल हो या सुन्दरलाल कोई भी अपनी बीबी से आँखें मिलाकर बात नहीं कर सकता था। दोनों बहूएँ भगीरथ से घृणा करती थी। एक दिन रूपवती भगीरथ का कुर्त्ता बड़ी बहू को देकर बोली— बेटी धो देना बड़ी बहू ने आग्नेय नेत्रों से सास की तरफ देखा तभी कुसुम बोल पड़ी—पिताजी के कपड़े यदि दीदी धोएंगी तो आप कहेंगी उनको वश में कर लिया। भगीरथ को जब इस बात का पता चला तो बेहद दुःख हुआ। तब से वह स्वयं अपने कपड़े साफ करने लगा।

प्यारेलाल को परेशान देखकर दूसरे दिन भगीरथ गाँव जाने के लिए तैयार हो गया। झूठ को सच बनाने वाला वकील अभिनेता की तरह पिता से बोला अब कब आओगे बाबूजी। भगीरथ ने बेटे की तरफ देखा हम संतान को क्यों पालते हैं। स्यात् इसलिए कि हमारी लाश को ठिकाने लगाए परन्तु अब आज की नई पीढ़ी से यह उम्मीद छोड़ देना बुद्धिमानी होगी।

भगीरथ जब गाँव पहुँचा तो सुन्दरलाल दुखी हो गया। उसने माँ को समझाया था, इलाहाबाद धर्म नगरी है। वहीं रह कर कुछ दिन भगवान का भजन करना। परन्तु भगीरथ एक महीने में वापस आ गये। इस मुसीबत से वह घबड़ा गया। बहू आते ही बोली—माता जी हमारे लिए क्या लायी हो? रूपवती को आज पहली बार प्यारेलाल से दुख हुआ। प्यारेलाल को वह सुन्दर से अधिक मानती थी। दोनों बेटों व बेटी से जो उन्होंने प्यार किया था वैसा प्यार पति से कभी नहीं किया था। भगीरथ भूखा है बीमार है रूपवती ने कभी इसकी चिन्ता नहीं की थी। कई बार रूपवती के दिमाग में यह विचार भी आया कि भगीरथ रहे या मर जाये। परन्तु आज जब प्यारेलाल एवं कुसुम ने चलते वक्त एक पैसा नहीं दिया तो रूपवती के हृदय को आघात लगा। कुसुम का भाई आया बहन आयी उसी के सामने उन पर कई हजार खर्च हो गये परन्तु माँ के लिए बहू बेटे के पास एक पाई नहीं। यहाँ आते ही पैसों की बात शुरू हो गयी।

शाम के वक्त भगीरथ बैठा था। सुन्दरलाल आकर बोला— पिताजी खाना खा लो, भगीरथ उठा तभी बहू की आवाज आयी— फिर हमें खाने तुम्हारे बाप आ गये। गंगा मैया में डूबकर मर जाते तो सत्यनारायण की कथा सुनती। सुन्दरलाल ने पत्नी से विनती की तो उनका क्रोध शान्त हुआ। आज मैं चुप हो जाती हूँ पर शीघ्र ही तुम अपने बाप को अलग कर दो। माँ जी मेरी बात मानती हैं, परन्तु तुम्हारे पिता सत्य एवं ईमान की बातें करते हैं। जिसे सुनकर मुझे दुःख होता है समझे। कुम्भ नहा कर आये हैं हमारे लिए तो कोई बात नहीं दोनों बच्चों के लिए प्रसाद तक नहीं लाये। तुम्हारे बाप को देखकर पाप लगता है। श्रीमती न जाने क्या-क्या बक गयी। भगीरथ बहू की बात सुनकर आज की शिक्षित नई पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य की माँ गंगा से प्रार्थना करने लगा।

❍❍

रूपवती भगीरथ के सिर पर तेल लगाती हुई बोली—आज मुझे दुख हुआ। किस बात का भगीरथ ने सहज भाव से कहा। तुमने सुना नहीं सुन्दर की पत्नी क्या कह रही थी। भगीरथ मुस्कुराकर बोला—कोई नई बात तो नहीं थी। जिन बच्चों को हमने इतनी मेहनत से पाला वे हमें दो रोटी खिलाने का कष्ट नहीं करना चाहते। तुम्हारे लिए भले ही यह नई बात न हो, परन्तु मुझे तो कष्ट हुआ। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। रूपवती की बात सुनकर भगीरथ मन ही मन सोचने लगा कितनी स्वार्थी है दुनिया। सब अपने-अपने सुख में मग्न हैं। कल तक जिस रूपवती ने कभी उसकी परवाह नहीं की थी वही आज अपने स्वार्थ हेतु उसके सिर में तेल लगा रही है। भगीरथ का मौन रूपवती को अखर गया तो वह पुनः बोली, आप कुछ बोलते नहीं क्या सोच रहे हैं।

मैंने निर्णय कर लिया है सुन्दर की माँ– यदि तुम्हें मेरा निर्णय पसन्द है तो तुम भी मेरे साथ चल सकती हो।

कहाँ रूपवती का मुँह खुला का खुला रह गया। भगीरथ मुस्कराकर बोला– उस बालिका के पास जो कुम्भ में मुझे माला दिया था। माला की बात सुनकर रूपवती भयभीत हो गयी। अपने भय को छिपाते हुए बोली–मैं अभी आ रही हूँ। भगीरथ के पास से उठकर रूपवती सीधे सुन्दरलाल के पास पहुँची। सुन्दरलाल घबरा गया।

क्या बात है अम्मा–सुन्दरलाल बोला।

बेटा एक बात तो मैं तुम्हें बताना ही भूल गयी। प्यारेलाल को भी नहीं बताया था। बेटा मेला में तुम्हारे पिताजी को एक युवती ने माला दी थी। कैसी माला–सुन्दरलाल आश्चर्यचकित होकर बोला। कल सुबह देखना तुम्हारे पिता जी ने गले में पहन रखा है। माँ की बात सुनकर सुन्दरलाल की उत्सुकता बढ़ गयी।

सुबह भगीरथ दैनिक क्रिया से निवृत होकर जैसे आया बहू चाय बनाकर ले आयी। बापू जी चाय पी लो। बहू के हाथ से प्याला लेकर भगीरथ चाय पीने लगा। चाय पीते-पीते भगीरथ सोच रहा था बिना स्वार्थ के दुष्ट व्यक्ति नम्रता का प्रदर्शन नहीं करता। बहू की नम्रता का ढोंग भगीरथ को विचित्र लगा। तभी बहू बोली– बापू जी आप जो माला कुम्भ से लाये हैं मुझे भी दिखा दो। रूपवती एवं सुन्दरलाल भी वहीं मौजूद थे। भगीरथ ने गले से माला निकाल कर बहू को दे दिया। बहू ध्यान से उस माला को देखने लगी। उसकी समझ में नहीं आया कि माला किस धातु की है तो वह रूपवती से बोली– माता जी देखो बड़ी सुन्दर माला है किस धातु से बनी है। रूपवती माला हाथ में लेने से इन्कार करते हुए बोली– बेटा तुम देखो।

सुन्दरलाल गौर से माला देखने लगा फिर बोला– बापू जी यह माला आप को किसने दिया। पुत्र की बात-सुनकर भगीरथ मुस्कुराया। बेटा मुझे यह माला एक बालिका ने दी थी, मैंने उसे पैसे देने चाहे पर उसने नहीं लिया।

पिता जी आप इस माला को फेंक दें यह अशुद्ध है। सुन्दरलाल की बात सुनकर भगीरथ चुपचाप चला गया तब सुन्दर बोला–अम्मा इस माला में हड्डी मिली है।

हड्डी–माया देवी के मुख से बरबस निकल गया। आप की आँखें धोखा खा गयी मुझे लगता है माला के मोती सोने के हैं। अच्छा माता जी आप ही बतायें पिता जी की माला किस चीज की बनी है। रूपवती ने गहरी साँस ली– बेटा मैं इस माला को लेने से डरती हूँ।

क्यों? सुन्दरलाल बोला। बेटा जब तुम्हारे पिताजी को वह लड़की माला दिखा रही थी तभी मैंने उसके हाथ से लेकर देखा था मुझे लगा यह माला नहीं मानों नागिन है, मैं डर कर बेहोश हो गयी, आँख खुली तो लड़की जा चुकी थी। मैं डर गयी थी इसलिए

फिर माला की बात तुम्हारे पिता से नहीं की।

ओह—सुन्दरलाल ने गहरी साँस ली। माताजी आप परेशान न हों, मैं प्यारेलाल एवं मुनिया को फोन कर रहा हूँ। कल वे आ जायेंगे तब माला की परख होगी।

❍❍

दूसरे दिन प्यारेलाल एवं मुनिया दोनों आ गये। माला को लेकर रात भर चर्चा होती रही। माँ के प्रति दोनों बेटों का प्रेम प्रगाढ़ हो गया। मुनिया भी भाइयों के साथ थी। सब ने फैसला किया कि इस माला को माताजी किसी तरह पिताजी के गले से निकालें। तीनों बच्चों की राय थी कि माला अशुभ है।

रात को भगीरथ सो गया तो रूपवती माला निकालने के लिए हाथ बढ़ाया, हाथ पहले से ही काँप रहा था। माला को जैसे पकड़ा उसे लगा नाग को पकड़ लिया भय बस मुख से चीख निकल गयी। भगीरथ की आँख खुल गयी क्या हुआ सुन्दर की माँ। साँप रूपवती का मुँह खुला का खुला रह गया। सुन्दरलाल प्यारेलाल एवं मुनिया भी वहाँ पहुँच गये।

सुन्दरलाल बोला—दीदी अब तो यकीन हो गया कि माला अशुभ है। प्यारेलाल तुम तो वकील हो कोई रास्ता निकालो। प्यारेलाल थोड़ी देर सोचता रहा फिर बोला—कल मैं इस माला को पिताजी के गले से निकाल कर ही पानी पीऊँगा। ऐसा नहीं कहते बेटा— रूपवती को प्यारेलाल की बात अखर गयी। माता जी आप बिल्कुल चिन्ता न करें, मुनिया तुम माताजी को समझा दो। ठीक है भइया—कहकर मुनिया माँ को लेकर अपने कमरे में चली गयी।

भाभीजी— प्यारेलाल माया देवी से बोला—पानी गरम कर दो आज पिताजी को मैं स्नान कराऊँगा। पानी गरम हो गया तो प्यारेलाल भगीरथ से बोला—बापूजी स्नान कर लो। आज मैं आपको नानाजी के यहाँ घुमाने ले जाऊँगा। पुत्र की बात सुनकर सरल हृदय भगीरथ नल पर नहाने लगा। घर से गरम पानी साबुन आ गया। प्यारेलाल जब भगीरथ को साबुन लगाने लगा तो भगीरथ चौंक गया अपने पुत्र एवं पत्नी के व्यवहार से वह अच्छी तरह अवगत था। सेवा भाव से प्यारेलाल कफन भी देने वाला नहीं, फिर क्यों वह पिता की सेवा का नाटक कर रहा है। हाँ स्यात् यह माला। माला का ध्यान आते ही भगीरथ ने मन ही मन कहा— माँ गंगे अब तुम ही हमारी रक्षा करो।

भगीरथ को साबुन लगाते-लगाते प्यारेलाल माला को निकालना चाहा। माला को छूते उसे लगा मानो बिजली का तार छू गया। सारा शरीर झनझना उठा। माला निकालने की वकील साहब की योजना असफल हो गयी। परिवार में चर्चा हुई। अन्त में निर्णय हुआ माता जी-पिता जी से कहो वे खुद माला को निकाल कर फेंक दें। बेटों पर मुसीबत न आ जाय, रूपवती को चिन्ता सवार हो गयी। वे भगीरथ के पास आकर

बोली– सुन्दर के बापू यह माला अशुभ है। मुझे यह बात पंडित रामकृपाल पांडे ने बतायी है। बच्चों का इससे अहित हो सकता है इसलिए इस माला को निकालकर फेंक दो। भगीरथ बोला–मैं यह माला नहीं निकालूँगा।

रूपवती को क्रोध आ गया। यदि तुम्हें माला इतनी प्यारी है कि इसे निकाल कर फेंक नहीं सकते तो मैं भी बच्चों का अनभल नहीं होने दूँगी। तुम हमारा घर छोड़ दो। परिवार एक तरफ हो गया। अन्त में भगीरथ ने घर छोड़ने का निर्णय ले लिया।

शाम को भगीरथ को किसी ने खाने के लिए नहीं कहा– सबेरा हुआ भगीरथ नाममात्र का अपना सामान लेकर रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। अस्सी रुपये का गेहूँ बेचकर टिकट लिया और ट्रेन पर बैठ गया। इलाहाबाद पहुँच कर संगम तट पर उस अज्ञात बालिका को खोजने लगा। उसने कहा था– जिस दिन यह माला टूट कर गिरेगी उस दिन आप को नश्वर संसार से मुक्ति मिल जायेगी। भगीरथ को आज मुक्ति की याद आ रही थी। माला ऐसे तो गिरेगी नहीं। जीवन से दुखी होकर भगीरथ ने माला गले से निकाल ली। अपने आप यह माला नहीं टूटेगी, मैं ही इसे तोड़ देता हूँ। भगीरथ ने माला को तोड़ने हेतु जोर लगाया तभी बाबा की आवाज सुनकर रुक गया। देखा सामने वही बालिका खड़ी मुस्करा रही थी।

❑❑❑

ओस की प्यास

विशद के नेत्रों से झर-झर आँसू बह रहे थे। लाख कोशिश के बावजूद वह अपने को संयत नहीं कर पा रहा था। संसार की वास्तविकता से वह अच्छी तरह अवगत था। जीवन के अनुभव ने उसे बहुत कुछ सिखा दिया था। आज वह अबोध शिशु की भाँति रोने लगा रोते-रोते घण्टों हो गये। शरीर निढाल हो गया परन्तु नींद नहीं आयी। विशद चित्रकार था। उठा प्रयास किया परन्तु मन में कोई चित्र नहीं बना। क्या करे उसे ऐसा लगा मानों स्मृति ही विभ्रम हो गयी। आज वह जीवन के मर्म से पृथक मृत्यु की कल्पना में खो गया।

मृत्यु की सुखद अनुभूति ने उसके शरीर को रोमांचित कर दिया। उठा और मृत्यु की गोद में समा जाने का रास्ता खोजने लगा। शरीर पर मिट्टी का तेल डाला और माचिस को हाथ में लेकर तीली निकाल ली। अचानक उसका ध्यान संध्या के चित्र पर चला गया। संध्या सौन्दर्य की देवी थी, इतनी सुन्दर युवती उसने जीवन में कभी नहीं देखी थी। सौन्दर्य की देवी वीनस भी यदि उसके सामने आती तो नतमस्तक हो जाती। संध्या के चेहरे पर जो मुस्कान विशद ने देखी वह रेगिस्तान में जल सदृश थी। उस मुस्कान ने विशद को संसार के सौन्दर्य का बोध करा दिया।

विशद के हाथ से माचिस छूट कर गिर गयी। आत्महत्या जीवन का विराम नहीं हो सकता। एकाएक उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा। शरीर का त्याग कर मैं इस देह से मुक्त हो सकता हूँ परन्तु वासना से नहीं। आज जो मेरी स्थिति है कारण वासना है। वासना से स्वयं को कैसे पृथक करूँ विशद चिन्तन में डूब गया। नेत्र बन्द किये तो कई चित्र चलचित्र की तरह घूमने लगे। क, ख को उसने कब सीखा याद नहीं आया हाँ शंकर नन्दू की कहानी, चंदा मामा दूर के, नन्हीं लाल चुन्नी, गाँव की सैर जैसे पाठ याद आ गये।

माता, पिता, भाई, बहन संसार के सारे रिश्ते उसके सामने घूम गये। किसको अपना कहें उसकी समझ में नहीं आया। जानवर भी अपनी संतान को पालता है परन्तु उसका पिता जिसको देखकर विशद का चिंतन भी रुक जाता था, सरदर्द करने लगा। आखिर अन्त में नींद की गोद में समा गया। सुबह उठा तो शरीर दर्द करने लगा। तीन

वर्ष हो गये परिवार से उसने सम्बन्ध तोड़ा था। गाँव ही नहीं अपितु अपना प्रदेश छोड़कर राजस्थान के एक छोटे से शहर में रह रहा था। चित्र उसकी साधना थी परन्तु कई दिनों से वह कोई चित्र नहीं बना पाया था। वह अपने ख्यालों में खोया था तभी शबनम की आवाज सुनकर चौंक पड़ा। चाचा जी आप क्या सोच रहे हैं।

कुछ नहीं बिटिया—विशद का चिन्तन टूट गया। शबनम ने चाय का प्याला विशद को देते हुए कहा— चाय पियो चाचा जी।

बेटी अभी तो मुँह भी नहीं धोया, आज नींद नहीं आयी। देर से आँख लगी इसलिए उठने में देरी हो गयी।

कोई बात नहीं चाचा जी आप हाथ मुँह धो लें तब आवाज देना मैं चाय लेकर आ जाऊँगी। तभी महक आ गयी। नाना जी-नाना जी कहने लगी। विशद ने उसे गोद में उठा लिया।

❍❍

जनवरी का महीना था। कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी। रेलवे स्टेशन की बेंच पर विशद सो रहा था। मलिक मुहम्मद दिल्ली से आये थे। सुबह के चार बज रहे थे। अपना सामान रखकर मलिक मुहम्मद विशद से बोले— भइया जरा उठ कर बैठो, विशद उठ कर बैठ गया।

मलिक मुहम्मद ने पूछा आपको कहाँ जाना है। विशद ने कोई उत्तर नहीं दिया तो मलिक मुहम्मद भी खामोश हो गये। थोड़ी देर के बाद ट्रेन आयी अचानक एक युवक प्लेटफार्म से कूद पड़ा उसकी तुरन्त मृत्यु हो गयी। मलिक मुहम्मद जिस बेंच पर बैठे थे उससे थोड़ी दूरी पर यह हादसा हुआ था। वे उठकर भीड़ में शामिल हो गये। जाते वक्त उन्होंने विशद से कहा— भइया मेरे सामान का ध्यान रखना। मलिक मुहम्मद वापस आये तो विशद बोला क्या हुआ किसी ने खुदकशी कर ली, सुनकर विशद मुस्करा पड़ा।

किसी की मृत्यु हो गयी, आप मुस्कुरा रहे हैं।

दुनिया जिसे मृत्यु कहती है असल में वह मुक्ति है।

मुक्ति मलिक मुहम्मद ने शब्द को दोहराया फिर बोले— तुम्हारे विचार से मृत्यु मुक्ति है। सुनकर अजीब लगा उधर जाकर देखो कितने लोग उस लाश को देख रहे हैं।

उसे देखने को मेरी इच्छा नहीं— शरीर तो मिट्टी का ढेर है आज नहीं तो कल इसे इस मिट्टी में मिल जाना है। इसलिए किसी के मृत्यु को लेकर सोचना मैं आवश्यक नहीं समझता।

आपकी बातें मुझे विचित्र लग रही हैं। कृपया अपना परिचय बताने का कष्ट करेंगे।

पहले आप अपना परिचय बतायें। विशद मुस्कुराकर बोला।

मेरा नाम मलिक मुहम्मद है। मैं यहीं का मूल निवासी हूँ।

मलिक मुहम्मद जायसी, विशद के मुख से बरबस जायसी शब्द निकल गया। मैं जायसी नहीं हूँ परन्तु जायसी को जानता हूँ। उन्होंने हिन्दी साहित्य को एक महाकाव्य दिया है।

आप जायसी को जानते हैं यह जानकर मुझे खुशी हुई। मलिक मुहम्मद जी मैं सच कह रहा हूँ। अब आप को अपना परिचय देने में अपार हर्ष हो रहा है। मेरा नाम विशद है। उम्र का आप अनुमान लगा सकते हैं। रही बात घर परिवार की तो मैंने उसका त्याग कर दिया है। इसलिए पुरानी स्मृतियों को दोहराने की मैं आवश्यकता नहीं समझता। कहकर विशद चुप हो गया। बड़े अजीब आदमी हो, रहते कहाँ हो?

विशद मुस्करा पड़ा। आपके प्रश्न का मेरे पास उत्तर नहीं है।

ठीक है मेरी एक बात यदि आप स्वीकार करें तो कहूँ।

अवश्य कहें—यदि उपयुक्त लगी तो जरूर स्वीकार करूँगा।

आप हिन्दू हैं क्या मुसलमान के यहाँ रहना पसन्द करेंगे?

विशद हँस पड़ा, आप मुझे हिन्दू कह रहे हैं दरअसल मुझे तो आज तक यह पता ही नहीं चला कि मैं क्या हूँ।

विशद की बात सुनकर मलिक मुहम्मद गम्भीर हो गये। कुछ देर सोचते रहे फिर बोले—आपकी बातें मेरी समझ से परे है। बस इतना कहूँगा यदि आप मेरे घर रहेंगे तो मुझे खुशी होगी। वैसे भी मेरा घर खाली है।

विशद को छत की आवश्यकता थी। उसने मन ही मन सोचा एक नया प्रयोग और सही। कुछ दिन मलिक मुहम्मद के यहाँ रहकर मन को पूर्णतया संसार से मुक्त कर लूँ। विशद को सोच मग्न देखकर मलिक मुहम्मद बोले— आप यदि स्वयं को हिन्दू नहीं तो क्या मानते हैं?

मलिक जी आप के प्रश्न का उत्तर प्रश्न में ही छिपा है। हम इस संसार को मानते हैं जानते नहीं। बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता है वैसे-वैसे मानने लगता है माता-पिता, भाई-बहन, रिश्ते-नाते, धर्म-जाति आदि-आदि। संसार केवल मानने मात्र पर केन्द्रित है। आप ने कहा— मैं मुसलमान हूँ। आप स्वयं को मुसलमान मान रहे हैं जो वस्तु मानी जाती है वह यदि जानी जाय तो अपने स्वरूप से परिवर्तित हो जाती है। इस संसार में जो भी वस्तुएँ हैं वे नष्ट होंगी। संसार का यही सत्य है। मैं हिन्दू हूँ मुसलमान बन सकता हूँ, मुसलमान हिन्दू बन सकता है। मैंने पहले ही कहा था कि मैं क्या हूँ आज तक जान नहीं पाया। परन्तु इतना अवश्य कह सकता हूँ कि मैं एक इंसान हूँ, इंसान की हैसियत से यदि आप मुझे अपने घर में कुछ दिन रहने की अनुमति देंगे तो मुझे खुशी होगी।

विशद की बात से मलिक मुहम्मद अत्यन्त प्रभावित हुए। उसी वक्त मलिक मुहम्मद विशद को लेकर अपने घर आ गये। तब से विशद मलिक मुहम्मद के घर रह रहा है। वह स्वयं खाना बनाता परन्तु जब कभी मलिक मुहम्मद की बेटी शबनम आती तो वह विशद को खाना नहीं बनाने देती।

❍❍

विशद हाथ मुँह धोकर तैयार हुआ तो शबनम को पुकारा बिटिया चाय ले आओ। थोड़ी देर बाद शबनम चाय लेकर आ गयी। चाचाजी रात में आप सोये नहीं लगता है गहन चिन्तन में डूबे थे। तुम ठीक कह रही हो बिटिया तभी महक आ गयी। नाना जी नमस्ते। विशद ने महक को उठाकर हृदय से लगा लिया।

नानाजी मुझे परी वाली कहानी सुनाओ न। महक नीचे उतरो। चाचाजी को चाय पीने दो। नहीं मैं कहानी सुनूँगी—महक जिद करने लगी। शबनम ने विशद की गोद से महक को अपनी गोद में ले लिया बेटी-नानाजी को चाय पीने दो फिर तुम्हें कहानी सुनायेंगे। महक रोने लगी। विशद ने चाय रख दिया। रोओ मत बेटी आओ मैं तुम्हें परी की कहानी सुनाता हूँ। महक खुश हो गयी।

महक बिटिया शैतानी मत करो चाचाजी को चाय पी लेने दो। शबनम महक के केशों को सहलाते हुए बोली। महक चुप हो गयी। विशद चाय पीते हुए बोला— बिटिया तुम अपने लिए चाय नहीं लायी।

चाचाजी मैंने चाय पी लिया है। पिताजी भी चाय पीकर बाहर सैर करने चले गये हैं। वे आप की प्रतीक्षा कर रहे थे तब मैंने बताया चाचाजी आज रात देर से सोये थे।

चाय खत्म हो गयी विशद ने महक को गोद में उठा लिया—अब बताओ बिटिया तुम्हें मैं कौन सी कहानी सुनाऊँ। नाना जी मुझे परियों की कहानी बहुत अच्छी लगती है। चाचाजी परी क्या वास्तव में होती है, शबनम बोली।

बिटिया परी होती है या नहीं यह मैं नहीं जानता परन्तु इतना अवश्य कह सकता हूँ कि मैंने परी देखी है। कहाँ देखी है चाचाजी बताओ।

मेरी गोद में यह परी ही तो है। मैं परी हूँ मम्मी-महक विशद की गोद से उतर कर शबनम से लिपट गयी। शबनम ने महक के कपोल चूम लिए। नानाजी कहानी सुनाओ महक पुनः कहानी की जिद करने लगी।

महक बेटी कहानी शाम को सुनाई जाती है यदि मैं तुम्हें अभी कहानी सुनाऊँगा तो तुम्हारे मामा रास्ता भूल जायेंगे। महक कुछ देर चुप रही फिर बोली— ठीक है नाना जी कहानी आप मुझे शाम को सुनाना पर इस वक्त घोड़ा बन जाओ? महक के कहने पर विशद घोड़ा बन गया। महक उनकी पीठ पर सवार हो गयी। विशद एवं महक का प्यार देखकर शबनम गद्गद हो गयी। मुस्कराकर बोली चाचाजी आप मेरी बिटिया का

इतना दुलार न करें कि बिगड़ जाये।

शबनम बेटी बच्चे प्यार की भाषा समझते हैं, परन्तु बड़े लोग प्यार का भी व्यापार करने लगते हैं। विशद की बात का शबनम ने मूक समर्थन किया। चाचाजी आप परी वाली कहानी सुनाओगे न, शबनम बच्चे जैसे बोली। विशद अपलक शबनम के मुख मण्डल को देखने लगा। उसके चेहरे पर ऐसी मासूमियत की बरबस विशद का हृदय द्रवित हो गया। बेटी आज तुम्हें परी की कहानी सुनाऊँगा। शबनम के साथ-साथ महक भी खुश हो गयी।

❍❍

शबनम ने मलिक मुहम्मद को बताया कि चाचाजी उन्हें परी की कहानी सुनायेंगे तो वे भी सुनने को उत्सुक हो गये। खाना खाने के उपरान्त शबनम महक और मलिक मुहम्मद विशद के कक्ष में पहुँचे। विशद ने महक को गोद में बैठा लिया। बेटी अब मैं तुम्हें परी की कहानी सुना रहा हूँ।

आज से लगभग तीन हजार साल पहले परियों की रानी रूपसी परी पर अत्यन्त प्रसन्न हुई। रूपसी सुन्दर ही नहीं बहुत नेक एवं ईमानदार थी। रानी परी ने रूपसी से कहा— मैं तुम्हें विशेष प्रयोजन हेतु धरती पर भेज रही हूँ। तुम्हें वहाँ जाकर लोगों को सुसभ्य बनाने का कार्य करना है। धरती पर जो लोग सत्य एवं न्याय को आचरण में शामिल करें तुम्हें उनकी सहायता करनी है। बोलो तुम इस कार्य को निष्ठापूर्वक निभा सकोगी। परियों की रानी की बात सुनकर रूपसी अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक बोली—मैं आपके विश्वास को पूरी ईमानदारी से निभाने की कोशिश करूँगी।

मुझे तुमसे यही उम्मीद थी—परियों की रानी बोली। तुम्हारी सुरक्षा हेतु मैं तुम्हें यह अलौकिक शक्तियुक्त छड़ी दे रही हूँ। इसके द्वारा तुम अपनी एवं सत्कर्म करने वाले लोगों की सहायता कर सकती हो। तुम्हारे मनोभावों के अनुसार यह छड़ी रूप बदल सकती है। इसके द्वारा तुम मृत व्यक्ति को जीवन प्रदान कर सकती हो। परन्तु तुम्हें इस बात का सदा ध्यान रखना होगा कि यदि तुमने इसका प्रयोग निज सुख हेतु किया तो यह हमारे पास चली आयेगी।

रूपसी ने रानी परी को प्रणाम किया फिर बोली— आप ने धरती पर मानव को सभ्य बनाने का जो कार्य मुझे दिया है उसे मैं प्राण-प्रण से पूरा करूँगी। अब आप मुझे जाने की आज्ञा दें। रानी परी ने रूपसी को हृदय से लगा लिया। उसके माथे को चूमकर बोली—मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। अब तुम जा सकती हो। रूपसी ने रानी परी को पुनः अभिवादन किया और मृत्युलोक को चल पड़ी। शबनम बेटी उस समय मानव सभ्यता क, ख सीख रहा था। रूपसी मानव समूह में जाकर सद्प्रेरणा देने लगी। भूख, बीमारी, जानवरों से सुरक्षा, गृह निर्माण जैसे कार्य में वह लोगों की सहायता करने लगी।

खेती एवं भोजन बनाने के तरीके वह जाकर लोगों को बताती।

गंगा नदी के तट पर आश्रम बनाकर शमीक नाम के ऋषि साधना के साथ-साथ शिष्यों को ज्ञान प्रदान कर रहे थे। संयोग से रूपसी एक दिन उनके आश्रम में पहुँची। ऋषि ने रूपसी का स्वागत किया। दोनों एक दूसरे से वार्तालाप करने लगे। रूपसी के पास अलौकिक शक्ति थी जिसके कारण उसे घमण्ड हो गया था। ऋषि भी तत्त्वज्ञानी थे। परिणामस्वरूप दोनों एक-दूसरे से प्रभावित हुए। प्रथम मुलाकात में ही दोनों के हृदय में प्रेम का अंकुरण हो गया।

रानी परी के आदेश का रूपसी यद्यपि पालन कर रही थी परन्तु यदा-कदा ऋषि से मिलने लगी। शमीक ऋषि के मन में भी हलचल उत्पन्न हो गयी। परिणामस्वरूप वे अपने ग्रन्थ, मुक्ति का पथ, पर काम नहीं कर पा रहे थे। जिस अलौकिक शक्ति में उन्होंने मन को केन्द्रित कर लिया था वह विचलित हो रही थी। ऋषि के हृदय में रूपसी से प्यार उत्पन्न हुआ तो मन का सन्तुलन बिगड़ जाना स्वाभाविक था। मन के द्वन्द्व को नैतिक बनाने का उन्होंने वर्त्म खोज लिया। उन्होंने अपने आप को इस तरह समझा लिया कि रूपसी के प्रति जो उनकी आसक्ति है वह कृष्णमय है। रूपसी का सौन्दर्य उन्हें दिव्य दिखने लगा। धीरे-धीरे वासना ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया, परन्तु यदा-कदा वे कृष्ण का भी स्मरण करते रहे।

रूपसी भी शमीक के आकर्षण में बंध गयी। धरती पर आने का प्रयोजन भूल कर शमीक की दीवानी हो गयी। एक दिन वार्तालाप में प्रेम को लेकर चर्चा होने लगी। शमीक ऋषि ने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। रूपसी की भी यही इच्छा थी वह गद्गद हो गयी। तिथि निश्चित हो गयी, शरत् पूर्णिमा।

विवाह सम्पन्न हुआ। सुहाग कक्ष में रूपसी को पाकर ऋषि को जो हर्ष हो रहा था वह अकथनीय है। रूपसी को धरती पर आने का प्रयोजन सफल लग रहा था। अचानक उसका ध्यान अपनी अलौकिक छड़ी पर चला गया। आज तक उसने उसका प्रयोग नहीं किया था। प्रयोग की इच्छा बलवती हो गयी। शबनम अपने आप को रोक न सकी बोली– चाचाजी फिर क्या हुआ? मलिक मुहम्मद विशद की कहानी को जायसी की अमरकृति पद्मावत सदृश सुन रहे थे, वे बोले– विशद भाई तुम्हारी कहानी रोचक है। महक बेटी तुम्हें मेरी कहानी कैसी लग रही है, विशद ने कहा।

नानाजी बहुत अच्छी। महक की बात विशद को बहुत अच्छी लगी। सचमुच महक उसे परी लग रही थी। चाचाजी आगे क्या हुआ शबनम बोली। बेटी रूपसी प्यार को तौलने की कोशिश करने लगी। वह शमीक से बोली– आप मुझे कितना प्यार करते हैं। शमीक ऋषि ने सहज भाव से उत्तर दिया, अपने प्राणों से अधिक। रूपसी ने अपनी छड़ी को कटार में परिवर्तित करके कहा– यदि आप मुझे प्राणों से अधिक प्यार करते

हैं तो इस कटार को पेट में मार लो।

देह आकर्षण का प्रभाव शमीक ऋषि पर इस तरह हाबी हुआ कि उनका चिन्तन ही खत्म हो गया। जड़त्व से चैतन्य की ओर जाने वाला, मुक्ति का पथ तलाशने वाला जीवन के मर्म में उलझ गया। रूपसी के हाथ से कटार लेकर पेट में धंसा लिया।

दर्द से ऋषि छटपटा उठे। अपने प्रिय ग्रन्थ मुक्ति का पथ हृदय से सटा लिया, रक्त से ग्रन्थ भीग गया। रूपसी ने तुरन्त छड़ी को हाथ में लेकर शमीक ऋषि को जीवन देने की प्रार्थना की। रूपसी की प्रार्थना पर रानी परी प्रकट हो गयी। शमीक ऋषि तड़प कर शान्त हो चुके थे। रूपसी ने रानी परी को प्रणाम किया—माँ मेरे पति को जीवन दे दो, निवेदन भी।

रानी परी ने रूपसी के हाथ से छड़ी को लेकर अदृश्य कर दिया। रूपसी तुम्हें याद है न— मैंने तुमसे कहा था अपने सुख के लिए ईश्वरी शक्ति का प्रयोग नहीं करना। परन्तु तुमने मेरी शक्ति का ही नहीं अपितु प्यार का भी दुरुपयोग किया है। किसी के प्यार में स्वयं को कुर्बान करने वाला धरती पर आज से महान कहा जायेगा, परन्तु प्यार का सौदा करने वाला परमात्मा के दरबार में कभी नहीं जायेगा।

रूपसी ने हाथ जोड़कर रानी परी से विनती की—माँ मुझे क्षमा कर दो मुझसे भूल हो गयी। प्रायश्चित करने का अवसर दो। मेरे पति को जीवन दान दो।

रूपसी तुम्हें गलती का एहसास है यह जानकर मैं प्रसन्न हूँ। परन्तु तुम्हारे पति को जीवनदान देना मेरे बस के बाहर है। यह कार्य तो परमात्मा ही कर सकता है। परन्तु मेरी प्रिये रूपसी तुम निराश न हो मैं तुम्हें वरदान देती हूँ कि आज से तुम अदृश्य रूप में इस धरती पर सदा रहकर सच्चे मन से प्रेम करने वालों को अलौकिक शक्ति प्रदान कर उन्हें परमात्मा तक पहुँचाने में सहायता करोगी। बोलो इस बार तो गलती नहीं होगी। रूपसी ने स्वीकृति में सिर हिला दिया। तब से लेकर आज तक वह रूपसी परी सच्चे हृदय से प्रेम करने वालों को परमात्मा से जोड़ रही है। अनेक विचारकों एवं चिन्तकों के मन में निवास कर उस परी ने प्रेम को संसार में महान ही नहीं, जीवन का सार बना दिया है।

आपकी कहानी में सुख एवं दुख का संगम है भाई-मलिक मुहम्मद का गला रुंध गया। शबनम के नेत्र भर आये और महक मानों महक रही थी। उस बच्ची के मुख पर जो शान्ति थी उसे देखकर विशद को लगा मानों वह कोई योगी है जिसका इस संसार से कोई सम्बन्ध नहीं। शबनम एवं मलिक मुहम्मद को गम्भीर देखकर विशद बोला—बिटिया कहानी खत्म हो गयी।

चाचाजी उस ग्रन्थ का क्या हुआ जो शमीक ऋषि लिख रहे थे। बेटी शबनम ऋषि शमीक के रक्त से सनकर वह ग्रन्थ भी शमीक की देह तुल्य नष्ट हो गया। यदि

उनका ग्रन्थ आज होता तो भौतिकता की दौड़ में शामिल इंसान को मन की शान्ति अवश्य प्रदान करता।

❍❍

शबनम कटक विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र की प्रोफेसर थी। माता-पिता की वह एकलौती सन्तान थी। बचपन में ही माताजी का देहान्त हो गया था परन्तु मलिक मुहम्मद ने दूसरी शादी नहीं की। शादी के बाद वह पिता को अपने साथ ही रखती थी परन्तु यदा-कदा मलिक मुहम्मद गाँव आते-जाते थे। गाँव से उन्हें बहुत प्यार था। रेलवेस्टेशन पर विशद से मुलाकात हुई तो आत्मीयता में परिणत हो गयी। विशद को वे अपने घर ले आये, तब से वह यहीं रह रहा है।

धीरे-धीरे एक वर्ष बीत गया। पिता के साथ शबनम भी कई बार गाँव आयी उसने हर बार विशद को गम्भीर देखा। शबनम के मन में आया कि विशद के जीवन के बारे में बात करें पर संकोच बस बात न कर पायी। आज विशद की कहानी सुनकर शबनम गहरे चिन्तन में खो गयी। उसने भी दर्शनशास्त्र का गहन अध्ययन किया था।

प्रातःकाल मलिक मुहम्मद के साथ विशद टहलने निकल गया। दोनों आपस में धर्म-दर्शन की बातें किया करते थे। टहलने के बाद जब दोनों वापस आये तो शबनम चाय लेकर पहुँच गयी। विशद ने चाय का प्याला उठाते हुए कहा बिटिया आज तुम चिन्तित लग रही हो, इस तरह पहले तुमको मैंने गम्भीर नहीं देखा।

आप सच कह रहे हैं चाचाजी—यदि आप उचित समझें तो मैं एक प्रश्न करना चाहती हूँ। शबनम की वाणी सुनकर विशद मुस्करा उठा फिर बोला— प्रश्न करो बिटिया तुम विदुषी हो, यथा सम्भव तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करूँगा।

चाचा जी कल आपकी कहानी सुनकर मैं चिन्तन में उलझ गयी। मेरे मन में प्रश्न है कि प्रेम बन्धन है या मुक्ति?

शबनम का प्रश्न सुनकर विशद गम्भीर हो गया। बेटी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मेरे समझ से परे है। तुम्हारी तरह मैं दार्शनिक नहीं हूँ फिर भी मेरे जीवन ने जो अनुभव मुझे प्रदान किया है उसके आधार पर मैं प्रेम को बन्धन नहीं मानता। परन्तु प्रेम किससे किया जाय यह विचारणीय है। संसार में ऐसा कोई भी तत्त्व नहीं जो प्रेम के लायक हो। यहाँ की हर वस्तु मिथ्या है। अज्ञान के वशीभूत हम जिन लोगों से प्यार करते हैं वे हम से सिर्फ अपना हित साधते हैं। कोई भी रिश्ता स्वार्थ से परे नहीं अस्तु इस धरती पर प्यार करने लायक कुछ भी नहीं है। हम अपनी प्यास जिन चीजों से बुझाना चाहते हैं वे सब के सब ओस की बूँद सदृश हैं इन से प्यास बुझती नहीं अपितु बढ़ जाती है।

मलिक मुहम्मद विशद की बातों को ध्यान से सुन रहे थे। उनके माथे पर सिलवटें पड़ गयीं कुछ सोचकर बोले—विशद जी आपकी बातें हमारी समझ में नहीं आ रही हैं।

शबनम बोली—पिताजी चाचा कहते हैं कि मैं दार्शनिक नहीं हूँ परन्तु इनके जीवन ने इन्हें दार्शनिक बना दिया है। तुम ठीक कह रही हो बेटी मैंने सारे रिश्ते नातों का मन्थन किया अपनों के अलावा दूसरों को प्यार किया परन्तु सब ने मुझे पागल समझा। मैंने संसार का मन से त्याग कर दिया, तुम्हारे पिताजी मुझे यहाँ ले आये। यहाँ पर मैंने शान्ति की अनुभूति की।

चाचाजी अब मैं आप से कोई प्रश्न नहीं करूँगी। क्या आप मेरी इच्छा पूरी करेंगे। शबनम की आँखें भर आयी। विशद मुस्कुरा कर बोला—दर्शन का पण्डित किसी संसारी के लिए शोकाकुल हो तो मैं इसे अज्ञान कहूँगा।

बेटी तुम जिस चीज को लेकर चिन्तन कर रही हो उसके प्रति मेरी जो धारणा है उससे तुम सहमत नहीं होंगी मैं जानता हूँ। परन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मुझे सागर से मिलने में रुकावट पैदा नहीं करोगी।

चाचाजी मैं आपके पैर में जंजीर कभी नहीं डालूँगी। ओस की बूँद से प्यास नहीं मिट सकती। इस सत्य को मैं क्या दुनिया का कोई भी चिन्तक खारिज नहीं कर सकता। संसार के सारे रिश्ते नाते मन मलिन ही करते हैं। परन्तु आप इस सत्य का खण्डन नहीं कर सकते कि सगुण से ही निराकार का पथ प्रदीप होता है। साकार उपासना जिस तरह मन की मलिनता को स्वच्छ करती है, उसी तरह सांसारिक प्रेम भी हमारे हृदय में प्रकाश उत्पन्न करता है। शंकर ने अपने सिद्धान्त में संसार को पूर्णतया खारिज नहीं किया है। भाव यद्यपि बन्धन का कारण है फिर भी पवित्र भाव हमारा पतन नहीं कर सकते। इसलिए चाचाजी मेरी इच्छा को पूर्ण करने का वचन दो। विशद कुछ न कह सका बस महक को उठाकर हृदय से लगा लिया। बरबस उसका हाथ शबनम के सिर पर चला गया। विशद की मौन स्वीकृति पाकर शबनम का चेहरा खिल उठा।

❑❑❑

मानव

अरुणाचल प्रदेश का खूबसूरत ग्राम धवलपुर। लगभग डेढ़ सौ आबादी वाले इस ग्राम को भारत की बिन्दी कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। यहाँ पर स्कूल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, आँगनबाड़ी एवं सरकार द्वारा चलायी जा रही समस्त योजनाएँ अपने यौवन पर मौजूद हैं। यहाँ के निवासी कर्मठ ईमानदार हैं। दूसरों के लिए गाँव मिशाल है। यहाँ की प्राकृतिक अनिंद्यता हृदय में स्पन्दन उत्पन्न कर देती है। छोटे-छोटे पर्वत श्रृंखलाओं के बीच की समतल जमीन पर फल, सब्जी एवं अनाज की फसल देखकर मनमयूर नृत्य करने लगता है। तरह-तरह के जीव-जन्तुओं की दुर्लभ प्रजाति यहाँ की धरती पर विद्यमान हैं। वानस्पतियों का क्या कहना यहाँ पर इनका विपुल भण्डार है।

गाँव से पूरब दिशा में एक विशाल वटवृक्ष है। इस वृक्ष को लेकर गाँव में अनेक जनश्रुतियाँ सुनने को मिलती हैं। इस वृक्ष के नीचे देवी माँ की प्रतिमा है। इस प्रतिमा का स्थापना कब हुई, किसने की इस प्रश्नों का उत्तर यद्यपि नहीं है परन्तु यह प्रतिमा आस्था का केन्द्र है। दूर-दूर के गाँव वाले यहाँ अपनी मनोकामना को लेकर आते हैं जिन लोगों की मनोकामना पूर्ण होती है वे देवी माँ को प्रसाद चढ़ाते हैं। कुछ लोग घण्टी बाँधते हैं। यहाँ पर अनेकों घंटियों टंगी हैं। तर्कशास्त्र की दृष्टि से यद्यपि आस्था का मूल्यांकन करना कठिन है फिर भी आस्था के महत्त्व को पूर्ण रूप से खारिज नहीं किया जा सकता। जीवन को सुचारु रूप से चलाने हेतु हमें एक अवलम्बन की आवश्यकता होती है। इसलिए आस्था के साथ जो आत्मविश्वास पर दृढ़ रहता है उसकी सफलता निश्चित है।

सायं के चार बजे थे सूर्यदेव अस्ताचल की ओर तीव्र गति से बढ़ रहे थे वर्जना तेज गति ये चलती हुई देवी माँ को प्रणाम किया और आगे बढ़ गयी। यह उसका नियम था। शाम के वक्त जब वह पक्षियों का शिकार करने आती तो देवी माँ के पास अवश्य आती। देवी माँ को प्रणाम करने के उपरान्त चाकू निकालकर वर्जना पत्थर पर तेज किया फिर मंद गति से आगे बढ़ी। इस स्थान से थोड़ी दूर पर एक नाला बहता था वर्जना वहीं आकर पत्थर पर बैठ गयी।

कलरव की ध्वनि करते पक्षी अपने गंतव्य की ओर उड़ रहे थे। वर्जना ने गुलेल निकाल कर प्रहार कर दिया। पक्षी घायल होकर गिरा। दौड़कर वर्जना ने उसे उठाया और चाकू निकाल कर पक्षी का सिर काट दिया। तभी उसकी नजर तर्षण पर पड़ी। तर्षण को वर्जना ने कई बार देखा था परन्तु न जाने क्यों आज उसके मन में एक प्रश्न उत्पन्न हो गया। वह यहाँ किसलिए आता है कहीं मुझे देखने तो नहीं, बस इससे अधिक वर्जना सोच न सकी। पुरुष जाति के प्रति वर्जना के मन में घृणा थी। आज युवक कुछ ज्यादा ही करीब पहुँच चुका था, अस्तु वर्जना का सब्र टूट गया। क्रोधावेश में उसकी मुट्ठियाँ भिंच गयीं, साँस तेज हो गयी। अपने उद्वेग को रोक न सकी चीख पड़ी ठहरो। वर्जना की आवाज सुनकर तर्षण ठिठक कर रुक गया। मुख से कुछ न बोला। मेरे पीछे-पीछे यहाँ किस लिए आते हो। वर्जना का स्वर तेज था। तर्षण अब भी मौन– तुम इस प्रकार मौन नहीं रह सकते। आज तुम्हें बताना होगा मेरा पीछा क्यों करते हो? तर्षण अब भी मौन। वर्जना का विवेक रुग्ण हो गया। आवेश में चाकू निकाल कर प्रहार कर दिया। तर्षण की दायीं जाँघ को चीरता हुआ चाकू दूर जा गिरा, दौड़कर वर्जना ने चाकू उठाया और अन्धकार में खो गयी।

❍❍

तर्षण ने बड़ी मुश्किल से अपने आप को सम्भाला। रक्त से पैण्ट भीग गया। पैण्ट को निकालकर जाँघ पर बाँधा फिर मोबाइल से फोन किया। रास्ता दुर्गम था, मोटर साइकिल भी वहाँ तक नहीं आ सकती थी। दो कर्मचारियों को तर्षण ने देवी माँ के पास आने को कहा। बड़ी मुश्किल से वह देवी माँ के पास तक पहुँचा। तर्षण को एहसास हुआ, युद्धभूमि में घायल होने वाला सिपाही भी इस तरह असहाय नहीं होता होगा, उसके पास भी सहारा देने वाला कोई साथी होता होगा। ड्राइवर एवं नर्सिंग असिस्टेंट को देखकर तर्षण अचेत हो गया।

नर्सिंग असिस्टेंट ने तर्षण का प्राथमिक उपचार किया। चाकू जाँघ के बगल से निकला था इसलिए घाव गहरा नहीं था। तर्षण को होश आया। ड्राइवर ने बात करना उचित नहीं समझा। दोनों के सहारे किसी तरह तर्षण अपने कमरे तक आया। ड्राइवर परिवार के साथ रहता था। घर जाकर खाना ले आया। दवा के असर से तर्षण का दर्द कम हो गया।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र धवलपुर में दो वर्ष पूर्व उसकी नियुक्ति हुई थी। उत्तर प्रदेश का वह मूल निवासी था। पिता सेना में नौकरी करते थे, उन्होंने यहाँ पर शादी की, एक वर्ष बाद उनकी पोस्टिंग राजस्थान में हो गयी। फिर वे लौटकर नहीं आये। माँ उनकी याद में रोते-रोते बीमार हुई और इस संसार को छोड़ दिया। नानी ने उसे पाला था। हाईस्कूल पास करने के बाद वह आगे पढ़ाई जारी न रख सका। नानी को

वह प्राणों से अधिक प्यार करता था। परन्तु पिछले वर्ष उन्होंने भी इस दुर्गन्धयुक्त संसार को त्याग दिया।

नानी की मृत्यु ने तर्षण का हृदय लहूलुहान कर दिया। एकान्त में वह अपने आँसुओं के वेग को रोक नहीं पाता। फफक-फफक कर रो पड़ता। रोने से मन को शान्ति मिल जाती। एक दिन वह देवी माँ के पास आकर खूब रोया। मन शान्त हुआ तो धीरे-धीरे घर की तरफ चला। तभी सामने से वर्जना आ गयी। गोरा रंग मासूम मुख बड़ी-बड़ी आँखें उसकी सुन्दरता तर्षण के अंतःकरण में समा गयी। पहली दृष्टि में ही उसके मन में विशेष प्रकार का स्पन्दन हुआ। यद्यपि तर्षण ने वर्जना को भुलाने की कोशिश की परन्तु सफल न हो सका। वर्जना को देखने की प्रबल उत्कंठा के वशीभूत उसके कदम देवी माँ की तरफ स्वमेव बढ़ जाते। वर्जना को देखकर वह अपने अंतःकरण की प्यास बुझा लेता।

यदा-कदा वह स्वयं अन्तर्द्वन्द्व में उलझ जाता, यह कैसी प्यास है, क्यों है। क्या मिलता है उसे उस बाला को देखकर। बहुत चिन्तन करता पर किसी निष्कर्ष पर पहुँच न पाता। अब उसे देखने नहीं जाऊँगा प्रतिज्ञा करने की सोचता पर प्रतिज्ञा न कर पाता। एक सप्ताह मुश्किल से बीतता। इतवार आता तो स्वमेव कदम आगे बढ़ जाते। आज भी वह इन्हीं विचारों में खोया यंत्रवत चलकर पहुँचा था। वर्जना ने जब उससे प्रश्न किया तो संकोचवस उत्तर न दे सका। परिणाम वर्जना ने चाकू मार दिया। सोचते-सोचते ध्यान घाव पर चला गया। चेहरे पर दर्द भरी मुस्कान तैर गयी। क्या उसे अब भी देखने जाओगे मन में प्रश्न उठा। हाथ घाव पर फेरा फिर करवट बदल ली। परन्तु प्रश्न ज्यों का त्यों था। अन्त में वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि घाव भर जाने पर एक बार उससे अवश्य बात करेगा।

❍❍

वर्जना घर पहुँची तो अंधेरा घना हो चुका था। आज उसके कदम में वह गति नहीं थी जो प्रायः हुआ करती थी। पक्षी का शिकार करके जब वह चलती तो लगता मानों पंख लग गये हों। परन्तु आज उसका मन उदास था। पक्षी का गला काट दिया था परन्तु पंख लगे थे। दीपक जलाया, रोशनी में जब उसका ध्यान पक्षी के पंख पर पड़ा तो मुस्कुराहट तैर गयी। परन्तु दूसरे क्षण चेहरे पर गम्भीरता ने डेरा डाल दिया। पक्षी को उसी तरह रख दिया और चुपचाप चारपाई पर लेट गयी। माँ की आकृति नेत्रों के सामने घूम गयी। सोचते-सोचते अतीत में खो गयी।

तुम्हारी माँ इतनी बुड्ढी कैसे हो सकती है, एक दिन एक बच्चे ने उससे प्रश्न किया। वर्जना का कोमल मन गहरे चिन्तन में डूब गया। धीरे-धीरे उसे प्रश्न का उत्तर मिल गया। उसकी माँ का नाम रोमा था। रोमा रूस की नागरिक थी, वे भारत भ्रमण

करने आयी थी। यहाँ की सुन्दरता उन्हें इस हद तक भा गयी कि वे अपना वतन ही भूल गयीं। धवलपुर की होकर रह गयीं। लोगों की सेवा करना उनका धर्म था। वास्तव में वे संत थीं। एक दिन उन्हें लावारिस नवजात बच्ची मिली। दिल में आया कि किसी अनाथालय में दे दूँ पर हृदय में ममता का ऐसा प्रवाह बहा कि वे ऐसा न कर सकी। इस बच्ची को उन्होंने पुत्री तुल्य पाला और उसका नाम वर्जना रखा।

रोमा ने वर्जना को सत्य से अवगत करा दिया। इस सत्य से परिचित होने के उपरान्त वर्जना के हृदय में रोमा के प्रति जो प्यार उत्पन्न हुआ वह वास्तविक माँ के प्रेम से बहुत ऊँचा था। वर्जना की दृष्टि में रोमा एक देवी थी। रोमा की मृत्यु ने वर्जना की जिन्दगी में एक ऐसा बिरानापन उत्पन्न किया जो प्रति क्षण गहरा होता चला गया। वर्जना को अपने माता-पिता का ज्ञान नहीं था। एक दिन उसने एक कुतिया को देखा छः बच्चों को दूध पिला रही थी। वर्जना इस दृश्य को देखकर गहरे चिन्तन में खो गयी।

कौन है इन बच्चों का पिता! पता नहीं मैं भी क्या-क्या सोचने लगती हूँ। नहीं मैं ठीक सोच रही हूँ, मुझे इस विषय पर सोचना ही चाहिए। बिना पिता के इनका जन्म हो ही नहीं सकता। इसका मतलब पुरुष जाति अपने उत्तरदायित्व से भागती है। हाँ यही ठीक है। सारे जीव-जन्तुओं में पुरुष वर्ग मादा को गर्भवती करके उसे नव्य संसार के निर्माण का कार्य तो दे देता है, परन्तु उसमें सहायता नहीं करता। आखिर क्यों? इसका उत्तर वर्जना खोज न सकी। जीव-जन्तुओं से ऊपर उठकर जब वह मानव पर ध्यान केन्द्रित करती तो स्वयं को इस मोड़ पर पाती, कि अपना पथ दिखाई नहीं पड़ता।

जीवन में उसने जिस कटुता को महसूस किया था उससे स्वयं को निकाल पाना कठिन था। अस्तु वह यही समझने लगी कि पुरुष जाति ही स्वार्थी है। इस धारणा ने उसके मन में पुरुषों के प्रति घृणा उत्पन्न कर दी। इसी धारणा के वशीभूत होकर आज उसने तर्षण को चाकू मारा था। सोचते-सोचते वर्जना सिसक पड़ी। यह मैंने ठीक नहीं किया। मुझे उसे चाकू नहीं मारना चाहिए था। कहीं पेट में लग जाता तो बस इससे आगे वर्जना सोच न सकी, फफक-फफक कर रो पड़ी।

❍❍

तर्षण का घाव भर गया, परन्तु निशान दे गया। नारी सौन्दर्य ने जहाँ उसके हृदय में पवित्र भावों का सृजन किया, वहीं इस निशान ने उसके विचारों पर गहरा आघात किया। हृदय में बिना वर्जना से बात किये दरस मात्र से प्रेम उदय हुआ था, वह निरन्तर तर्षण के विवेक को झंकृत कर रहा था। एक दिन यंत्रवत् उसके कदम चल पड़े। देवी माँ के पास पहुँच कर माँ को प्रणाम किया और बैठ गया। चक्षु वर्जना के दरस को व्यग्र थे।

वर्जना ने अपना नियम नहीं तोड़ा था। वह प्रतिदिन देवी माँ के पास आती परन्तु अब उसके हाथ में गुलेल एवं चाकू नहीं था। जिस दिन उसने तर्षण के पैर में चाकू

मारा उस दिन रात भर सो न सकी। मन में नाना प्रकार के विचार उधम मचा रहे थे, अन्त में उसने निश्चय किया कि अब वह किसी भी पक्षी का शिकार नहीं करेगी। बचपन से वह माँस खाने की आदी हो गयी थी। बिना माँस के उसे खाने में स्वाद ही नहीं आता था, परन्तु न जाने किस अज्ञात शक्ति के वशीभूत उसने मांस खाना छोड़ दिया। प्रकृति द्वारा उसे इस ज्ञान का भान हुआ कि नर प्राणी अधिक खुदगर्ज है। मादा जो नये जीवों का सृजन करती है उसका हर तरफ शोषण हो रहा है। मनुष्य विवेकशील प्राणी है परन्तु उसने भी नारी के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं किया है। नर-नारी के प्रति दोहरे मानदण्ड निश्चित करने वाले विद्वानों के प्रति वर्जना के मन में आक्रोश व्याप्त था। प्रकृति ने अपने प्रयोजन को पूर्ण करने हेतु नर-नारी का सृजन किया है परन्तु इस अन्तर को पक्षपात दृष्टिकोण से देखना वर्जना तर्कसंगत नहीं मानती थी। इन्हीं विचारों ने वर्जना के मन में पुरुष के प्रति घृणा भर दी। यहाँ तक मादा पक्षी जब उसका शिकार होती तो दुखी हो जाती। तर्षण को चाकू मारने के बाद उसके विचारों में मंथन शुरू हुआ। अस्तु, तर्षण को देखने की इच्छा जाग्रत हो गयी।

वर्जना ने तर्षण को देवी माँ के पास देखा तो असीम सुख की अनुभूति हुई। ऐसे सुख की अनुभूति उसे जीवन में कभी नही हुई थी। कदम स्वतः तेज हो गये। देवी माँ को प्रणाम करके जब उसने आँखें खोली तो तर्षण उठ कर आगे बढ़ गया था। तर्षण को जाते देखकर वर्जना के हृदय में कचोट हुई मुख से स्वर निकला ठहरो, तर्षण रुक गया, वर्जना दौड़कर उसके समीप पहुँच गयी। मुझे क्षमा कर दो। किस बात के लिए तर्षण का विस्मययुक्त स्वर। उस दिन आपको चाकू मारा था। याद आया, तर्षण के मुख पर बच्चों जैसी मासूमियत छा गयी। याद आया तर्षण मुस्कुराया।

उस दिन मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गयी थी। आप आज तीन महीने बाद यहाँ आये हो न। मैं कब से आप का इन्तजार कर रही थी। आज देवी माँ ने मेरी इच्छा पूर्ण कर दी। आप को स्वस्थ देखकर मेरे मन को शान्ति मिल गयी। पैर दिखाओ?

मैं अब पूर्ण रूप से ठीक हूँ। आप मेरे लिए परेशान न हों। जाओ शिकार करो नहीं तो अंधेरा बढ़ जायेगा।

मैंने शिकार करना छोड़ दिया। वर्जना ने गरदन झुका ली।

क्यों? तर्षण आश्चर्यचकित होकर बोला। वर्जना मुस्करा रही थी। अब मैं जा सकता हूँ, तर्षण खड़ा हो गया।

आपका क्या नाम है, कहाँ रहते हो?

मेरा नाम तर्षण है। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र धवलपुर में सफाई का काम करता हूँ, आपका परिचय।

मेरा नाम वर्जना है पास के गाँव में रहती हूँ। आप से एक निवेदन है निराश तो नहीं करोगे।

मैं वचन तो नहीं दे सकता फिर भी कोशिश करूँगा मेरे कारण आपको कष्ट न हो। निःसंकोच कहो।

मेरी इच्छा है एक दिन आप मेरे घर आयें।

ठीक है वर्जना जी अब मुझे जाने की अनुमति दें।

❍❍

तुम यहाँ किसलिए आयी हो? तर्षण बोला।

आप से मिलने, आप को बुरा तो नहीं लगा, वर्जना बोली।

कैसी बात करती हो आओ मैं तुम्हें चाय पिलाता हूँ वर्जना को लेकर तर्षण चाय की दुकान पर बैठ गया।

आपके घर पर कौन-कौन हैं। वर्जना की बात सुनकर तर्षण गम्भीर हो गया।

क्या सोचने लगे—मैंने कुछ गलत कह दिया क्या?

नहीं वर्जना जी ऐसी बात नहीं है। दरअसल मैं अपने आप में स्वयं अकेला हूँ। मैं समझी नहीं, आप क्या कहना चाहते हैं?

वर्जना जी, पिता क्या होता है मुझे पता नहीं। हाँ माताजी ने मुझे बहुत कष्ट से पाला, परन्तु वे भी इस दुनिया से चली गयी। नानी जी ही मेरा सहारा थी, परन्तु वे भी अब नहीं हैं।

ओह—वर्जना ने गहरी साँस ली। आप ने जीवन में दुःख को बहुत करीब से देखा है। मेरी कहानी भी आप जैसी है। आपको अपने माता-पिता का ज्ञान है परन्तु मुझे यह भी पता नहीं। बस रोमा माता ने मुझे पाला है। कोई पर्यटक यहाँ आयी थी मेरा जन्म देकर यहीं छोड़कर चली गयी। मैंने भी दुख को बहुत करीब से देखा है। इसलिए आपके दुख को महसूस कर सकती हूँ। दोनों ने अपने दुख-सुख की बातें की। फिर तर्षण को अपने घर आने का आमंत्रण देकर वर्जना चली गयी।

वर्जना चली गयी। तर्षण कल्पना लोक में खो गया। शरीर असीमित ऊर्जा से भर गया। दिन भर अपनी ड्यूटी करके शाम को जब घर पहुँचा तो उसे लगा दुनिया बदल गयी है। प्रथम दृष्टि में वर्जना को देखकर वह इतना प्रभावित हुआ कि उसे हृदय में पूजने लगा। वर्जना ने जब चाकू मारा था तो वह दर्द भी अनोखा लगा। संसार बनाने वाले को समझना यद्यपि कठिन है, परन्तु नारी सौन्दर्य की शक्ति विवेक को इस तरह ढ़क लेती है कि यदि हृदय में किसी नारी की छवि बन जाय तो वह तीर भी मारे तो दर्द सुखद लगता है। इसे अज्ञान कहा जाय या मोह पर इसकी गिरफ्त में जो गिरफ्तार होता है वह ही इस सुख की अनुभूति कर सकता है। तर्षण के मानस पर वर्जना की छवि देवी तुल्य बनी थी अस्तु उसे वर्जना प्रिय लग रही थी। वर्जना ने जब उसे घर आने का आमन्त्रण दिया तो उसका हृदय गद्‌गद हो गया।

तर्षण से मिलकर वर्जना जब घर पहुँची तो वह भी कल्पना लोक में सैर करने लगी। पुरुष वर्ग को लेकर उसके मन में जो अवधारणा बनी थी, वह शिथिल हो रही थी। शाम के आठ बजे तर्षण वर्जना के घर पहुँच गया।

रास्ते में कोई परेशानी तो नही हुई, वर्जना के स्वर में कंपकंपाहट थी।

नहीं, तर्षण बोला—आओ खड़े क्यों हो। वर्जना के कहने पर तर्षण अन्दर आकर चारपाई पर बैठ गया। वर्जना चाय बनाकर ले आयी। थोड़ी देर खामोशी छाई रही। चाय खत्म हो गयी।

तुम्हारा घर छोटा भले हो परन्तु सुन्दर है, तर्षण बोला।

यह मेरा घर नहीं है। रोमा माता ने इसे बनाया था। रोमा का चित्र तर्षण को दिखाते हुए वर्जना गम्भीर हो गयी। क्या सोच रही हो, वर्जना को गम्भीर देखकर तर्षण बोला। कुछ नहीं बस कुछ पुरानी यादें आ गयी। याद है आपको आज मेरे घर पर खाना खाना है। तर्षण ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

वर्जना खाना बनाने में व्यस्त हो गयी। जैसे कोई विद्यार्थी परीक्षा देता है, इसी तरह वह खाना बना रही थी। वर्जना इतना अच्छा खाना बनाना चाहती थी कि तर्षण उसकी प्रशंसा करे। पुरुष वर्ग के प्रति उसकी अवधारणा सिर्फ शिथिल ही नहीं हुई थी अपितु मन में ऐसी रिक्तता उभर रही थी जिसमें उसका विवेक भंवर सदृश घूम रहा था। भूख प्यास जिस तरह शरीर की आवश्यकता है उसी तरह पुरुष के अस्तित्व में स्वयं को खो देने की विचित्र प्रकार की भूख का एहसास हो रहा था। बड़ी मुश्किल से अपने मनोभावों पर उसने नियन्त्रण पाया। खाना बनाकर तर्षण के पास आकर बोली चलो खाना खा लो।

❍❍

आप बहुत अच्छा खाना बनाती हैं। इतना स्वादिष्ट खाना मैंने पहले कभी नहीं खाया। तर्षण की बात सुनकर वर्जना मन ही मन अत्यन्त प्रसन्न हुई। फिर दोनों अपनी-अपनी कहानी सुनाने लगे। रात के ग्यारह बजे तब तर्षण बोला अब आप मुझे जाने की अनुमति दें।

तर्षण जी आप मुझे आप न कहें तो खुशी होगी। इतनी रात हो गई अब आप यहीं सो जायें सुबह चले जाना। तर्षण मौन हो गया। क्या मैंने गलत कह दिया।

हाँ, तर्षण मुस्कुराया।

मैं नहीं समझी। वर्जना जी तुम बहुत भोली हो। कोई पुरुष रात भर यदि तुम्हारे घर में रहेगा तो पड़ोस वाले क्या कहेंगे। मैं नहीं चाहता मेरे कारण तुम्हारी बदनामी हो। मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता।

तर्षण मैं तुमसे प्यार करती हूँ। तुम से विवाह करना चाहती हूँ। भावावेश में वर्जना के मुख से निकल गया। अपने लक्ष्य को समीप पाकर तर्षण का हृदय गद्‌गद हो गया। हृदय के इस सुख को व्यक्त करने में वाणी असमर्थ हो गयी।

क्या आप मुझे इस योग्य नहीं समझते, कहते-कहते वर्जना का स्वर भर्रा गया। नेत्रों से आँसू टपक पड़े। प्राणों से प्रिये प्रियतमा को इस रूप में देखकर तर्षण के हृदय में ऐसी कचोट हुई की वह मर्यादा को तोड़कर वर्जना को हृदय से चिपका लिया।

नारी पुरुष का मिलन कराकर प्रकृति अपने उद्‌देश्य को पूर्ण करने को व्यग्र हो गयी। वर्जना को लगा मानों वह पूर्णत्व की ओर जा रही है। तर्षण को अपने में समाहित करने हेतु वस्त्र उतारकर तर्षण के वस्त्र उतारने लगी। तर्षण को लगा वह चेतनाशून्य होता जा रहा है। अचानक उसके विवेक को झटका लगा। वर्जना के अधर, नाक, कपोल, सब कुछ चूम कर खड़ा हो गया। क्या हो गया वर्जना उठकर उसके गले में बाहें डालकर चिपक गयी।

तुम मुझे प्यार करती हो, सच बोलना— तर्षण ने वर्जना को कसकर होंठ चूम लिया। ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि जीवन में यदि किसी पुरुष को प्यार किया है तो वह तुम हो।

तुम मुझे बहुत प्यार करती हो न—तर्षण बोला।

परीक्षा लेकर देख लो—वर्जना तर्षण के अधर चूम कर बोली।

तुम अपने कपड़े पहन लो, यदि तुम मुझे सचमुच प्यार करती हो। तर्षण की बात सुनकर वर्जना का वजूद हिल गया। पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण शक्ति द्वारा वस्तु को अपनी तरफ खींचती है, परन्तु जो वस्तु उसकी परिधि से बाहर निकल जाती है तो उसे खींचने में पृथ्वी भी असमर्थ हो जाती है। वर्जना भी कुछ ऐसी ही स्थिति में पहुँच चुकी थी। परन्तु प्रेम वह शक्ति है जो परमात्मा को भी नियम तोड़ने को बाध्य कर देती है। महाभारत में कृष्ण ने भीष्म के लिए प्रतिज्ञा तोड़ी थी। तर्षण ने प्रेम की जो बौछार वर्जना पर की उससे उसकी चेतना झंकृत हो गयी। तर्षण के गले से बाहें निकालकर वस्त्र पहन लिए। वर्जना को हृदय से चिपका कर तर्षण बोला— मैं तुम्हें अपने प्राणों से अधिक प्यार करता हूँ। परन्तु जिस तरह तुम मुझे प्रिय हो उसी तरह आदर्श एवं मूल्य भी मुझे प्रिय हैं। कल ही देवी माँ के सामने मैं तुम्हें अपनी भार्या बनाऊँगा। उनकी एवं मानव द्वारा निर्मित समाज की अनुमति लेकर ही आगे कदम बढ़ाऊँगा। बोलो तुम्हें मेरा प्रस्ताव स्वीकार है।

तर्षण की बात सुनकर वर्जना सिसक पड़ी। मैं नारी की मर्यादा भूल गयी थी। मेरे प्रियतम मुझे क्षमा कर दो। वर्जना जी ऐसा मत कहो—मेरी दृष्टि में नारी जाति महान है। नारी एवं पुरुष की प्रकृति भिन्न है। पुरुष मर्यादा को तोड़ भी दे तो प्रकृति पर कोई

प्रभाव नहीं पड़ेगा परन्तु नारी जिस दिन मर्यादा तोड़ेगी प्रलय निश्चित है। नारी सृष्टि की सूत्रधार है इसलिए उसे जननी कहा जाता है। मेरे हृदय में ईश्वर के बाद तुम्हारा स्थान है। ईश्वर निराकार है। नारी के प्रेम एवं ममता के वशीभूत होकर चिन्तकों ने उसे साकार बना दिया। वैसे मेरे विचार से साकार या निराकार एक ही ईश्वर की साधना है। वर्जना जी नारी प्रकृति है, नारी से प्रेम किये बिना ईश्वर की अनुभूति नहीं हो सकती। तुमने मेरी बात मान कर मेरे विचारों को अक्षुण्ण कर दिया।

तर्षण के वचन सुनकर वर्जना का चेहरा आँसुओं से भीग गया। कण्ठ अवरुद्ध कंपकंपाते स्वर में बोली—तुमने आज मेरी आँखें खोल दी। तर्षणजी विश्वास करो मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ। पुरुष जाति के प्रति मेरे मन में जो धारणा थी आज निर्मूल हो गयी। जीवन के अनुभव एवं प्रकृति से मैंने यही सीखा कि पुरुष वर्ग स्वार्थी होता है। कुतिया के पीछे तीन चार कुत्ते अपनी वासना शान्त करने हेतु व्यग्र रहते हैं परन्तु कुतिया जब बच्चों को जन्म देती है तो सहायता के लिए कोई नहीं आता। उसे अकेले ही नये जीवों को पालना पड़ता है। प्रकृति में हर जीव जन्तु में मादा को ही परिणाम भुगतना पड़ता है। इन दृश्यों को देखकर मेरे मन में पुरुष जाति के प्रति घृणा उत्पन्न हो गयी। परन्तु आज आपने मुझे जीवन के रहस्य का मर्म समझा दिया।

वर्जना की बात सुनकर तर्षण सोच मग्न होकर बोला—वर्जना जी ईश्वर की सृष्टि में हर जीव जानवर है। अपने सुख को खोजना और उसमें डूब जाना ही पशुवृत्ति है। जो इसके ऊपर उठकर कार्य करता है वह ही मानव है। मेरी यही कोशिश है कि मानव की तरह जीवन यापन करूँ। तुम मेरा सहयोग दोगी न। स्वीकृति में वर्जना ने सिर हिलाया फिर तर्षण की बाहों में सिमट गयी।

❑❑❑

चेतनाशून्य

तुम्हें चोट तो नहीं आयी बाबा?

वृद्ध ने आँखें खोली उठने का भरसक प्रयास किया परन्तु सफल न हो सका।

मैं कहाँ हूँ, उसके मुखसे बरबस निकल गया।

अस्पताल में, नारी स्वर।

मैं यहाँ कैसे आया?

आपका मेरी कार से .....।

वृद्ध के सामने सारी घटना घूम गयी। मृत्यु ने आज फिर धोखा दिया। वृद्ध मन ही मन सोच रहा था तभी डाक्टर आ गया।

डाक्टर साहब अब मैं चलती हूँ। मेरी गलती नहीं थी, फिर भी इंसानियत के नाते इनको यहाँ लायी हूँ। इनके उपचार में आप कोताही नहीं बरतना पैसा जो लगेगा मैं दे दूँगी। कहते हुए युवती आगे बढ़ गयी फिर न जाने क्या सोचकर बोली— बाबा आप का नाम। वृद्ध के अधरों पर स्मित तैर गयी। नाम मेरा—

हाँ-हाँ आपका बाबा।

क्या करोगी जानकर—डाक्टर कहीं इनका दिमाग...।

हो सकता है यह पागल हो—डाक्टर बोला।

नहीं, यह आदमी पागल नहीं हो सकता।

परन्तु यह तुम कैसे कह सकती हो।

बस यूँ ही—अच्छा डाक्टर मैं कल आऊँगी। इनका पूरा ध्यान रखना, कहती हुई युवती बाहर निकलने लगी।

ठहरो मैडम! कुछ दवाईयाँ हैं कहते हुए डाक्टर ने पर्जी युवती को दे दिया। हाँ एक बात और— आप अपना पता रजिस्टर में इन्ट्री करवा दीजिए। यदि आवश्यकता पड़ी तो हम आपको फोन करेंगे।

ओ.के. डॉक्टर साहब। कहती हुई युवती बाहर निकल गयी।

बाहर निकलते ही युवती का दिमाग सक्रिय हो गया। दया, करुणा ने उसके हृदय में पैर जमा लिए थे। इसी भावना के वशीभूत वह वृद्ध को अस्पताल तो ले आयी पर

अब स्वार्थ ने उसे झकझोर दिया। उसके मन में द्वन्द्व होने लगा—क्यों वह व्यर्थ पचड़े में पड़ रही है। वह वृद्ध उसका कौन है। हजारों लोग रोज सड़क दुर्घटना में मरते हैं। अगर वह वृद्ध मर भी जाता है तो क्या फर्क पड़ता है। लोग तो जान-बूझकर आत्महत्या करते हैं मेरी तो गलती भी नहीं थी, वह वृद्ध ही मेरी कार के सामने औचक आ गया था। मुझे चुपचाप वहाँ से चली जाना था। खैर जो हुआ सो हो गया, अब मुझे सोच-विचारकर आगे कदम रखना होगा।

क्या सोच रही हो मैडम— वही डॉक्टर था।

कुछ नहीं बस ऐसे ही सिर में दर्द हो रहा था।

आप घबड़ा रही हैं।

नहीं तो....।

फिर आप अपना नाम पता लिखवा कर जायें न।

युवती चुपचाप आगे बढ़ गयी। रजिस्टर में उसने अपना नाम, पता एवं फोन नं० गलत लिखवा दिया। उसने मन ही मन निर्णय कर लिया कि अब वह गलती नहीं करेगी।

❍❍

डॉक्टर आशुतोष बनर्जी बड़े उदार एवं दयालु हृदय के व्यक्ति थे। मरीज की विवशता देखकर उनका हृदय कराह उठता था। यथा सम्भव वे जरूरतमंद रोगी को सरकारी दवाईयां उपलब्ध करा देते थे। उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता ही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी थी। जिसके कारण वे परिवार ही नहीं अपितु स्टाफ में भी उपहास का पात्र बन जाते थे। कुछ लोग तो खुले आम व्यंग्य करते कलियुग में ईसा मसीह बन रहा है।

डॉक्टर आशुतोष बनर्जी ने अपने जीवन में पैसा तो नहीं परन्तु यश जरूर कमाया था। दूर-दूर तक उनका नाम था। कुछ वर्षों से वे भी असहानीय पीड़ा से गुजर रहे थे। उनकी दो संतान थी एक बेटा ओर एक बेटी। डाक्टर साहब ने बच्चों की शिक्षा एवं गरीबों की सेवा जीवन का मकसद बनाया। परिणाम यह हुआ कि आज उनकी दोनों संतानें डॉक्टर हैं। बेटी अपने पति के साथ पूर्ण रूप से सन्तुष्ट है एक नाती भी है। बेटा के भी एक पुत्र है। इस मुकाम को उन्होंने कड़ी मेहनत के बल पर प्राप्त किया है।

बहू घर आते ही सास का कान भरना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे ममता बनर्जी के हृदय में जो पति देवता की छवि बनी थी लुप्त होने लगी। बहू कहती दो वर्ष रिटायरमेंट को बचे हैं। पापा के साथ के डाक्टरों के पास करोड़ों की सम्पत्ति है। इन्होंने तो आज तक अपने लिए कार तक नहीं ली। पैदल अस्पताल चले जाते हैं। लोग नौकरी करते

हैं तो अपना पूरा वेतन बचा लेते हैं घर का खर्च बाहरी आमदनी से चलाते हैं। परन्तु ये महानुभाव वेतन का पैसा भी गरीब रोगियों पर खर्च कर देते हैं। मम्मी समय बदल चुका है। सच्चाई एवं ईमानदारी के बातें सिर्फ किताबों में लिखी जाती हैं। जिनको आज कोई नहीं पढ़ता, और मम्मी मजे की बात यह है कि जो लोग लिखते हैं वे ही जिन्दगी का सबसे अधिक मजा लेते हैं, बाबू जी तो पागल हैं।

ममता बनर्जी को पति से बेहद प्यार था। बहू की बातें अच्छी नहीं लगी तो उठकर चली गयी। रामायण उनका प्रिय ग्रन्थ था। सीता के चरित्र से वे अत्यन्त प्रभावित थी। इसी कारण वे पति के फैसले पर कभी भी कोई प्रतिक्रिया नहीं करती। परन्तु बहू आधुनिक नारी जिसके मुख से पति शब्द भी नहीं निकलता था। हसबैण्ड हाँ आज की आधुनिक नारी के लिए पति हसबैण्ड बन चुका है। मात्र झोला-जिसे गले में डालकर कहीं भी घूमा जाय।

बहू ने सास की मनोवृत्ति को धीरे-धीरे बदल दिया। ममता बनर्जी को लगने लगा सचमुच बहू सत्य कह रही है। आज के युग में दूसरे के लिए कौन परेशान होता है। आखिर वे एक दिन बहू से बोली– बेटी, बहू एवं बेटी में मैं भेद नहीं करती, तुम मेरी बहू ही नहीं बेटी भी हो– तुम्हीं बताओ बेटी मैं क्या करूँ?

बहू खुशी से झूम उठी, उसके गोरे मुख मण्डल की कान्ति चमक उठी। अपनी सफलता को हृदय में दबाकर बोली– मम्मी पापा की कमाई पर आप अधिकार कर लें। खाना मैं बनाकर दे दूँगी, एक दिन के लिए उन्हें मात्र सौ रुपये खर्च का आप दे दें, फिर देखती हूँ वे कैसे मरीजों की सहायता करते हैं। बहू की बात ममता बनर्जी को अच्छी लगी और उसी दिन ममता बनर्जी ने हृदय से ममता रूपी वृक्ष को काट दिया। सरल हृदय डॉक्टर आशुतोष बनर्जी ने स्वयं को पत्नी एवं परिवार के हवाले तो कर दिया, परन्तु अन्दर से टूट गये।

युवती को गये घण्टों बीत गये डॉक्टर आशुतोष बनर्जी वृद्ध के उपचार को परेशान थे। अचानक वृद्ध उठकर बैठ गया फिर बोला– अब मैं जा सकता हूँ डाक्टर। डॉक्टर बनर्जी को आश्चर्य हुआ और खुशी भी इतनी चोट खाने के बाद वह मुस्करा रहा था। डाक्टर बनर्जी उसके करीब पहुँच गये। आप लेट जाइए।

वृद्ध हँस पड़ा– फिर उसने पाँच सौ के कई नोट निकाले, आप को मेरी दवा की चिन्ता है न...।

आपको कैसे पता चला।

मैं चेतनाशून्य नहीं था डाक्टर साहब–मनुष्य की मनोवृत्ति का गहन अनुभव किया है हमने। आप उस युवती का इन्तजार कर रहे हैं कि वह दवा लेकर आयेगी। इतनी उम्र हो गयी पर आप अभी तक नहीं समझ पाये इस नयी पीढ़ी को। वृद्ध हँस

पड़ा। डॉक्टर आशुतोष बनर्जी को लगा मानों वे सपना देख रहे हैं।

❍❍

डॉक्टर बनर्जी ने जीवन में कई उतार चढ़ाव देखे थे। पत्नी एवं बच्चों के व्यवहार से वे अत्यन्त दुखी थे। परन्तु आज की घटना ने उनके मस्तिष्क को मथ दिया था। डाक्टरी पेशा के दौरान यह पहला मौका था जब कोई दुर्घटना के बाद घायल को लेकर अस्पताल आया था, दूसरी घटना वृद्ध की अनोखी कार्य क्षमता।

डॉक्टर बनर्जी उस वृद्ध के समीप बैठ गये—तुम मुझे बहुत अजीब लगे भाई कृपया अपना नाम बताने का कष्ट करें।

मेरा नाम विकांक्ष है। वृद्ध ने शान्त स्वर में कहा।

आप के पास पैसे कहाँ से आये—विकांक्ष हँस पड़ा मैं पेंशनर हूँ।

ओह—किस विभाग में सेवारत थे।

सेना में—विकांक्ष बोला।

घर में कौन-कौन है?

माता, पिता, बेटा, बेटी, भाई, बहन, सारे लोग....।

बस-बस डा. आशुतोष बनर्जी बीच में बोल पड़े—घर कहाँ पड़ता है?

विकांक्ष के चेहरे पर गहरी पीड़ा झलक उठी। कल तक के जीवन पर मैंने पर्दा डाल दिया है डॉक्टर। बेहतर होगा आप मेरे लिए उचित दवाइयाँ लिख दें। गुरू की कृपा से मैं अपाहिज नहीं हो सकता।

कौन गुरू—मैं तुम्हारे गुरू से मिलना चाहता हूँ।

मैंने किसी को गुरू नहीं बनाया डाक्टर।

फिर किसे गुरू कहते हो भाई।

आदि शंकराचार्य, अद्वैत वेदान्त उनका दर्शन है। मैं उनको ही अपना आदर्श एवं गुरू मानता हूँ।

बड़े अजीब आदमी हो, तुम से मिल कर बहुत खुशी हुई।

मुझको भी—आप जैसे लोग इस धरती पर कहाँ हैं?

मैं आपको अपना दुःख बताना चाहता हूँ, परन्तु पहले तुम पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाओ तब। कहकर डा. आशुतोष बनर्जी खड़े हो गये।

नर्स दवा लेकर आ चुकी थी। डॉक्टर आशुतोष ने उसे समझोते हुए कहा। ये तुम्हारे पिता तुल्य हैं इनका पूरा ध्यान रखना। दवा एवं इंजेक्शन समय पर दे देना। नर्स को हिदायत देकर डाक्टर बनर्जी बाहर निकल गये। विकांक्ष ने डाक्टर बनर्जी को मन ही मन नमन किया और नेत्र बन्द कर लिये।

❍❍

आकांक्षा घर पहुँची तो शाम के सात बज चुके थे। सास उसका बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही थी। इतनी देर कैसे हो गयी बेटी— सास ने प्रश्न किया।

मम्मी एक सहेली के यहाँ रुक गयी थी—आकांक्षा ने झूठ बोला।

बेटी तुम्हारे मोबाइल का स्वीच ऑफ क्यों था?

ओह मम्मी गलती से बंद कर दिया था। कहती हुई आकांक्षा ने मोबाइल निकाला और कमरे में चली गयी।

आज तुम उदास लग रही हो। प्रकाश ने आकांक्षा को बाहों में भर लिया।

नहीं तो—आकांक्षा मुस्कराई।

प्रकाश ने दरवाजा बन्द कर दिया। आकांक्षा को बाहों में उठाया और बिस्तर पर लिटा दिया।

बल्ब तो बन्द कर दो। नहीं प्रकाश ने आकांक्षा की बात काट दिया। आज कई दिन के बाद आयी हो सबसे पहले मैं तुम्हें जी भर कर देख लूँ।

क्या आपने मुझे अभी तक जी भर कर नहीं देखा?

देखा है पर इच्छा नहीं भरी जी चाहता है बस तुम्हें यूँ ही देखता रहूँ।

इस तरह देखना उचित नहीं आकांक्षा बोली।

क्यों प्रकाश मुस्कराकर बोला।

आकांक्षा कुछ नहीं बोली बस प्रकाश को अपने जिस्म में समा लेने को व्यग्र हो उठी। अचानक मस्तिष्क में वृद्ध का चित्र घूम गया। आकांक्षा का शरीर शिथिल हो गया। आज पहली बार उसे लगा उसका मन शरीर से पृथक है। पति को सन्तुष्ट करने की उसने बहुत कोशिश की परन्तु सफल न हो सकी।

प्लीज मुझे अब वस्त्र पहन लेने दो, आकांक्षा खड़ी हो गयी।

आज रात तुम्हें बाहों में भरकर ऐसे ही सुलाऊँगा।

नहीं परमात्मा के लिए मुझे कपड़े....।

इस तरह तो तुम सुहागरात को नहीं शर्माई थी कहकर प्रकाश ने आकांक्षा के होंठ चूम लिए।

प्लीज प्रकाश मुझे छोड़ दो—जिद मत करो। अपनी इच्छा कल पूरी कर लेना।

कल नहीं आज—कहकर प्रकाश पुनः आकांक्षा के बदन को सहलाने लगा। आकांक्षा उत्तेजित होने के बजाय सिसक पड़ी।

तुम रो रही हो— आखिर बात क्या है? प्रकाश गम्भीर हो गया।

प्रकाश आज मैं बहुत दुखी हूँ। आज मुझसे एक वृद्ध का खून होते-होते बच गया।

खून— प्रकाश की उत्तेजना खत्म हो गयी। उसने आकांक्षा को कसकर हृदय से चिपका लिया। आकांक्षा पुनः सिसकने लगी। पति के स्नेह से उसे सांत्वना मिली तो

उसने सब कुछ प्रकाश को बता दिया।

आकांक्षा तुमने बहुत बड़ी गलती की—वह वृद्ध तुम्हारी कार से टकरा गया तो इसमें तुम्हारी गलती नहीं, तुम्हें आगे बढ़ जाना था। इस देश में हजारों लोग सड़क दुर्घटना में रोज मरते हैं। यह कोई नयी बात नहीं है। फिर उसके मर जाने से हम पर क्या फर्क पड़ता। तुमने बेवकूफी की जो उसे अस्पताल ले गयी। आज के पढ़े-लिखे नौजवान अपने माँ-बाप की मृत्यु पर जश्न मनाते हैं। तुम उसे बुड्ढे के लिए परेशान हो। तुम्हारी आधुनिक शिक्षा व्यर्थ है। हाँ तुमने अस्पताल के रिकार्ड में अपना पता एवं फोन नम्बर गलत लिखाकर समझदारी का काम किया है। अतः अब तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं, अब आराम से सो जाओ।

❍❍

प्रकाश तुम्हारे सोने के बाद मैं रात भर सोचती रही। मेरा मन कहता है एक बार उस वृद्ध को देख लूँ—क्या पता मर गया हो।

अगर मर गया हो तो अच्छी बात है। हाँ यदि जिन्दा है तो वहाँ जाकर उस लावारिस के लिए पैसे खर्च होंगे मैडम, इस पर भी विचार कर लो। कितना पैसा खर्च होगा—आकांक्षा बोली।

यह तो तुम ही बात सकती हो? आकांक्षा गहरे सोच में डूब गयी। माता जी से बात करूँ?

नहीं—वे बहुत धार्मिक हैं वे कभी भी इन्कार नहीं करेंगी। मैं ही सोच कर बताता हूँ। कल तुमने क्या कपड़े पहन रखे थे।

तुम्हारी लायी हुई वह जींस और वह नीली वाली शर्ट। आकांक्षा ने वस्त्र की तरफ उँगली उठाते हुए कहा।

ओ.के. तुम एक अच्छी सी साड़ी पहन लो, पूरी तरह से भारतीय नारी बन जाओ। हम अस्पताल में चलकर उसके खर्च का अनुमान लगायेंगे फिर फैसला करेंगे। आकांक्षा पति के छाती से लग गयी।

डॉक्टर आशुतोष बनर्जी ने आकांक्षा को दूर से पहचान लिया परन्तु बोले नहीं। विकांक्ष जाने की तैयारी कर रहा था। डा. बनर्जी उसके पास ही बैठे थे। किसे खोज रही हो मैडम—डॉक्टर बनर्जी मुस्कराकर बोले। कल शाम को एक मरीज यहाँ। ...हाँ-हाँ वही तो हैं ये मिस्टर विकांक्ष, कल तुम इन्हीं को लेकर आयी थी फिर दवा लेने चली गयी थी—और अब आयी हो। सारी डॉक्टर आकांक्षा बोली।

बहुत समझदार हो गयी हैं आज की युवा पीढ़ी, जान-बूझकर गलती करना, फँस गये तो सारी कह देना आज का फैशन हो गयी है बेटी।

बेटी—शब्द आकांक्षा के हृदय में धँसता चला गया।

मुझे माफ कर दो बाबा आकांक्षा बोली।

तुमने कोई गलती नहीं की बेटी, जिसके लिए माफी माँग रही हो। यहाँ से जाओ अपना अमूल्य समय व्यर्थ मत करो। आकांक्षा चुपचाप खड़ी थी।

ये तुम्हारे पति हैं। विकांक्ष ने प्रकाश की तरफ उँगली उठाई। आकांक्षा ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

तुम से अधिक बुद्धिमान हैं। विकांक्ष मानों उसके व्यक्तित्व को पढ़ रहा हो।

डॉक्टर आशुतोष बनर्जी बीच में बोल पड़े—अब इन बच्चों को माफ कर विकांक्ष। डॉक्टर साहब आप सन्त हैं परन्तु मैं मनुष्य हूँ। जान बूझकर जो गलती करते हैं वे क्षमा के पात्र नहीं हो सकते। अब मैं जा रहा हूँ कहकर विकांक्ष खड़ा हो गया।

बाबा मुझे अपनी गलती का प्रायश्चित करने का एक मौका दे दो।

यह सम्भव नहीं बेटी— इस संसार का एक ही रंग है स्वार्थ एवं खुदगर्ज का, मुझे मानव से जानवर अच्छे लगते हैं। बेटी जब हम अपनी आँखों को मलते हैं तो कई रंग दिखने लगते हैं। बेटा, बेटी, पत्नी, माता, पिता, भाई, बहन आदि-आदि। संसार के रिश्ते जहाँ तक हैं वे पृथक-पृथक इसलिए दिखते हैं कि हम नेत्रों को मलते हैं। यदि हम आँखों को मलना बन्द कर देते हैं तो सब के सब एक जैसे दिखते हैं। दुनिया के लोगों से अपेक्षा करना व्यर्थ है पुत्री तुम मुझे बाबा कहती हो न परन्तु तुम जैसे आधुनिक पीढ़ी के लोग शब्द के अर्थ को नहीं जानते। मुख से क्या कहते हैं उन्हें इसका पता नहीं रहता। मैंने दुनिया का एक ही रंग देखा है मतलब का। वासना की पूर्ति का नाम प्यार है। इस संसार के रिश्ते नाते सब बेकार हैं।

आपका कथन यदि सत्य है तो इस संसार का कुछ आधार भी होगा विकांक्ष। डॉक्टर आशुतोष बनर्जी बोले।

आपका प्रश्न तर्कसंगत है डॉक्टर साहब। परन्तु मैं अभी तक उस सत्य को जान नहीं पाया। जीवन के अन्तिम पड़ाव में उसे ही खोज रहा हूँ। क्या तुम उसे प्राप्त कर लोगे डॉक्टर बनर्जी बोले।

नहीं जानता— परन्तु इस सत्य से साक्षात्कार हो गया कि संसार के सारे रिश्ते नाते भ्रम हैं व्यर्थ हैं।

लगता है बाबा आपको इस संसार से दुख ही दुःख मिला है, आकांक्षा बोली।

विकांक्ष ने पैनी नजर आकांक्षा के चेहरे पर जमा दी। उन बूढ़ी आँखों में जाने कैसा तेज था कि आकांक्षा उसका सामना न कर सकी। अपनी गरदन को झुकाते हुए बोली— बाबा आप से एक निवेदन करूँगी, इंकार तो नहीं करोगे। विकांक्ष कामना से पूर्णतया मुक्त नहीं था अस्तु पवित्र भावना के वशीभूत होकर उसका हृदय द्रवित हो गया। अपनी भावना को दबाते हुए बोला—बेटी मेरी बात गम्भीरता से सुनो, पाषाण पर बीज बोने से यदि वर्षा अनुकूल हो तो बीज अंकुरित तो हो जायेगा, परन्तु वह अंकुर

कभी भी वृक्ष नहीं बन सकता। असमय उसकी मृत्यु निश्चित है बेटी मुझसे कुछ भी मत माँगो बस अब यहाँ से चली जाओ।

ठीक है बाबा। आकांक्षा की आँखों से आँसू टपक पड़े। डॉक्टर आशुतोष बनर्जी को लगने लगा विकांक्ष कोई साधारण मनुष्य नहीं है। मेरी एक कप चाय तो पी लो बाबा—आकांक्षा का स्वर भर्रा गया।

तुम्हारी माया बड़ी विचित्र है कृष्ण— मन ही मन कहकर विकांक्ष खड़ा हो गया।

रोओ मत बेटी तुम मेरे पैर में जंजीर डालने की कोशिश नहीं करना, बाकी तुम्हारी जो इच्छा हो मुझे मंजूर है।

डॉक्टर आशुतोष बनर्जी के नेत्रों में आँसू भर आये। प्रकाश ने विकांक्ष का हाथ पकड़कर कहा— बाबा जी आप हमारे घर चलें।

अब तो इन बच्चों को क्षमा कर दो, डॉक्टर आशुतोष बनर्जी बोले। विकांक्ष के अधरों पर स्मित तैर गयी। डाक्टर साहब जो काम करते हैं उनसे गलती जरूर होगी, वह गलती-गलती मानी ही नहीं जाती। जो जान-बूझकर गलती करते हैं और उसे स्वीकार कर लेते हैं वे महान होते हैं। आकांक्षा बेटी तुम्हारा कद मेरी दृष्टि में बड़ा है।

बाबा जी आकांक्षा ने झुककर विकांक्ष के पैर छू लिए।

बेटी तुम क्या चाहती हो निःसंकोच कहो— विकांक्ष आकांक्षा के केशों को सहलाते हुए बोला।

बाबा— मेरे पिता बचपन में ही मुझे छोड़कर चले गये थे अब आप ही मेरे पिता हैं चलो मेरे घर।

डॉक्टर आशुतोष बनर्जी को हाथ जोड़कर विकांक्ष ने नमन किया और आगे बढ़ गया। कल चोट खाकर भी विकांक्ष ने चेतना नहीं खोई थी, परन्तु आज आकांक्षा के स्नेह में वशीभूत होकर चेतनाशून्य हो गया।

यह मैंने क्या किया विकांक्ष के विवेक ने वर्त्म को प्रकाशित कर दिया। रोशनी में विकांक्ष को सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगा। उसका अनुभव इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि संसार के रिश्ते मात्र देह आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। यदि कोई इनसे आत्मा की प्यास मिटाना चाहे तो केवल निराशा मिलेगी। संसार का यही वास्तविक सत्य है इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

बाबा आप जा रहे हैं आकांक्षा रुंधे गले से बोली।

बेटी—मैंने तुम्हें बेटी कहा ही नहीं अपितु समझा है। जिस तरह मुझे अपने स्वजन प्रिय हैं उसी तरह तुम भी मुझे प्रिय हो। कर्तव्यवत् तुम्हारे प्रति भी मेरे हृदय में स्मृति बनी रहेगी। परन्तु मैंने जो कदम बढ़ाया है वापस पीछे नहीं आ सकता। आकांक्षा के सर पर हाथ रखकर विकांक्ष बाहर निकल गया।

❑❑❑

अज्ञात दिशा

'सत्यमेव जयते' का अर्थ जीवन से कितना पृथक है, सरल ने इसे अनेक बार महसूस किया था। परन्तु अहा मोह तू कितना प्रबल है बार-बार उलझा देता है। सरल जितना सोचता उलझ जाता। मन को संतोष देने का मात्र एक विकल्प था रामचरित मानस। तुलसी की अनेक चौपाई उसे याद थी। बचपन में ही उसे राम प्रिय हो गये थे।

सरल ने होश सम्भाला तो गरीबी विरासत में मिली। गरीबी के साथ-साथ आत्मग्लानि का चषक भी पीना पड़ा। सन्तान के कारण माँ-बाप का सिर झुकने के समाज में अनेक दृष्टान्त मिल जायेंगे, परन्तु एसे विरले ही लोग होंगे जिन्हें पिता के कारण सिर झुकाना पड़ा हो। सरल इसी श्रेणी का व्यक्ति था। माता-पिता का आचरण उसकी समझ से परे था। राम से प्रेम करने वाला व्यक्ति सत्य से दूर भागने की कोशिश नहीं कर सकता। इसी कारण सरल ने जीवन से संघर्ष कर परिवार को दो जून रोटी की व्यवस्था कर दी।

पत्नी आई फिर बच्चे जिनके भरण-पोषण में आधी से अधिक उम्र खत्म हो गयी। परन्तु वह दर्द जो उसे बचपन में मिला था ज्यों का त्यों था। शरीर में जब दाँत का दर्द होता है तो लोग कहते हैं भगवान् दांत का दर्द न हो चाहे जहाँ हो, और इसी तरह जब आँख में दर्द होता है तो वही बात दुहराते हैं। अरे भइया शरीर में कहीं भी दर्द हो तो पीड़ा एक ही जैसी होती है। अंगों के दर्द की अनुभूति तो मन ही करता है। इसी तरह सरल को भी लगा कि संसार में दुःख ही दुःख है। माता-पिता, भाई-बहन, बेटा-बेटी नाम अलग-अलग हो सकते हैं परन्तु इनका दर्द एक जैसा ही होता है।

कम या ज्यादा तो इसलिए होता है कि जिससे मन अधिक जोड़ लेते हैं, उससे अधिक दुःख होता है धीरे-धीरे सरल का मन संसार से भर गया, उसे लगने लगा इस संसार में परिवार को खुश नहीं किया जा सकता। कभी माँ नाराज, कभी भाई, कभी पत्नी तो कभी बच्चे। किस-किस को हाथ जोड़े सब एक जैसे लोलुप। देर ही सही पर सरल को अब एक बात समझ में आ गयी कि रिश्ते प्यार से नहीं धन से बढ़ते हैं। ठीक भी है किसान फसल लगा दे, पर यदि खाद न डाले तो फसल नहीं बढ़ेगी। ठीक इसी तरह संसार के रिश्ते हैं जो मात्र स्वार्थ से चलते हैं।

सरल ने सोचा पहले एक कमरा बना लूँ। जीवन में घर का कितना महत्त्व है यह बात वही जान सकता है जो बरसात टपकते छप्पर के नीचे काटा हो। कमरा बनाने के चक्कर में सरल कंजूसी करने लगा परिणाम यह हुआ कि भाई ने बात करना बन्द कर दिया। धीरे-धीरे रिश्ते खिसकने लगे। अब वह अपने आप में अकेला था।

❍❍

परिवार से सरल का मोह भंग हो चुका था। मन को संतोष देने हेतु यदा-कदा वह कविताएँ लिख देता, मन को शान्ति मिल जाती। अब सरल के जीने का दायरा सिकुड़ गया। एक दिन उसने मन ही मन सोचा घर छोड़ दूँ तभी हृदय में दर्द हुआ। कभी-कभी जब हम जीवन से उब जाते हैं तो भगवान से मौत माँगते हैं पर जब हमारा मौत से सामना होता है तो कांप जाते हैं। कल तक सरल कभी-कभी मर जाने की कल्पना में खो जाता था, परन्तु आज जब उसे हृदय में असहनीय दर्द हुआ तो घबड़ा गया। दूसरे दिन अस्पताल चल दिया।

मानव हृदय की विचित्रता का सरल ने गहन अध्ययन किया परन्तु किसी भी निर्णय पर पहुँच न सका। गाँव में जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती तो सरल वहाँ अवश्य जाता था। परिवार के लोग जिस प्रकार विलाप करते उसे देखकर उसका हृदय द्रवित हो जाता। एकान्त में उस दृश्य को लेकर घण्टों सोचता। कभी-कभी सरल को लगता आँसू सच्चे होते हैं, कितना प्यार था उस मृतक से परिवार का, उसकी तह तक पहुँचने की वह कल्पना भी नहीं कर पाता। परन्तु कुछ दिनों से अब उसे सारी दुनिया नकली दिखाई देने लगी। लोग मरने वालों के लिए नहीं अपितु स्वयं के स्वार्थ हेतु रोते हैं। मृतक से जिसका जितना बड़ा स्वार्थ होता है उतना ज्यादा रोता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ऐसे अवसर पर आँसू बहाने का अभिनय करते हैं।

कुछ भी हो, सरल को दो दृश्य दुखद लगते, बेटी की विदाई या किसी की अन्तिम विदाई। न जाने क्यों रास्ते में आज वह सोचो से अपने को पृथक नहीं कर पा रहा था। मन जब इधर-उधर भागने लगा तब वह अपने प्रभु राम का स्मरण करने लगा। अस्पताल में पहुँच कर पर्ची बनाकर ओ. पी. डी में डाक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने उसका गहन परीक्षण किया, जाँच हुई और वह हृदय रोग से ग्रस्त पाया गया। सरल को जब अपनी बीमारी का पता चला तो वह अंधकार की गहरी खाई में गिर गया। मृत्यु के साक्षात्कार से उसका हृदय कराह उठा, ऐसा लगा मानों चक्कर आ जायेगा, आगे बढ़कर एक बेंच पर बैठ कर नेत्र बन्द कर लिया।

परिवार जो सरल के हृदय में काँटे की तरह चुभा था उसके प्रति मन में लगाव मानव हृदय की इस दुर्बलता से वह छटपटा रहा था। बाप जहर खाने की धमकी देता तो पत्नी ताना देने में कोताही न बरतती। सरल स्वयं को कोसने लगता तो पत्नी कहती

मेरा मुँह नहीं देखोगे, फिर सरल पत्नी से विनती करने लगता। बच्चे व्यंग्य करते तुम्हारे माँ-बाप की नालायकी के कारण हम सफल नहीं हो सके। सरल सुनता और घण्टों सोचता रहता। लोगों के माँ-बाप होते हैं तो उन्हें सहारा होता है, एक मैं ऐसा अभागा जिसे माँ-बाप का प्यार तो दूर की बात बाप ने कभी एक कमीज भी नहीं खरीदा होगा। माँ के प्रति उसके हृदय में लगाव था, जो लोगों से मांग-मांग कर कपड़े पहनाती थी। नानी का भी इसमें बड़ा सहयोग था सोचते-सोचते सरल के नेत्रों से आँसू बहने लगे। माँ एवं नानी ने कितनी मेहनत से उसे पाला था। बचपन के दृश्य चलचित्र की तरह उसके सामने घूम गये। पिता को सरल खाने को कहता तो कहते इतवार और मंगल को नहीं खाऊँगा। अपमान एवं ग्लानि का चषक पीने के सिवा उसके पास और कोई रास्ता नहीं था। परिवार के प्रति उसके हृदय से प्रेम खत्म हो गया था परन्तु उसे अपने कर्तव्य का बोध था। इसी भाव के वशीभूत वह अब कार्य कर रहा था, आज उसके प्रति मोह उत्पन्न हो गया। वाह रे आदमी बातें चाहे कितनी बड़ी-बड़ी कर ले पर जब मृत्यु का सामना होता है तो अकसर ज्ञान नहीं मोह ही जीतता है। मेरे न रहने से परिवार का क्या होगा– सरल यह सोच-सोचकर परेशान हो रहा था।

बाबा आपकी आँखों में आँसू...।

सरल चौंका– आँखें खुली की खुली रह गयी। उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा था, उसे इस तरह सार्वजनिक जगह पर आँसू नहीं बहाना चाहिए था। आप से मैंने कुछ पूछा है बाबा?

सरल कुछ बोला नहीं बस झोले से कागज निकालकर नर्स को दे दिया। नर्स ने उसे बड़े गौर से देखा फिर मुस्कराकर बोली–आप ठीक हो जायेंगे बाबा।

सच-सरल बच्चे सदृश खुश हो गया।

एक दम सच। आप मेरे साथ आओ। सरल नर्स के साथ चल पड़ा। नर्स सरल को लेकर हृदय रोग विशेषज्ञ के कक्ष में गयी, डाक्टर से बात की। डाक्टर ने सरल का गहन परीक्षण किया फिर बोला– बाबा आप चिन्ता न करें ठीक हो जायेंगे। रोग अभी शुरू ही हुआ है दवा द्वारा इसका उपचार हो जायेगा। चिन्ता की कोई बात नहीं, हाँ आपको ये दवाईयाँ कुछ महीने नियमित खाना होगा। नर्स सरल को लेकर बाहर आयी। बाबा अब आप जाओ रोना नहीं यह मेरा फोन नम्बर है जब कभी मन घबराने लगे तो बात कर लेना।

बेटी तुम्हारा नाम–सरल बोला।

किरण– नर्स मुस्कराई और सरल उस मुस्कराहट की ओज में समस्त दुःखो से मुक्त हो गया। बहुत दिनों के बाद आज उसे आंतरिक शान्ति मिली थी।

❍❍

किरण सरल को लेकर कैंटीन गयी चाय लाकर बोली–बाबा चाय पियो। सरल

चुपचाप चाय पीने लगा। किरण अत्यन्त उदार हृदय की लड़की थी। किसी को दुखी देखकर दुखी हो जाती थी। आज सरल को दुःखी देकर दया आ गयी। परिणामस्वरूप वह भाव में बहकर बोली बाबा मैं आपको बाबू जी कह सकती हूँ। किरण की बात सुनकर सरल चौंक पड़ा। बाबू जी शब्द उसके हृदय में मंथन करने लगा। अपने भावों पर नियन्त्रण मुश्किल से पाया–बेटी मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ।

नहीं बाबूजी सचमुच मुझको आप में पिता की छवि दिखती है। सरल कुछ कह न सका बस शून्य में खो गया।

क्या सोचने लगे बाबू जी?

कुछ नहीं बेटी। कुछ न कुछ आप जरूर सोच रहे हैं बाबू जी, आप ज्यादा सोचेंगे तो आप की बीमारी बढ़ जायेगी। इसलिए सोचना नहीं प्रसन्न रहने की कोशिश करना। किरण की बात सुनकर सरल मुस्करा पड़ा। मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा बाबू जी।

नहीं बेटी। परन्तु एक बात, मुझे बताओ बेटी तुम मेरे लिए इतना परेशान क्यों हो?

किरण गम्भीर हो गयी, बाबू जी मैं आपको कई दिनों से देख रही थी न जाने क्यों मेरे हृदय में आपके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गयी। इसी भाव के वशीभूत आज स्वयं को रोक न सकी। बाबू जी आपके घर में कौन-कौन है आप अकेले यों ही भटक रहे हैं।

सरल ने दीर्घनिश्वास ली–मेरे घर में सब कुछ है बेटी, परन्तु उनके प्रति मेरे मन में न तो प्यार है न ही श्रद्धा। बस यूँ समझ लो बेटी इस संसार में किसी के पास सब कुछ होकर भी कुछ भी नहीं होता और किसी के पास कुछ न होकर सब कुछ होता है।

बाबू जी आप के बच्चे– किरण बोली।

हाँ– बच्चे हैं एक बेटा एक बेटी–दोनों की शादी हो गयी है। उनके भी बच्चे हो गये हैं।

पत्नी, माँ-बाप– किरण ने कहा।

सब कुछ आज ही पूछ लोगी बेटी। किरण चुप हो गयी जब कि सरल उठ गया। सरल ने पैसे देने चाहे परन्तु किरण ने मना कर दिया। किरण ने चाय के पैसे देते हुए कहा– बुरा नहीं मानना बाबू जी। क्या आप बेटा-बेटी में फर्क करते हैं। सरल ने किरण के सिर पर हाथ रखते हुए कहा तुम्होर सभी प्रश्नों का उत्तर दूँगा बेटी परन्तु आज नहीं, कहकर सरल चल दिया।

❍❍

श्वेत श्याम घनों से अन्तरिक्ष आच्छादित था। मंद-मंद बहती हुई पुरवाई सरल के हृदय में स्पंदन कर रही थी। प्यासी भूतल के ऊपर आज घनों को प्यार आ गया था, इसलिए अपनी नन्हीं-नन्हीं बूँदों से वे धरा के मुख मण्डल को धोना शुरू कर दिया।

सरल जब बस से उतरा तो घबरा गया। दरअसल उसे अपनी नहीं अपितु कागजों की चिन्ता सताने लगी, कहीं भीग न जाय। पोलीथीन में कागजों को सम्भाल कर रखा और तेज-तेज कदम से आगे बढ़ने लगा।

संध्या होने से पहले सरल घर पहुँच गया। अपने कक्ष में कागजों को सम्भाल कर रखा। बाहर निकला तो पत्नी बोली—कहाँ गये थे। सीने में दर्द था उसे दिखाने अस्पताल गया था। पत्नी ने बुरा-सा मुँह बनाया फिर बोली आषाढ़ का महीना चल रहा है लोग अपने-अपने काम में व्यस्त हैं तुम दर्द का बहाना कर के काम चोरी करते हो।

चुप हो जाओ मम्मी—मुकुन्द बीच में बोला। लाल पीली आँखें दिखाती हुई श्रीमती चली गयीं। मुकुन्द ने सरल को घूरा और चला गया। सरल खाना खाकर चारपाई पर लेटा तो सरदर्द करने लगा। अपने हाथों सर को दबाने लगा। तभी पत्नी आयी और बैठ गयी। मुकुन्द की अम्मा यहाँ किसलिए आयी हो सरल बोला।

आज धान लग गया—मुकुन्द ने बड़ी मेहनत की। इंजन से पानी भरना पड़ा। सुबह पैसे दे देना। कहकर पत्नी चली गयी।

न चाहते हुए भी सरल सोचो की दुनिया में सैर करने लगा। अपने एवं पराये जो भी मिले सब ने उसके हृदय में तीर ही चुभाए थे। इस संसार में उसे अभी तक अपना कोई नहीं मिला था। वास्तव में इस संसार में कोई अपना है ही नहीं, दर्शन के इस सत्य से परिचित होकर भी सरल इस पर अमल न कर सका।

सोचों के बनते बिगड़ते चित्रों में सरल के सामने किरण की आकृति घूम गयी। सरल के जीवन में दर्द ही दर्द था फिर भी वह वासना से मुक्त नहीं हो पाया। आज किरण को देखकर उसके हृदय में स्पंदन हुआ। मृत्यु की वास्तविकता से उस पल मुक्त हो गया।

किरण की सुन्दरता ने सरल को कल्पना की दुनिया में पहुँचा दिया। संसार की मिली समस्त पीड़ा को नजरअंदाज कर वह किरण की सुकुमारता में खो गया। उसके अंग प्रत्यंग की संरचना ने सरल की वासना को बढ़ा दिया। किरण को हृदय से लगाने को मन व्यग्र हो गया। वाह रे मनुष्य गिरगिट की तरह रंग बदलना तेरी फितरत है। किरण को लेकर न जाने क्या-क्या सरल सोचता रहा। अचानक उसे लगा मानों किरण कह रही हो बाबू जी समय पर दवा खा लेना। सरल के सोच में झटका लगा। इतनी उम्र हो गयी और मैं उस बालिका को लेकर क्या सोचने लगा, जो अनैतिक है। सरल के सामने नैतिकता का प्रश्न खड़ा हो गया।

किरण का सानिध्य पाने को हृदय व्यग्र हो उठा। बहुत चिन्तन करने के उपरान्त सरल इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैं किरण से पुत्री तुल्य ही प्यार करूँगा। मैं उसे अपने हृदय से जरूर लगाऊँगा परन्तु बेटी की तरह। हाँ यह नैतिक होगा। यदि लोग इसकी

आलोचना करेंगे तो मुझे परवाह नहीं। मैं अपना शरीर छोड़ना पसन्द करूँगा परन्तु इस नियम को भंग नहीं करूँगा। अब भी वासना सरल के सामने खड़ी थी। वासना का दमन करना सरल के लिए सम्भव नहीं था काफी चिन्तन के उपरान्त उसने इसका रूप परिवर्तित कर दिया।

जीवन एवं कल्पना को उसने पृथक-पृथक कर दिया। मेरे जीवन में किरण बेटी तुल्य होगी। इस नियम के साथ कोई भी समझौता नहीं होगा। परन्तु कल्पना में स्वच्छन्द रहूँगा। इस प्रकार सरल ने कला एवं जीवन की पृथक-पृथक दिशाएँ निश्चित की। रात के दस बज चुके थे। आज सरल के हृदय में बचपन हिलोर मारने लगा। भावना के वशीभूत उसने मोबाइल में किरण का नम्बर लगा दिया। घण्टी बजने लगी परन्तु संकोच के वशीभूत सरल ने फोन काट दिया। थोड़ी देर के बाद उसका मोबाइल बजने लगा। सरल ने फोन उठाया तो किरण की आवाज आयी, बहुत दिनों के बाद सरल के हृदय में हर्ष की अनुभूति हुई।

बाबू जी आप ने दवा खा ली।

हाँ बेटी– सरल का स्वर।

अपना ध्यान रखना बाबू जी–कोई परेशानी हो तो मुझे जरूर बताना, छिपाना नहीं, ओ.के.।

ठीक है बिटिया।

नमस्कार बाबू जी कहकर किरण ने फोन काट दिया। सरल को लगा मानों किरण किसी परी तुल्य उसके सामने खड़ी है।

❍❍

सरल की नींद खुली तो सबेरा हो चुका था। वैसे तो वह प्रतिदिन प्रातःकाल की उठ जाता था परन्तु आज उसे बहुत दिनों के बाद गहरी नींद आयी थी। बाहर निकलते ही पत्नी से सामना हो गया। श्रीमती जी ने मुँह बनाते हुए कहा– आज गाय भी बाहर नहीं की घर के सारे काम मुकुन्द ही करेगा तुम बैठे-बैठे भोजन करोगे बस। अभी तुम्हारी उम्र साठ की भी नहीं हुई। पड़ोस के दादा जी को देखो– अस्सी की उम्र हो गयी दो भैंसों की सेवा करते हैं। पूरा परिवार दूध माठा खाकर बलवान हो गया है। गाँव के अन्य लोगों को देखो–तुम्हारी तरह कोई है। अपने परिवार के लिए सभी मरे जा रहे हैं।

लोग परिवार के लिए चोरी हत्या, रिश्वत लेकर बच्चों का भविष्य संवार रहे हैं एक तुम हो ईमानदारी से भी परिवार को आगे बढ़ाना नहीं चाहते। कविता लिखने से पेट थोड़े भरता है। गाँव वाले तुम्हें पागल कहते हैं सुनती हूँ तो शर्म से सिर झुक जाता है। तुम्हारे कारण समाज में परिवार की बदनामी हो रही है। भगवान दुश्मन को भी

तुम्हारे जैसा पति न दे।

चुप हो जाओ मम्मी मुकुन्द ने आकर कहा। समझाया उसे जाता है जिसके पास अकल हो, भैंस के आगे बीन बजाये भैंस खड़ी पगुराय। जो मर्जी हो इनको करने दो।

सरल कहना तो बहुत कुछ चाहता था परन्तु अपने उद्वेग को रोक लिया। क्या फायदा होगा इन लोगों को अपनी पीड़ा बताने से कोई एतबार नहीं करेगा। जो लोग झूठ बोलने की महारत हासिल कर लेते हैं वे लोग किसी की सत्य बात पर विश्वास नहीं करते। यही सोच कर सरल चुप हो गया। चुपचाप बाक्स खोला और पाँच हजार रुपया लड़के को देते हुए कहा– हिसाब कर लेना जो और होगा मुझे बताना। मुकुन्द ने एक हजार रुपये वापस करते हुए कहा– इतने में हो जायेगा। तभी बहू की आवाज आयी– किस निकम्मे घर में मेरे पापा ने शादी कर दी, तीन महीना से मेरा पायल टूटा है नये की बात छोड़ो, जुड़ाने का भी कोई नाम लेना वाला नहीं। सरल ने एक हजार रुपये मुकुन्द को देते हुए कहा– बहू का पायल ठीक करा देना।

तभी पत्नी आकर बोली–रामनिहोरे की मेहरारू से एक हजार कर्जा लेकर न्योता दिया था। तुमको नात-बांत से मतलब नहीं, न देती तो नाक कट जाती। अपने मुकुन्द की मेहरारू को उन्होंने पायल दिया था। सरल ने दवा के लिए कुछ पैसे रखे थे उसमें से एक हजार पत्नी को दे दिया और बाहर निकल गया।

गाँव से बाहर निकलकर टहलने लगा–प्रियजनों का कटु व्यवहार सहने का वह आदी हो चुका था। परिवार क्या गाँव के लोग भी उसे देखकर मुँह फेर लेते थे। सरल मन ही मन सोचता इस संसार में सत्य की दुर्दशा क्यों है। अब तक जीवन में उसे सत्य एवं न्याय की बात सुनने वाला ही नहीं मिला, करने वाले की तो कल्पना भी दुष्कर है।

किरण सरल के आँखों के सामने उस नर्स बाला का मुख मण्डल घूम गया। वह तन ही नहीं अपितु मन से भी सुन्दर थी, यदि ऐसा न होता तो वह उससे इतने अपनत्व की बात क्यों करती। वह मेरे दुःख से दुःखी है और मेरे अपने मात्र अपने सुख का साधन समझते हैं। कुछ भी हो सरल को एहसास हुआ इस अंधकारमय जगत में सचमुच किरण उसके लिए किरण है। घर पहुँचा तो पत्नी ने चाय लाकर दे दिया।

आज कहीं नहीं जाना है पत्नी बोली। नहीं सरल बोला।

मेरी माता जी की तबियत खराब है चलो उनको देख आयें। मैं साइकिल से तुम्हें ले जाऊँ इससे तो अच्छा है मुकुन्द के साथ चली जाओ, कहकर सरल ने पाँच सौ रुपये पत्नी को दे दिये।

❍❍

सरल यदा-कदा किरण से बात कर लिया करता था। धीरे-धीरे सरल के हृदय में किरण के प्रति मोह उत्पन्न हो गया। मोह यद्यपि बंधन का कारण है परन्तु यदि वह

विशुद्ध हो जाय तो हमारा उत्थान भी कर सकता है। किरण के प्रति उसके मन में जो आसक्ति पैदा हुई उसने उसके जीवन के दृष्टिकोण को बदल दिया। सरल मृत्यु की कामना करते-करते सचमुच मृत्यु के करीब पहुँच गया। जब सरल को मृत्यु का एहसास हुआ तो उसका चिन्तन बदल गया। इस परिस्थिति में किरण के स्नेह ने मरुभूमि में जल की तरह उसके जीवन को जीने की शक्ति दी।

जीवन के प्रति सकारात्मक सोच जहाँ मानव को शक्ति प्रदान करता है वहीं नकारात्मक सोच पतन के गर्त में गिरा देता है। सत्य एवं ईमान पर कायम रहने वालों का परमात्मा किसी न किसी तरह अवश्य मदद करता है। सरल के सत्कर्मों का फल ही था कि उसे किरण का सम्बल मिल गया। इस महीने जब सरल दवा लेने नहीं गया तो किरण को चिन्ता हुई उसने फोन किया। बाबू जी आप दवा लेने नहीं आये।

बिटिया बस ऐसे ही...।

आप इसका परिणाम जानते हैं।

मर जाऊँगा न— सरल के मुख से निकल गया।

सुनकर दुःख हुआ बाबूजी— कल आप अस्पताल जरूर आना तुम्हें मेरी कसम कहकर किरण ने फोन काट दिया। सरल रात भर सो न सका। बड़ी मुश्किल से रात कटी, सुबह वह अस्पताल जाने को तैयार हो गया। कहाँ जाते हो— पत्नी ने पूछा।

सरल ने अपने सभी डाकुमेंट निकाल कर पत्नी को दे दिया। मेरी बात पर तुम्हें विश्वास नहीं होगा इसलिए किसी डाक्टर से चेक करवा लो। मम्मी आज सही गलत का निर्णय हो जायेगा कहकर मुकुन्द ने सरल के हाथ से सारे कागज ले लिए। चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ देखता हूँ तुम्हें क्या बीमारी है। मम्मी कल इन्होंने कितनी रोटी खायी थी।

ग्यारह रोटी, भात ऊपर से बहू की आवाज आयी। मुकुन्द हंसा रामबरन दादा के पौत्र के बरही में खाने गये थे। हरीशंकर चाचा कह रहे थे कि चालीस पूड़ी से कम नहीं खाया होगा। पूरे गाँव में इनकी खुराक की चर्चा होती है ऊपर से कहते हैं बीमार हूँ।

तभी किरण का फोन आ गया सरल ने उठाया तो किरण बोली— बाबू जी ओ.पी. डी. में आना, मैंने आपका नम्बर लगा दिया है। आप का नम्बर नौ है। हाँ ओ.पी.डी. पहुँच कर मुझे कॉल करना कहकर किरण ने फोन काट दिया।

किसका फोन था— मुकुन्द बोला।

किरण का वह नर्स है न, मैंने कई बार तुम लोगों को बताया पर तुम्हें विश्वास ही नहीं होता।

हो जायेगा पिताजी अब हम अस्पताल चलकर पता लगा कर ही रहेंगे। कहकर मुकुन्द पिता के साथ चल पड़ा।

ओ.पी.डी. के बाहर लोगों की भीड़ जमा थी। सरल पहुँचा तो किरण को देखकर खुश हो गये। मैं आपका इन्तजार कर रही थी बाबू जी किरण बोली।

तुम्हीं किरण हो मुकुन्द ने किरण को घूरा।

यह कौन है बाबू जी....।

बेटी यह मेरा बेटा मुकुन्द है। इसे मेरी बात पर विश्वास नहीं, कहता है हट्टे-कट्टे हो बेकार में दवा खाकर पैसे बरबाद कर रहे हो। मेरे साथ इसलिए आया है कि इन कागजो में जो लिखा है वह कहाँ तक सही है।

माई गाड किरण गम्भीर हो गयी। तुम्हें बाबू जी की बात पर विश्वास नहीं। किरण मुकुन्द को घूरते हुए बोली।

ये तुम्हारे बाबू जी हैं— मुकुन्द ठहाका मार कर हंस पड़ा। एक अनजान आदमी को कोई यूं ही बाबू जी नहीं कहता जरूर इसमें कोई चक्कर है। मुकुन्द का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। किरण ने मुकुन्द की बातें सुना अब उसे सरल की उदासी का कारण समझ में आ गया। कुछ देर सोचती रही फिर बोली भइया....।

मत कहो मुझे भइया— मुकुन्द चीख पड़ा। मैं अच्छी तरह जानता हूँ तुमने मेरे पिता को बेवकूफ बनाकर पैसे खाये हैं। वरना....

वरना क्या किरण बोली।

मुकुन्द ने सरल का हाथ पकड़कर खींचा— चलो घर चलो आज मैं तुम्हारी लाठी से दवा करूँगा। इतना कहकर मुकुन्द ने सरल को दो तमाचे मारे। कई लोग एकत्र हो गये। डॉक्टर भी बाहर निकल आया।

❍❍

डॉक्टर को लगा मुकुन्द पागल है इसलिए व्यर्थ में उससे उलझना उसने उचित नहीं समझा। सरल एवं किरण को समझाते हुए अन्दर ले गया। वह लड़का तुम्हारा बेटा है। डॉक्टर ने सरल से पूछा।

हाँ साहब जी।

क्या इसका दिमाग खराब है।

नहीं.... सरल बोला।

डाक्टर ने गहरी साँस ली। लम्बी उम्र का तजुर्बा जाने कितने लोगों को जीवन देने वाला डाक्टर समाज में व्याप्त इस रोग की दवा खोज नहीं पा रहा था। कुछ क्षण चुप रहने के उपरान्त वह किरण से बोला नर्स तुम इन्हें जानती हो।

सर मैंने इनको एक दिन यहीं उदास देखा, अपने को रोक न सकी। जब मुझे इनकी बीमारी का पता चला तो आपके पास ले आयी। अब ईश्वर की कृपा से ये ठीक है।

डाक्टर ने सरल का परीक्षण करके दवा लिख दी। अब आप शीघ्र ही स्वस्थ हो

जायेंगे। सरल बाहर निकला तो मुकुन्द खड़ा था। किरण ने मुकुन्द पर नजर डाली और आगे बढ़ गयी। सरल किरण के पीछे था। तुम कहाँ जा रहे हो– कहीं भी तुम्हें मतलब सरल बोला। तभी सरल की नजर पत्नी पर पड़ी। मुकुन्द के पीछे वे भी अस्पताल आयी थी। सरल ने ए.टी.एम. निकाल कर पत्नी को दे दिया। मेरी पेंशन तुम जहाँ चाहो वहाँ खर्च कर देना। अब मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ। कहाँ जाओगे पिताजी, मुकुन्द बोला।

कहीं भी जहाँ हमारी इच्छा होगी।

ठीक है मुकुन्द के पापा तुम कहीं भी जाओ परन्तु बक्से की चाभी और वे किसान विकास पत्र.... श्रीमती जी बोली।

सरल ने झोले से बारह लाख के किसान विकास पत्र निकालकर श्रीमती जी के हवाले कर दिया। शहर में जो मकान बनवाया वह तुम्हारे ही नाम है। अब मेरे नाम कुछ नहीं है।

श्रीमती जी हंस कर बोली मुकुन्द के पापा साधु मत बनो। तुमने कोई हम पर एहसान नहीं किया है। शादी का मजा मारा अब क्यों रो रहे हो। मरने से पहले अरबों रुपया लोग परिवार को दे जाते हैं, तुमने जिन्दगी में कुछ नया नहीं किया है। बोलते-बोलते श्रीमती हाँफने लगीं।

अब तो मुझे जाने की आज्ञा दो मुकुन्द की मम्मी.... सरल ने हाथ जोड़ लिये।

जाओ खुशी से– आज मुझे बहुत खुशी हो रही है मुकुन्द के पापा, अब हमारी बहू को एक जानवर का खाना बनाने से मुक्ति मिलेगी। जिस तरह बुड्ढे बैल को काटकर खाने के सिवा कोई रास्ता नहीं है उसी तरह बुड्ढे आदमी के मरने पर दुख नहीं होता। तुम धन्य हो मुकुन्द के पिता जुग-जुग जियो। दुनिया को तुम्हारे जैसे पति एवं पिताओ की आवश्यकता है, जो बच्चों एवं पत्नी के लिए त्याग करें जब तक रहें खूब कमायें और थके इससे पहले वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर दें। तुमने पुरानी परम्परा को शुरू कर के जो महान कार्य किया है इसके लिए युवा वर्ग तुम्हारा आभारी रहेगा।

सरल ने कहा– यदि मुझसे कोई गलती हो गयी हो तो क्षमा कर देना। काहे की गलती मुकुन्द के पापा। बस भगवान तुम्हें लम्बी उम्र दे। यदि तुम मर गये तो पेंशन कम हो जायेगी। श्रीमती के मुख से बरबस निकल गया।

मम्मी तुम इसके लिए परेशान न हो मुकुन्द बोला–माननीय मुख्यमंत्री महोदय औरतों को लेकर संवेदनशील हैं। सुना है तीन तलाक खत्म करवा रहे हैं। मैं उन्हें चिट्ठी लिखूँगा कि पति के मरने पर औरत की पेंशन कम न की जाय बल्कि बढ़ाई जाय। इसके सिवा जब पिता काम करने लायक न रहे तो उसको जिन्दा रखने या खत्म करने का अधिकार पुत्र को दिया जाय। छोड़ो बेटा–ये सब बेकार की बातें–हमारा काम हो गया। अब घर चलें। मुकुन्द ने माता की आज्ञा का पालन किया क्योंकि पिता

से माता का स्थान दस गुना बड़ा होता है। श्रीमती जी चाबी एवं ए.टी.एम. मुकुन्द को देकर चल पड़ी। मुकुन्द माँ के पीछे-पीछे चल रहा था। उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानों पिता की चिता को जला कर अपने पितृऋण से मुक्त हो गया है। हाँ जेब में रखा ए.टी.एम. गले में बँधी कफन की रस्सी की तरह चुभ रहा था। वह मन ही मन रामचरितमानस का अखंड पाठ कराकर ब्राह्मण खिलाने की योजना बना रहा था।

किरण दूर खड़ी बातें सुन रही थी। मुकुन्द चला गया तब सरल के पास आकर बोली—क्या सोच रहे हो बाबू जी। सरल कुछ नहीं बोला नेत्रों से अविरल आँसू बहने लगे।

बाबू जी आप मत रोओ— मैंने आपको पिता तुल्य समझा है। जब तक मैं जिन्दा हूँ आप अनाथ नहीं होंगे।

बे.....बेटी।

बाबू जी।

किरण सरल के हृदय से लग गयी। कंपकंपाते करो से सरल किरण के कुंतलों को संवारने लगा। आज से मेरे अन्धकारमय जगत की तुम ही किरण हो। बाबू जी किरण सरल के बहते हुए आँसुओं को पोंछते हुए बोली— मैं आपकी उम्मीद को पूर्ण करने की प्राण-प्रण से कोशिश करूँगी। मैं इस संसार को सिद्ध करके दिखा दूँगी कि रक्त से मन के रिश्ते बड़े होते हैं। सरल कुछ नहीं बोला बस किरण के पीछे अज्ञात दिशा की तरफ चल पड़ा।

❑❑❑